॥ श्री वर्द्धमान स्वामिने नम ॥

॥ ॐ ॥

श्रीमान् मलधारीगच्छना श्री हेमचंद्रसूरिना शिष्य चंद्रसूरि विरचित

# बृहत्संग्रहणी ॥

प्रातः स्मरणीय तपगच्छना पूज्यपाद गुरुणीजी श्री-श्री-१०८ वीजकोर श्रीजी महाराजश्रीना सुविहित शिष्या गुरुणीजी देवश्रीजी तेमना शिष्या गुरुणीजी महाराज श्री सौभाग्य श्रीजी-ना सदुपदेशथी

चतुर्विध संघना उपयोग सारु

छपावी प्रसिद्ध करनार

खंभात निवासी

मास्तर उमेदचंद रायचंद

मु अमदावाद ठे पांजरापोळ


संवत १९८० ॥ वीर निर्वाण सं   ८ ० ॥ सन १   ८

आवृत्ति १ ली                प्रत १०००

श्री विवेकानंद मुद्रणालयमां-महेता मदनलाल शंकरलाले छाप्यु वाडीआ-अमदावाद

कींमत १-८-०

# प्रस्तावना

मुज्ञ जैनबधुओ अने व्हेनो

आ एक अति उत्तम प्रकारनो ग्रंथ छे के जेनु नाम श्री बृहत्स-ग्रहणी अर्थात् मोटी सग्रहणीना नामे प्रसिद्ध छे. तेनु बीजु नाम त्रैलोक्यदीपीका पण कहवाय छे अने ते नाम पण सार्थकज छे एनो अर्थ ए थाय छे के—आ ग्रंथ त्रण लोकना दीवा समान छ कारण के आ ग्रंथनी अन्दर-देवता-मनुष्य-तिर्यंच अने नारकी एम चार गतीना जीवोना-शरीर-आयुष्य सघयण सस्थान-भुवन-विमान-गति आगति-विगेर जाणवानी इच्छा करनाराने आ सग्रहणी नामनु पुस्तक उत्तम साधन रुप छे देवता अने नारकी जीवो अवधि ज्ञानना बळथी बीजी गतीमा रहला जीवोना आयुष्य प्रमाण तथा सुख दुखने जाणी शके पण मनुष्य तो अवधि ज्ञानना अभावने लीधे हमणा पूर्वाचार्योना रचेला ग्रंथोना आधारे बीजी बीजी गतीना जीवोना आयुष्य तथा सुख दुःखादि जाणवा समर्थ थाय छ जो के दरेक जीव उची गतीमा जवानी तथा विशेष सुख मेळववानी इच्छा कर छ परन्तु नारकी तिर्यंच अने देवता पोतानी गतीथी विशेष उची एटले मोक्ष सुख मेळववानी इच्छा छता पण चारित्रना अभावे मनुष्य गति पाम्या विना ते मेळवी शकता नथी आम होवाथी पाच ज्ञानना धारक पूर्व महा पुरुषोए मनुष्य गतीना जीवोना उपकारने माटे अन्य गतिमा रहेला जीवाना शरीर आयुष्य सघयण सस्थान विगेरेनु तेमज सुख दुःख आदिनु अनेक ग्रंथोनी अदर वर्णन करेलु छे पण ते बहु ग्रंथोनी अन्दर भिन्न भिन्न रुपे वर्णवेलु होवाथी जाणवानी इच्छा करनारने घणु दुष्कर थाय छे आ कारणथी मलधारीगच्छ ना श्री हेमचद्रसूरिना बाल शिष्य श्रीमान् चद्रसूरिए अनेक भव्य जीवोना उपकार माटे आ सग्रहणी नामनो ग्रंथ रच्यो छे

आ ग्रंथ बहु जीवोने उपकारक होवाथी तेनु भाषांतर गुजरातीमा वढवाणवाला शास्त्री हरिशंकर कालीदासे करी जैनी भाइओनी मददथी छपावी बहार पाडेलु हतु पण हाल ते मलतु नहीं होवाथी अने घणा जैनी भाइओने तथा–साधु साध्वीओने भणवा वाचवानु सुगम होवाथी प्रातःस्मरणीय तपगच्छना पूज्यपाद गुरुणीजी महाराजश्री सौभाग्यश्रीजीना सदुपदेशथी अने तेमनी खास प्रेरणाथीज कोइनी काइ पण मदद नहीं छता तेनी योग्य कींमत राखी आ पुस्तक बहार पाडवामा आव्यु छे जेओ साहेबना उपकार साथे तेमनु टुंक वृत्तांत अहीं आपवामा आव्यु छे

आपने सुविदितज छे के आ जैन शासनना प्ररूपक महान् वितराग तीर्थंकर भगवान होय छे तेमना अभावे सासन चलावनार आचार्य महाराजा होय छे जेम श्रावकोने विशेष उपकारक आचार्य महाराजा होय छे तेमज श्राविकाओ तथा बालीकाओने विशेष उपकारक गुरुणीजी महाराजा होय छे तेज न्याये आ पूज्यपाद पवित्र चारित्र भूषण गुरुणीजी महाराजश्री सौभाग्यश्रीजी महाराज साहेब पण हिंदुस्तानना घणा शहरो अने गामोमा विहार करवा पूर्वक–श्राविकाओ अने बालीकाओने धर्म मार्गमा जोडवामा हमेशा उद्यमवंत अने घणाज खंत धरावनारा महापवित्र साध्वीजीओमाना एक उत्तम चारित्रवंत गुरुणीजी महाराज छे एटलुज नहीं पण तेमनो समुदाय पण गामो गाम विहार करवा पूर्वक अनेक उपकार करी रह्यो छे ते नीचे मुजब छे तपगच्छना मुख्य प्रातःस्मरणीय परम पूज्य गुरुणीजी महाराजश्री जे श्रीजीनी शिष्याओ

## गुरुणीजी श्री विजकोर श्रीजी

### तेमनी शिष्याओ.

विनयश्रीजी देवश्रीजी हेमश्रीजी उत्तमश्रीजी उमेदश्रीजी अने रिद्धीश्रीजी गुरुणीजी साहेबश्री देवश्रीजीनी शिष्याओ माव

श्रीजी सौभाग्यश्रीजी आणन्दश्रीजी हरखश्रीजी गुरणीजीमहाराजश्री सौभाग्यश्रीजीनी शिष्याओ चपाश्रीजी हीरश्रीजी दानश्रीजी लावण्यश्रीजी गुलाबश्रीजी दोलतश्रीजी कनकश्रीजी विद्याश्रीजी मणीश्रीजी सुनन्दाश्रीजी. साध्वी आणन्दश्रीजीनी शिष्याओ अनोपश्रीजी रमणश्रीजी शातीश्रीजी चद्रश्रीजी साध्वी हरखश्रीजीनी शिष्याओ प्रमनश्रीजी साध्वी चपाश्रीजीनी शिष्याओ. रसनश्रीजी शिवश्रीजी हीराश्रीजी खीमाश्रीजी प्रभाश्रीजी साध्वी दानश्रीजीनी शिष्याओ. नीपश्रीजी वल्भश्रीजी

मागरोळवाळा साध्वीजी गुलाबश्रीजीनी शिष्याओ पुन्यश्रीजी गुणश्रीजी मगनश्रीजी

उपर बताव्यो परीवार तथा प्रशिष्याओनो घणो समुदाय विगेरे हालमा विचरे छे अने घणी श्रावीकाओ तथा बालीकाओने धर्म मार्गमा जोडवामा घणो उपकार करी रह्या छे. एटलुज नही परंतु प्राचीन स्तवनो जीनमतक दडक प्रकरण ४१ द्वारवालु तेमज नीत्य स्मरणीय शेत्रुजा प्रकरणो आदि नाना मोटा पुस्तको पण तेमना सदुपदेशथी छपावी बहार पाडवामा आव्या छे अने ते एटला बधा लोकप्रीय थयला छे के तेनी बबे चार चार आवृत्तिओ काढवी पडी छे तेज प्रमाणे आ मोटी सग्रहणीनु पण पुस्तक लोकप्रीय थशे तेमा काइ सदेह जेवु नथी

उपरनी हकीकत जणाव्या बाद हवे आ बृहत्सग्रहणीनी प्रत यत्रो सहित उक्त गुरणीजी महाराज तरफथी बराबर शुद्ध करावी छपाववामा आवी छे छता पण दृष्टी दोषथी तेमज प्रेस दोषथी जे काइ भुल चुक रही गइ होय अगर जीनाज्ञा विरुद्ध काइ लखाइ गयु होय तेनी क्षमायाची मीच्छामि दुकड देवा पूर्वक आ प्रस्तावना समाप्त करवामा आवे छे. एज मुक्तशुकी वहुना

संवत १९८० ना
महा सुद ५ रवीवार

ली०
प्रसिद्धकर्ता

॥ श्रीवर्द्धमानस्वामिने नम ॥

# ॥ श्री बृहत्सग्रहणी प्रारभ्यते ॥

श्री परमपददायकाष्टकर्मारिघातकत्रिलोकाधारक-चतुर्दशरज्ज्वात्मकभकटकारकधर्मदीपकादिप्ररूपक-परमपुरुषोत्तमाय नमोनम ॥ श्रीदानादिचतुष्कस्य शक्त्या धारकशासनाधिष्ठायकदेवेभ्यो नमोनम ॥ श्रीमहावीरस्वामिने नमोनम ॥

हवे ग्रथकर्त्ता प्रथम शिष्टाचार पालवाने अर्थे तथा विघ्न निवारवाने अर्थे दोढ गाथाथी मगलाचरण अने अभिधेय, प्रयोजन, सम्बन्ध तथा अधिकारी ए चार वस्तुनु प्रतिपादन करछे।

नमिउ अरिहताई, ठिइभवणो गाहणा य पत्तेय ॥
सुरनारयाण वुच्छं, नरतिरियाण विणा भवणं ॥१॥
उववाय चवण विरह, सख इगसमइय गमागमणे॥

अर्थ—(अरिहंताई) के० अरिहतादिक पाच परमेष्ठिने—त्या सकल त्रण भुवनना जनने चमत्कार उपजावनार, उत्तम अरिहतम-

हिमाने विस्तारनार, अशोकवृक्षादिक आठ प्रातिहार्य धारक, चोत्रीश अतिशयथी सुशोभित, रागादिक शत्रुने हणनार अने बार गुण सहित ते अरिहंत कहेवाय. तथा ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म रहित, आठ गुणना धारक अने सिद्धक्षेत्रने विषे निराकाररूप धारक ते सिद्ध कहेवाय तथा ज्ञानादिक पांच आचारने पोते पालनार, बीजाने पलावनार पालनाने अनुमोदना करनार, धर्मनो उपदेश आपनार अने छत्रीश गुण सहित ते आचार्य कहेवाय तथा पच्चीश गुणना धारक, बीजाओने भणावनार अने शुद्ध वाचना आपनार ते उपाध्याय कहेवाय. तथा सत्तावीश गुणना धारक, सत्तर प्रकारे संयम पालनार, पांच महाव्रतना धारक, बावीस परिसहने जीतनार, दशविध यति धर्मना धारक, पांच सुमति त्रण गुप्तिना आधार, षट्कायना रक्षक, मन वचन काय योगने गोपवनार अने बेंतालीश दोष रहित आहारनी गवेषणा करनार ते साधु कहेवाय. ते पूर्वे कहेला पांच परमेष्ठीने (नमिउं) क० त्रिकरण शुद्धिथी नमस्कार करीने (सुरनारयाण) क० देवता तथा नारकीनी (ठिइ) क० स्थिति एटले आयुष्य (भवण) क० निवास करवाना घर अने (ओगाहणाय) क० शरीरनु प्रमाण, अहिं मूलगाथामां च शब्दनु ग्रहण कर्युं छे तेथी ए देवताना चिह्न, संस्थान, शरीर, अवधिज्ञान, अवधिज्ञाननो आकार, विमान, विषय, लेश्या ए (पत्तेय) क० अनुक्रमे प्रत्येक (बुच्छं) क० कहीशुं, परन्तु (नरतिरियाण) के० मनुष्य अने तिर्यंचना (भवण विणा) क० भवनो संभवना न होवाथी भुवन विना आयुष्य तथा अवगाहना कहीशुं ए ३ द्वार थया ॥ १ ॥ तथा (उववायविरह) क० एक देव उपज्या पछी बीजो देव उपजवा कालने आंतरं उपजे ते उपपात विरहकाल ४, तथा (चवणविरह) क० एक देव चव्या पछी बीजो देव चववा कालने आंतरे चवे ते च-

वन विरहकाल ५, तथा (इगसमइय) क० एक समये (मख) क० सख्याए गणता केटला उपजे ? ते उपपात सख्या ६, तथा एक समये सख्याए गणता केटला चवे ? ते चवन सख्या ७, तथा (गमण) क० मरीने कइली गतिमा जाय ? ते गति ८, तथा (आगमणे) के० कइली गतिना आव्या जीवो देवपणे उपजे ? ते आगति ९ ॥ एम देवता तथा नारकीना नव नव द्वार मळी अढार द्वार थाय अने मनुष्य तथा तिर्यचनां भवन विना आठ आठ द्वार मली शोल थाय, एम सर्व मली चोत्रीश द्वार थाय. ए चोत्रीश द्वार कहीशु, ए अभिधेय कह्यु.

ग्रन्थकर्ताने ग्रन्थ रचता जे शुभ आश्रव अने अशुभनी निर्जरा थाय ते अनन्तर प्रयोजन अने तेथी परंपराए मोक्षप्राप्ती ते परंपरा प्रयोजन जाणवु ए बे प्रयोजन ग्रन्थकर्ताना जाणवा. तथा श्रोताने देवादिकनु स्वरुप जाणवु ते श्रोतानु अनंतर प्रयोजन अने तेथी परंपराए मोक्षप्राप्ती ते श्रोतानु परंपरा प्रयोजन, ए बे प्रयोजन श्रोताना जाणवा.

संबंध बे प्रकारनो छे. पहेलो उपायोपेय लक्षण अने बीजो गुरुपर्वक्रम लक्षण. तेमा संग्रहणी ग्रंथ ते उपाय अने तेनु तत्वज्ञान ते उपेय एम बन्ने मळीने उपायोपेय लक्षण संबंध जाणवो. तथा गुरुपर्वक्रमलक्षण ते ए संग्रहणीनो अर्थ श्रीवीरप्रभुए वखाण्यो, त्यार पछी सुधर्मा स्वामीए द्वादशांगीमा गुथ्यो. त्यांथी श्यामाचार्यजीके पन्नवणा प्रमुखमा गुथ्यो. त्यांथी जिनभद्र गणि क्षमाश्रमणे आ संग्रहणीमा उतार्यो. ए गुरुपर्वक्रम लक्षण जाणवु. ए संबंध कह्यो.

वळी आ संग्रहणी ग्रन्थ भणवाना अधिकारी साधु साध्वी श्रावक अने श्राविका छे ते अधिकारीपणु जाणवु

हवे जेवी रीते अनुक्रमे करीने चोवीश द्वार कह्या, तेवीज रीते अनुक्रमे करीने देवतानी स्थिति प्रमुख नव द्वार कहे छे, तेमां प्रथम १ भुवनपति, २ व्यंतर, ३ ज्योतिषी अने ४ वैमानिक. ए चार प्रकारना देवोमांथी भुवनपति देवोनी जघन्य आयुष्यनी स्थिति अर्द्धगाथाए करीने कहे छे

दस वाससहस्साइ, भवणवईणं जहन्नठिई ॥ २ ॥

अर्थ-(भवणवईण)क० असुरकुमारादिक दश प्रकारना भुवनपति देवोनी अने भुवनपतिनी देवीओनी सामान्यपणे (दस वाससहस्साइ) क० दश हजार वर्षनी (जहन्नठिई) क० जघन्यथी आयुष्यनी स्थिति होय, पण तेथी ओछी न होय

अहिं देवताओना आयुष्यनु प्रमाण पल्योपम तथा सागरोपमथी कहशे, माटे पल्योपम तथा सागरोपमनु स्वरूप देखाडे छे

देवकुरु तथा उत्तरकुरुना जुगलीआना सात दिवसना बेटाना एक उत्सेधांगुल प्रमाण रोमखण्डना सात वार आठ आठ खण्ड करता ते सर्व मलीने वीस लाख सत्ताणु हजार एक सो बावन खंड थाय तेवा खंडथी चार गाउनो घनवृत्त (चार गाउ विष्कंभ अने चार गाउ उंडाईवालो) कूवो ठांसीने कठण मुसी भरी तेमांथी समये समये एक एक रोमखंड काढता ज्यारे कूवो खाली थाय त्यारे एक उद्धार पल्योपम कहवाय, अने सो सो वर्षे एक एक रोमखण्ड काढता अद्धा पल्योपम कहेवाय छे तेवा दश कोडाकोडी पल्योपमे एक सागरोपम थाय छे अहिं छ प्रकारना पल्योपमनु विशेष स्वरूप क्षेत्रसमासादि ग्रंथोथी जाणी लेवु ॥

हवे भुवनपति देवोनी उत्कृष्टी आयुष्यस्थिति बे गाथाए करी कहे छे.

चमरवलि सारमहियं, तद्देवीणं तु तिन्नि चत्तारी ॥
पलियाइ सङ्घाइं, सेसाण नव निकायाण ॥ ३ ॥
दाहिण दिवड्ढ पलियं, उत्तरओ हुंति दुन्नि देसूणा ॥
तद्देवीमद्धपलियं, देसूणं आउमुक्कोसं ॥ ४ ॥

अर्थ—भुवनपति देवोना दश निकाय ( जाति विशेष अथवा निवास स्थान ) छे. ते दरेक निकायमा दक्षिण अने उत्तर एम बबे खण्ड छे. दरेक खण्डनो एक एक इन्द्र छे. तेथी भुवनपति देवोना सर्वे मलीने वीश इन्द्रो छे. तेमा पहेला निकायने विषे दक्षिण दिशाना खण्डमां रहेनारा असुरकुमारोनो राजा ( चमर ) क० चमरेंद्र छे, तेनुउत्कृष्ट आयुष्य ( सार ) के० एक सागरोपमनु छे. तथा उत्तर दिशाना खण्डमा रहेनारा असुरकुमारोनो राजा ( वलि ) क० बलीन्द्र छे तेनु उत्कृष्ट आयुष्य ( अहियं ) क० एक सागरोपमथी काइक अधिक छे. ( तु ) के० वली ( तद्देवीण ) क० ते चमरेन्द्रनी देवीनु उत्कृष्ट आयुष्य ( सङ्घाइ तिन्नि पलियाइं ) क० साडात्रण पल्योपमनु छे. तथा बलीन्द्रनी देवीनु उत्कृष्ट आयुष्य ( सङ्घाइ चत्तारि पलियाइ ) क० साडाचार पल्योपमनु छे. तथा ( सेसाण नव निकायाण ) के० ए चमरेन्द्र तथा बलीन्द्र विना बाकीना जे नव निकायना इन्द्रो छे. ॥ ३ ॥ तेमा ( दाहिण ) क० दक्षिण दिशाना नव निकायना धरणेंद्र प्रमुख नव इन्द्रो छे तेमनु उत्कृष्ट आयुष्य ( दिवड्ढ पलियं ) क० दोढ पल्योपमनु जाणवु, अने ( उत्तरओ ) क० उत्तर दिशाना नव निकायना भूतानेंद्र प्रमुख नव इन्द्रो छे तमनु उत्कृष्ट आयुष्य ( दुन्नि देसूणा ) क० देशे ऊणु बे पल्योपमनु एटले बे पल्योपममा काइक ओछु जाणवुं. तथा ( तद्देवीमद्ध ) के० ते धरणेन्द्र प्रमुख

नव इद्रोनी देवीओनु अर्द्धं पल्योपमनु अने भूतानेन्द्र प्रमुख नव इद्रोनी देवीओनु (देसूण पलिय) क० देशे उणु एक पल्योपमनु (आउमुकोस) क० उत्कृष्ट आयुष्य जाणवु अहिं इन्द्रना उपलक्षणथी सामान्य भुवनपति देवोनु तथा तेमनी देवीओनु उत्कृष्ट आयुष्य पण पूर्वोक्त प्रकार जाणवु ॥ ८ ॥

हव व्यतरदेवता तथा तेमनी देवीओनु जघन्य अने उत्कृष्ट आयुष्य गाथाना त्रण पदे करीने कहे छे,

वतरियाण जहन्न, दसवाससहस्स पलियमुक्कोस॥
देवीण पलियद्ध—

अर्थ-(वतरियाण) क० व्यतरदेवता तथा तेमनी देवीओनु (जहन्न) के० जघन्य आयुष्य (दसवाससहस्स) के० दश हजार वर्षनु होय छे अने व्यतरदेवोनु (पलियं) के० एक पल्योपमनु तथा (देवीण) क० तेमनी देवीओनु (पलियद्ध) क० अर्द्धपल्योपमनु (उक्कोस) क० उत्कृष्ट आयुष्य जाणवु

हवे चद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र अने तारा ए पाच जातना ज्योतिषी देवना तथा तेमनी देवीओनु जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक पद अने बे गाथाए करीने कहे छे

---

१ भवनपतिनी पठे अहिं व्यतरना इद्र इन्द्राणिओनु आयुष्य कह्यु नथी तो पण व्यन्तरेन्द्र अने इन्द्राणीनु आयुष्य उत्कृष्ट पल्योपम अने अर्ध पल्योपम अनुक्रमे जाणवु इद्र इन्द्राणीओनु जघन्य आयुष्य संभव नहि

२ श्री धीधृति विगरे देवीओनु आयुष्य १ पल्योपम छ ते व्यन्तर निकायना नहि पण भवनपति निकायनी होवाथी (१) पल्योपमनु आयुष्य छे

पलियं अहियं ससिरवीणं ॥ ५ ॥
लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलियमेएसिं ॥
ठिइ अद्ध देवीणं, कमेण नक्खत्त ताराणं ॥ ६ ॥
पलिअद्धं चउभागो, चउअडभागाहिगा उ देवीण ॥
चउजुयले चउभागो, जहन्नमडभाग पंचमए ॥ ७ ॥

अर्थ—ज्योतिषी देवताना बे भेद छे. चर अने स्थिर तेमा अढी द्वीपनी मांहेला चर छे अने अढी द्वीपनी बाहेरना स्थिर छे ते सर्व ज्योतिषी मांहेना जे (ससि) के० चंद्रमा इन्द्र अने चन्द्रमाना विमानवासी देवो छे, तेमनु उत्कृष्ट आयुष्य (वासाण लक्खेण अहिय पलिय) के० एक लाख वर्ष अधिक एक पल्योपम, अर्थात् एक पल्योपम अने एक लाख वर्षनु होय छे (य) के० तथा (रवीण) के० सूर्य इन्द्र अने सूर्यना विमानवासी देवोनु उत्कृष्ट आयुष्य (वासाण सहस्सेण अहिय पलिय) के० एक हजार वर्ष अधिक एक पल्योपमनुं अर्थात् एक पल्योपम अने एक हजार वर्षनु होय छे. तथा (गहाण) के० ग्रह विमानाधिपति अने ग्रहना विमानवासी देवोनु उत्कृष्ट आयुष्य (पलिय) के० एक पल्योपमनु होय छे वली (एएसिं) के० ए पूर्वे कहेला चन्द्र सूर्य अने ग्रहो तथा तेमना विमानवासी वो ए सर्वनी (देवीण) के० देवीओनी (ठिइ) के० आयुष्य (अद्ध) के० अर्द्ध जाणवु एटले चद्रनी देवीनु तथा चद्रना विमानवासी देवोनी देवीओनु उत्कृष्ट आयुष्य अर्ध पल्योपम अने पचास हजार वर्ष उपर होय छे. तथा सूर्यनी देवीनु अने सूर्यना विमानवासी देवोनी देवीओनु उत्कृष्ट आयुष्य अर्ध पल्योपम अने

पाचसो वर्षनु उपर होय छे तथा ग्रहनी देवीनु तथा ग्रहना विमानवासी देवोनी देवीओनु उत्कृष्ट आयुष्य अर्ध पल्योपमनु होय छे. हवे (नक्खत्ततारार्णं) के० नक्षत्र तथा तारानु उत्कृष्ट आयुष्य (कमेण) के० अनुक्रमे करीने कहे छे ॥ ६ ॥ नक्षत्र अधिपति अने नक्षत्रना विमानवासी देवोनु उत्कृष्ट आयुष्य (पलियद्ध) के० अर्द्ध पल्योपमनुं होय छे तथा तारा अधिपति अने ताराना विमानवासी देवोनु उत्कृष्ट आयुष्य (चउभागो) के० पल्योपमना चोथाभागनु होय छे तथा (देवीण) के० नक्षत्रनी देवीनु तथा नक्षत्रना विमानवासी देवोनी देवीओनु (आउ) के० उत्कृष्ट आयुष्य (चउभागाहिय) के० पल्योपमनो चोथो भाग विशेषाधिक एटले पल्योपमनो चोथा भाग अने काइक वधारे होय छे तथा तारानी देवीओनु अने ताराना विमानवासी देवोनी देवीओनु उत्कृष्ट आयुष्य (अड भागाहिय) के० पल्योपमनो आठमो भाग विशेषाधिक एटले पल्योपमनो आठमो भाग अने काइक वधारे होय छे एम ए ज्योतिषी देवोना पाचे जुगलनु उत्कृष्ट आयुष्य कह्यु.

हवे ज्योतिषी देवोनुं जघन्य आयुष्य कहे छे. पाच जातना ज्योतिषीमा चंद्र अने सूर्य ए बे इंद्र छे अने बाकीना त्रण विमानना अधिपतिओ छे, तेथी तेमनु जघन्य तथा मध्यम आयुष्य नथी, माटे तेमना विना (चउजुअले) के० चार जुगल-ते चद्रना विमानवासी देव अने देवीओ १, सूर्यना विमानवासी देव अने देवीओ २, ग्रहना विमानवासी देव अने देवीओ ३, नक्षत्रना विमानवासी देव अने देवीओ ४, ए चारे जुगलनु (जहन्न) के० जघन्य आयुष्य (चउ भागो) के० पल्योपमनो चोथो भाग होय अने (पचमए) के० ताराना विमानवासी देव अने देवीओ ए पाचमा जुगलनु जघन्य

आयुष्य अष्ट भाग के० पल्योपमना आठमा भागनुं जाणवुं. ए ज्योतिषी देव तथा देवीओनी जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति कही ॥ ७ ॥

हवे वैमानिक देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य दोढ गाथावडे कहे छे —

दो साहि सत्त साहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्कि महियमित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥ ८ ॥ तित्तीसणुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिई जिट्ठा ॥

अर्थ —पहेला सौधर्म देवलोकने विषे देवनानुं उत्कृष्ट आयुष्य ( दो ) के० बे सागरोपमनुं होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना छेल्ला तेरमा प्रतरमां निवास करनारा देवतानुं जाणवुं बीजा ईशान देवलोके पण तेरमा प्रतरे बे सागरोपम अने ( साहि ) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे. त्रीजा सनत्कुमार देवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य ( सत्त ) के० सात सागरोपमनुं छेल्ले प्रतर होय छे. ए प्रमाणे चोथा माहेन्द्र देवलोके सात सागरोपम अने ( साहि ) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे पांचमे ब्रह्मदेवलोके देवनानुं उत्कृष्ट आयुष्य ( दस ) के० दश सागरोपमनुं, छट्ठे लांतक देवलोके ( चउदस ) के० चउद सागरोपमनुं, अने सातमे शुक्र देवलोके देवनानुं उत्कृष्ट आयुष्य ( सतर अयर ) के० सत्तर सागरोपमनुं होय छे. एम ( जा सुक्को ) के० यावत् छट्ठा शुक्र देवलोक सुधी जाणवुं ( इत्तो ) के० त्यार पछी ( इक्किमहिय ) के० एक एक सागरोपमनी वृद्धि करवी ते ( जा ) के० ज्यां सुधी ( उवरि गेविज्जे ) के० उपरना नवमा

ग्रैवयके ( इगतीस ) के० एकत्रीश सागरोपमनु आयुष्य थाय ते कही देखाडे छे. आठमा सहस्रार देवलोके अढार सागरोपम, नवमा आनत देवलोके ओगणीश सागरोपम, दशमा प्राणत देवलोके वीश सागरोपम, अग्यारमा आरण देवलोके एकवीश सागरोपम, अने बारमा अच्युत देवलोके बावीश सागरोपमनु उत्कृष्ट आयुष्य होय छे. वली त्रण त्रण ग्रैवेयकना त्रण जोडला मली नव ग्रैवयक उपरा उपरी रहेला छे. तेमा नीचेना त्रणमाना नीचेना सुदर्शन ग्रैवेयके त्रेवीश, वच्चेना (बीजा) सुप्रतिष्ठ ग्रैवयके चोवीश अने उपरना त्रीजा मनोरम ग्रैवेयके पचीश सागरोपमनु आयुष्य होय छे, वच्चेना त्रणमाना नीचेना एटले चोथा सर्वभद्र ग्रैवेयके छवीश, वच्चेना एटले पाचमा सुविशाल ग्रैवेयके सत्यावीश अने उपरना एटले छट्ठा सोमनस ग्रैवेयके अठ्ठावीश सागरोपमनु आयुष्य होय छे तथा उपरना त्रणमाना नीचेना एटले सातमा सुमनस ग्रैवयके ओगणत्रीश, वच्चेना एटले आठमा प्रीयंकर ग्रैवेयके त्रीश अने उपरना नवमा आदित्य ग्रैवेयके एकत्रीश सागरोपमनु उत्कृष्ट आयुष्य होय छे ॥ ८ ॥ एहथी उपरना विजय वैजयत जयत अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध ए पाचे अनुत्तर विमानने विषे देवतानु ( तित्तिस ) के० तेत्रीश सागरोपमनु उत्कृष्ट आयुष्य जाणवु ( सोहम्माइसु ) के० सौधर्म देवलोकथी माडी पाच अनुत्तर विमान सुधीना वैमानिक देवतानी ( इमा ) के० आ ( ठिइ ठिइ ) के० उत्कृष्ट स्थिति कही

हवे वैमानिक देवोनु जघन्य आयुष्य वे गाथाथी कहे छे —

सोहम्मे ईसाणे, जहन्नठिई पलियमहियं च ॥ ९ ॥ दो साहि सत्त दस चउ-दस सत्तर अयराइ जा सहस्सारो ॥ तप्परओ इक्किक्क, अहियं जाणुत्तर-

चउक्के ॥ १० ॥ इगतीस सागराइ, सव्वट्ठे पुण जहन्नठिइ नत्थि ॥

अर्थ —( सोहम्मे ) के० सौधर्म देवलोकने विषे देवताओनी ( जहन्नठिई ) के० जघन्य आयुष्य ( पलिय ) के० एक पल्योपमनुं होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना तेरे प्रतरमां निवास करनाराने जाणवु. ( च ) क० अने ( ईसाणे ) क० ईशान देवलोकने विषे एक पल्योपम तथा ( अहिय ) के० एक पल्योपमनों असंख्यातमो भाग अधिक होय छे ॥ ९ ॥ त्रीजा सनत्कुमार देवलोके ( दो ) के० बे सागरोपमनु अने चोथा माहेन्द्रदेवलोक बे सागरोपम अने ( साहि ) के० काइक अधिक होय छे. पांचमा ब्रह्म देवलोक ( सत्त ) क० सात सागरोपमनु, छट्ठा लांतक देवलोके दस के० दश सागरोपमनु, सातमा शुक्र देवलोक ( चउदस ) के० चउद सागरोपमनु, एम ( जा सहस्सारो ) क० यावत् आठमा सहस्रार देवलोकने विषे ( सत्तर अयराइ ) क० सत्तर सागरोपमनु जघन्य आयुष्य होय छे. ( तप्परओ ) के० तेथी उपर आनतादि देवलोकने विषे ( इक्किक्कं अहिय ) के० एक एक सागरोपम वधारता जवु. ते ( जा णुत्तरचउक्के ) क० ज्यां सुधी चोथा अनुत्तर विमानने विषे एकत्रीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य थाय छे ते आ प्रमाणे—आनत देवलोके. अढार सागरोपमनु, प्राणत देवलोके ओगणीश सागरोपमनु, आरण देवलोके वीश सागरोपमनु, अने अच्युत देवलोक एकवीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य थाय छे. त्यारपछी नवे ग्रैवेयके एक एक सागरोपम वधारता नवमे ग्रैवेयके त्रीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य होय त्यार पछी विजय वैजयंत जयंत अने अपराजित ए चार अनुत्तर विमाने—॥ १० ॥ ( इग

तीससागराइ ) क० एकत्रीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य होय. ( पुण ) क० वली ( सवट्ठे ) के० सर्वार्थसिद्ध नामना पाचमा अनुत्तर विमानने विषे ( जहन्नठिइ नत्थि ) के० जघन्य आयुष्य नथी ॥

हवे वैमानिक देवीओ केटला देवलोक सुधी होय छे? तथा कटला प्रकारनी होय छे? ते अर्धी गाथा वडे कहे छे.

परिगहियाणियराणि य, सोहम्मीसाण देवीण ॥११॥

अर्थ —( देवीण ) क० वैमानिक देवीनी उत्पत्ति ( सोहम्मीसाण ) क० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकने विषे होय छे अने ते देवीओ बे प्रकारनी छे ( परिगहियाणिइयराणि य ) के० एक परिग्रहिता ते परणेली[१] कुलांगना सरखी अने बीजा अपरिग्रहिता ते साधारण गणिका सरखी जाणवी ॥ ११ ॥

हवे एक इन्द्रना भवमा कटली देवीओ उत्पन्न थइ मरण पामे? ते बे गाथावडे कहे छे

✓ दोकोडाकोडीओ, पचासी कोडी लक्ख इगसयरी ॥ कोडिसहस्स चउकोडि–सयाण अडवीसकोडीणं ॥ १२ ॥ सत्तावन्न लक्खा चउदससहस्साय दुस-

---

१ देवोमा मनुष्यवत् परणवानी विधी नथी परन्तु अमुक पद पतिदेवनीज ते देवी गणाती होवाथी पतिव्रतापणुं होय छे प्रथम पतिदेव चवी गयाथी बीजा तेज स्थान उपजनार देवने पुन पति तरीके अंगीकार करे तो पण पतिव्रतापणुं लोपाय नहि एवी देवलोकनी मर्यादा छ

यपंचासी ॥ इय सखा देवीओ, चवति इंदस्स जम्ममि ॥ १३ ॥

अर्थः—( दो कोडाकोडीओ ) के० बे क्रोडाक्रोड, ( पचासीकोडीलक्ख ) के० पचाशी क्रोड लाख, ( इगसयरि कोडी सहस्स ) के० एकोतेर क्रोड हजार, ( चउकोडि सयाण ) के० चार सो क्रोड अने ( अडवीस कोडीण ) के० अठावीस क्रोड ॥ १२ ॥ ( सत्तावन्न लक्खा ) क० सत्तावन लाख, ( चउदस सहस्सा ) क० चउद हजार ( य ) क० अने ( दुसय पंचासी ) के० वसो पचाशी २८५७१४२८५७१४२८५ ( इय सखा देवीओ ) के० एटली देवीओनी सख्या इंदस्स जम्ममि के० ॥ एक इंद्रना भवमा ( चवंति ) के० मरण पामे छे ॥ १३ ॥

हवे वैमानिक देवीओनु जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक गाथाथी कहे छे

पलिय अहिय च कमा, ठिई जहन्ना इओ य उक्कोसा ॥
पलियाइं सत्तपन्नास, तहय नव पंचवन्नाय ॥ १४ ॥

अर्थः—सौधर्म देवलोकने विषे ( इओ ) के० ए परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनी ( जहन्ना ठिइ ) के० जघन्य आयुष्य ( पलिय ) के० एक पल्योपमनु, ( च ) के० ईशान देवलोकने विषे परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनु जघन्य आयुष्य ( अहिय ) के० एक पल्योपमथी काइक अधिक ( कमा ) के० अनुक्रमे करीने जाणवु तथा सौधर्म देवलोक परिग्रहीता देवीओनु ( उक्कोसा ) के० उत्कृष्ट आयुष्य ( पलियाइ सत्त ) के० सात

पल्योपमनी अने अपरिग्रहीता देवीओनी ( पन्नास ) के० पचास पल्योपमनी आयुस्थिति होय छे ( नव ) क० तथा ईशान देव लोके परिग्रहीता देवीओनु ( नव ) क० नव पल्योपम अने अपरिग्रहीता देवीओनु ( पचवन्ना ) के० पंचावन पल्योपमनुं आयुष्य होय छे ॥ १४ ॥

सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवताने भोग्य एवी जे पतिव्रता देवीओ छे ते परिग्रहीता देवीओ कहवाय छे सौधर्म देवलोके अपरिग्रहीता देवीओना ■ लाख विमान छे. ते अपरिग्रहीना देवीओ गणिका जाति छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ त्रीजा पांचमा सातमा नवमा अने अग्यारमा देवलोकना देवोने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्यां जाय छे तथा ईशान देवलोके अपरिग्रहीता देवीओना चार लाख विमान छे. ए अपरिग्रहीता देवीओ चोथा छट्ठा आठमा दशमा अने बारमा देवलोकना देवने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्यां जाय छे.

हवे असुर कुमारादिक इंद्रोनी अग्रमहिषीओनी संख्या कहे छे

**पण छ चउ चउ अट्ठ य, कमेण पत्तेयमग्गमहिसीओ ॥**
**असुरा नागाइ वंतर-जोइस कप्प दुगिंदाण ॥ १५ ॥**

अर्थ —जे प्रधान पटराणी होय ते अग्रमहिषी कहवाय छे. तेमा भुवनपतिनी पहली निकायनी बे निकायमा रहनारा ( असुरो ) क० असुरकुमारना चमरेन्द्र तथा बलीन्द्र नामना बे इंद्र छे. तेमने एक एकने ( पण ) के० पांच पांच ( अग्गमहिसीओ ) क० अग्रमहिषीओ होय छे तथा ( नागाइ ) क० नागकुमार विगेरे बाकीना भुवनपतिनी नव निकाय छे तेना धरणेंद्र तथा भूतानंद विगेरे

अढार इन्द्र छे, तेमने दरेकने ( छ ) क० छ छ अग्रमहिषीओ छे. तथा ( वेंतर ) के० व्यन्तर देवतानी सोल निकायना काल महाकाल विगेरे बत्रीश इन्द्र छे तेमने दरेकने ( चउ ) क० चार चार अग्रमहिषीओ होय छे. तथा ( जोईस ) क० ज्योतिषीना चंद्र तथा सूर्य ए बे इन्द्रने ( चउ ) के० चार अग्रमहिषीओ होय छे. तथा ( कप्पदुगिंदाण ) क० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकना बे इन्द्र छे तेमने दरकने ( अट्ठ ) के० आठ आठ अग्रमहिषीओ होय छे सौधर्म तथा ईशान देवलोकथी उपरना देवलोकने विषे देवीनु उपजवु नथी, तेथी त्या परिग्रहीता देवीओ पण नथी. परतु ते देवलोकना इन्द्र तथा देवोने ज्यारे विषय सेववानी इच्छा थाय त्यारे तेमने यथायोग्य सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी अपरिग्रहीता देवीओ उपभोगने अर्थे थाय छे, माटे त्या अग्रमहिषीओनो संभव नथी ॥ १५ ॥

हवे देवलोकना प्रतरनी सख्या एक गाथावडे कहे छे'—

दुसु तेरस दुसु बारस, छ पण चउ चउ दुगे
दुगे य चउ ॥
गेविज्जणुत्तरे दस, बिसट्ठि पयरा उवरि लोए ॥१६॥

अर्थ —जेम घरने उपराउपर माल होय छे, तेम देवलोकमा उपराउपर प्रतर होय छे. पण मालनी पेठे एक प्रतरथी बीजा प्रतरनी वच्चे टेकारूप कंई न होय. देवलोकना दरेक प्रतरो आकाशमा निराधार होय. तेमा ( दुसु ) क० सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकना मलीने ( तेरस ) के० तेर प्रतर वलयाकार छे तेमा पूर्व महाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी रचमा अर्द्धवलयाकार खडथी अर्द्धो अर्द्ध खंड करवा, जेमां एक दक्षिण दिशानो खण्ड, अने

बीजो उत्तर दिशानो खण्ड तेमा दक्षिण दिशाना अर्द्धवलय खण्डना तेर प्रतर सौधर्मेन्द्रना जाणवा अने उत्तर दिशाना अर्द्ध-वलय खण्डना तेर प्रतर ईशानेंद्रना जाणवा [१] तेमज ( दुसु ) क० सनत्कुमार अने माहेंद्रने विषे मलेल्ा वलयाकार ( बारस ) के० बार प्रतर छे. अहिं पण अर्द्धांअर्द्ध करी दक्षिण दिशाना सनत्कु-मारेन्द्रना अने उत्तर दिशाना माहेन्द्रना प्रतर जाणवा ब्रह्म देव-लोके ( छ ) के० छ प्रतर, लातक देवलोके ( पण ) के० पांच प्रतर, शुक्र देवलोके ( चउ ) के० चार प्रतर, सहस्रार ( चउ ) के० चार प्रतर, तथा आनत अने प्राणत ए ( दुगे ) के० बे देव-लोकना मलीने ( चउ ) के० चार प्रतर, तथा आरण अने अच्युत ए ( दुगे य ) के० बे देवलोकना मलीने चार प्रतर जाणवा ए सर्व मलीने बावन प्रतर थया वली ( गेविज्ज ) क० नव ग्रैवेयक एक एक प्रतर गणता नव प्रतर थाय, अने ( अणुत्तरे ) के० पांचे अनुत्तर विमाने एक प्रतर ए ( दस ) क० दश प्रतर थया. ते पूर्वे कहेला बावन साथे मेलवता ( उडीर लोए ) के० उरध्न लोकने विषे ( विसहि पयरा ) के० बासठ प्रतर थाय छे ॥ १६ ॥

हवे प्रतरे प्रतरे जुदु जुदु उत्कृष्ट तथा जघन्य आयुष्य जाणवा माटे प्रथम सौधर्म देवलोक उपाय कहे छे.

सोहम्मुकोमठ्ठिइ, नियपयर विहत्त इच्छ सगुणिओ ॥

१ सौधर्मना १३ प्रतर अने ईशानना १३ प्रतर मळी २६ प्रतर न गणाय, पण १३ प्रतरज गणाय कारण के सौधर्मने साथे दक्षिण बाजुना १३ अर्धा प्रतर अने ईशान इन्द्रने साथे उत्तर बाजुना १३ अर्धा प्रतर मळी १३ आखा प्रतर थाय ए प्रमाणे त्रीजा चोथा आठमा नवमा दशमा अने अगीआर बारमा देवलोके पण जाणवु

पयरुक्कोसट्ठिइओ, सव्वत्थ जहन्नओ पलियं ॥ १७ ॥

अर्थ.—( सोहम्मुक्कोसठ्ठिर ) के० पहला सौधर्म देवलोकने विषे जे उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी छे तेने ( नियपयर ) के० पोताना तेर प्रतर साथे ( विहत्त ) के० वहेंचीने पछी ( इच्छ गुणिओ ) के० अहिं जे त्रीजा पाचमा अथवा सातमा प्रतरनु आयुष्य काढवाने इच्छेलु होय ते प्रतरनी साथे ज्यारे गुणाकार करीए त्यारे ( पयर ) के० ते प्रतरनी ( उक्कोसट्ठिइओ ) के० उत्कृष्ट स्थिति थाय. ते आ प्रमाणे–सौधर्म देवलोकना तेरमा प्रतरे उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति बे सागरोपमनी छे, तेमांथी एक एक सागरोपमना तेर तेर भाग करीये त्यारे बे सागरोपमना तेरीया छवीश भाग थाय, तेने तेर भागे वेहेंचता एक सागरोपमना तेरीया बे भागनु आयुष्य पहेले प्रतरे होय. एवीज रीते बीजा प्रतरनुं आयुष्य काढवु होय तो तेने ते साथे गुणीये तो एक पल्योपमना तेरीया चार भाग आवे तेवीज रीते त्रीजे प्रतरे छ भाग, चोथे आठ भाग, पाचमे दश भाग, छठ्ठे बार भाग, सातमे चउद भाग एटले एक सागरोपम अने उपर तेरीओ एक भाग, आठमे एक सागरोपम ने त्रण भाग, नवमे एक सागरोपम ने पाच भाग, दशमे एक सागरोपम ने सात भाग, अग्यारमे एक सागरोपम ने नव भाग, बारमे एक सागरोपम ने अग्यार भाग अने तेरमे प्रतरे बे सागरोपम संपूर्ण आयुष्य होय. एज प्रमाणे ईशान देवलोकने विषे पण प्रत्येक प्रतरमा आयुष्य काढवानो उपाय जाणवो, परन्तु एटलु विशेष छे के–ए देवलोकना पहेले प्रतरे सागरोपमना तेरीया बे भागथी काइक अधिक आयुष्य कहेवु. एम दरेक प्रतरे अधिक आयुष्य कहेतां तेरमे प्रतरे बे सागरोपम साधिक आयुष्य स्थिति थाय, अने ( सव्वत्थ ) के० सौधर्म देवलोकना सर्वत्र एटले तेरे

पल्योपमनी अने अपरिग्रहीता देवीओनो ( पन्नास ) के० पचास पल्योपमनी आयुस्थिति होय छे ( तह ) क० तथा ईशान देवलोके परिग्रहीता देवीओनु ( नव ) क० नव पल्योपम अने अपरिग्रहीता देवीओनु ( पचवन्ना ) क० पचावन पल्योपमनुं आयुष्य होय छे ॥ १८ ॥

सौधर्म तथा इशान देवलोकना देवताने भोग्य एवी जे पतिव्रता देवीओ छे ते परिग्रहीता देवीओ कहेवाय छे सौधर्म देवलोक अपरिग्रहीता देवीओना छ लाख विमान छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ गणिका जाति छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ त्रीजा पाचमा सातमा नवमा अने अग्यारमा देवलोकना देवोने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्या जाय छे. तथा ईशान देवलोके अपरिग्रहीता देवीओना चार लाख विमान छे. ए अपरिग्रहीता देवीओ चोथा छट्ठा आठमा दशमा अने बारमा देवलोकना देवने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्या जाय छे.

हवे असुर कुमारादिक इंद्रोनी अग्रमहिषीओनी संख्या कहे छे.

**पण छ चउ चउ अट्ठ य, कमेण पत्तेयमग्गमहिसीओ ॥**
**असुरा नागाइ वंतर-जोइस कप्प दुगिंदाण ॥ १९ ॥**

अर्थ —जे प्रधान पट्टराणी होय ते अग्रमहिषी कहेवाय छे. तथा भुवनपतिनी पहेली निकायनी दक्षिणोत्तर रहनारा ( असुरो ) के० असुरकुमारना चमरेंद्र तथा बलीन्द्र नामना बे इंद्र छे तेमने एक एकने ( पण ) क० पाच पाच ( अग्गमहिसीओ ) क० अग्रमहिषीओ होय छे. तथा ( नागाइ ) के० नागकुमार विगेरे बाकीना भुवनपतिनी नव निकाय छे तेना धार्णेद्र तथा भुतानंद्र विगेरे

अढार इंद्र छे, तेमने दरेकने ( छ ) के० छ छ अग्रमहिषीओ छे. तथा ( वतर ) के० व्यन्तर देवतानी सोळ निकायना काल महाकाल विगेरे बत्रीश इंद्र छे तेमने दरेकने ( चउ ) के० चार चार अग्रमहिषीओ होय छे. तथा ( जोईस ) के० ज्योतिषीना चंद्र तथा सूर्य ए बे इन्द्रने ( चउ ) क० चार अग्रमहिषीओ होय छे. तथा ( कप्पदुगिंदाण ) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकना बे इन्द्र छे तेमने दरेकने ( अट्ठ ) क० आठ आठ अग्रमहिषीओ होय छे सौधर्म तथा ईशान देवलोकथी उपरना देवलोकने विषे देवीनु उपजवु नथी, तेथी त्या परिग्रहीता देवीओ पण नथी. परतु ते देवलोकना इंद्र तथा देवोने ज्यारे विषय सेववानी इच्छा थाय त्यारे तेमने यथायोग्य सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी अपरिग्रहीता देवीओ उपभोगने अर्थे जाय छे, माटे त्या अग्रमहिषीओनो सभव नथी ॥ १५ ॥

हवे देवलोकना प्रतरनी सख्या एक गाथावडे कहे छे:—

दुसु तेरस दुसु बारस, छ पण चउ चउ दुगे
दुगे य चउ ॥
गेविज्जणुत्तरे दस, बिसट्ठि पयरा उवरि लोए ॥१६॥

अर्थ.—जेम घरने उपराउपर माळ होय छे, तेम देवलोकमा उपराउपर प्रतर होय छे. पण माळनी पेठे एक प्रतरथी बीजा प्रतरनी वच्चे टेकारुप कइ न होय. देवलोकना दरेक प्रतरो आकाशमा निराधार होय. तेमा ( दुसु ) के० सौधर्म अने इशान ए बे देवलोकना मळीने ( तेरस ) क० तेर प्रतर वलयाकार छे तेमा पूर्व महाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी रचना अर्द्धवलयाकार खडथी अर्दो अर्द्ध खंड करवा, जेमा एक दक्षिण दिशानो खण्ड, अने

बीजो उत्तर दिशानो खण्ड तथा दक्षिण दिशाना अर्द्धवलय खण्डना तेर प्रतर सौधर्मेन्द्रना जाणवा अने उत्तर दिशाना अर्द्धवलय खण्डना तेर प्रतर ईशानेंद्रना जाणवा[१] तेमज ( दुगु ) के० सनत्कुमार अने माहेंद्रने विषे मलेला वलयाकार ( बारस ) के० बार प्रतर छे. अहिं पण अर्द्धोअर्द्ध करी दक्षिण दिशाना सनत्कुमारेन्द्रना अने उत्तर दिशाना माहेन्द्रना प्रतर जाणवा. ब्रह्म देवलोके ( छ ) के० छ प्रतर, लांतक देवलोके ( पण ) के० पांच प्रतर, शुक्र देवलोके ( चउ ) के० चार प्रतर, सहस्रार ( चउ ) के० चार प्रतर, तथा आनत अने प्राणत ए ( दुगे ) के० बे देवलोकना मळीने ( चउ ) के० चार प्रतर, तथा आरण अने अच्युत ए ( दुगे य ) के० बे देवलोकना मळीने चार प्रतर जाणवा. ए सर्व मळीने बावन प्रतर थया. वळी ( गेविज्ज ) के० नव ग्रैवेयक एक एक प्रतर गणतां नव प्रतर थाय, अने ( अणुत्तरे ) के० पांचे अनुत्तर विमाने एक प्रतर ए ( दस ) के० दस प्रतर थया. ते पूर्वे कहेला बावन साथे मेळवतां ( उवरि लोए ) के० उपरना लोकने विषे ( दिसट्ठि पयरा ) के० बासठ प्रतर थाय छे ॥ १६ ॥

हवे प्रतरे प्रतरे जुदुं जुदुं उत्कृष्ट तथा जघन्य आयुष्य जाणवा माटे प्रथम सौधर्म देवलोके उपाय कहे छे

सोहम्मुकोसठिइ, नियपयर विहत्त इच्छ संगुणिओ ॥

१ सौधर्मना १३ प्रतर अने इशानना १३ प्रतर मळी २६ प्रतर न गणाय, पण १३ प्रतरज गणाय कारण के सौधर्मेन्द्रने तावे दक्षिण बाजुना १३ अर्धा प्रतर अने इशान इन्द्रने तावे उत्तर बाजुना १३ अर्धा प्रतर मळी १३ आखा प्रतर थाय. ए प्रमाणे त्रीजा चोथा आठमा नवमा दशमा अने अगीआर बारमा देवलोक पण जाणवु

पयरुकोसट्ठिइओ, सव्वत्थ जहन्नओ पलियं ॥ १७ ॥

अर्थः—( सोहम्मुकोसट्ठिइ ) के० पहला सौधर्म देवलोकने विषे जे उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी छे तेने ( नियपयर ) के० पोताना तेर प्रतर साथे ( विहत्त ) के० वहेंचीने पछी ( इच्छ सगुणिओ ) के० अहिं जे त्रीजा पांचमा अथवा सातमा प्रतरनु आयुष्य काढवाने इच्छेलु होय ते प्रतरनी साथे ज्यारे गुणाकार करीए त्यारे ( पयर ) के० ते प्रतरनी ( उकोसट्ठिइओ ) के० उत्कृष्ट स्थिति थाय. ते आ प्रमाणे—सौधर्म देवलोकना तेरमा प्रतरे उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति बे सागरोपमनी छे, तेमांथी एक एक सागरोपमना तेर तेर भाग करीये त्यारे बे सागरोपमना तेरीया छवीश भाग थाय, तेने तेर भागे वहेंचता एक सागरोपमना तेरीया बे भागनु आयुष्य पहेले प्रतरे होय. एवीज रीते बीजा प्रतरनु आयुष्य काढवु होय तो तेने ते साथे गुणीये तो एक पल्योपमना तेरीया चार भाग आने तेवीज रीते त्रीजे प्रतरे छ भाग, चोथे आठ भाग, पांचमे दश भाग, छठे बार भाग, सातमे चउद भाग एटले एक सागरोपम अने उपर तेरीओ एक भाग, आठमे एक सागरोपम ने त्रण भाग, नवमे एक सागरोपम ने पांच भाग, दशमे एक सागरोपम ने सात भाग, अग्यारमे एक सागरोपम ने नव भाग, बारमे एक सागरोपम ने अग्यार भाग अने तेरमे प्रतरे बे सागरोपम संपूर्ण आयुष्य होय. एज प्रमाणे ईशान देवलोकने विषे पण प्रत्येक प्रतरमां आयुष्य काढवानो उपाय जाणवो, परन्तु एटलु विशेष छे के—ए देवलोकना पहेले प्रतरे सागरोपमना तेरीया बे भागथी काइक अधिक आयुष्य कहेवु. एम प्रत्येक प्रतरे अधिक आयुष्य कहेता तेरमे प्रतरे बे सागरोपम साधिक आयुष्य स्थिति थाय, अने ( सव्वत्थ ) के० सौधर्म देवलोकना सर्वत्र एटले तेर

प्रतरने विषे ( जहन्नओ ) के० जघन्यथी ( पलिय ) के० एक पल्योपमनी आयुष्य स्थिति होय. तथा ईशान देवलोकना तेरे प्रतरने विषे जघन्यथी एक पल्योपम अधिक आयुष्य स्थिति होय छे ॥ १७ ॥

हवे सौधर्मेन्द्रना चार लोकपालोनुं उत्कृष्ट आयुष्य कहे छे

**सोमजमाण सतिभाग–पलियं वरुणस्स दुन्नि देसूणा ॥**
**वेसमणे दो पलिया, एस ठिइ लोगपालाण ॥ १८ ॥**

अर्थ —पूर्व दिशानो लोकपाल ( सोम ) के० सोम छे अने दक्षिण दिशानो लोकपाल ( जम ) के० यम छे ते बन्नेनुं उत्कृष्ट आयुष्य ( सतिभागपलिय ) के० एक पल्योपमना त्रीजा भाग सहित एक पल्योपमनुं छे. पश्चिम दिशानो ( वरुणस्स ) क० वरुण नामनो लोकपाल छे, तेनुं उत्कृष्ट आयुष्य ( दुन्नि देसूणा ) क० देशे उणा बे पल्योपमनुं छे तथा उत्तर दिशाना ( वेसमणे ) के० वैश्रमण नामना लोकपालनुं उत्कृष्ट आयुष्य ( दोपलिया ) क० बे पल्योपमनुं छे ए प्रमाणे ( लोगपालाण ) क० सौधर्मेन्द्रना चार लोकपालनी ( एस ठिइ ) के० ए उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति कही ॥ १८ ॥

ए लोकपालोना विमान केटला होय छे? ते एक गाथाथी कहे छे –

**अद्धतेरसलक्खा, विमाणमाण च लोगपालाण ॥**
**भणीय च पचभगे, बुहेहिं निच्च मुणेयव्व ॥ १९ ॥**

अथ —( च ) क० वली ( लोगपालाण ) के० ए लोकपालना[१] ( विमाणमाणं ) क० विमानोनुं प्रमाण एटले विमानोनी

---

१ इन्द्रना मोटा अधिकारीओ

लंबाई तथा पहोळाई ( अद्धतेरसलक्खा ) के० साडा बार लाख योजननी ( पचभंग ) के० भगवती सूत्रमां ( भणीय ) के० कही छे. त ( बुहेहिं ) के० विद्वानोए ( निच्च ) के० नित्य ( मुणेयव्वं ) क० जाणवु. ॥ १९ ॥

हवे बारे देवलोकना इन्द्रोने रहेवाना स्थानक कहे छे—

कप्पस्स अंतपयरे, नियकप्पवडिंसया विमाणाओ ॥
इंदनिवासा तेसिं, चउदिसि लोगपालाण ॥ २० ॥

अर्थ—( कप्पस ) के० दरेक देवलोकना ( अंतपयरे ) क० छेल्ला प्रतरना मध्यभागने[१] विषे ( नियकप्पवडिंसया ) क० पोत-पोताना कल्पने नामे अवतसक नामना ( विमाणाओ ) के० विमानो छे. जेमके—सौधर्म देवलोकना उपरना तेरमा प्रतरने विषे दक्षिण दिशाए मध्यभागे सुधर्मावतसक नामनुं विमान छे तेमज ईशान देवलोकना उपरना तेरमा प्रतरने विषे उत्तर दिशाए मध्य भागे ईशानावतसक नामनु विमान छे. एवी रीते सर्व देवलोकने विषे जाणवु परतु नवमा तथा दशमा देवलोकनो एक इन्द्र छे त्या चोथा प्रतर प्राणावतसक नामनु विमान छे अने अग्यारमा तथा बारमा देवलोकनो एक इन्द्र छे, त्या पण चोथा प्रतरे अच्युतावतं-सक नामनु विमान छे ते अवतसक नामना विमानोने विषे ( इंदनिवासा ) के० इन्द्रोनो निवास छे अने ( तेसिं ) के० ते विमाननी ( चउदिसि ) क० चार दिशाने विषे ( लोगपालाण ) क० ते सोम विगेरे चार लोकपालोनो निवास छे. एम सर्व देव-लोकने विषे जाणवु. ॥ २० ॥

---

१ पोतपोताना तावाना अधवच्च प्रतरना या पूण प्रतरना मध्य भाग

हवे सनत्कुमारादिक देवलोकना प्रत्येक प्रतरोने विषे जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति जाणवानो उपाय कहे छे.—

सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरविहत्त इच्छ संगुणिओ ॥
हिट्ठिल्लठिइसहिओ, इच्छियपयरंमि उक्कोसा ॥ २१ ॥

अर्थ —( सुरकप्प ) क० देवोना कल्प एटले देवताओने निवास करवाना बार देवलोक ते कल्प कहेवाय छे अने नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमान ते कल्पातीत कहेवाय छे. ते सुरकल्पना उत्कृष्ट आयुष्यनी जे ( ठिइ ) क० स्थिति छे तेनो ( विससो ) क० विश्लेष करवो, अर्थात् अधिक स्थितिमांथी ओछी स्थिति काढी नाखवी. एम कर्या पछी जे बचे तेने ( सग-पयरविहत्त ) के० पोत पोताना प्रतर करीने वहेंचोए पछी ( इच्छसंगुणिओ ) क० ए स्थाने वांछित प्रतर साथे गुणीए तेनो जे आवे आंक तेने ( हिट्ठिल्लठिइसहिओ ) क० हेठ्ठली उत्कृष्ट स्थिति साथे एकठो करीए त्यारे ( इच्छियपयरंमि ) क० इच्छित प्रतरने विषे ( उक्कोसा ) क० उत्कृष्ट स्थिति आवे.

ए वातने अहिं उदाहरण सहित समजावे छे के —पहेला सौधर्म देवलोकना तरम प्रतर उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति बे सागरो-पमनी छे अने सनत्कुमार देवलोकनु उत्कृष्ट आयुष्य सात सागरो पमनु छे, माटे सात सागरोपममांथी बे सागरोपमनी स्थिति बाद करीए त्यारे पांच सागरोपम सनत्कुमारना वास्ते रह्या पछी ते पांच सागरोपमने सनत्कुमारना बार प्रतर करीने वहेंचीए ते एवी रीते के—एक सागरोपमना बार बार भाग करवा, जेथी पांचे साग-रोपमना बारीया साठ भाग थाय अने ते साठे भागने बारे प्रतरे वहेंचीए त्यारे एक एक प्रतरे सागरोपमना बारीया पांच पांच

भाग आवे. पछी नीचेना सौधर्म देवलोकनी उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी छे ते तेनी साथे भेळीए त्यारे त्रीजा सनत्कुमार देवलोकना पहेला प्रतरनी बे सागरोपम अने एक सागरोपमना बारीया पांच भाग उपर एटली उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति थाय तेवीज रीते बीजा प्रतरे बे सागरोपम अने उपर बारीया दश भाग थाय त्रीजे प्रतर त्रण सागरोपम ने उपर बारीया त्रण भाग थाय ए प्रमाणे प्रतरे प्रतरे बारीया पांच पांच भाग वधारवा, जेथी छेल्ला बारमा प्रतर बराबर सात सागरोपमनु उत्कृष्ट आयुष्य थाय ए रीते माहेन्द्रे साधिक सात सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति कहेवी ए प्रमाणे उपरना सर्व देवलोकना प्रतरने विषे आयुष्य स्थिति काढवी ए आयुष्यनी स्थिति यंत्रमां आपी छे तेमांथी जोइ लेवी ॥ २१ ॥ अहिं देवताना आयुष्यनु प्रथम द्वार संपूर्ण थयु ॥

हवे देवगतिने विषे भुवन सम्बन्धी बीजु द्वार कहे छे—

अमुरा नाग सुवन्ना, विज्जु अग्गी य दीव उदही अ ॥
दिसि पवण थणिय दसविह, भवणवई तेसु
दुदु इंदा ॥ २२ ॥

अर्थः—चार निकायना देवतामां प्रथम भुवनपति देवताना भुवन कहेवाने माटे भुवनपतिनी दश जातिना नाम कहे छे. १ ( अमुरा ) के० असुर कुमार, २ ( नाग ) के० नाग कुमार, ३ ( सुवन्ना ) के० सुवर्ण कुमार ४ ( विज्जु ) के० विद्युत्कुमार, ५ ( अग्गीय ) के० अग्नि कुमार, ६ ( दिव ) के० द्वीप कुमार, ७ ( य ) के० अने ( उदही ) के० उदधि कुमार, ८ ( दिसि ) के० दिशि कुमार, ९ ( पवण ) के० वायु कुमार, अने १० ( थणिय )

क० स्तनित कुमार ए ( दस विह भवणवइ ) क० एम प्रकारना भुवनपति देवता छे. ( तेसु ) क० ते एक एक निकायने विषे एक दक्षिण श्रेणिनो अने एक उत्तर श्रेणिनो एम ( दुदु इंदा ) क० बे बे इन्द्रो छे ए दशे निकायना देवो कुमार एटले बालकनी पेठे क्रीडा करनारा छे, माटे दरेक नामनी साथे कुमार शब्द जोड्यो छे ॥ २२ ॥

हवे भुवनपतिनी दश निकायना वीश इन्द्रोना नाम कहे छे—

चमरे बली य धरणे, भूयाणंदे य वेणुदेवे य ॥
तत्तो य वेणुदाली, हरिकंते हरिस्सहे चेव ॥ २३ ॥
अग्गिसिह अग्गिमाणव, पुन्नविसिठे तहेव जलकंते ॥
जलपह तह अमि अगई, मियवाहण दाहि-
णुत्तरओ ॥ २४ ॥
वेलंबे य पभंजण, घोस महाघोस एसिमन्नयरो ॥
जंबुद्दीवं छत्तं, मेरु दंडं पहु काउं ॥ २५ ॥

अर्थ —अहिं ( दाहिणुत्तरओ ) के० दक्षिण श्रेणीनो इन्द्र अने उत्तर श्रेणीना इन्द्र एम दरेक निकायना बबे इन्द्रो कहेवा तेमना अनुक्रमे करीने नाम कहे छे. पहेली असुरकुमार निकायनी दक्षिण दिशानो ( चमरे ) क० चमरेन्द्र ( य ) के० अने उत्तर दिशानो ( बली ) के० बलीन्द्र, बीजी नागकुमार निकायनी दक्षिण दिशानो ( धरणे ) के० धरणेन्द्र ( य ) के० अने उत्तर दिशानो ( भूयाणंदे ) के० भूतानंद. ( य ) क० वली त्रीजी सुवर्ण कुमार निकायनी दक्षिण दिशानो ( वेणुदेवे ) क० वेणुदेवेन्द्र अने उत्तर

दिशानो ( वेणुदाली ) क० वेणुदालिन्द्र. ( तत्तो ) क० त्यारपछी चोथी विद्युत्कुमार निकायनी दक्षिण दिशाने वि( हरिकंते ) क० हरिकंतेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे ( हरिस्सह ) के० हरिसहेन्द्र ( चेव ) क० निश्चयथी जाणवा. ॥ २३ ॥ पांचमी अग्नि कुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे ( अग्गिसिह ) क० अग्निशिखेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे ( अग्गिमाणव ) क० अग्निमानवेंद्र. छट्ठी द्वीपकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे ( पुन्न ) के० पूर्णेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे ( विसिट्ठे ) के० विशिष्टेन्द्र ( तहेव ) के० तेमज सातमी उदधिकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे ( जल कंते ) के० जलकंतेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे ( जलपह ) क० जलप्रभेन्द्र ( तह ) के० तेमज आठमी दिशिकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे ( अमिअगई ) के० अमितगतीन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे ( अमियवाहण ) क० अमितवाहनेन्द्र-॥ २४ ॥ ( य ) क० वली नवमी वायुकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे ( वेलंबे ) क० वेलंबेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे ( पभंजण ) के० प्रभंजनेन्द्र. दशमी स्तनितकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे ( घोस ) क० घोषेंद्र अने उत्तर दिशाने विषे ( महाघोस ) क० महाघोषेन्द्र. ( एसिं ) के० ए वीश इन्द्रमांथी ( अन्नयरो ) क० कोइ इन्द्र जो पोतानी शक्ति फोरवे तो ते ( जंबुदीव ) क० जंबुद्वीपने ( छत्त ) क० छत्राकार करवाने तथा ( मेरु ) क० मेरुपर्वतने ( दंड काउं ) क० दंड करवाने ( पहु ) क० समर्थ थाय छे. अर्थात् ते इन्द्र पृथ्वीनु छत्र करी अने मेरुपर्वतनो दंड करी डाबा हाथे धारण करे तो पण तेना शरीरने कांई प्रयास जणाय नहीं. छतां कोइ वखत एवी शक्ति फोरवी जंबुद्वीपने छत्राकार कर्युं नथी, करता नथी ने करशे पण नहिं.

हो असुर कुमारादिक निकायोनी दक्षिण श्रेणीनी भुवन संख्या कहे छे—

चउतीसा चउचत्ता, अठ्ठतीसाय चत्त पंचण्ह ॥
पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणओ ॥२५॥

अर्थ —असुर कुमारना ( चउतीसा ) क० चोत्रीश लाख, नाग कुमारना ( चउचत्ता ) क० चुमालीश लाख, सुवर्ण कुमारना ( अठ्ठतीसाय ) के० आडत्रीस लाख, वली विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार, उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए ( पंचण्ह ) के० पांचे निकायना ( चत्त ) क० चालीश चालीश लाख भुवन छे. तथा पवनकुमारना ( पन्ना ) क० पचास लाख अने स्तनितकुमारना ( चत्ता ) के० चालीश लाख भुवन छे, ए ( कमसो ) के० अनुक्रमे करीने ( दाहिणओ ) क० दक्षिण श्रेणीना ( भवणाण ) के० भुवनोना ( लक्खा ) के० लाखोनी संख्या कही. ॥ २६ ॥

हवे उत्तर श्रेणीना भुवननी संख्या कहे छे —

चउ चउ लक्ख विहूणा, तावइया चेव उत्तर दिसाए ॥
सव्वेवि सत्त कोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥२७॥

अर्थ —दशे निकायनी दक्षिण श्रेणीए जे भुवन संख्या कही छे. तेमा एक एकमाथी ( चउ चउ लक्ख विहूणा ) के० चार चार लाख ओछा कर्या थका शेष जे जे निकायना जेटला जेटला भुवन रहे ( तावइया ) के० तेटला तेटला ( उत्तर दिसाए ) के० उत्तर दिशानी निकायने विषे ( चेव ) के० निश्चे होय छे. ते आ

प्रमाणे असुरकुमारनां त्रीश लाख, नागकुमारना चालीश लाख, सुवर्णकुमारना चोत्रीश लाख, पछी विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्विपकुमार उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए पांचेना छत्रीस छत्रीस लाख, पवनकुमारना छेंतालीस लाख, अने स्तनितकुमारना छत्रीसलाख भुवन उत्तर दिशाए छे, ( सव्वेवि ) के० ए दक्षिण तथा उत्तर बन्ने श्रेणिना मळी ने ( सत्तकोडी ) के० सात क्रोड यके० अने ( बावत्तरी लख्खा ) क० बहोंतेर लाख भुवन हुंति क० होय छे ॥ २७ ॥

हवे एज दश निकायनी दक्षिण तथा उत्तर श्रेणीनी जुदी जुदी भुवन संख्या कहे छे —

चत्तारिय कोडीओ, लख्खा छचेव दाहिणे भवणा,
तिन्नेव य कोडीओ, लख्खा छावट्ठी उत्तरओ ॥२८॥

अर्थ —(चत्तारि कोडीओ) के० चार क्रोड यक० अने (छ लख्खा) के० छ लाख, (दाहिणे) के० दक्षिण दिशामां, (भवण) के० भुवनो, (चेव) क० निश्चे थाय छे, तथा (तिन्नेव कोडीओ) के० त्रण क्रोड, यके० (छावट्ठी लख्खा) के० छासठलाख भुवनो, (उत्तरओ) के० उत्तर दिशा तरफ होय छे ॥ २८ ॥

हवे ए पूर्वोक्त भुवन क्यां छे ? ते स्थानक कहे छे —

रयणाए हिठुवरि, जोयण सहस्स विमुत्तु ते भवणा ॥
जंबुद्दीप समा तह, संखममखिज्जवित्थारा ॥ २९ ॥

अर्थ —रयणाए के० रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख अने एंसीहजार योजन जाडपणे छे, तेमांथी, (हिट्ठुवरि) के० हेठे ने उपर. (जोयण सहस्स विमुत्तु) क० एक एक हजार योजन

मुकीने वचमाना एक लाख अठोतेर हजार जोजनमाह, ते के०
ते भुवनपति देवोना, (भवणा) के० भुवनो छे तेमा नाना भुवनो
(जंबुदीव समा) क० जंबुद्विप सरखा छे (तह) के० तथा मध्यम
भुवनो ते, (सख) के० संख्यात कोडी योजन प्रमाण छे, तथा
उत्कृष्टते (असंखिज्ज) के० असंख्याता कोडा कोडी योजन प्रमाण,
(विथारा) के० विस्तारवंत होय छे ॥ २९ ॥

हवे प्रथम देवोमा पोतपोतानो निकाय जाणी शकाय माटे
असुरादिक दश निकायना देवोना मुकुटादिक आभूषणने विषे
चिन्हो होय छे ते कहे छे —

चूडामणि फणि गरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्सेय, ॥
गय मगर वद्धमाणे असुराइग मुणसु चिण्ह ॥ ३० ॥

अर्थ —असुरकुमारना मुकुटने विषे, (चूडामणि) के० चूडा-
मणिनु चिन्ह छे नागकुमारना आभूषणने विषे, (फणि) के०
सर्पनु चिन्ह छे सुवर्णकुमारना आभूषणने विषे, (गरुड) के० गरुडनु
चिन्ह छे विद्युत्कुमारना मुकुटमा, (वज्जे) के० वज्रनु चिन्ह छे
(तह) के० तथा अग्निकुमारना आभूषणमा, (कलस) के० कलसनु
चिन्ह छे द्विपकुमारना आभूषणमा (सीह) के० सिंहनु चिन्ह छे,
उदधिकुमारना मुकुटने विषे के० (अस्सेय०) अश्वनु चिन्ह छे, दिशि-
कुमारना मुकुट विषे, (गय) क० हाथीनु चिन्ह छे, वायुकुमारना
आभूषणने विषे, (मगर) के० मगरनु चिन्ह छे स्तनितकुमारना
आभूषणने विषे, (वद्धमाणे०) के०सरावसंपुटनु चिन्ह छे ए प्रमाणे
(असुराईण) क० असुरादिक दश भुवन पतिना (चिण्ह) के० चिन्ह
(मुणसु) के० जाणवा ॥ ३० ॥

हवे एज असुरादिक दश प्रकारना भुवनपति देवोना
शरीरनो वर्ण कहे छे —

अमुरा कालानागु, दहिपडुरा तह सुवन्न दिसि थणिया–
कणगाभ विज्जु सिहि दीव, अरुणा वाउ पियगु
निभा ॥ ३१ ॥

अर्थ —असुराकाला के० असुरकुमारनां शरीर काला वर्ण होय छे, (नागुदहि) के० नागकुमार अने उदधिकुमार ए वन्नेना शरीर, (पडुरा) के० गौर वर्ण छे तह के० तेमज, सुवन्न के० सुवर्णकुमार (दिसि) के० दिशिकुमार तथा (थणिया) के० स्तनितकुमार ए त्रणना शरीर (कणगाभ) के० सुवर्णकांति समान होय छे (विज्जु) के० विद्युत्कुमार (सिहि) के० अग्निकुमार (दीव) के० द्वीपकुमार ए त्रणना शरीर( अरुणा) के० राता वर्ण छे तथा (वाउ) के० वायुकुमारना शरीरनी कांति (पियगु) निभा के० पियगु वृक्षना वर्ण समान होय छे नील होय छे ॥ ३१ ।

हवे असुरकुमारादिकना वस्त्रोनो वर्ण कहे छे —

असुराण वत्थरत्ता, नागोदहि विज्जु दीव सिहि नीला ॥
दिसि थणिय सुवन्नाण, धवला वाउण सझरुइ ॥ ३२ ॥

अर्थ —असुराण के० असुरकुमारना वस्त्र के० वस्त्र, (रत्ता) के० राता होय छे, (नागोदहि) के० नागकुमार अने उदधिकुमार तथा (विज्जु) के० विद्युत्कुमार (दीव) के० द्विपकुमार (सिहि) के० अग्निकुमार ए पांचेना वस्त्रो नीला के० नील वर्ण होय छे, दिसि के० दिशिकुमार (थणिय) के० स्तनितकुमार अने (सुवन्नाण) के० (सुवर्ण) कुमार ए त्रणेना वस्त्रो (धवला) के० उज्वल होय छे तथा (वाउण) के० वायुकुमारना वस्त्र (सझरुइ) के० संध्याना रंग सरखा छे

हवे भुवनपति विगेरे दशे निकायना इंद्रोना सामानिक देवोनी तथा आत्मरक्षक देवोनी संख्या कहे छेः—

चउसट्ठि सट्ठि असुरे, छच्चसहस्सा धरइण माइण ॥
सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा आय रक्खाय ॥ ३३ ॥

अर्थ —असुर के असरकुमार निकायना वे इन्द्र छे तेमा पहला चमरन्द्रने (चउसट्ठि) के० चोसठ हजार अने बलीन्द्रने (सट्ठि) के० साठ हजार तथा (धरणमाइ) के० धरणेन्द्र विगेरे अढारहजार इन्द्रने (छच सहस्साइ) के० छ हजार (सामाणिया) के० सामानिक देवता छे, (य) के० अने (इमेसिं) के० ए सामानिक देवोथी (चउग्गुणा) के० चार गुणा (आयरक्खा) के० आत्मरक्षक देवों होय छे ॥ ३३ ॥ एम भुवनपतिनी दशे निकायना नाम, इन्द्र, भुवनसंख्या, चिन्ह, वर्ण, वस्त्र, सामानिक देव अने आत्मरक्षक विगेरेनी वक्तव्यता कही

हवे व्यंतरदेवोनी वक्तव्यता कहता थका प्रथम व्यंतर देवोना भुवन कहे छे —

रयणाए पढम जोयण–सहसे हिट्ठुवरि सय सय विहूणे॥
वंतरियाण रम्मा, भोमा नगरा असंखिज्जा ॥ ३४ ॥

अर्थ —( रयणाए ) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना पिंडना ( पढम ) के० प्रथम उपरना जोयण ( सहसे ) के० जे एक हजार योजन मूक्या छे, तेमाथी ( हिट्ठुवरि सय सय विहूणे ) के० हठे अने उपर सो सो योजन मूकीए वचमा आठसो योजन रह्या, तेमा ( वंतरियाण ) के० व्यंतर देवोना ( भोमा ) के० पृथ्वीकाय सबंधी ( रम्मा ) के० रमणिक ( असंखिज्जा ) के० असंख्याता ( नगरा ) के० नगरो छे ॥ ३४ ॥

हवे व्यंतर देवोना घरना आकार कहे छे —

✓ बाहिं वट्टा अंतो, चउरंस अहो अ कण्णियायारा ॥
भवणवइण तह वतराण, इंद भवणाओ नायव्वा ॥३५॥

अर्थ —भवनपतिदेवोना नगरो ( बाहिं ) के० बाहेरना भागे ( वट्टा ) के० वृत्त एटले गोळ आकारवाळा छे, अने ( अंतो ) के० माहेला भागे ( चउरंस ) के० चोखूणा छे ( अ ) के० वळी ( अहो ) के० अधोभागे एटले नीचेना भागे ( कण्णियायारा ) के० कमलनी कर्णिकाना आकार छे ए उपर कहेली आकृतीवाळा ( भवणवईण ) के० भवनपतिना ( तह ) के० तथा ( वतराण ) के० व्यतरदेवोना ( इंदभवणाओ ) के० इन्द्रना भुवनो ( नायव्वा ) के० जाणवा ॥ ३५ ॥

तहिं देवा वंतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेण ॥
निच्चं सुहिया पमुइया, गयपि कालं न याणंति ॥३६॥

अर्थ —( तहिं ) के० ते भुवनोमा ( देवा वतरिया ) के० व्यन्तरिक देवताओ ( वरतरुणी ) के० अति सुन्दर देवागनाओना ( गीयवाइयर वेण ) के० मधुर गीत अने बत्रीसबद्ध नाटक सहित मृदंगादिक वाजित्रना शब्दथी ( निच्चं ) के० नित्य ( सुहिया ) के० सुखी छता अने ( पमुइया ) के० हर्षवंत छता ( गयपि काल ) के० गयेला कालने ( न याणंति ) के० नथी जाणता ॥ ३६ ॥

हवे ते व्यन्तर देवोना नगरोनु प्रमाण तथा निकायना नाम कहे छे—

ते जंबुदीव भारह—विदेह सम गुरु जहन्न मज्झिमगा ॥
वंतर पुण अट्ठविहा, पिसाय भूया तहा जक्खा ॥३७॥

रक्खस किन्नर किंपुरिसा, महोरगा अठ्ठमा य गंधव्वा ॥
दाहिण उत्तर भेया, सोलस तेसिं इमे इंदा ॥ ३८ ॥

अर्थ—ते व्यंतर देवोना (नगरो) जे (गुरु) के० महोटां छे ते (जंबुदीव) के० जंबुद्वीप जेवडा एक लाख योजन प्रमाण गोळ आकारवाला छे तथा जे (जहन्न) के० जघन्य नगरो छे ते (भारह) क० भरतक्षेत्र जेवडा एटले ५२६ योजन तथा एक योजनना ओगणीशा छ भाग उपर छे, अने (मज्झिमगा) क० मध्यम भुवनो छे ते (विदेहसम) के० महाविदेह क्षेत्र समान एटले ३३६८४ योजन अने एक योजनना ओगणीशा चार भाग उपर एवडा महोटा छे (पुण) क० वळी ते नगरोमा रहेनारा (वंतर) के० व्यंतर देवो (अठ्ठविहा) क० आठ प्रकारना छे तेमना नाम कहे छे १ (पिसाय) क० पिशाच, २ (भूया) के० भूत, (तहा) क० तथा ३ (जक्खा) क० यक्ष ॥ ३७ ॥ ४ (रक्खस) के० राक्षस, ५ (किंनर) क० किन्नर, ६ (किंपुरिसा) क० किंपुरुष, ७ (महोरगा) क० महोरग, (य) क० अने ८ (अठ्ठमा) क० आठमा (गंधव्वा) क० गंधर्व (दाहिण उत्तर भेया) के० दक्षिण अने उत्तर एवा बे भेदथी (तेसिं) के० तेमना (इमे) क० आगली गाथामां कहेवाशे ते नामना सोलस इंदा क० सोळ इन्द्रो छे ॥ ३८ ॥ अहिं ए आठेना प्रतिभेद कहे छे—

सुन्दर आकृतिवाळा, जोनारने आनंद उपजावनारा, हाथ तथा कंठमा रत्नना आभूषणोने धारण करनारा कुष्माड, पटक, जोष, आन्हिक, काल, महाकाल, चोक्ष, अचोक्ष, तालपिशाच,

सुरूपिशाच, अवस्तारक, देह, महादेह, तुदशीक अने वनपिशाच ए पदर प्रकारना पिशाच देवो छे ॥ १ ॥

रूपवत, सुन्दर मुखवाला अने विविध लेपनने धारण करनारा स्वरूप, प्रतिरूप, अतिरूप, भूतोत्तम, स्कदिक, महास्कंदिक, महावेग, प्रतिछन्न अने आकाशगा ए नव प्रकारना भूतदेवो छे ॥ २ ॥

गभीर स्वभाववाला, प्रीय देखाववाला, शरीरना मानोन्मान प्रमाणवाला, हाथपगना तलीया, नख, तालु, जीभ, होठ ए जेमना राता छे एवा, सुन्दर मुकुट तथा विचित्र आभूषणोने धारण करनारा एवा पूर्णभद्र, माणिभद्र, श्वेतभद्र, हरिभद्र, सुमनोभद्र, व्यतिपाकभद्र, सुभद्र, सर्वतोभद्र, मनुष्ययक्ष, वनाधिप, वनाहार, रूपयक्ष अने यक्षोत्तम ए तेर भेद यक्ष देवोना छे. ॥३॥

भयकर स्वभाववाला, भयकर देखाववाला, विकराल राता लाबा होठवाला, झल्हलता आभूषणवाला, नाना प्रकारना विलेपनवाला एवा भीम, महाभीम, विघ्न, विनायक, जलराक्षस, यक्षराक्षस अने ब्रह्मराक्षस ए सात प्रकारना राक्षस देवो छे. ॥ ४ ॥

शात आकृतिवाला, सुन्दर मुखवाला अने मस्तक उपर मुकुटने धारण करनारा एवा किंनर, किंपुरुष, किंपुरुषोत्तम, हृदयगम, रूपशालिन, अनिंदित, किंनरोत्तम, मनोरम, रतिप्रिय अने रतिश्रेष्ट ए दश प्रकारना किंनर देवो छे. ॥ ५ ॥

जेमना साथल अने भुजाओ रूपवत छे, सुन्दर मुख शोभावाला तथा नाना प्रकारना आभूषणोने धारण करनारा एवा पुरुष, सत्पुरुष, महापुरुष, पुरुषवृषभ, पुरुषोत्तम, अतिपुरुष, महादेव, मरुत, मेरुप्रभ अने यशस्वत ए दश प्रकारना किंपुरुष छे. ॥६॥

अति रूपवाला, सुन्दर आकृतिवाला, महोटा शरीरवाला, पुष्ट विस्तारवंत स्कन्ध ग्रीवावाला अने विचित्र आभूषणोने धारण करनारा एवा भुजग, भोगशालिन, महाकाय, अतिकाय, स्कन्ध शालिन, मनोरम, महावेग, महेश्वक्ष, मेरुकांत अने भास्वत ए दश प्रकारना महोरग देवो छे ॥ ७ ॥

सुन्दर आकृतिवाला, श्रेष्ठ मुखवाला, भीय शब्दवाला, मस्तकने विषे मुकुट अने कंठने विषे हारने धारण करनार एवा हाहा, हूहू, तुंबर, नारद, रपिवादक, भूतवादक, कादंब, महाकादंब, रैवत विश्वावसु, गीतरति अने गीतयश ए चार प्रकारना गन्धर्व देवो छे, ए व्यंतरदेवोना प्रतिभेद कह्या

हवे व्यंतर देवोना सोल इन्द्रोना नाम बे गाथावडे कहे छे —

काले य महाकाले सुरूव पडिरूव पुन्नभद्दे य ॥
तह चेव माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ॥ ३९ ॥
किन्नर किंपुरिसे सप्पु–रिसा महपुरिस तहय अइकाए ॥
महकाए गीयरई, गीयजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥ ४० ॥

अर्थ —पिशाच निकायमा दक्षिण दिशाए ( काले ) क० कालेंद्र अने ( य ) क० वळी उत्तर दिशाए ( महाकाले ) क० महाकालेन्द्र, भूतनिकायमा दक्षिण दिशाए ( सुरूव ) के० स्वरूपेंद्र अने उत्तर दिशाए ( पडिरूव ) क० प्रतिरूपेन्द्र, ( य ) क० अने यक्षनिकायमा दक्षिण दिशाए ( पुन्नभद्द ) क० पूर्णभद्र अने उत्तर दिशाए ( तह चेव ) क० तेवीज रीते निश्चे ( माणिभद्द ) क० माणिभद्र, य क० वळी तहा क० ( तथा ) राक्षस निकायमा दक्षिण दिशाए ( भीम ) क० भीमेन्द्र अने उत्तर दिशाए ( महाभीमे )

के० महाभीमेन्द्र ॥ ३९ ॥ किंनर निकायमां दक्षिण दिशाए ( किंनर ) क० किंनरेन्द्र अने उत्तर दिशाए ( किंपुरिसे ) के० किंपुरुषेन्द्र, तथा किंपुरिष निकायमा दक्षिण दिशाए ( सप्पुरिसा ) के० सत्पुरुषेन्द्र अने उत्तर दिशाए ( महापुरिस ) के० महापुरुषेन्द्र, ( तहय ) के० तेमज महोरग निकायमा दक्षिण दिशाने विषे ( अइकाए ) क० अतिकायेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे ( महकाए ) के० महाकायेन्द्र, गधर्व निकायमा दक्षिण दिशाने विषे ( गीयरई ) के० गीतरतींद्र अने उत्तर दिशाने विष ( गीयजसे ) क० गीतयशेंद्र ए प्रमाणे आठ निकायमां ( कमा ) क० अनुक्रमे करीने ( दुन्नि दुन्नि ) के० बबे इंद्रो होय छे ॥ ४० ॥

हवे ए पिशाचादिक आठ निकायना व्यंतर देवोनी ध्वजामा चिन्ह होय ते कहे छे —

चिधं कलब सुलसे, वड खट्टगे असोग चपयए ॥
नागे तुंबरु अ झए, खट्टंगविवज्जिया रुक्खा ॥ ४१ ॥

अर्थः—पिशाचने ( कलंब ) के० कदंब वृक्षनु चिन्ह, भूतने ( सुलसे ) के० सुलस वृक्षनु चिन्ह, यक्षने ( वड ) क० वडवृक्षनु चिन्ह राक्षसने ( खट्टगे ) के० तापसना पात्रनु चिन्ह, किंनरने ( असोग ) के० अशोक वृक्षनु चिन्ह, किंपुरुषने ( चपयए ) के० चंपक वृक्षनु चिन्ह, महोरगने ( नागे ) के० नाग वृक्षनुं चिन्ह, गधर्वने ( तुंबरु अ ) के० वळी तुंबराना वृक्षनु चिन्ह होय छे. ए सर्वे ( चिंध ) के० चिन्ह ( झए ) के० ध्वजामा होय छे तेमा ( खट्टगविवज्जिया ) के० खट्टगने वर्जीने बाकीना सर्वे चिन्हो रुक्खा क० वृक्षो छे अने खट्वांग ए तापसनु उपकरण छे. ॥४१॥

हवे ए व्यंतर देवोना शरीरनो वर्ण कहे छे —

जक्ख पिसाय महोरग, गधव्वा साम किनरा नीला ॥
रक्खस किंपुरिसा वि य, धवला भूया पुणो काला ॥४२॥

अर्थ —( जक्ख ) क० यक्ष, ( पिसाय ) के० पिशाच, ( महोरग ) क० महोरग, ( गधव्वा ) क० गधर्व ए चारनो वर्ण ( साम ) के० श्याम एटले किंचित् कृष्णवर्ण जाणवो ( किंनरा ) क० किंनरो ( नीला ) क० श्याम पण किंचित् नील वर्णवाला जाणवा. ( रक्खस ) क० राक्षस अने ( किंपुरिसावि य ) के० किंपुरुष पण ( धवला ) क० उज्वल वर्णवाला होय छे ( पुणो ) क० वली ( भूया ) क० भूतदेवो ( काला ) के० कृष्णवर्णवाला होय छे. ॥ ४२ ॥

हवे बीजा आठ जातिना व्यन्तर देवो छे, ते कहे छे —

रयणाए जोयणसए, हिठुवरि दस दस ठाइए चेव ॥
वतरियाण निकाया, भवणासखा सुए भणिया ॥ ४३ ॥

अर्थ —( रयणाए ) क० रत्नप्रभा पृथ्वीना पिंड माहेला ( जोयणसए ) के० पहेला सो योजनमा ( हिठुवरि ) के० नीचे अने उपर ( दस दस ठाइए चेव ) क० निश्चय दश दश योजन मूकीय बाकीना एसी योजनमा वतरियाण ( निकाया ) क० व्यन्तर देवतानी आठ निकायो छे तेमा ( भवणासखा ) के० व्यतर देवोना असख्य भुवनो ( सुए भणिया ) के० सूत्रमा कह्या छे ॥ ४३ ॥

अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाई भूयवाइए चेव ॥
कंदी य महाकंदी, कोहंडे चेव पयए य ॥ ४४ ॥

अर्थ —१ ( अणपन्नी ) क० अणपन्नी निकाय, २ ( पण-

पन्नी ) के० पणपन्नी निकाय, ३ ( इसिवाई ) के० ऋषिवादी निकाय, ४ ( भूयवाइय ) के० भूतवादी निकाय, ( चेव ) के० निश्चे, ५ ( कंदी य ) के० वली क्रन्दित निकाय, ६ ( महाकंदी ) के० महाक्रन्दित निकाय ७ ( कोहंडे ) के० कोहंडिक निकाय, ( चेव ) के० निश्चेय ८ ( पयए य ) के० वली पतग निकाय ए व्यंतर देवोनी आठ निकाय जाणवी ॥ ४४ ॥

इय पढमजोयणसए, रयणाए अट्ठ वंतरा अवरे ॥
तेसु इह सोलसिंदा, रुअगअहो दाहिणुत्तरओ ॥ ४५ ॥

अर्थ —( इय ) के० ए आठ निकाय ते ( रयणाए ) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना ( पढमजोयणसए ) के० पहेला सो योजन माहेला वचला एसी योजनमा वसनारा ( अट्ठ वंतरा ) के० आठ जातिना व्यंतर ते पूर्वे कह्या व्यंतरोथी ( अवरे ) के० बीजा अर्थात् वाणव्यंतर देवो जाणवा. ( इह ) के० अहिं ( तेसु ) के० ते व्यंतर देवताने विषे आठ निकायना ( सोलसिंदा ) के० शोल इंद्रो ( रुअगअहो ) के० रुचक प्रदेशथी दश योजन नीचे एसी योजनमा दाहिणुत्तरओ के० दक्षिण अने उत्तर दिशाना भेदे करीने जाणवा ॥ ४५ ॥

हवे बे गाथावडे शोल इंद्रोना नाम कहे छे —

सन्निहिए सामाणे, धाइ विहाए इसी य इसिवाले ॥
ईसर महेसरे वि य, हवइ सुवत्थे विसाले य ॥ ४६ ॥

हासे हासरई वि य, सेए य भवे तहा महासेए ॥
पयगे पयगवई वि य, सोलस इंदाण नामाणि ॥ ४७ ॥

अर्थ —१ ( सन्निहिए ) के० सन्निहितेंद्र, २ ( सामाणे )

क० सामानेंद्र, ३ ( धाइ ) क० धाता इंद्र, ४ ( विहार ) के० विधाता इंद्र, ५ ( इसी य ) के० वळी ऋषि इंद्र, ६ ( इसिवाले ) क० ऋषिपालेंद्र, ७ ( ईसर ) क० ईश्वरेन्द्र, ८ ( महसरे ) के० महेश्वरेन्द्र, ( वि य ) क० निश्चय ( हवइ ) के० होय. ९ ( सुवच्ये ) क० सुवत्सेंद्र, ( य ) क० अने १० ( विसाले ) क० विशालेन्द्र. ॥ ४६ ॥ ११ ( हासे ) क० हास्य इंद्र, १२ ( हासरई ), के० हास्यरति इंद्र, ( वि य ) क० वळी १३ ( सेर ) क० श्वेतइंद्र, ( भव ) क० होय. ( तहा ) के० तेमज १४ ( महासेए ) के० महाश्वेत इंद्र, १५ ( पयग ) क० पतग इंद्र, १६ ( पयगवइ ) के० पतगपति इंद्र ए वि य क० निश्चय ( सोळसइंदाण ) क० सोळ इंद्रोना ( नामाणि ) क० नाम कह्यां. ॥ ४७ ॥

आ वाणव्यन्तर देवोना सोळ इंद्र कह्या. तेनी पहेला व्यन्तर देवोना पण सोळ इंद्रो कह्या छे सव मळी बत्रीस इन्द्र थया तेमनी साथे भुवनपतिना वीश, सूर्य चंद्रना बे अने वैमानिकना दश मळी चोसठ इंद्रो गणाय छे.

हवे व्यन्तर तथा ज्योतिषि देवोना सामानिक अने आत्मरक्षक देवो सरखा छे, माटे साथे सरख्या कहे छे —

**सामाणियाण चउरो, सहस्स सोलस य आयरक्खाणं ॥**
**पत्तेयं सव्वेसिं, वतरवइ ससिरवीण च ॥ ४८ ॥**

अर्थ —( सव्वेसिं ) के० सर्व एटले बत्रीश ( वतरवइ ) के० व्यन्तर इन्द्रोने ( च ) क० अने ( ससिरवीण ) क० सूर्य अने चंद्रने ते ( पत्तेय ) क० दरेकने ( सामाणियाण ) के० सामानिक देवो ( चउहोसहस्स ) क० चार हजार अने ( आयरक्खाण ) क० आत्मरक्षक देवो ते ( सोलसय ) क० सोळ हजार होय छे. ॥४८॥

हवे दरेक इन्द्रनी पासे केटली जातना देवो होय छे ? ते कहे छे —

**इंदसामाणियाण तायतीसा परिसा य अंगरक्खा य ॥**
**लोगपाला अणिका, पइन्न अभिओग किब्बि-**
**सीया ॥ ४९॥**

अर्थ —( इंद ) के० इन्द्र, ( सामाणियाण ) के० सामानिक देवो, ( तायतीसा ) के० त्रायस्त्रिंशक देवो, ( परिसा ) के० पर्षदाना देवो, ( अगरक्खा ) के० अगरक्षक देवो, ( लोगपाला ) के० लोकपाल देवो, ( अणिका ) के० अनिक ते कटकना देवो, ( पइन्न ) के० प्रकीर्ण एटले प्रजारूप देवो, ( अभिओग ) के० आभियोगिक ते चाकर देवो, ( किब्बिसीया ) के० किल्बिषिक देवो. ए दश जातिना देवो होय छे. ॥ ४९ ॥

हवे कटकना सात प्रकार कहे छे —

**गधव्व नट्ट हय गय, रह भड अणियाणि सव्वइंदाणं ॥**
**वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहोनिवासाण ॥ ५० ॥**

अर्थ —( गधव्व ) के० मृदंगादि गंधर्वनु, ( नट्ट ) के० नृत्य करनार नाटकीयानु, ( हय ) के० घोडानु, ( गय ) के० हाथीनुं, ( रह ) के० रथनु अने ( भड ) के० सुभटनु. ए [illegible] प्रकारना ( अणियाणि ) के० कटको ( सव्वइंदाण ) के० सर्वे इन्द्रोने होय छे, परंतु ( वेमाणियाण ) के० वैमानिक इन्द्रोने सातमु कटक ( वसहा ) के० वृषभनु होय छे. ( य ) के० अने ( अहोनिवासीण ) के० भुवनपति तथा व्यतर इन्द्रोने सातमु कटक ( महिसा ) के० महिष एटले पाडानु होय छे. ॥ ५० ॥

हर मत्थर इन्द्रने त्रायत्रिंशत्कि देवोनी संख्या कह छे'—

तित्तिस तायतीसा, परिसतिया लोगपाल चत्तारि ॥
अणियाणि सत्त सत्त य, अणियाहिव सव्वइंदाणं ॥५१॥

अर्थ —( तित्तिस तायतिसा ) क० तेत्रीस त्रायत्रिंशत् एटले गुरुस्थानीया मत्रार पुज्वा योग्य देवो ( परिसतिया ) के० बाह्य-मध्य अने अभ्यंतर एवी त्रण पर्षदा, ( लोगपाल चत्तारि ) के० सोम यम वरुण अने कुबेर ए नामना चार लोकपाल, ( अणि याणि सत्त सत्त य ) क० वळी सात सात प्रकारनु कटक, अने ( अणियाहिव ) क० कटकना अधिपति, ए सव्वइदाण ) क० सर्व इन्द्राने होय छे ॥ ५१ ॥

नवर वतर जोइस, इदाण न हुति लोगपालाओ ॥
तायत्तीसभिहाणा, तियसावि य तेसि नहु हुति ॥५२॥

अर्थ —परतु ( नवरं ) क० एटलु विशेष छे के–( वतर ) क० व्यतर देवोना धनीश इद्रोने तथा ( जोइस ) के० ज्योतिषीना वे इद्रोने ( लोगपालाओ ) क० चार लोगपाल ( न हुति ) क० न होय तेमज ( तायत्तीसभिहाणा ) क० त्रायत्रिंश नामना ( तिय सावि य ) क० ते देवता पण ( तेसिं ) क० व्यतर तथा ज्योतिषीना इन्द्रोने ( नहु हुति ) के० न होय. ॥ ५२ ॥

हर ज्योतिषी देवोना विमानोनी वक्तव्यता कह छे. ज्योतिषी तियक् लोकमा छे अने तिर्यक लोक मेरु मध्यरुचकथी नवसो योजन उपर अने नवसो योजन नीचे एम अढारसो योजन प्रमाण छे, तेमा उपरना जे तिर्यक लोकना नवसो योजन छे तेमा ज्योतिषीना विमान केटला उचा छे ? ते कह छे —

समभूतलाओ अट्ठहि, दसूण जोयणसएहि आरभ्भ ॥
उवरि दसूत्तर जोयण–सयमि चिट्ठति जोइसिया ॥५३॥

अर्थ—मेरुपर्वतना मध्य भागमा जे आठ रुचकप्रदेश छे, ते समभूतला कहवाय ते (समभूतलाओ) के० समभूतला थकी (दसूण) क० दश योजन ओछा एवा (अट्ठहिं जोयणसएहिं) क० आठसो योजन अर्थात् सातसो ने नेवु योजन, त्यांथी (आरभ्भ) के० आरंभीने (उवरि) के० उपरना भागने विषे (दसूत्तर जोयणसयमि) के० एकसो दश योजनमांह (जोइसिया) के० ज्योतिषी देवो (चिट्ठति) क० रहे छे ॥ ५३ ॥

हवे एकसो दश योजनमां ज्योतिषि देवो केवी रीत रह्या छे? ते कहे छे—

तत्थ रवी दसजोयण, असीइ तदुवरि ससी य रिक्खेसु ॥
अह भरणि साइ उवरि, बहि मूलो भिंतरे अभिई ॥५४॥

अर्थ—(तत्थ) के० त्यां एटले एकसो दश योजनमा (दस जोयण) क० प्रथम दश योजननी उपर (रवी) के० सूर्य छे. (तदुवरि) क० तेना उपर (असीइ) के० एंशी योजन (ससी) क० चंद्रमा छे (य) क० वली ते थकी चार योजन उंचा (रिक्खेसु) के० अठावीश नक्षत्रो छे तेमा (भरणि) के० भरणी नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (अह) के० नीचे चाले छे, तथा (साइ) के० स्वाति नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (उवरि) के० उपर चाले छे तथा (मूलो) के० मूल नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (बहि) के० बहारना मंडले चाले छे अने (अभिइ) के० अभिजित् नक्षत्र सर्व नक्षत्रोनी (भिंतर) क० अंदर चाले छे ॥५४॥

तार रवि चद रिक्खा, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ॥
सग सय नउय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया
चउसु ॥ ५५ ॥

अर्थ —समभूतला पृथ्वीथी सातसो ने नेवुं योजन सुधीज ज्योतिषि विनानु केवळ आकाश छे. (सग सय नउय) के० ते सातसो ने नेवु योजन उपर (तार) के० तारा मडल छे, ते उपर (दस) के० दश योजन उचो (रवि) के० सूर्य छे, ते थकी (असिइ) क० एशी योजन उपर (चद) के० चद्रमा छे, ते थकी (चउ) के० चार योजन उपर (रिक्खा) के० नक्षत्र छे, ते थकी (चउ) के० चार योजन उचो (बुह) के० बुध छे, ते थकी (कमसो) क० अनुक्रमे (तिया) के० त्रण त्रण योजनने अतर (शुक्का) क० शुक्र, (जीव) के० बृहस्पति, (मगल) के० मंगल अने (सणिया) क० शनी ए (चउसु) क० चार ग्रह छे ए प्रमाणे समभूतला पृथ्वीथी सातसो नेवुं योजन उपर एकसो दश योजनमा सर्वे ज्योतिष चक्र चाले छे. समभूतला पृथ्वीथी नवसो योजन सर्वथी उंचो शनीश्वर छे. अहिं योजननु प्रमाण प्रमाणांगुले करीने जाणवु ॥ ५५ ॥

हवे मनुष्यक्षेत्रमा चर ज्योतिषी मेरुपर्वतथी केटला योजन दूर चाले ? तथा अलोकथी अदर केटली अबाधाए ज्योतिषी रहे छे ? ते कहे छे —

इक्कारस जोयण सय, इगवीसिक्कारसाहिया कमसो ॥
मेरु अलोगाबाहिं, जोइसचक्क चरइ ठाइ ॥ ५६ ॥

अर्थ –(इक्कारस जोयण सय) के० अगीयारसो योजन अने ते उपर (इगवीस) के० एकवीस योजन वली (इक्कारस जोयण-

मय ) के० अगीयारसो योजन अने ते उपर ( इक्कारसाहिया ) के० अगीयार योजन अधिक. एम ( कमसो ) क० अनुक्रमे करीने ( मेरु अलो गाबाहिं ) के० मेरुपर्वतथी अलोकने अबाधा करत ( जोइसचक्क ) के० ज्योतिषचक्र ( चरइ ) के० चाले छे अने (ठाइ) के० स्थिर रह छे अर्थात् मेरुपर्वतथी अगीयारसो ने एकवीस योजन दूर ज्योतिषचक्र मनुष्य क्षेत्रमा चाले छे अने लोकना छेडाथकी अगीयारसो ने अगीयार योजन चार दिशामा माहेली कोर लोकनी अबाधाए एटले अतर ज्योतिष चक्र स्थीर छे तात्पर्य मनुष्यक्षेत्रमा चर ज्योतिषी अने बहारमा क्षेत्रमा स्थीर ज्योतिषी छे ॥५६॥

अद्धकविट्ठागारा, फलिहमया रम्म जोइसविमाणा ॥
वतरनयरेहिंतो, संखिज्जगुणा इमे हुंति ॥ ५७ ॥

अर्थ —( अद्धकविट्ठागारा ) के० अर्द्धा कोठ फलना आकारवाला, ( फलिहमया ) के० स्फटिकरत्नमय अने ( रम्म ) के० रमणिक एवा ( जोइसविमाणा ) के० ज्योतिषि देवोना विमानो छे अने ( इमे ) के० ए विमानो ( वतरनयरेहिंतो ) के० पूर्वे कहेला व्यंतरना नगरोथकी ( संखिज्जगुणा ) के० सख्यातगुणा मोटा ( हुंति ) के० होय छे ॥ ५७ ॥

जोइसियविमाणाइं, सवाइं हुंति फालिहमयाइं ॥
दगफालिहमया पुण लवणे जे जोइसविमाणा ॥५८॥

अर्थ —( सवाइ ) के० पूर्व कहेला सर्वे ( जोइसियविमाणाइं ) के० ज्योतिषि विमानो ( फालिहमयाइ ) के० स्फटिकरत्न मय ( हुंति ) के० छे पुण क० ( वली लवणे ) के० लवणसमुद्रने विषे ( जे जोइसविमाणा ) के० जे ज्योतिषिना विमानो छे ते सर्वे

तार रवि चद रिक्खा, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ॥
सग सय नउय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया चउसु ॥ ५५ ॥

अर्थ —समभूतला पृथ्वीथी सातसो ने नेवु योजन सुधीम ज्योतिषि विनानु खाली आकाश छे. ( सग सय नउय ) क० ते सातसो ने नेवु योजन उपर ( तार ) के० तारा मंडल छे, ते उपर ( दस ) क० दश योजन उचो ( रवि ) के० सूर्य छे, ते थकी ( असिइ ) के० एंशी योजन उपर ( चद ) के० चद्रमा छे, ते थकी ( चउ ) क० चार योजन उपर ( रिक्खा ) के० नक्षत्र छे, ते थकी ( चउ ) के० चार योजन उचो ( बुह ) के० बुध छे, ते थकी ( कमसो ) क० अनुक्रमे ( तिया ) के० त्रण त्रण योजनने अतर ( शुक्का ) क० शुक्र, ( जीव ) क० बृहस्पति, ( मगल ) क० मंगल अने ( सणिया ) के० शनी ए ( चउसु ) क० चार ग्रह छे ए प्रमाणे समभूतला पृथ्वीथी सातसो नेवुं योजन उपर एकसो दश योजनमा सर्व ज्योतिष चक्र चाले छे. समभूतला पृथ्वीथी नवसो योजन सर्वथी उंचो शनीश्वर छे. अहिं योजननु प्रमाण प्रमाणागुले करीने जाणवु ॥ ५५ ॥

हवे मनुष्यक्षेत्रमा चर ज्योतिषी मेरुपर्वतथी केटला योजन दूर चाले ? तथा अलोकथी अदर केटली अबाधाए ज्योतिषी रहे छे ? ते कहे छे —

इक्कारस जोयण सय, इगवीसिक्कार साहिया कमसो ॥
मेरु अलोगावाहिं, जोइसचक्क चरइ ठाइ ॥ ५६ ॥

अर्थ –( इक्कारस जोयण सय ) के० अगीयारसो योजन अने ते उपर ( इगवीस ) के० एकवीस योजन वली ( इक्कारस जोयण-

सय ) के० अगीआरसो जोजन अने ते उपर ( इकारसाहिया ) के० अगीयार योजन अधिक. एम ( कममो ) के० अनुक्रमे करीने ( मेरु अलो गावाहिं ) के० मेरुपर्वतथी अलोकने अवाधा करी ( जोइसचक्क ) के० ज्योतिषचक्र ( चरइ ) के० चाले छे अने (ठाइ) के० स्थिर रहे छे अर्थात् मेरुपर्वतथी अगीयारसो ने एकवीस योजन दूर ज्योतिषचक्र मनुष्य क्षेत्रमा चाले छे अने लोकना छेडाथकी अगीयारसो ने अगीयार योजन चार दिशामा माहली कोर लोकनी अवाधाए एटले अतरे ज्योतिष चक्र स्थीर छे तात्पर्य मनुष्यक्षेत्रमां चर ज्योतिपी अने बहारमा क्षेत्रमा स्थीर ज्योतिपी छे ॥५६॥

अद्धकविठ्ठागारा, फलिहमया रम्म जोइसविमाणा ॥
वतरनयरेहिंतो, सखिज्जगुणा इमे हुंति ॥ ५७ ॥

अर्थ —( अद्धकविठ्ठागारा ) के० अर्द्धा कोठ फलना आकारवाला, ( फलिहमया ) के० स्फटिकरत्नमय अने ( रम्म ) के० रमणिक एवा ( जोइसविमाणा ) के० ज्योतिषि देवोना विमानो छे अने ( इमे ) के० ए विमानो ( वतरनयरेहिंतो ) के० पूर्वे कहला व्यतरना नगरोथकी ( सखिज्जगुणा ) के० सख्यातगुणा मोटा ( हुंति ) के० होय छे ॥ ५७ ॥

जोइसियविमाणाइं, सव्वाइ हुंति फालिहमयाइ ॥
दगफालिहमया पुण, लवणे जे जोइसविमाणा ॥५८॥

अर्थ —( सव्वाइ ) के० पूर्वे कहला सर्वे ( जोइसियविमाणाइं ) के० ज्योतिषि विमानो ( फालिहमयाइ ) के० स्फटिकरत्नमय ( हुंति ) के० छे पुण के० ( वली लवणे ) के० लवणसमुद्रने विषे ( जे जोइसविमाणा ) के० जे ज्योतिषिना विमानो छे ते सर्वे

(दगफालिहयया) क० उदकस्फटिकरत्नमय छे लवण समुद्रनी शिखा दश हजार योजन पहोली अने सोळ हजार योजन उंची छे, अने ज्योतिषि विमानो तो नवसो योजन उंचा मा छे, तेथी ते विमानो पाणीनी शिखामा चाले छे, परतु स्फटिकरत्नना प्रभावथी पाणी फाडीने मोकळु थइ जाय छे, तेथी विमानोने बाधा थती नथी. तम विमानोमा पाणी भरातु नथी आवा कारणोथी सूर्यप्रज्ञप्ति विगेरेमा ज्योतिषि विमानो स्फटिकमय, पण लवण समुद्रमा फरता ज्योतिषि विमानो उदकस्फटिकमय कह्या छे वली ते विमानोना तजनी पाणीथी काइ हानी थती नथी ॥ ५८ ॥

हवे चद्रादिक ज्योतिषि देवोना विमानोनु प्रमाण कहे छे —

## जोयणिगसट्ठि भागा, छप्पन्नऽडयाल गाउ दु इग द्धं ॥
## चदाइविमाणायाम, वित्थडा अद्धमुच्चत ॥ ५९ ॥

अर्थ —(जोयणिगसट्ठि भागा) क० एक योजनना एकसठ भाग करीये, तेवा (छप्पन्न) के० छप्पन्न भागनु चन्द्र विमान लाबु छे अने (अडयाल) के० अडतालीश भागनु सूर्य विमान लाबु छ वली (गाउ दु) क० बे गाउना ग्रह विमानो लाबा छे, तथा (इग) के० एक गाउना नक्षत्र विमानो लाबा छे, अने (अद्ध) के० अर्द्धा गाउना ताराना विमानो लाबा छे ए (चदाइविमाणायाम) क० चन्द्र विगेरेना विमानोनी लबाइ कही, वली (वित्थडा) क० विस्तार एटले पहोलाइ पण तेटली जाणवी अने जेटला लाबा पहोळा कह्या तेथी (अद्ध उच्चत) क० अर्द्धा उचपणे जाणवा ॥ ५९ ॥

हवे मनुष्यलोकनु प्रमाण तथा मनुष्यलोकथी बाहेरना स्थिर चन्द्रादि पाचे ज्योतिषिओना विमानोनु स्वरूप कहे छे —

**पणयाल लक्ख जोयण, नरखित तत्थिमे सया भमिरा ॥**
**नरखित्ताओ बहि पुण, अद्धपमाणा ठिया निच्च ॥६०॥**

अर्थ —( पणयाल लक्ख जोयण ) क० पिस्तालीश लाख योजननु ( नरखित्त ) के० मनुष्यक्षेत्र छे ( तत्थ ) के० ते मनुष्य क्षेत्रमा ( इमे ) के० ए चर ज्योतिषि ( सया ) के० निरंतर ( भमिरा ) के० फरे छे ( पुण ) क० वळी ( नरखित्ताओ बहि ) क० मनुष्य क्षेत्रनी बाहर ( अद्धपमाणा ) के० जे चर ज्योतिषिना विमानोनु प्रमाण कह्यु छे, तेथी अर्द्धा प्रमाणवाला ज्योतिषि विमानो ( निच्च ) के० निरंतर ( ठिया ) के० स्थिर रह्या छे. अर्थात् चर ज्योतिषिना विमानोथी स्थिर ज्योतिषिना विमानोनु प्रमाण लंबाइ पहोलाइ अने उचाइमा अर्धु छे ॥ ६० ॥

अहिं पिस्तालीश लाख योजननु मनुष्य क्षेत्रनु प्रमाण कह्यु छे ते—जबूद्वीपथी पूर्व दिशामा बे लाख योजननो लवण समुद्र, चार लाख योजननो धातकी खण्ड, आठ लाख योजननो कालोदधि समुद्र, अने आठ लाख योजननो पुष्कराद्धे ए सर्वे मळी बावीश लाख योजन थया तेवाज बावीश लाख योजन पश्चिम दिशामा थाय बन्ने मळी चुमालीश लाख योजन थाय, तेनी साथे एक लाख योजननो जंबूद्वीप मेळवतां पिस्तालीस लाख योजन थाय, तेज प्रमाणे उत्तर दक्षिणमा गणता पण पिस्तालीश लाख योजन थाय छे, ए पिस्तालीश लाख योजनना मनुष्य क्षेत्रने वींटीने सत्तरसो एकवीस योजन उचो मानुषोत्तर पर्वत रह्यो छे. तेनी अंदरज मनुष्योना जन्म मरण थवाथी ते मनुष्य क्षेत्र कहवाय छे ए मनुष्य क्षेत्रमा चर ज्योतिषिना विमानो मेरु पर्वतने प्रदक्षिणा देता निरतर फरे छे ॥

हवे मनुष्य क्षेत्रमा चन्द्र विगेरे ज्योतिषि देवतानी गति तथा तेमना विमानने वहन करनारा देवतानी संख्या विगेरे कहे छे —

ससि रवि गह नक्खता, ताराओ हुंति जहुत्तर सिग्घा ॥
विवरीया उ महड्डिअ, विमानवहगा कमेणेसिं ॥ ६१ ॥

अर्थ —( ससि ) के० चंद्र, ( रवि ) के० सूर्य, ( गह ) के० ग्रह, ( नक्खत्ता ) के० नक्षत्र अने ( ताराओ ) के० तारा तेमनी गति ( जहुत्तर ) के० यथोत्तरपणाये करीने ( सिग्घा ) के० उतावली ( हुंति ) के० होय छे ( उ ) के० वली (महड्डिअ) के० महर्द्धिक करीने ( विवरीया ) के० पूर्व कहेला अनुक्रमथी विपरीत क्रम जाणवो अने ( कमेणेसिं ) के० अनुक्रमे करीने ( विमाणवहगा ) के० विमाने वहन करनारा देवता ए सर्व आगली गाथाओथी कहे छे. ॥ ६१ ॥

चंदेहि रवी सिग्घा, रविणो भवे उ गहा य सिग्घयरा ॥
तत्तो नक्खत्ताओ, नक्खत्ते हुंति ताराओ ॥ ६२ ॥

अर्थ —( चंदेहिं ) के० चंद्रथी ( रवी ) के० सूर्य ( सिग्घा ) के० उतावली गतिवाला छे. ( उ ) के० वली ( रविणो ) के० सूर्यथी ( गहा य ) के० ग्रहो ( सिग्घयरा ) के० उतावली गतिवाला ( भवे ) के० होय छे ( तत्तो ) के० ग्रहोथी ( नक्खत्ताओ ) के० नक्षत्रो, अने ( नक्खत्ते ) के० नक्षत्रोथी ( ताराओ ) के० तारा उतावली गतिवाला ( हुंति ) के० होय छे. ॥ ६२ ॥

अप्पड्ढीयाओ तारा, नक्खत्ता खलु तओ महड्ढीया ॥
नक्खत्ते हुंति गहा, गहेहि सूरा तओ चन्दा ॥ ६३ ॥

अर्थ—सर्वथी ( अप्पड्ढीयाओ ) के० थोडी रुद्धिवाला ( तारा ) के० ताराओ छ, ( तेओं ) के० तेथी ( महड्ढीया ) के० वधार रुद्धिवाला ( नक्खत्ता ) के० नक्षत्रो ( खलु ) क० निश्चे होय छे. अने ( नक्खत्ते ) क० नक्षत्रोथी ( गहा ) के० ग्रहो वधार रुद्धिवाला ( हुंति ) क० होय छे वली ( गहर्हि ) के० ग्रहोथी वधार रुद्धिवाला ( सूरा ) के० सूर्य होय छे, अने ( तओ ) क० सूर्यथी वधार रुद्धिवाला ( चंदा ) के० चन्द्र होय छे तारा पांच वर्णना होय छे अने बीजा सर्वे ज्योतिषि देवो अग्नितप्त सुवर्ण समान छे. पाचे ज्योतिषि देवोने पोत पोतानी नामाकृति सरखा मुकुटमा चिन्ह होय छे ॥ ६३ ॥

सोलस सोलस अड चउ, दो सुरसहस्सा पुरो
य दाहिणओ ॥
पच्छिम उत्तर सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो ॥ ६४ ॥

अर्थ—( सोलस सुर सहस्सा ) के० सोल हजार देवो चन्द्र विमानने वहन करनारा अने ( सोलस ) के० सोल हजार देवो सूर्यना विमानने वहन करनारा होय छे. वली ( अड ) के० आठ हजार देवो ग्रहना विमानने वहन करनारा, ( चउ ) के० चार हजार देवो नक्षत्रना विमानने वहन करनारा, तथा ( दो ) के० बे हजार देवो ताराना विमानने वहन करनारा होय छे जो के चन्द्रादिकना विमानो स्वाभाविक रीते आकाशमा आलंबन रहित फर्या करे छे परतु आज्ञाकारी देवो भक्ति देखाडवाने माटे विमाननी नीचे सिंहादिकना रूप धारण करी रह्या छे तेथी तेओ पण विमाननी साथे भ्रमण कर्या करे छे

ए पाचे ज्योतिषि विमानोने चलावनारा देवो चार दिशामा सरखे भाग रया छे त कहे छे ( पुरो ) क० पूर्वदिशाये ( सीहा ) क० सिंहना रूप, ( दाहिणओ ) क० दक्षिण दिशाये ( हत्थी ) क० हाथीना रूपे, ( पच्छिम ) क० पश्चिम दिशाये ( वसहा ) क० वृषभने रूप अने ( उत्तर ) क० उत्तर दिशाये ( हया ) के० घोडाने रूप ( कमसो ) क० अनुक्रमे करीने जाणवा ॥ ६४ ॥

तेज वात दृढ करवाने त्रीजी गाथायो कहे छे —

पुरो य हुति सिंहा, दाहिणे कुजरो महाकाए ॥
पच्छिमेण य वसहा, तुरगा पुण उत्तरे पासे ॥ ६५ ॥

अर्थ —चन्द्रना विमानने वहन करनारा सोल हजार देवो छे तेमा ( पुरो ) क० पूर्व दिशामा ( सिंहा ) क० सिंहना रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छ, ( दाहिणे ) क० दक्षिण दिशामा कुजरो ( महाकाए ) के० मोटा शरीरवाला हाथीना रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छ, ( पच्छिमेण य ) के० पश्चिम दिशामा ( वसहा ) के० वृषभना रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, ( पुण ) क० वली ( उत्तरे पासे ) के० उत्तर दिशामा ( तुरगा ) क० घोडाना रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे एज प्रमाणे सूर्य विगेरना विमानोने वहन करनारा देवोनी जे सख्या कही होय तेना चोथे भागे दरेक दिशामा सिंहादि रूपने धारण करनारा देवो होय छे एम जाणवु ॥ ६५ ॥

सर्व ज्योतिषि देवोमा चन्द्र अधिक ऋद्धिवत छे, माटे चद्रनो परिवार कहे छे —

**गह अट्ठासी नक्खत्त, अडवीस तार कोडि कोडीण ॥**
**छासट्ठि सहस्स नव सय, पणहत्तरि एगससिमित्र ॥६६॥**

अर्थ —( गह ) क० मंगल विगेरे ग्रहो ते ( अट्ठासी ) के० अठ्यासी छे, अने ( नक्खत्त ) क० अभिजित् विगेरे नक्षत्रो ( अट्ठवीस ) क० अठावीश छे, वळी ( छासट्ठि सहस्स ) के० छासठ हजार, ( नव सय ) क० नवसो अने ( पणहत्तरि ) के० पचोतेर एटली ( कोडि कोडीण ) के० कोडा कोडी-अर्थात् छासठ हजार कोडा कोडी अने पचोतेर कोडा कोडी एटला ( तार ) क० तारा ए सर्व ( एगससिमित्र ) के० एक चन्द्रनु सैन्य एटले परिवार छे. ॥ ६६ ॥

अहिं कोइने शका थाय के-मनुष्यक्षेत्र पिस्तालीश लाख योजन छे अने तारानी संख्या अपार छे तो तेटला क्षेत्रमा समावेश थाय नही. आ शकानी आगळी गाथाथी निवृत्ति करे छे —

**कोडाकोडी सन्न-तर तु मन्नति खित्तथोवतया ॥**
**केइ अन्ने उस्से-हगुलमाणेण ताराण ॥ ६७ ॥**

अर्थ —अहिं बे मत छे. ( केइ ) के० कोईक आचार्य ( कोडा कोडी ) के० कोडा कोडीनी संख्याने ( सन्नतर ) के० नामांतर ( मन्नति ) के० माने छे जेम वीसने कोडी कहवाय छे तेम कोडाकोडी पण तेवुज बीजु नाम छे कारण के ( खित्तथो-तया ) क० मनुष्यक्षेत्रनु थोडापणु छे माटे वळी ( अन्ने ) के० बीजा केटलाक आचार्य ( ताराण ) के० ताराना विमाननु प्रमाण ( उस्सेहगुलमाणेण ) क० उत्सेधांगुलप्रमाणे करीने माने छे अहिं केटलाक ग्रन्थोमा चारसो उत्सेधागुले एक प्रमाणागुल कह्यु छे अने केटलाक ग्रन्थोमा एक हजार उत्सेधागुले एक प्रमाणागुल कह्य छे

तेथी क्षेत्रनु अल्पत्व होवा छता उत्सेधांगुलना मानथी ताराना विमाननु प्रमाण करी बताय छे ॥ ६७ ॥

हवे राहुनु स्वरुप अने तेनी गति कहे छे —

आयाम विक्खंभ, जोयणमेगं तु तिगुणओ परिही ॥
अड्ढाइज्ज धणुसया, राहुविमाणाण बाहल्लं ॥ ६८ ॥

अर्थ —( राहु विमाणाण ) क० राहुना विमाननी ( आयाम विक्खंभ ) क० लंबाइ तथा पहोलाइ ( जोयणमेगं ) के० एक योजननी होय छे तु क० वली ( परिही ) के० परिधि ते ( तिगुणओ ) क० त्रण गुणो एटले त्रण योजनथी अधिक छे अने ( बाहल्ल ) क० जाडाइ ते ( अड्ढाइज्जधणुसया ) के० अढीसो धनुष्यनी छे ॥ ६८ ॥

कण्ह राहु विमाण, निच्च चन्देण होइ अविरहियं ॥
चउरंगुलमप्पत्ता, हिट्ठा चन्दस्स त चरइ ॥ ६९ ॥

अर्थ —( कण्ह ) के० काला वर्णवालुं ( राहुविमाण ) क० राहुनु विमान ( निच्च ) क० निरतर ( चन्देण ) क० चन्द्रना विमानथी ( अविरहियं होइ ) क० अभिन्न होय छे अर्थात् दूर थातु नथी ( त ) क० ते राहुनु विमान ( चन्दस्स ) के० चन्द्रना विमानथी ( चउरंगुलमप्पत्त ) क० चार अगुल दूर ( हिट्ठा ) क० नीचे ( चरइ ) क० चाले छे ॥ ६९ ॥

राहु बे प्रकारना छे एक नित्यराहु बीजो पर्वराहु पर्वराहु जघन्यथी छ मासे चन्द्रने अने सूर्यने ग्रहण करे छे अर्थात् पोताना विमानथी ढाके छे तथा उत्कृष्टथी चन्द्रने बेतालीश मासे अने सूर्यने अडतालीश वर्षे ग्रहण करे छे नित्यराहुनु विमान काला

वर्णनु छे ते सर्वदा चन्द्रनी साथे पण चन्द्रना [illegible]
अगुल नीचु चाले छे. तेमा कृष्णपक्षमा [illegible]
करीये तेवा एक एक भागने वधारे ढांके छे अने [illegible]
एक भागने मूके छे. जेथी लोकमा [illegible]
वृद्धि देखाय छे.

हवे जम्बूद्वीपमा तथा बीजा पण मनुष्य[illegible]
बीजा ताराना विमानोनु पर्वतादिकना व्याघात [illegible]
व्याघात विना ( आतरा विना ) [illegible]
ते कहे छे —

तारस्स य तारस्स य जम्बुद्दीवम्मि [illegible]
बारस जोयण सहस्सा दुन्निसया चेव [illegible]

अर्थ —( जम्बुद्दीवम्मि ) के० जम्बूद्वीपने [illegible]
तारस्स य ) क० एक ताराथी बीजा [illegible]
उत्कृष्ट अतर ( बारस जोयण सहस्सा ) [illegible]
( दुन्नि सया ) के० बसो योजन अने ( [illegible]
योजन अर्थात् ( १२२४२ ) योजन [illegible]
आ अतर मेरु पर्वतना व्याघातथी [illegible]
मेरु पर्वत समभूतलानी नीचे दश हजार [illegible] त्यां
मेरुने अने एक बाजुना ताराने [illegible]
अतर छे अने बीजी बाजुए पण मेरु [illegible]
छे, ए त्रण अतरनी संख्याने एकठी [illegible]
तारानु उत्कृष्ट अतर ( १२२४२ ) [illegible] ॥ ३० ॥

हवे मेरु पर्वत विना बीजा पर्वत [illegible] अथवा
विना तारा तथा [illegible] अतर कहे

निसढो य नीलवंतो, चत्तारिसयउच्च पंच सय कूडा ॥
अद्ध उवरि रिक्खा, चरंति उभय ट्ठ बाहाए ॥ ७१ ॥

अर्थ —( निसढो य नीलवंतो ) क० निषध अने नीलवंत ए बन्ने पर्वत ( चत्तारि सय उच्च ) क० भूमिथी चारसो योजन उंचा छे अने ते पर्वतना ( पंच सय ) क० पांचसो योजन उंचा ( कूडा ) क० नव नव कूट एटले शिखरो छे ते कूटो ( उवरि ) क० उपरना भागे ( अद्ध ) क० अढीसो योजन पहोळा छे पर्वत अने शिखरनुं मळी नवसो योजन उंचपणुं थयुं ते कूटना ( उभय ) क० बन्ने बाजुए ( अट्ठ ) क० आठ योजननी ( अबाहाए ) क० अबाधाए ( रिक्खा ) क० नक्षत्रो ( चरंति ) क० फरे छे एटले के–अढीसो योजन शिखरनी पहोळाइ तथा बन्ने बाजुए आठ योजननी अबाधा मळीने—॥ ७१ ॥

छावट्ठा दुन्निसया, जहन्नमेयं तु होइ वाघाए ॥
निव्वाघाए गुरुलहु, दो गाउ य धणुसया पंच ॥ ७२ ॥

अर्थ —( छावट्ठा दुन्निसया ) क० बसो ने छासठ योजन ( एयं ) क० ए ( जहन्न ) क० जघन्यथी तारा ताराने तथा नक्षत्र नक्षत्रने ( वाघाए ) क० पर्वतादिकना व्याघाते एटले आंतरं अंतर छे अने ( निव्वाघाए ) क० पर्वतादिकना आंतरा विना तो ( गुरु ) क० उत्कृष्ट अंतर ( दो गाउ ) क० बे गाउनुं छे, ( य ) क० अने ( लहु ) क० जघन्य अंतर ( धणुसया पंच ) क० पांचसो धनुष्यनुं छे ॥ ७२ ॥

हवे मनुष्य क्षेत्रनी बहार घंटाकार स्थिर रहेला चन्द्र सूर्यनुं माहोमांहे अंतरप्रमाण कहे छे —

माणुसनगाओ बाहिं चदा सूरस्स सूर चंदस्स ॥
जोयण सहस्स पन्नास, णुणगा अंतरं दिठ्ठ ॥ ७३ ॥

अर्थ —( माणुस नगाओ ) के० मनुष्यक्षेत्रनी मर्यादा रूप मानुषोत्तर पर्वतथी ( बाहिं ) के० बहार ( चदा ) के० चन्द्रथी ( सूरस्स ) के० सूर्यनु अने ( सूर ) क० सूर्यथी ( चंदस्स ) क० चन्द्रनु ( जोयण सहस्स पन्नास ) के० पचास हजार योजननु ( अणूणगा ) क० परिपूर्ण ( अंतर ) के० अंतर ( दिठ्ठ ) के० तीर्थकरोए कह्यु छे ॥ ७३ ॥

उपरनी गाथामा सूर्यथी चन्द्रनु अने चन्द्रथी सूर्यनु अंतर कह्यु हवे सूर्यथी सूर्यनु अने चन्द्रथी चन्द्रनु अंतर कहे छे —

ससि ससि रवि रवि साहिय, जोयण लक्खेण
अंतर होइ ॥
रवि अंतरिया ससिणो, ससि अंतरिया रवी दित्ता ॥७४॥

अर्थ—( ससि ससि ) के० एक चन्द्रथी बीजा चन्द्रनु अने ( रवि रवि ) के० एक सूर्यथी बीजा सूर्यनु ( साहिय जोयण लक्खेण ) के० एक लाख योजन अधिक अंतर ( होइ ) के० अंतर होय छे. कारण के ( रवि अंतरिया ससिणो ) के० सूर्य सूर्यने आंतरे चन्द्र छे अने ( ससि अंतरिया रवी ) क० चद्र चद्रने आंतर सूर्य ( दित्ता ) क० प्रकाशे छे. अर्थात् एक चन्द्रथी बीजा चन्द्रनु अंतर एक लाख योजन उपर सूर्यना मडल जेटलु एटले एक योजनना एकसठीया अडतालीश भाग जेटलु छे अने एक सूर्यथी बीजा सूर्यनु अंतर एक लाख योजन तथा एक योजनना एकसठीया छपन्न भाग जेटलु छे ॥ ७४ ॥

बहिया मणुसुत्तरओ, चदा सूरा अवट्ठिउज्जोया ॥
चन्दा अभिइजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहि ॥ ७५ ॥

अर्थ —( मणुसुत्तरओ ) क० मानुषोत्तर पर्वतथकी ( बहिया ) क० बहार ( चन्दा सूरा ) क० चंद्र अने सूर्य ( अवट्ठिउज्जोया ) क० निश्चल रह्या छता प्रकाश करे छे तेमा ( चंदा ) क० चंद्र ( अभिइजुत्ता ) अभिजित् नक्षत्र युक्त छे. पुण के० वली ( सूरा ) क० सूर्य ( पुस्सेहि ) के० पुष्य नक्षत्र युक्त ( हुंति ) क० होय छे अहिं सूर्य सूर्यनी वचे चंद्र, अने चंद्र चंद्रनी वच्चे सूर्य होवाथी चंद्र बहु शीतलता करता नथी अने सूर्य बहु तपता नथी. ॥ ७५ ॥

सूक्ष्म अने बादर एवा भेदथी उद्धार सागरोपम बे प्रकारनो छे

ज जोयणविच्छिन्न, त तीउण परिरयणसविसेस ॥
तावइय उव्विद्ध, पल्लि पलिओवम नाम ॥ ७६ ॥

अर्थ —( ज जोयणविच्छिन्न ) क० जे एक योजन विस्तारवालो, ( तं तीउण परिरयणसविसेस ) क० त त्रणगुणाथी अधिक परिधि सहित, ( तावइय उव्विद्ध ) के० तेटला एटले एक योजन उडो ( पल्लि ) क० पालो अर्थात् कुवो तेनु ( पलिओवम ) नाम क० पल्योपम नाम कहेवाय कारण एथी पल्योपमनु प्रमाण थाय छे माटे ॥ ७६ ॥

एगाहिय वेहीया, तेहीयाण उक्कोस सत्तरत्ताणं ॥
सम्मट्ठ स निचिय, भरिय वालग्गकोडिण ॥ ७७ ॥

अर्थ —( एगाहिय ) क० एक दिवसना, ( वेहीया ) के० बे दिवसना, ( तेहीयाण ) के० त्रण दिवसना, एम उक्कोस ( सत्तरत्ताण ) क० उत्कृष्टथी सात दिवस सुधीना घेटाना ( वालग्ग-

खोडिण ) के० एक उत्सेधांगुल प्रमाण वाल्ना ( २०९७१५२ कडा थाय, एवा कडाथी ( स ) के० ते पाल्रो ( समग्ग के० सघलो ( निचिय ) के० ठामी ठासीने ( भरिय ) के० भरवो ॥ ७७ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहियंमि जो कालो॥
संखिज्जा खलु समया, बायर उद्धार पलियंमि ॥७८॥

अर्थ —( तत्तो ) के० त्यार पछी ते कुवामांथी ( समए समए ) के० एक एक समये ( इक्किके ) एक एक वाल्राग्र ( अवहियंमि ) के० काढवो एम करता ( जो कालो ) के० जेटलो काल कूवो खाली करतां थाय. तेमां ( संखिज्जा समया ) के० संख्याता समय ( खलु ) के० निश्चे थाय छे. ते ( बायर उद्धारपलियंमि ) के० बादर उद्धार पल्योपम कहवाय ॥ ७८ ॥

इक्कीकमओ लोम, कट्टुमसंखिज्जखंडमद्दीसं ॥
समच्छेयाणतयए, सियागपल्ल भरिज्जाहि ॥७९॥

अर्थ —( अओ ) के० त्यारपछी ( इक्कि लोम ) के० पूर्व कहेला ( २०९७१५२ ) लोमखंड माहेला एकेक लोमखंडना ( अद्दीसं ) के० मनकल्पीत अदृश्य ( असंखिज्जखंड कट्टु ) के० असंख्याता कडा करीने ( समच्छेयाणतयए ) के० शिखाग्र सहित ( सियाणपल्ल ) के० शिखाकूपल्यने ( भरिज्जाहिं ) के० भरवो ॥ ७९ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहियंमि जो कालो ॥
संखिज्जवासकोडी सुहुमे उद्धारपलीयंमि ॥८०॥

अर्थ —( तत्तो ) क० त्यार पछी ( समए समए ) के० एक एक समये ( इक्किक ) क० एक एक रोमखंड काढता ( जो कालो ) क० जेटले काले ( अवहियमि ) के० ते पल्य खाली थाय. तेमा ( सखिज्जवासकोडी ) क० संख्याना वर्षकोटि थाय ते ( सुहुमे उद्धारपल्लियमि ) क० सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहवाय. ॥ ८० ॥

जावइया उद्धार, अड्ढाइज्जाण सागराण भवे
तावइया खलु लोए एव दिवा समुद्दाय ॥८१॥

अर्थ —( अड्ढाइज्जाण ) क० अडी ( उद्धार सागराण ) के० उद्धार सागरोपमना ( जावइया ) के० जेटला समय ( भवे ) क० थाय ( तावइया ) क० तेटला ( लोए ) क० लोकने विषे ( एव ) क० ए प्रमाणे ( दीवा ) क० द्वीप ( य ) क० अने ( समुद्दा ) क० समुद्र ( खलु ) के० निश्चे जाणवा ॥ ८१ ॥

उद्धारसागर दुगे सड्ढे समएहि तुल्लदीवुदहि
दुगुणादुगुण पवित्थर, वलयागारा पढमवज्ज ॥८२॥

अर्थ —( उद्धारसागर ) क० उद्धार सागरोपम ते ( दुगे सड्ढ ) क० अडी एटले अडी उद्धारसागरोपमना जेटला (समएहिं) क० समय थाय तेटले ( तुल्ल ) क० बराबर अर्थात् तेटला ( दीवुदहि ) क० द्वीप अने समुद्र छे तेमा ( पढमवज्ज ) के० पहला जबुद्वीपने वर्जीने बाकीना सर्व ( दुगुणादुगुणपवित्थर ) के० एक बीजाथी बमणा विस्तारवाला अने ( वलयागारा ) के० वलय एटले चूडीना आकार छे अने प्रथमनो जबूद्वीप वृत्ताकारे छे ॥ ८२ ॥

अहीं प्रस्तावे छ प्रकारना पल्योपम अने छ प्रकारना सागरोपमनु स्वरूप जणाव्यु छे ते आ प्रमाणे —

१ सात सात आठ आठ खण्ड करीने भरेला पनहुल कुवा-मांथी एकेक समये एकेक स्थुल वालाग्र काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर उद्धार पल्योपम. अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक बादर उद्धार सागरोपम थाय

२ प्रथम भरेला असंख्यात रोम खण्डमांथी दरेक रोमखण्डना पुनः असंख्य असंख्य रोमखण्ड करीए ते सूक्ष्म रोमखण्ड कहवाय एवा सूक्ष्म रोमखण्डथी भरेला ते पनहुल कूवामांथी एकेक समये एकेक वालाग्र काढता जेटले काळ ते कुवो खाली थाय तेटलो काळ सूक्ष्म उद्धार पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय

३ स्थूल वालाग्रथी भरेला कूवामांथी दर सो सो वर्षे एकेक स्थूल वालाग्र काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर अद्धा पल्योपम अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक बादर अद्धा सागरोपम

४ सूक्ष्म वालाग्रथी भरेला कूवामांथी दर सो सो वर्षे एकेक सूक्ष्म वालाग्र काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ सूक्ष्म अद्धा पल्योपम अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ सूक्ष्म अद्धा सागरोपम.

५ स्थूल वालाग्रथी भरेला कूवामा जेटला आकाश प्रदेशो स्थूल वालाग्रोने स्पर्शेला छे तेमांथी दरेक स्पर्शेला आकाश प्रदेशने एकेक समय काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर क्षेत्र पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ बादर क्षेत्र सागरोपम.

६ सूक्ष्म रोमखण्डथी भरेला कूवामांथी ते सूक्ष्म रोमखण्डोने स्पर्शेला अने नहि स्पर्शेला आकाश प्रदेशोने एकेक समये काढता

जेटलो काळ लागे तेटलो काळ सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम

पढमो जोयणलक्ख, वट्टो त वेढिउ ठिया सेसा
पढमो जंबुदीवो, सयंभूरमणोदही चरमो ॥८३॥

अर्थ —(पढमो) के० पहेलो जंबुद्वीप (वट्टो) के० थालीनी पठे गोळ आकार (जोयणलक्ख) क० एक लाख योजननो छे अने (त) क० ते जंबुद्वीपने (वेढिउ) के० वींटीने (सेसा) क० बीजा सर्वे द्वीपो (ठिया) क० रह्या छे (पढमो) के० सर्वथी पहेलो (जंबुदीवो) क० जंबूवृक्षथी प्रसिद्ध थयलो जंबुद्वीप छे, अने (चरमो) क० सर्वथी छेल्लो (सयंभूरमणोदही) क० स्वयंभूरमण नामनो समुद्र छे ॥ ८३ ॥

हवे केटलाएक द्वीप अने समुद्रना नाम कहे छे —

जंबु धायइ पुक्खर, वारुणिवर खीर धय खोय नंदिसरा ॥
अरुण रुणवाय कुंडल, संख रुयग भुयग कुस कुंचा ॥८४॥

अर्थ —१ (जंबु) क० जंबुद्वीप, २ (धायइ) क० धातकी-खंड द्वीप, ३ (पुक्खर) के० पुष्करवर द्वीप, ४ (वारुणिवर) के० वारुणिवर द्वीप, ५ (खीर) क० क्षीरवर द्वीप, ६ (धय) के० घृतवर द्वीप, ७ (खोय) के० इक्षुवर द्वीप, ८ (नंदिसरा) क० नंदीश्वर द्वीप, ९ (अरुण) क० अरुण द्वीप, १० (अरुणवाय) के० (अरुणोपपात) द्वीप, ११ (कुंडल) के० कुंडल द्वीप, १२ (संख) क० शंख द्वीप, १३ (रुयग) के० रुचक द्वीप, १४ (भुयग) के० भुयग द्वीप, १५ (कुस) के० कुस-द्वीप, १६ (कुंचा) के० क्रौंच द्वीप ॥ ८४ ॥

हो सव द्वी। एनेक समुद्रथी वीट्या छे ते समुद्रोनां नाम कहे छे.—

पढमे लवणो जलहि बीए कालो य पुक्खराइसु ॥
दीवेसु हुंति जलहि, दीवसमाणेहि नामेहि ॥८५॥

अर्थ —( पढमे ) के० पहेलो ( लवणो जलहि ) के० लवण नामनो समुद्र छे, ( बीए ) के० बीजो कालो के० कालोदधि नामनो समुद्र छे ( य ) के० अने ( पुक्खराइसु ) के० त्रीजा पुष्करवर समुद्रथी मांडीने ( दीवेसु ) के० सर्व द्वीपने विषे ( दीवसमाणेहि नामेहि ) के० द्वीपना सरखा नामवाला ( जलही ) के० समुद्रो ( हुंति ) के० होय छे जेम वारुणिवर द्वीप अने वारुणिवर समुद्र ए प्रमाणे बीजा पण जाणवा ॥ ८५ ॥

ए सर्व द्वीप समुद्र वलयाकार जगतीथी वींटायला छे जगती आठ योजन उची छे मूलमा बार योजन पहोली, पछी प्रदेशे प्रदेशे हीन थता उपर चार योजन पहोली छे ते उपर बे गाउ अने पांचसो धनुष्य उंची पद्मवर वेदिका छे ते उपर वन छे.

हवे लवण समुद्रना चार द्वारनु परस्पर अंतर कहे छे

दुन्नि सया य असिया, पणनउइ सहस्स तिन्नि लक्खा य ॥
कोसो अंतर लवणे, दारस्स दाराणी विन्नेया ॥ ८६ ॥

अर्थ —( तिन्नि लक्खा य ) के० वली त्रण लाख, ( पणनउइ सहस्स ) के० पचाणु हजार, ( दुन्नि सया ) के० बसो, ( य ) के० अने ( असिया ) के० एंशी एटला योजन, तथा ( कोसो ) के० एक गाउ उपर, एटलु ( लवणे ) के० लवणसमुद्रमां ( दारस्स

द्वाराणी ) के० एक द्वारथी बीजा द्वार सुधीनु ( अतर ) के० अंतर ( विन्नेया ) के० जाणवु ॥ लवण समुद्रनो परिधि ( १५८११३९ ) योजनमा काइक ओछो छे अने लवण समुद्रनी चार दिशामा चार दरवाजा छे. ते दरेक दरवाजो चार चार योजन पहोलो छे तेथी चार दरवाजाना सोल योजन थाय अने दरेक दरवाजानी बन्ने बाजुए एक एक गाउना विस्तारवाली द्वारशाख प्रदेशनी भींत छे तेथी चार दरवाजाना आठ द्वारशाख प्रदेशना बे योजन मलवना अढार योजन थाय, ते अढार योजन काढी नाखीने बाकीनी लवण समुद्रनी परिधिना चार भाग करता ( ३९५२८० ) योजन अने एक गाउ एटलुं द्वार द्वारनु अंतर थाय ॥ ८६ ॥

हवे मोटा पाताल कलशानु स्वरूप अने तेनी संख्या कहे छे —

जोयण सहस्स दसग, मूले उवरि य होंति विच्छीणणा ॥
मज्झे य सय सहस्स, तीत्तियमित्त च उगाहा ॥ ८७ ॥

अर्थ —लवण समुद्रनी चार दिशामा पूर्व दिशाथी आरंभीने १ वडवामुख, २ केयूप, ३ यूप, अने ४ ईश्वर ए नामना अने एक हजार योजननी जाडी ठीकरीवाला चार मोटा पातालकलशा छे ते कलशा ( मूले ) के० नीचे मूलमा ( य ) के० अने (उवरि) के० उपर मुख आगल ( जोयण सहस्स दसग ) के० दश हजार योजन ( विच्छीण्णा ) के० विस्तारवाला होंति के० छे ( य ) के० अने ( मज्झ ) के० मध्यभागने विषे ( सय सहस्स ) के० एक लाख योजन विस्तारवाला छे ( च ) के० वली तित्तियमित्त के० तेटला एटले एक लाख योजन ( उगाहा ) के० पृथ्वीमा ऊंडा छे. ॥ ८७ ॥

हो नाना पाताल कलशानुं स्वरूप अने तेनी संख्या कहे छे—

जोयण सयविच्छिण्णा, मूले उवरि दससयाण मज्झमि ।
उगाढा य सहस्स, दसजोयण वायसि तुडा ॥ ८८ ॥
अन्ने लहुपायाला, खुड्डालि जरगसंठिया लवणे
अट्ठसया चूलसीया, सत्त सहस्सा य सव्वेवि ॥ ८९ ॥

अर्थ.—( मूले ) के० मूलमां नीचे अने ( उवरि ) के० उपर ( जोयणसय विच्छिण्णा ) के० सो योजन विस्तारवाला, ( मज्झमि ) के० मध्य भागमां ( दससयाण ) के० दश हजार योजन विस्तारवाला, ( य ) के० अने ( सहस्स ) के० एक हजार योजन ( उगाढा ) के० ऊंडा, तथा ( दस जोयण ) के० दस योजन ( वायसि तुडा ) के० जाडी ठीकरीवाला—॥ ८८ ॥ एवा ( अन्ने लहु पायाला ) के० बीजा नाना पाताल कलशा तेनी ( खुड्डालि ) के० नानी नव पंक्ति ते ( जरग संठिया ) के० गर-बाने आकारे ( लवणे ) के० लवण समुद्रमां रही छे. मोटा चार पाताल कलशानी वचमां वचमां नाना पाताल कलशानी नव पंक्तिओ छे पहेली पंक्तिमां ( २१५ ) कलशा छे, बीजी पंक्तिमां ( २१६ ) कलशा छे एम वधता वधता नवमी पंक्तिमां ( २२३ ) कलशा छे एक भागना सर्व मलीने ( १९७१ ) कलशा छे चारे भागना एकठा गणतां ( ७८८४ ) कलशा थाय छे ॥ ८९ ॥

पायाला लवण विभागे सव्वाण वि तिन्नि भाग विन्नेया ॥
हेट्ठीमभागे वाऊ, मज्झे वाऊ य उदग च ॥ ९० ॥

अथ —( लवण ) क० लवण समुद्रमां ( पायाला ) के० पाताल कलशाना नाना अने मोटा एना ( त्रिभागे ) के० बे भाग छे ते ( सव्वाणवि ) क० सर्व कलशाना एक एकना ( तिभि भाग ) क० त्रण भाग ( मिन्नेया ) के० जाणवा तेमां ( हट्ठीमभागे ) क० नीचेना भागमां ( वाऊ ) के० वायु छे ( मज्झे ) क० मध्यना भागमां ( वाऊ ) के० वायु ( य ) क० अने ( उदग ) क० पाणी भेळु छे तथा उपरना भागमां पाणीज छे ॥ ९० ॥

हवे नीजा द्वीप समुद्रोना क्या क्या नाम छे ? ते कहे छे —

आभरण वत्थ गंधे, उप्पल तिलए य पउम निहि रयणे।
वासहर दह नईओ, विजया वक्खार कप्पिंदा ॥ ९१ ॥
कुरु मदर आवासा, कुडा नक्खत्त चन्द सूरा य
अन्नेवि एवमाई, पसत्थवत्थूण जे नामा ॥ ९२ ॥

अर्थ —( आभरण ) के० हार विगेरे आभूषण, ( वत्थ ) क० वस्त्र, ( गंध ) के० कस्तुरी विगेरे सुगंधिवस्तु, ( उप्पल ) के० चंद्रविकासी कमल, ( तिलए य ) क० वृक्ष तिलक अथवा तिलक वृक्ष, ( पउम ) क० शतपत्र पुंडरिकादिक सूर्यविकासी कमल, ( निहि ) क० महापद्मादिक नव निधि, ( रयणे ) के० कर्केतनादिक रत्न ( वासहर ) के० हिमवंतादिक वर्षधर पर्वत, ( दह ) के० पद्मादिक द्रह, ( नईओ ) क० गंगा विगेरे नदीओ, ( विजया ) के० कच्छादिक विजय, ( वक्खार ) क० माल्यवंत विगेरे वक्षस्कार पर्वत, ( कप्प ) क० सौधर्मादिक देवलोक, ( इंदा ) क० शक्रेन्द्र विगेरे इंद्रो ॥ ९१ ॥ ( कुरु ) के० देवकुरु उत्तरकुरु ( मंदर ) क० मेरु पर्वत, ( आवासा ) के० इन्द्रादिकना निवासभुवन, ( कूडा ) क० कूटपर्वत, ( नक्खत्त ) के० कृत्तिकादि नक्षत्र, ( चन्द ) के०

चन्द्र, अने सूरा य क० सूर्य, (पज्जाई) के० ए विगेरे (अन्नेवि) के० बीजी पण (पसत्थवत्थूण) क० श्रेष्ठ वस्तुना (जे नामा) के० जे नामो छे ॥ ९२ ॥

तन्नामा दीवुदही, तिपडायायार हुंति अरुणाई
जंबुलवणाईया, पत्तेय ते असंखिज्जा ॥ ९३ ॥
ताणंतिम सूरवरा-वभासजलही परंतु इक्किक्का
देवे नागे जक्खे, भूए य सयंभूरमणे य ॥ ९४ ॥

अर्थ —(तन्नामा) क० ते नामना (दीवुदही) क० द्वीप अने समुद्र छे, तेमां (अरुणाई) के० अरुण द्वीपथी आरंभीने सर्व द्वीप समुद्र (तिपडायायार) के० त्रिप्रत्यावतार एटले त्रण द्वीप-समुद्रना एक सरखा नाम (हुंति) क० छे तेमज आभरणादिक वस्तुना नामवाला सर्व द्वीपसमुद्र त्रिप्रत्यवतार होय छे. जेमके अरुण द्वीप, अरुणसमुद्र, अरुणवरद्वीप, अरुणवरसमुद्र, अरुण-वरावभास द्वीप, अरुणवरावभास समुद्र हार द्वीप, हार समुद्र, हारवर द्वीप, हारवर समुद्र, हारवरावभास द्वीप, हारवरावभास समुद्र विगेरे जाणवा (जंबू लवणाईया) के० जंबूद्वीप अने लवण समुद्र विगेरे जे (पत्तेय) क० एकेक द्वीप समुद्र छे (ते) के० ते नामना बीजा (असंखिज्जा) क० असंख्याता द्वीप समुद्रो छे. ॥ ९३ ॥ (ताणंतिम) क० तेमां छेल्लो (सूरवरावभास) क० सूर्यवरावभास नामना समुद्र छे, त्यांसुधी त्रिप्रत्यावतार जाणवा (परंतु) क० अने त्यार्थी आगळ तो छेल्ला (देवे) के० देव द्वीप अने देव समुद्र, (नागे) क० नाग द्वीप अने नाग समुद्र, (जक्खे) के० यक्ष द्वीप अने यक्ष समुद्र, (भूए य) क० वळी भूत द्वीप अने भूत समुद्र, तथा (सयंभूरमणे य) के० स्वयंभूरमण द्वीप

अने स्वयभूरमण समुद्र ए पाच नीरसमुद्रो ( इक्किा ) के० एक एक छे ते निम ययावतार नथी ॥ ९४ ॥

इत सर्व समुद्रोना पाणी विगेनु विशेष स्वरूप कहछे

वारुणिवर खीर वरो, घयवर लवणो य हुंति भिन्नरसा ॥
कालो य पुक्खरोदहि, सयभूरमणो य उदगरसा ॥९५॥
इक्खुरस सेसजलही, लवणे कालो य चरिम बहुमच्छा ॥
पण सग दस जोयण सय, तणु कमा थोव सेसेसु ॥९६॥

अर्थ —( वारुणिवर ) के० वारुणिवर समुद्रनु पाणी मदिरा-सरखु, ( खीरवरो ) के० क्षीर समुद्रनु पाणी दुध सरखु, (घयवर) के० घृतवर समुद्रनु पाणी गायना घी सरखु, (य) क० अने (लवणो) के० लवण समुद्रनु पाणी खारु एम ए चार समुद्रो ( भिन्नरसा ) क० जूदा जूदा रसवाला ( हुंति ) क० छे. अर्थात् नाम सरखा पाणीना स्वादवाला छे तेमज (कालो) य क० कालोदधि, (पुक्खर) के० ( पुक्खरवर य ) के० अने ( सयभूरमणो ) क० स्वयभूरमण. ए त्रण ( उदहि ) के० समुद्रो ( उदगरसा ) क० वर्षादना पाणी जेवा स्वादवाला छे ॥ ९५ ॥ ( सेस जलहि ) के० बाकीना नदीश्वर समुद्रथी आरभी भूतसमुद्र पर्यंतना सर्व समुद्रना पाणी( इक्खुरस ) क० शेरडीना रस समान मीठा पाणीवाला छे वली ( लवण ) के० लवणसमुद्र, ( कालो ) क० कालोदधि समुद्र, (य) के० अने ( चरिम ) के० स्वयभूरमण समुद्र ए त्रण समुद्रमा ( बहुमच्छा ) क० घणा माछलानी जाती छे अने ते माछला ( पण सग दश योजणसयतणु क० पाच सो, सात सो अने हजार योजनना शरीरवाला (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवा अर्थात् लवण समुद्रमा उत्कृष्टा पाचसो योजनना, कालोदधिमा सात सो योज-

ना अने स्वयभुरमणमा एक हजार योजनना शरीरवाला मच्छ छे (थोव ससेसु) के० बाकीना समुद्रोमा थोडा अने न्हाना मच्छ छे ॥ ९६ ॥

हो रेक द्वीपे अने समुद्रे चद्र सूर्यनी सख्या कहे छे.

दो ससि दो रवि पढमे, दुगुणा लवणमि धायईसडे ॥
बारस ससि बारस रवि, तप्पभिइ निदिट्ठ ससिरविणो॥९७॥
तिगुणा पुव्विल्लजुया, अणतराणतरंमि खित्तमि ॥
कालोए बायाला बिसत्तरी पुरखरद्धंमि ॥ ९८ ॥

अर्थ —( पढम ) के० पहेला जबुद्वीपने विषे ( दो ससि दो रवि ) के० बे चद्र अने बे सूर्य छे (लवणमि) के० लवण समुद्रने विषे तेनी ( दुगुणा ) के० बमणा एटले चार चंद्र अने चार सूर्य छे तथा ( धायईसडे ) के० धातकी खडने विषे ( बारस ससि बारस रवि ) के० बार चद्र अने बार सूर्य छे वली ( तप्पभिइ ) के० ते धातकी खड प्रमुखने विषे ( निदिट्ठ ससिरविणो ) के० चद्र सूर्यनी जे सख्या कही छे तेने ॥ ९७ ॥ ( तिगुणा ) के० त्रण गुणी करीये अने ( पुव्विल्लजुया ) के० प्रथमना द्वीप समुद्रना चद्र सूर्यनी सख्या तेमा मेलवीये एटले (अणतराणतरमि खित्तमि) के० पाछल पाछलना द्वीप समुद्रना क्षेत्रने विषे चद्र सूर्यनी सख्या थाय जेमके धातकी खडना बार चद्र अने बार सूर्य छे तेने त्रण गुणा करीये त्यारे छत्रीश सूर्य अने छत्रीश चद्र थाय, तेमा जबुद्वीपना अने लवण समुद्रना मली छ चद्र अने छ सूर्य मेलवीये त्यारे (कालोए) के० कालोदधिने विषे ( बायाला ) के० बेंताळीश चद्र अने बेताळीश सूर्य थाय आगलना द्वीप समुद्रने विषे पण एज प्रमाणे करण करवाथी चद्र सूर्यनी सख्या थाय छे. जेमके—कालोदधिना बेंताळी-

शने त्रण गुणा करता एक सो छत्रीश थाय, तेमां धातकीखंडना बार, लवण समुद्रना चार, अने जंबुद्वीपना २ एम ए प्रकारे मेलवता एकसो चुमाळीश थाय, परन्तु पुष्करवरद्वीपमां अर्धुं मनुष्य क्षेत्र छे माटे (पुक्खरद्धमि) के० अर्धा पुष्करवर द्वीपमां (विमत्तगे) के० बहोतेर व० बहोतेर चन्द्र सूर्य छे बाकीना बहोतेर चंद्र सूर्य समश्रेणीए नथी अने स्थीर छे माटे गण्या नथी एटले पुष्करवर द्वीपना एक सो चुमालीशने त्रण गुणा करता चार सो बत्रीश थाय, तेमा जंबुद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार धातकी खंडना बार, अने कालोदधीना बेंतालीश भेळवता पुष्करवर समुद्र चारसो बाणु चंद्र अने चारसो बाणु सूर्य थाय ए एज प्रमाण आगळना द्वीप समुद्रने विषे पण [1]जाणवुं. ॥ ९८ ॥

हवे मनुष्य लोकमां पंक्तिने विषे चंद्र सूर्यनी संख्या कहे छे

**दो ससि दो रवि पंती, एगंतरिया छसट्ठि संखाया ॥**
**मेरु पयाहिणंता, माणुसखित्ते परिअडंति ॥ ९९ ॥**

अर्थ—जंबुद्वीपमां ( दो ससि ) के० बे चंद्र अने (दो रवि) के० बे सूर्य तेमनी ( पंती ) के० पंक्ति एटले श्रेणि छे. ते पंक्ति ( एगंतरिया ) के० एक एकने आंतरे छे. एटले सूर्यनी पंक्तिने आंतरे चंद्रपंक्ति अने चंद्रपंक्तिने आंतरे सूर्यपंक्ति छे अढी द्वीप-रूप मनुष्य क्षेत्रमां एक पंक्तिने विषे छसट्ठिसंखाया के० छासठ छासठ चंद्र सूर्य होय छे तेवी ते चार पंक्ति छे ते चारे पंक्तिओ ( माणुसखित्ते ) के० मनुष्य क्षेत्रने विषे ( मेरु पयाहिणंता ) के०

---

[1] ए संबंधमां मतांतर घणा छे, ते मोटा ग्रंथोथी जाणवा आ चालु प्रकरणनीज १०६-१०७ ने १०८ मी गाथा देखवाथी आ वरणनो मतांतर समजाय छे, तोपण व्यामोह करवो योग्य नथी

मेरुपर्वतने प्रदक्षिणा देतो छतो ( परिभमंति ) के० फरे छे एटले जम्बूद्वीपमां ज्यारे एक सूर्य मेरुपर्वतथी दक्षिण दिशाए फरतो होय त्यारे बीजो सूर्य उत्तर दिशाए फरतो होय छे, तेवीज रीते लवण समुद्रमा एक एक दिशाए बबे सूर्य, धातकी खंडमा एक एक दिशाए छ छ सूर्य, कालोदधिमा एक एक दिशाए एकवीश एकवीश सूर्य, अने पुष्करार्द्धमा एक एक दिशाए छत्रीश छत्रीश सूर्य. एम सर्व मली, छासठ सूर्य दक्षिण दिशाए अने छासठ सूर्य उत्तर दिशाए ए बे समश्रेणिना सर्व मली एकसो बत्रीश सूर्य अने तेवीज रीते एकसो बत्रीश चद्र मनुष्यक्षेत्रमा फरे छे. ॥ ९९ ॥

हवे मनुष्यक्षेत्रमा ग्रहनी पक्ति कहे छे

एव गहाइणोवि हु, नवरं धुवपासवत्तिणो तारा ॥
तं चिय पयाहिणता, तत्थेव सया परिभमंति ॥१००॥

अर्थ—( एव ) के० ए पूर्वे कहेली चद्र सूर्यनी पक्तिनी पेठे ( गहाइणोवि हु ) के० ग्रह तथा नक्षत्रनी पक्तिओ पण जाणवी. ते आ प्रमाणे एक एक चद्रनी पाछल अठावीश नक्षत्रनी एक पक्ति एवी छासठ छासठनी बे पक्ति मली एक सो बत्रीश पक्ति चद्रनी पाछल जाणवी तेमज अठाशी ग्रहनी एक पक्ति, एवी छासठ छासठनी बे पक्ति जाणवी तेमा ( नवर ) के० एटलु विशेष छे के ( धुवपासवत्तिणो तारा ) के० ध्रुवना तारानी पासे रहेला ताराओ (तंचिय पयाहिणता) के० ध्रुवना तारानेज प्रदक्षिणा करता (तत्थेव) के० त्याज ( सया ) के० निरंतर ( परिभमंति ) के० भ्रमण करे छे ॥ १०० ॥

बत्तीससयं चदा, बत्तीससयं च सूरिया सययं ॥
समसेणीए सव्वे, माणुसखित्ते परिभमंति ॥ १०१ ॥

अथ—(बत्तीससय) क० एकसो बत्रीश (चंदा) के० चन्द्र, (च) क० अने (रविससय) क० एक सो बत्रीश (सूरिया) क० सूर्य (सव्व) क० ते सर्व (समसेणीए) के० समश्रेणिए रह्या छता (सयय) क० निरंतर (माणुसखित्ते) क० मनुष्य क्षेत्रने विषे (परिभमंति) क० फरे छे ॥ १०१ ॥

चत्तारि य पंतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किक्या पंती ॥ १०२ ॥

अथ—(मणुयलोगंमि) क० मनुष्यक्षेत्रने विषे (चंदाइच्चाण) क० एक सो बत्रीश चंद्र अने एक सो बत्रीश सूर्यनी (चत्तारियपंतीओ) क० चार पंक्ति छे तेमां (छावट्ठी छावट्ठी य) के० छासठ छासठ चंद्र सूर्यनी (इक्किक्या पंती) क० एक एक पंक्ति (होइ) क० होय छे ॥ १०२ ॥

छप्पन्न पंतीओ, नक्खत्ताण च मणुयलोगंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किक्या पंती ॥ १०३ ॥

अर्थ—(मणुयलोगंमि) क० मनुष्य लोकमां (नक्खत्ताण) क० नक्षत्रोनी (छप्पन्न पंतीओ) क० छप्पन पंक्ति छे. वली (छावट्ठी छावट्ठी य) के० ते अगिना छासठ छासठ चंद्र सूर्यमाना एकेक चंद्र सूर्यनी पाछल (इक्किक्या पंती) के० अठावीश अठावीश नक्षत्रनी एक एक पंक्ति (होइ) क० होय छे ॥१०३॥

छावत्तरी गहाण, पंतिसय होइ मणुअलोयंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किक्या पंती ॥ १०४ ॥

अर्थ—(गहाण) क० ग्रहोनी (छावत्तरी पंतीसय) क०

पुरुसो ने छोतेर पंक्ति (मणुअलोयंपि) के० मनुष्य लोकमा (होइ) के० होय छे ( छासट्ठी छावट्ठी य ) के० वने श्रेणिना छासठ छासठ चंद्र सूर्यमाना दरेक चंद्र सूर्यनी पाछळ ( डंकियुक्त पती ) के० अगाशी ग्रहोनी एक एक पंक्ति ( होइ ) के० होय छे १०४

ते मेरुपरिअडंता, पयाहिणा वत्तमंडला सव्वे ॥
अणवट्ठियजोगेण, चंदा सूरा गहगणा य ॥ १०५ ॥

अथ—( ते सव्वे ) के० ते सर्वे (चंदा सूरा गह गणाय) के० चंद्र सूर्य अने ग्रहगणो ( अणवट्ठियजोगेण ) के० अनवस्थितयोगे करीने ( मेरुपरिअडंता ) के० मेरु पर्वतनी समीप ( वत्तमंडला ) के० गोल मंडले करीने ( पयाहिणा ) के० प्रदक्षिणा करे छे ॥१०५॥

चउयालसय पढम-भूया पंतिए चंदसूराण ॥
तेणं परिंतीओ, चउरुत्तरियाए वुड्ढीए ॥ १०६ ॥

अर्थ—अढी द्वीपनी बहारना अर्द्धा पुष्करवर द्वीपमा ( पढमभूयापंतीए ) के० मानुषोत्तर पछे गोल वळती प्रथम पंक्तिने विषे ( चंदसूराण ) के० एक बीजाने आंतरे रहेला बहोंतेर चंद्र तथा बहोंतेर सूर्य मळीने ( चउयाल सय ) के० एक सो चुमालीश चंद्र सूर्य होय छे ( तेण ) के० त्यार पछी क्षेत्रवृद्धिना कारणे असंख्याता द्वीप समुद्र सुधी ( परिपंतीओ ) के० दरेक पंक्तिमा ( चउरुत्तरियाए वुड्ढीए ) के० बे चंद्र अने बे सूर्य मळी चार चारनी वृद्धि करवी ॥ १०६ ॥

बावत्तरि चंदाण, बावत्तरि सूरियाण पंत्तिए ॥
पढमाए अंतरं पुण, चंदा चंदस्स लक्खदुगं ॥१०७॥

अर्थ—(पइमाए पंतिए) के० पहेली पंक्तिमां (बावत्तरि चंदाण) के० बहोंतेर चद्र अने (बावत्तरि सूरियाण) के० बहोंतेर सूर्य होय छे (पुण) के० वळी (चंद चंदस्स) के० चद्र चद्रनु (अंतर) के० अतर (लक्खदुग) के० बे लाख योजननु जाणवु ॥ १०७॥

जो जावइ लक्खाई, वित्थारो सागरो य दीवो वा ॥
तावइआओ य तहिं, चंदासूराण पंतीओ ॥ १०८ ॥

अर्थ—(जो) के० जे (सागरो) के० समुद्र (वा) के० अथवा (दीवो) के० द्वीप (जावइ लक्खाइं) के० जेटला लाख योजननो (वित्थारो) के० विस्तारवालो होय, (तहिं) के० त्यां (तावइआओ) के० तेटली (चंदसूराण) के० चद्र सूर्यनी (पंतीओ) के० पंक्तिओ जाणवी एटले जेम बाह्य पुष्करार्द्ध आठ लाख योजननो छे तो तेमा लाख लाख योजनने अतरे चद्र सूर्यनी आठ पंक्ति छे एम बीजा बहारना सर्व द्वीप समुद्रोने विषे जाणवु ॥ १०८॥

हवे जंबुद्वीपने विषे चद्रसूर्यना मांडला कहे छे

पन्नरस चूलसीइसयं, इह ससिरविमंडलाइं तक्खित्तं ॥
जोयण पणसयदसहिय, भागा अडयाल इगसट्ठा ॥१०९॥

अर्थ—(इह) के० आ जंबुद्वीपमा (ससि) के० चद्रना (पन्नरस) पन्नर मांडला छे, अने (रविमंडलाइं) के० सूर्यना मांडला (चूलसीइसयं) के० एकसो चोरासी छे तथा (तक्खित्तं) के० ते मांडलानु क्षेत्र (जोयणपणसयदसहियं) के० पांच सो दश

योजन अने ( भागा अडयाळ इग सट्ठा ) क० एक योजनना एक-सठ भाग करीए तेवा अडताळीश भाग जाणवा. ॥ १०९ ॥

हवे गमनोथी एनु परिमाण कहे छे

तिसि इगसट्ठा चउरो, इग इगसट्ठस्स सत्त भइयस्स ॥
पणतीस च दुजोयण, ससि रविणो मडलंतरं ॥११०॥

अर्थ—एक योजनना ( इगसट्ठा ) के० एकसठ भाग करीये, तेवा ( तिसि ) के० त्रीश भाग, अने ( इग ) के० एक एवा ( इग-सट्ठस्स ) क० एकसठीया भागना ( सत्त भइयस्स ) के० सात भाग करीये तेवा ( चउरो ) क० चार भाग, तथा ( पणतीस जोयण ) के० पांत्रीश योजन एटलु ( ससि ) के० चद्रना माडलानु अतर छे अने ( दुजोयण ) क० बे योजननु ( रविणो ) के० सूर्यना माडलानु अतर छे, ॥ ११० ।

एज वात आगळनी गाथावडे कहे छे.

दो जोयणाणि सूरस्स, मडलाणि हवंति इयरस्स ॥
पणतीस जोयणीगस-ट्ठितीस चउ भाग सत्तहिया॥१११॥

अर्थ—( सूरस्स ) के० सूर्यना ( माडलाणि ) के० माडला ( दो जोयणाणि ) क० बे बे योजनने आतर ( हवति ) क० होय छे अने ( इयरस्स ) क० चद्रना माडला माडलानु अतर ( पणतीस जोयण ) क० पांत्रीश योजन, तथा ( इगसट्ठी ) के० एक योजनना एकसठ भाग करीये तेवा ( तीस ) क० त्रीश भाग अने ( सत्तहिया ) क० ते एकसठी एक भागना सात भाग करीये तेवा ( चउ भागा ) के० चार भाग उपर एटलु अतर चद्रना माडलानु जाणवु । १११ ॥

ससिरविणो लवणंमि य, जोयणसयतिन्नि तीस अहियाइ ॥
असियं तु जोयणसयं, जंबुद्दीवंमि पविसंति ॥११४॥

अर्थ—(लवणंमि) क० लवणसमुद्रमा (ससिरविणो) क० चंद्र अने सूर्यनु चारक्षेत्र एटले फरवानु क्षेत्र (जोयणसयतिन्नि) के० त्रण सो योजन अने (तीस अहियाइ) के० त्रीश अधिक अर्थात् त्रण सो त्रीश योजन अने एकसठीया अडतालीस भाग अधिक छे अने त्याथी पाछो फरता (असियं तु जोयणसयं) के० एक सो एशी योजन जंबुद्दीवंमि) के० जंबुद्वीपमा (पविसंति) क० प्रवेश करे छे ॥ ११४ ॥

ग्रह, नक्षत्र अने ताराओने एक एकज मांडलु होय छे, तेथी तेओ पोत पोताने मांडलेज फरे छे, पण दक्षिण उत्तर तरफ जता नथी

बे चंद्रने तथा बे सूर्यने सर्वथी अंदरना मांडले अने बहारना मांडले अंतर केटलु होय ? ते कहे छे.

ससिससि रविरवि अंतर, मज्झे इग लक्ख तिसयसछिमाऊणो ॥
साहिय दुसयरिचय बहि लक्खो छसय सट्ठिहिओ ॥११५॥

अर्थ—(मज्झे) क० सर्वथी अंदरना मांडलाने विषे एटले एक चंद्र निषध पर्वत उपरना अभ्यंतर मांडले आवे अने बीजो चंद्र नीलवंत पर्वत उपरना अभ्यंतर मांडले आवे त्यारे (ससि-ससि) क० चंद्र चंद्रने तथा रवि रवि) क० सूर्य सूर्यने (अंतर) के० आंतरु ते

( इगलक्ख ) के० एक लाख योजननी मध्ये ( निमयसट्ठिमाउणा ) के० त्रण सो साठ योजन ओछु अर्थात् ( ९९६४० ) योजननु होय छे. जेमके एक सूर्य निषध पर्वत उपर एक सो एंशी योजन जंबुद्वीपमा आने त्यारे बीजो सूर्य नीलवंत पर्वत उपर एक सो एंशी योजन जंबुद्वीपमा आवे त्यारे बन्ने मलीने त्रण सो साठ योजन थाय ते त्रणसो साठ योजन जंबुद्वीपना एक लाख योजनना आयाम विष्कंभमाथी बाद करीये त्यारे (९९६४०)योजन रहे.एटलु अंदरना मंडले आंतरु जाणवु त्यार पछी (साहियदु) के० सूर्य सूर्यने दरेक मांडले बे योजन वधारवु अने चंद्र चंद्रने ( संपरिचय ) के० दरेक मांडले सीत्तेर योजन वधारवु जेथी ( बहि ) के० सर्वथी बहारना मंडले ( लक्खो ) के० एक लाख, ( छसय ) के० छ सो अने (सट्ठिहिओ) के० साठ अधिक एटला योजन आंतरु थाय.॥११५॥

तिन्नेव सयसहस्सा, पन्नरस हवंति जोयण सहस्सा॥
एगुणनउया परिही, अब्भितर मंडले तेसिं ॥ ११६ ॥

अर्थ—तिन्नेव य सयसहस्सा ) के० त्रण लाख, ( पन्नरस जोयण सहस्सा ) के० पंदर हजार, अने ( एगुणनउया ) के० नेव्याशी योजननी ( परिही ) के० परिधी ( तेसिं ) के०ते सू - र्यना ( अब्भितर मंडले ) के० अंदरना मांडलानी ( हवंति ) के० होय छे ॥ ११६ ॥

लक्ख तिगं अट्ठारस,सहसा तिन्नि सय पंचदस अहिया॥
परिही य जोयणाइं, बाहिरए मंडले हुंति ॥ ११७ ॥

अर्थ—( लक्ख तिग ) के० त्रण लाख, ( अट्ठारस सहस्सा ) के० अढार हजार, ( [illegible] ) के० त्रण सो. अने ( पन्नरस

भडिया ) क० पदर उपर एटला ( जोयणाइ ) के० योजननी ( पुरिही ) क० परिधि ते ( बाहिरए मंडले ) क० सूर्यना सर्वथी बाहेरना मंडले ( हुंति ) क० होय छे ॥ ११७ ॥

हो द्वीप समुद्रने विषे ग्रह नक्षत्र तथा तारानी सख्या जाणवानो उपाय कहे छे

गहरिक्खतारसंखं, जत्थेच्छसि नाउ मुदहि दीवे वा ॥
तस्ससिहि एगससिणो, गुण सब होइ सव्वग्गं ॥११८॥

अर्थ-(जत्थ) क० जे (उदहि) क० समुद्रने विषे (वा) के० अथवा (दीव) क० द्वीपने विषे ( गहरिक्खतारसंख ) के० ग्रह नक्षत्र अने तारानी सख्याने (नाउ) क० जाणवाने (इच्छसि) के० इच्छा कर छे, तो (तस्ससिहि) क० ते द्वीप समुद्रना चद्रनी सख्याने माहीने ( एगससिणो ) के० एक चद्रना ग्रह नक्षत्र अने ताराना परिवार साथे ( गुण ) क० गुणाकार करवो तेथी ( सव्वग्ग सख होइ ) क० सर्व सख्या थाय छे

दृष्टांत-जेम लवण समुद्रमा चार चद्र छे, अने एक एक चद्रने अट्ठाशी ग्रहनो परिवार होवाथी अट्ठाशीने चार गुणा करता त्रणसो बार ग्रह थाय तेरीज रीते अठ्ठावीश नक्षत्रने चार गुणा करीये तो एकसो बार नक्षत्र थाय, तथा तारानी सख्या कोडा कोडी जेटली जे प्रथम कही छे तेने चार गुणी करीये त्यारे बे लाख कोडाकोडी, सडसठ हजार कोडाकोडी अने नव सो कोडा कोडी थाय. एवी रीते सर्व द्वीप समुद्रने विषे जाणवु ॥ ११८ ॥

एज वात बे गाथाथी कहे छे

चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ॥
बारस नक्खत्तसयं, गहाण तिन्नेव बावन्ना ॥ ११९ ॥
दो चेव सय सहस्सा, सत्तट्ठी खलु भवे सहस्सा य ॥
नवयसया लवणजले, ताराण कोडिकोडीण ॥ १२० ॥

अर्थ—( लवणतोए ) के० लवण समुद्रने विषे (चत्तारि चंदा) के० चार चंद्र, ( चत्तारि सूरिया ) के० चार सूर्य, ( बारस नक्खत्तसयं ) के० एकसो बार नक्षत्र, अने ( गहाण तिन्नेव बावन्ना ) के० त्रण सो बावन ग्रह ( चेव ) के० निश्चे होय छे ॥ ११९ ॥

(य) के० वली ( दो चेव सयसहस्सा ) के० बे लाख,( सत्तट्ठी सहस्सा ) के० सडसठ हजार अने (नवयसया) के० नव सो एटली ( ताराणं कोडिकोडीण ) के० ताराओनी कोडाकोडी ( लवणजले ) के० लवण समुद्रने विषे ( खलु ) के० निश्चे ( भवे ) के० होय छे ॥ १२० ।

हवे वैमानिक देवोना विमाननी संख्या कहे छे.

बत्तीस ट्ठावीसा, बारस अड चउ विमाण लक्खाइं ॥
पन्नास चत छ सहस्स, कमेण सोहम्माईसु ॥ १२१ ॥
दुसु सय चउ दुसु सय तिग,मिगारसहियं सयं तिगेहिट्ठा॥
मज्झे सत्तुत्तर सय, मुवरितिगे सय मुवरि पंच ॥१२२॥

अर्थ—सौधर्म देवलोके ( बत्तीस ) के० बत्रीश लाख, ईशान देवलोके ( अट्ठावीसा ) के० अठावीश लाख, सनत्कुमार ( बारस ) के० बार लाख, माहेंद्रे (अड) के० आठ लाख, ब्रह्मदेवलोके (चउ)

के० चार लाख (विमाण) क० विमान छे. ए सर्व ( लववाइ ) के० लांतकनी संख्याये करीने जाणवा लांतके ( पन्नास ) के० पचास हजार, शुक्र ( चत्त ) के० चालीश हजार, सहस्रारे ( छ ) क० छ हजार, ए सर्व (सहस्स) के० हजारनी संख्याये जाणवा. ए (कमण) क० अनुक्रमे करीने ( सोहम्माइसु ) के० सौधर्मादिक देवलोकना विमाननी संख्या जाणवी ॥ १२१ ॥ तथा आनत अने प्राणत ए ( दुसु ) के० बे लोकने विषे ( सय चउ ) के० चार सो विमान, तथा आरण अने अच्युत ए ( दुसु ) के० बे देवलोकने विषे (सय तिग) क० त्रण सो विमान जाणवा ( गिगेहिट्ठा ) के० नीचेना त्रण ग्रैवेयके ( इगारसहिय ) क० अगीयार सहित ( सय ) के० सो अर्थात् एक सो अगियार विमान छे ( मज्झे ) के० वचला त्रण ग्रैवयके ( सत्तुत्तरसय ) के० एक सो सात विमान छे, अने ( उवरितिगे ) क० उपरना त्रण ग्रैवयक ( सय ) क० एक सो विमान छे. वली ( उवीर ) क० उपरना पांच अनुत्तर विमाने (पंच) क० पांच विमान छे. ॥ १२२ ॥

हवे ए पूर्वे कहेला विमानोनी सर्व संख्या तथा विमानादिकनु स्वरूप कहे छे

चुलसीइ लक्ख सत्ताण, वइसहस्सा विमाण तेवीस ॥
सव्वग्गमुड्ढलोगमि, इंदय विसट्ठि पयरेसु ॥ १२३ ॥

अर्थ—( सव्वग्ग ) क० सर्व संख्याये ( चुलसीइ लक्ख ) के० चोराशी लाख, ( सत्ताणवइ सहस्सा ) क० सत्ताणु हजार, अने ( तेवीस ) के० तेवीस उपर एटला ( उड्ढलोगमि ) क० उर्ध्वलोकने विषे (विमाण) के० विमानो छे अने ते बार देवलोकना ( विसट्ठि-

पयरेसु ) के० बासठे मतरने विषे मध्य भागमा ( इदय ) के० एक एक इद्रक विमान छे सब मळीने इद्रक विमान बासठ छे ॥१२३॥

चउदिसि चउपतीओ, बासट्ठि विमाणिया पढमपयरे ॥
उवरि इक्किकहीणा, अणुत्तरे जाव इक्किकं ॥ १२४ ॥

अर्थ—( पढमपयरे ) के० पहेला मतरने विषे मध्यना इद्रक विमानथकी ( चउदिसि ) के० चारे दिशाए ( बासट्ठिविमाणिया ) के० बासठ बासठ विमाननी ( चउपत्तीओ ) के० चार पंक्तिओ छे, तेना ( उवरि ) के० उपर दरेक मतरे ( इक्किक्कहीणा ) के० एक एक विमान चार दिशाए ओछु करवु, जेथी ( अणुत्तरे ) के० अनुत्तर विमाने जाव ( इक्क ) के० यावत् एक एक विमान चारे दिशाए रहे ॥ १२४ ॥

इदय वट्टा पंतिसु, तो कमसो तस चउरंसा वट्टा ॥
विविहा पुप्फवकिन्ना, तयतरे मुत्तुं पुव्वदिसिं ॥१२५॥

अर्थ—सर्वेनी वचमा ( इदय ) के० इद्रक विमान (वट्टा) के० बाटलु एटले गोळाकृतिवालु छे (तो) के० त्यार पछी ( पतिसु ) के० पक्तिने विषे ( कमसो ) के० अनुक्रमे करीने प्रथम ( तस ) के० त्रीखूणावाला, पछी ( चउरसा ) के० चार खूणावाला, अने छेला ( वट्टा ) के० गोळाकृतिवाळा विमानो छे अने ( तयतरे ) के० ते चारे पक्तिओनी वचमा एक ( पुव्वदिसिं मुत्तु ) के० पूर्वदिशा मूकीने बाकीनी सर्वदिशामा ( विविहा ) के० विविधप्रकारना ( पुप्फवकिन्ना ) के० भिन्न भिन्न पुष्पावकीर्ण विमानो छे. ॥१२५॥

हवे पहेला मतरनी एक एक पक्तिना बासठ बासठ विमान कये कये स्थानके छे ? ते कहे छे

एग देवे दीवे, दुवे य नागोदहीसु बोधव्वे ॥
चत्तारि जक्खदीवे, भूयसमुद्देसु अट्ठेव ॥ १२६ ॥
सोलस सयभुरमणे, दीवेसु पइट्ठिया य सुरभवणा ॥
इगतीस च विमाणा, सयभुरमणे समुद्दे य ॥ १२७ ॥

अर्थ—पहेला प्रतरनी चारे दिशाओ ( एग ) के० पहेलु एक एक विमान ( देवे दीवे ) के० देवद्वीपमां छे, (य) के० अने (दु) के० बे बे विमान ( नागोदहीसु ) के० नागसमुद्रमां (बोधव्वे) के० जाणवां त्यार पछीनां (चत्तारि) के० चार चार विमान (जक्खदीवे) के० यक्षद्वीपमां छे अने ( भूयसमुद्देसु ) के० भूतसमुद्रमां ( अट्ठेव ) के० आठ आठ विमानो छे । १२६ ॥ वली (सयभुरमणे दीवेसु) के० स्वयंभूरमण द्वीपने विषे ( सोलस ) के० सोल ( सुरभवणा ) के० विमानो ( पइट्ठिया ) के० रह्यां छे (य) के० अने ( इगतीस विमाणा ) के० एकत्रीस विमानो ( सयभुरमणे समुद्दे ) के० स्वयंभूरमण समुद्रमां छे ॥ १२७ ॥

हवे बीजा प्रतरमां चारे दिशाये एकसठ विमानोनी पंक्ति शी रीते छे, ते कहे छे.

वट्टं वट्टस्सुवरिं, तंसं तंसस्स उवरिम्मि होइ ॥
चउरंसे चउरंसं, उड्ढं तु विमाणसेढीए ॥ १२८ ॥

अर्थ —( वट्टस्सुवरिं ) के० नीचला पहेले गोलविमाननी उपर ( वट्ट ) के० गोल विमान छे ( तंसस्स ) उवरिम ) के० त्रण खूणानी उपर ( तंस ) के० त्रिखूणी विमान ( होइ ) के० होय छे ( तु ) के० वली ( चउरंसे ) के० चार खुणा विमाननी उपर

( चउरंस ) के० चार खुणा विमान होय छे एम ( उड्ड ) के० उपर (विमाणसेढीइ ) के० विमानोनी पंक्ति जाणवी सर्व प्रतरमा मध्यभागे इंद्रक विमान वाटलु छे त्यार पछी चारे दिशाए चारे पंक्तिमा अनुक्रमे एक एक विमान त्रिखुणावाला, पछी चार खुणावाला, पछी वाटला एम अनुक्रमे पंक्ति पूरी थाय त्यां सुधी जाणवा दरेक प्रतर छेवटसु एक एक विमान ओछु करवु जेथी सर्वार्थसिद्धे एक एक विमान त्रिखुणु रहे ॥ १२८ ।

सव्वे वट्टविमाणा, एगदुवारा हवंति नायव्वा ॥
तिण्ण य तसविमाणे, चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥१२९॥

अथ —( सव्वे वट्टविमाणा ) के० सव वाटला विमानो (एगदुवारा) के० एक बारणावाला ( हवंति ) के० होय छे एम (नायव्वा ) के० जाणवा ( तंसविमाणे ) के० त्रिखुणा विमानने विषे ( तिण्णिय ) के० त्रण बारणा होय छे ( य ) के० अने ( चउरंसे ) के० चार खुणा विमानने विषे ( चत्तारि ) के० चार बारणा ( हुंति ) के० होय छे । १२९ ॥

पागारपरिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि ॥
चउरंस विमाणाण, चउद्दिसि वेइया होई ॥ १३० ॥

अथ —( सव्वेवि ) के० चारे दिशामा रहेला सव ( वट्टविमाणा ) के० वाटला एटले गोलविमानो ( पागारपरिक्खित्ता ) के० गढथी विंटलायला ( हवंति ) के० होय छे अने ( चउरंस विमाणाण ) के० चार खुणावाला विमानने ( चउद्दिसिं ) के० चारे दिशाए ( वेइया होई ) के० वेदिका होय छे. कांगरा विनानो

वाला, तेमज ( फासे ) क० स्पर्शमा ( नवणीयमउयसुहफासा ) क० माखण सरखा कोमळ अने सुखकारी स्पर्शवाळा, ( निच्चुज्जोया ) क० नित्य प्रकाशवाळा, ( रम्मा ) के० रमणिक अने ( सयपहा ) क० पोतानी मेले प्रकाशीत एवा ( ते ) क० ते विमानो ( विरायंति ) क० शोभे छे ॥ १३५ ॥

जे दक्खिणेण इंदा, दाहिणओ आवली मुणेयव्वा ॥
जे पुण उत्तर इंदा,उत्तरओ आवली मुणे तेसिं ॥१३६॥

अर्थ—( जे दक्खिणेण इंदा ) क० जे दक्षिण दिशाए सौधर्मेंद्र तथा सनत्कुमारेंद्र छे, तेमना ( दाहिणओ ) क० दक्षिण दिशानी ( आवली ) क० पंक्तिमा रहेला विमानो ( मुणेयव्वा ) के० जाणवा पुण के० वली ( जे उत्तरइंदा ) क० जे उत्तरदिशाए इशानेंद्र तथा माहेंद्र छे ( तेसिं ) क० तेमना ( उत्तरओ ) के० उत्तरदिशानी ( आवली ) क० पंक्तिमा रहेला विमानो ( मुणे ) क० जाणवा ॥ १३६ ॥

पुव्वेण पच्छिमेण य, सामण्णा आवली मुणेयव्वा ॥
जे पुण वट्टविमाणा, मज्झिल्ला दाहिणिल्लाण ॥१३७॥

अर्थ—( पुव्वेण पच्छिमेण य ) क० पूर्व दिशा अने पश्चिम दिशानी ( आवली ) क० विमानोनी पंक्ति ते सौधर्मेंद्र तथा ईशानेंद्र बन्ने इंद्रोनी ( सामण्णा ) के० साधारण सामान्यपणे जाणवी ( पुण ) के० वली जे ( मज्झिल्ला ) के० जे मध्यभागना ( वट्टविमाणा ) के० वाटला विमान छे, ते ( दाहिणिल्लाण ) के० दक्षिण दिशाना सौधर्मेंद्रना जाणवा ॥ १३७ ॥

पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा तेवि दाहिणिल्लस्स ॥
तस चउरसगा पुण, सामन्ना हुंति दुण्हपि ॥ १३८ ॥

अर्थ—( पुव्वेण पच्छिमेण य ) के० पूर्वदिशा अने पश्चिमदिशाना विमाननी पंक्तिने विषे ( जे वट्टा ) के० जे गोळ विमान छे ( तेवि ) के० ते विमानो पण ( दाहिणिल्लस्स ) के० दक्षिणदिशाना सौधर्मेंद्रना छे ( पुण ) के० वली तस के० त्रण खुणवाला अने ( चउरसगा ) के० चार खुणवाळा जे विमान छे ते (सामन्ना के० सामान्यपणाथी ( दुण्हपि ) के० सौधर्मेंद्र तथा ईशानेंद्र ए बन्नेना ( हुंति ) के० छे. एटले बन्ने इंद्रो ते विमानोना अर्द्धोअर्द्ध मालीक छे । १३८ ॥

पढमपयरंमि पढमे, कप्पे उडुनाम इंदयविमाण ॥
पणयाललक्खजोयण, लक्खं सव्वुवरि सव्वट्ठ ॥१३९॥

अर्थ—( पढमे कप्पे ) के० पहेला देवलोकना ( पढमपयरंमि ) के० पहेला प्रतरने विषे ( उडुनाम ) के० उडुनामनुं ( इंदयविमाण ) के० इंद्रक विमान छे ते ( पणयाललक्खजोयण ) के० गोळाकारे पिस्तालीश लाख योजनना प्रमाणवालुं छे अने ( सव्वुवरि ) के० सवना ऊपर बासठमा प्रतर ( सव्वट्ठ ) के० सर्वार्थसिद्ध नामनुं विमान ( लक्खं ) के० एक लाख योजननुं गोळाकार छे. ॥ १३९ ॥

हवे बासठ प्रतरना मध्यभागमां रहेला इंद्रक विमाननां नाम कहे छे

उडु चंद रयण वग्गु, वीरिय वरुणे तहय आणंदे ॥
बंभे कंचण रुइरे, चंचे अरुणे य वरुणे य ॥१४०॥

अर्थ—१ (उडु) के० उडु विमान, २ (चंद) चंद्रक विमान, ३ (रयण) क० रजत विमान, ४ (वग्गु) के० वल्गुविमान, ५ (वीरिय) क० वीर्य विमान, ६ (वरुणे) के० वरुण विमान (तहेव) के० तेमज, ७ (आणंदे) क० आनन्द विमान, ८ (बंभे) के० ब्रह्म विमान, ९ (कंचण) क० कांचन विमान, १० (रुइमे) क० रुचिप्रभ विमान, ११ (चंदे) क० चंद्र विमान, १२ (अरुण य) क० अरुण विमान, १३ (वरुणे य) के० वरुण विमान, ए तेर विमान ए तेर विमान पहेला तथा बीजा देवलोके छे. ॥१४०॥

वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ॥
मेहे अग्घ हलिद्दे, नलिणे तह लोहियक्खे य ॥१४१॥

अर्थ—१४ (वेरुलिय) क० वैडूर्य विमान, १५ (रुयग) क० रुचक विमान, १६ (रुइरे) क० रुचिर विमान, १७ (अंके) के० अंकविमान, १८ (फलिहे) क० स्फटिक विमान, (तहेव) के० तेमज १९ (तवणिज्जे) के० तपनीय विमान, २० (मेह) क० मेघविमान २१ (अग्घ) क० अर्घ विमान, २२ (हलिद्दे) के० हरिद्र विमान, २३ (नलिणे) के० नलिन विमान, (तह) क० तेमज २४) लोहियक्खे य) क० लोहिताक्ष विमान.।१४१॥

वइरे अंजण वरमाल, रिट्ठ देवे य सोम मंगलए ॥
बलभद्दे चक्क गया, सोवत्थिय णंदियावत्ते ॥ १४२ ॥

अर्थ—२५ (वइरे) क० वज्र ए बार विमान त्रीजे तथा चोथे देवलोके छे ॥ २६ (अंजन) के० अंजन विमान, २७ (वरमाल) क० वरमाल विमान, २८ (रिट्ठ) क० रिष्ट विमान, २९

( देवैय ) के० देव विमान, ३० ( सोम ) के० सौम्य विमान, ३१ ( मगलए ) के० मगल विमान० ॥ ए छ विमान पांचमा देवलोके छे ३२ ( वल्भो ) के० वल्भद्र विमान, ३३ ( चक्र ) के० चक्र विमान, ३४ ( गदा ) के० गदा विमान, ३५ ( सोवन्छिय ) के० स्वस्तिक विमान, ३६ ( णदियावत्ते ) नदावर्त्त. ए पांच विमान छट्ठा देवलोकमां छे. ॥ १४१ ॥

आभंकरे य गिद्धी, केऊ गरुले य होइ बोधव्वे ॥
बंभे बभहिए पुण, बभुत्तर लंतए चेव ॥ १४३ ॥

अर्थ—३७ ( आभंकरे ) य के० आभ्रकर विमान, ३८ ( गिद्धी ) के० गृद्ध विमान, ३९ ( केऊ ) के० केतु विमान, ४० ( गरुले य ) के० गरुड विमान ए चार विमान सातमा देवलोके० ( होइ ) के० छे ने ( बोधव्वे ) के० जाणवा ४१ ( बंभे ) के० ब्रह्म विमान, ४२ ( बभहिए ) के० ब्रह्महित विमान. ( पुण ) के० वली ४३ ( बभुत्तर ) के० ब्रह्मोत्तर विमान, ४४ ( लतए ) के० लतक विमान ए चार विमान आठमा देवलोकना ( चेव ) के० निश्चे जाणवा ॥ १४३ ॥

महाशुक्र सहस्सारे आणय तह पाणएय बोधव्वे ॥
पुप्फे लकार आरण, तहाविय अच्चुए चेव ॥ १४४ ॥

अर्थ—४५ ( महाशुक्र ) के० महाशुक्र विमान, ४६ ( सहस्सारे ) के० सहस्रार विमान, ४७ (आणय) के० आनत विमान, ( तह ) के० तेमज ४८ ( पाणए य ) के० प्राणत विमान, ए चार विमान नवमे तथा दशमे देवलोक ( बोधव्वे ) के० जाणवा. ४९ ( पुप्फे ) के० पुष्प विमान, ५० ( अलकार ) के० अलकार वि-

मान, ५१ ( आरण ) के० आरण विमान, ( तहाविय ) के० तेमज ५२ ( अच्चुए ) के० अच्युत विमान ए चार विमान अगीयारमे तथा बारमे देवलोके ( चेव ) के० निश्चे जाणवा ॥ १४४ ॥

सुदसण सुपडिबद्धे, मणोरमे चेव होइ पढमतिगे ॥
तत्तो य सव्वभद्दे, विसालए सुमणे चेव ॥ १४५ ॥

अर्थ—५३ ( सुदसणे ) के० सुदर्शन विमान, ५४ ( सुपडिबद्धे ) के० सुप्रतिबद्ध विमान, ५५ ( मणोरमे ) के० मनोरम विमान, ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना ( पढमतिगे ) के० प्रथम त्रिकने विषे ( चेव ) के० निश्चे ( होइ ) के० छे ( तत्तो य ) के० अने त्यार पछी ५६ ( सव्वभे ) के० सर्वभद्र, ५७ ( विसालए ) के० विशाल, ५८ ( सुमणे ) के० सुमनस–ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना बीजा त्रिकने विषे ( चेव ) के० निश्चे छे. ॥ १४५ ॥

सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइयतिगे ॥
सव्वट्ठसिद्धिनामे, इंदया एव बासट्ठी ॥ १४६ ॥

अर्थ—५९ ( सोमणसे ) के० सोमनस विमान, ६० ( पीइकरे ) के० प्रीतिकर विमान, ६१ ( आइच्चे ) के० आदित्य विमान. ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना त्रीजा त्रीकने विषे ( चेव ) के० निश्चे ( होइ ) के० छे अने पांच अनुत्तर विमानने विषे ६२ ( सव्वट्ठसिद्धिनामे ) के० एक सर्वार्थ सिद्धि नामनु विमान छे (इंदया एव बासट्ठी) के० ए बासठ इंद्रक विमानना नाम कह्या. १४६

हवे दरेक देवलोके श्रेणीना विमाननी संख्या लाववा माटे उपाय कहे छे.

## पढमतिमपयरावली, विमाणमुहभूमि तस्समासद्धं ॥
## पयरगुणमिट्ठकप्पे, सव्वग्ग पुप्फकन्नियरे ॥ १४७ ॥

अर्थ—सौधर्म अने ईशान देवलोकना (पढम) कः पहेला (पयरावली विमाण) के० प्रतरना विमाननी पंक्ति ते (मुह) कः मुख कहेवाय, अने (अंतिम) क० छेल्ला प्रतरना विमाननी पंक्ति ते (भूमि) क० भूमि कहेवाय. (तस्समासद्ध) क० ते मुख अने भूमिना विमानोने एकठा करीने तेना अर्द्ध करवा पछी (इट्ठपयरगुण) के वांछित देवलोकना प्रतर गुणवा तेथी (कप्प) के० वांछित देवलोके (पुप्फकन्नियरे) के० आवलिकाना विमानोनी (सव्वग्ग) के० सर्व संख्या आवे । १४७ ॥

अहिं ते गाम स्थान सहित समजावे छे के—सौधर्म तथा ईशान ए बन्ने देवलोकने विषे पहेला प्रतरना (२४९) विमान ते मुख कहेवाय, अने छेल्ला तेरमा प्रतरना (२०१) विमान ते भूमि कहेवाय ए बन्ने संख्याने एकठी करीए त्यारे (४५०) थाय पछी अर्द्ध करीए त्यारे (२२५) थाय तेने ए बन्ने देवलोकनाज तेर प्रतरे गुणीए त्यारे सौधर्म तथा ईशान देवलोकना विमाननी पंक्तिना सर्व विमानोनी संख्या (२९२५) थाय

हवे ए बन्ने देवलोकना सव मली साठ लाख विमानो छे, तेमांथी (२०२५) श्रेणीना विमान काढीये त्यारे (५९९७०७५) एटला पुष्पावकीर्ण विमान बाकी रहे ए रीते आगलना देवलोक पण जाणी लेवु ॥ १५० ॥

तेज वात आगली गाथावडे कहे छे

नं १

# उर्ध्व देवलोके विमानोना मुख-भूमि विगेरे गणितनुं कोष्टक.

| क्या देवलोके | मुख विमान | भूमि विमान | समास | समासनुं अर्ध. | प्रतरनो संख्या (गुणाकार माट) | प्रतर मं ल्याए गुणवाथी लब्ध (थयेला) पंक्ति विमान | पुष्पावकीर्ण विमान | सर्व विमान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सौधर्म-इशान | २४९ | २०१ | ४५० | २२५ | १३ | २९२५ | ५९९७०७५ | ६०००००० |
| सनत्कु-माहेन्द्र | १९७ | १५३ | ३५० | १७५ | १२ | २१०० | १९९७९०० | २०००००० |
| ब्रह्म | १४९ | १२९ | २७८ | १३९ | ६ | ८३४ | ३९९१६६ | ४००००० |
| लांतक | १२५ | १०९ | २३४ | ११७ | ५ | ५८५ | ४९४१५ | ५००० |
| शुक्र | १०५ | ९३ | १९८ | ९९ | ४ | ३९६ | ३९६०४ | ४००० |
| सहस्रार | ८९ | ७७ | १६६ | ८३ | ४ | ३३२ | ५६६८ | ६००० |
| आनत-प्राणत | ७३ | ६१ | १३४ | ६७ | ४ | २६८ | १३२ | ४०० |
| आरण-अच्युत | ५७ | ४५ | १०२ | ५१ | ४ | २०४ | ९६ | ३०० |
| अध ग्रैवेयक ३ | ४१ | ३३ | ७४ | ३७ | ३ | १११ | ० | १११ |
| मध्य ग्रैवेयक ३ | २९ | २१ | ५० | २५ | ३ | ७५ | ३२ | १०७ |
| उर्ध्व ग्रैवेयक ३ | १७ | ९ | २६ | १३ | ३ | ३९ | ६१ | १०० |
| अनुत्तर | ५ | ० | ० | ० | १ | ५ | ० | ५ |
| उर्ध्व देवलोक | २४९ | ५ | २५४ | १२७ | ६२ | ७८७४ | ८४८९१४९ | ८४९७०२३ |

अट्ठणही सयमहस्सा, सत्ताणवई भवे सहस्साइं ॥
पणहत्तरि य विमाणा, हवंति पुप्फावकिण्णाण ॥१४८॥

अर्थ—( अट्ठणही सयसहस्सा ) के० ओगणसाठ लाख, ( सत्ताणवई सहस्साई ) के० सत्ताणु हजार, ( य ) के० अने ( पणहत्तरि ) के० पचोत्तर एटला ( पुप्फावकीण्णाण ) के० पुष्पावकीर्ण ( विमाणा ) के० विमानो (हवंति) के० होय छे. ॥१४८॥

तेवण्णे चउवण्णे, पंचावण्णे तहेव बासट्ठे ॥
एएसु पयरेसु अ, न हुंति पुप्फावकीण्णाइ॥ १४९ ॥

अर्थ—( तेवण्णे ) के० त्रेपनमु, ( चउवण्णे ) के० चोपनमु, ( पचावण्णे ) के० पचावनमु ( तहेव ) के० तेमज ( बासट्ठे ) के० बासठमु ( एएसु पयरेसु ) के० एटला प्रतरोने विषे ( पुप्फावकीण्णाइ ) के० पुष्पावकीर्ण विमानो (न हुंति) के० नथी ॥१४९॥

हवे बासठे प्रतरमाना कोइपण प्रतरने विषे त्रिखूणा चोखूणा अने वाटला विमानो जाणवानो उपाय कहे छे.

इगदिसि पंतिविमाणा, तिविभत्ता तस चउरसा वट्टा ॥
तंसेसु सेसमेग, खिव सेस दुगस्स इक्किक ॥ १५० ॥
तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासितिगंपि चउगुणं काउ ॥
वट्टेसु इदय खिव, पयरधण मीलिय कप्पे ॥ १५१ ॥

अर्थ—( इगदिसि पंतिविमाणा ) के० एक दिशाना पंक्तिना विमानोने ( तिविभत्ता ) के० त्रण भाग वहेंचीये एटले अनुक्रम ( तस चउरसा वट्टा ) के० त्रिखूणा चारखूणा अने वाटला एवा

त्रण भाग थाय, अने एम करता (सेसमेग) के० शेष एक श्रेणी वधे तो (तसमु) क० त्रिखूणामांहे (खिव) के० भेलवq अने (सेसदुगस्स) क० शेष बे वधे तो (इक्कि) के० एक एक मेलवq ॥ १५० ॥ एटले (तमेसु य चउरंसेसु) के० ए त्रण खूणाया अने एक चार खूणायां मेलवq (तो) क० त्यार पछी (रासितिगंपि) के० ए त्रणे राशीओमाहेली एक एक राशीने पण (चउगुण काउ) क० चारगुणा करीने पछी (वट्टेसु) क० वाटला विमानमाहे (इन्दय खिव) के० इन्द्रक विमान मेलवq पछी (पय रगण) के० प्रतरना चार दिशाना विमानो एकठा करवाथी (कप्पे)के० सौधर्मादिक देवलोकने विमानोनी सर्व संख्या थाय १५१

" अहिं एक नान दृष्टान्त सहित समजावे छे के—सौधर्म तथा ईशान देवलोकना पहला प्रतरमा एक दिशाए बासठ विमान छे, तेने त्रण भागे वहेंचीए तो वीस वीसनो एक एक भाग थाय उपर बे विमान वधे तेमाहेलु एक विमान त्रिखूणामा अने बीजु विमान चोखूणामा मेलवता एकवीश विमान, त्रिखूणावाला, एकवीश विमान चोखूणावाला अने वीश विमान वाटला थाय पछी ए त्रणे राशीना विमानने चारगुणा करीने वाटलामाहे एक इन्द्रक विमान मेलवीये एटले पहेला प्रतरनी चारे दिशानो चार पंक्ति मलीने चोराशी त्रिखूणा, चोराशी चो खूणा अने एकाशी वाटला. एम सर्व मलीने बसो ओगणपचास विमान थाय ॥ ए प्रमाणे बीजा प्रतरोने विषे पण जाणी लेवु

हवे सौधर्मादिक बार देवलोकना देवोना चिन्ह कहे छे.

कप्पेसु यं मिय महिसो वराह सिहा य छगल सालूरा ॥
हय गय भुयग खग्गी, वसहा विडिमाइ चिंधाइ ॥१५२॥

अर्थ—( कप्पेसु य ) के० बार देवलोक माहला पहेला सौ-धर्म देवलोकना देवोने ( मिय ) के० मृगनु चिन्ह, बीजा ईशान देवलोकना-देवोने ( महिसो ) के० पाडानु चिन्ह, त्रीजा सनत्कुमार देवलोकना देवोने ( वराह ) के० सुअरनु चिन्ह चोथा माहेंद्र देवलोकना देवोने ( सिंहा य ) के० सिंहनुं चिन्ह पांचमा ब्रह्म देवलोकना देवोने ( छगल ) के० बोकडानु चिन्ह छट्ठा लांतक देवलोकना देवोने ( सालूरा ) के० देडकानु चिन्ह, सातमा शुक्र देवलोकना देवोने ( हय ) के० घोडानु चिन्ह, आठमा सहस्रार देवलोकना देवोने ( गय ) के० हाथीनु चिन्ह, नवमा आनत देवलोकना देवोने ( भुयग ) के० सर्पनु चिन्ह दशमा प्राणत देवलोकना देवोने ( खग्गी ) के० गेंडानु चिन्ह, अगीयारमा आरण देवलोकना देवोने ( वसहा ) के० वृषभनु चिन्ह, अने बारमा अच्युत देवलोकना देवोने ( विडिमाइ ) के० मृग विशेषनु चिन्ह छे य ( चिंधाइ ) के० चिन्हो कह्या ॥ १५२ ॥

हवे दश वैमानिक इंद्रोना सामानिक देवोनी तथा आत्मरक्षक देवताओनी संख्या कहे छे :—

**चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सट्ठी य पन्न चत्ताला॥**
**तुल्लसुर तीस वीसा, दससहस्स आयरक्ख चउगु-णिया ॥ १५३ ॥**

अर्थ—सौधर्मेंद्रना ( चुलसी ) के० चोराशी हजार, ईशानेंद्रना ( असिइ ) के० एशी हजार, सनत्कुमारेंद्रना ( बावत्तरि ) के० बहोंतेर हजार, माहेंद्रना ( सत्तरि ) के० सीत्तेर हजार, ब्रह्मेंद्रना ( सट्ठी य ) के० साठ हजार, लांतकेंद्रना ( पन्न ) के० प

चास हजार, शुक्रेंद्रना ( चत्ताला ) के० चालीश हजार, सहस्रारेंद्रना ( तीस ) क० त्रीश हजार, आनतप्राणतेंद्रना ( वीसा ) के० वीश हजार, आरणअच्युतेंद्रना ( दसमहस्स ) के० दश हजार ( तुल्लसुर ) क० सामानिक देवता जाणवा, अने ( आयरक्ख ) क० आत्मरक्षक देवो ( चउगुणिया ) क० सामानिक देवतायी चार गुणा दरेक इंद्रोने जाणवां. ॥ १५३ ॥

उपरना विमानो कोने आधारे रह्या छे ? ते कहे छे

दुसु तिसु तिसु कप्पेसु, घणुदहि घणवाय तदुभयं च कमा ॥
सुर भवणपइट्ठाणं, आगासपइट्ठिया उवरिं ॥ १५४ ॥

अर्थ—( दुसु ) के० पहेला अने बीजा देवलोकने (घणुदहि) क० घनोदधिनो आधार छे ( तिसु ) के० त्रीजा चोथा अने पांचमा देवलोकने ( घणवाय ) क० घनवातनो आधार छे, ( च ) क० वली ( तिसु कप्पसु ) क० छट्ठा सातमा अने आठमा देवलोकने (तदुभय) कं० घनोदधि अने घनवातनो आधार छे ते (कमा) क० अनुक्रमे जाणवु ( उवरिं ) क० तेना उपर (सुरभवणपइट्ठाण) क० देवलोकने आधार ते ( आगासपइट्ठिया ) के० आकाशने आधारे छे ॥ १५४ ॥

हवे विमानोना पृथ्वीपिंडनु अने विमाननु उंचपणु त्रण गाथायी कहे छे

सत्तावीससयाइ, पुढवीपिंडो विमाणउच्चत्तं ॥
पंचसया कप्पदुगे, पढमे तत्तो य इक्किक्क ॥ १५५ ॥

हायइ पुढवीसु सय, वड्ढइ भवणेसु दुदुदु कप्पेसु ॥
चउगे नवगे पणगे, तहेव जा णुत्तरेसु भवे ॥१५६॥
इगवीससया पुढवी, विमाणमिक्कारसेव य सयाइं ॥
बत्तीसजोयणसया, मिलिया सव्वत्थ नायव्वा ॥ १५७॥

अर्थ—( पढमे ) के० पहेला ( कप्पदुगे ) के० बे देवलोकने विषे ( पुढवीपिंडो ) के० पृथ्वीना पिंडनु जाडपणु प्रमाणागुलना प्रमाणथी ( सत्तावीससयाइ ) के० सत्तावीस सो योजननु छे अने ( विमाणउच्चत्त ) के० विमाननु उंचपणुं ( पंचसया ) के० पांच सो योजननु छे (तत्तो य) के० त्यार पछी (पुढवीसु) के० पृथ्वीपिंडमा ( इक्कि सय ) के० एक एक सो योजन ॥ १५५ ॥ ( हायइ ) के० ओछा करवा अने ( भवणेसु ) के० विमानने विषे ( वड्ढइ ) के० एक एक सो योजन वधारवा एवी रीते ( दु ) के० त्रीजा अने चोथा देवलोकमा ( दु ) के० पांचमा अने छट्ठा देवलोकमां, ( दु कप्पेसु ) के० सातमा अने आठमा देवलोकमा, ( चउगे ) के० नवमा दशमा अगीयारमा अने बारमा देवलोकमा, ( नवगे ) के० नवग्रैवेयकमा, ( तहेव ) के० तेमज ( पणगे ) के० पांच अनुत्तर विमानमा ( जा णुत्तरेसु भवे ) के० यावत् पांचसु अनुत्तर विमान होय त्या सुधीमा ॥ १५६ ॥ ( इगवीससया ) के० एकवीश सो योजन जाडपणे ( पुढवी ) के० पृथ्वीपिंड होय अने ( विमाणमिक्कारसेव य सयाइं ) के० विमाननु उंचपणु अगीयार सो योजननु होय पछी ए पृथ्वीपिंडना अने विमानना उंचपणाने ( मिलिया ) के० एकठा करीये तो ( सव्वत्थ ) के० सर्वे मलीने ( बत्तीस जोयण सया ) के० बत्रीस सो योजन ( नायव्वा ) के० जाणवा ॥ १५७ ॥

॥ ते आ प्रमाणे-पहेला अने बीजा देवलोक पृथ्वीपिंड (२७००) योजन तथा विमान (५००) योजन ॥ त्रीजा अने चोथा देवलोके पृथ्वीपिंड [ २६०० ] योजन तथा विमान ( ६०० ) योजन ॥ पांचमा अने छट्ठा देवलोके पृथ्वीपिंड (२५००) योजन तथा विमान [७०० ] योजन ॥ सातमा अने आठमा देवलोके पृथ्वीपिंड (२४००) योजन तथा विमान ( ८०० ) योजन ॥ नवमे दशमे अगियारमे अने बारमे देवलोके पृथ्वीपिंड ( २३०० ) योजन तथा विमान ( ९०० ) योजन ॥ नव ग्रैवेयके पृथ्वीपिंड (२२००) योजन तथा विमान ( १००० ) योजन ॥ पांच अनुत्तर विमाने पृथ्वीपिंड ( २१०० ) योजन तथा विमान (११००) योजन ॥ बन्नेने भेगा करीये त्यारे (३२००) योजन थाय ॥

हवे सौधर्मादिक विमानोना वर्ण कहे छे.

पण चउ ति दु वण्णविमाणा, सधय दुसु दुसु य जा सहस्सारो ॥
उवरि सिय भवणवंतर-जोइसियाणं विविहवण्णा॥१५८॥

अर्थ—पहेला देवलोकथी ( सहस्सारो ) के० आठमा सहस्रार देवलोक सुधीना ( दुसु दुसु य ) के० बबे बबे देवलोकना ( पण चउतिदुवण्ण विमाणा ) के० अनुक्रमे पांच चार त्रण अने बे वर्णना विमानो होय छे. तथा (सधय ) के० धजा सहित होय छे ते आ प्रमाणे-पहेला तथा बीजा देवलोकना विमानो काला नीला राता पीला अने धोला होय छे, त्रीजा तथा चोथा देवलोकना विमानो नीला राता पीला अने धोला होय छे पांचमा तथा छट्ठा देवलोक राता पीला अने धोला होय छे' सातमा तथा आठमा देवलोके पीला अने धोला होय छे, उवरि के० तेना उपरला

विमानो (सिय) के० पांचा होय छे तथा (भवणवइ जोइसिय वाणमंतरि यार्ण) क० भवनपति व्यंतर तथा ज्योतिषी देवोना विमानो (विहंण्णा) के० विविधवर्णवाळा होय छे ॥१५८॥

हवे दरेक देवलोकना त्रिखूणा चाखूणा अने वाटला विमानोनी संख्या कहे छे

पन्नट्ठ अट्ठसीया, दुसत्तरिया य नव नव सयाओ ॥
सोहम्मीसाणे, वट्टा तसा य चउरंसा ॥ १५९ ॥

अर्थ—(सोहम्मसाणे) के० सौधर्म अने ईशान देवलोकमां (वट्टा तसा य चउरंसा) के० वाटला त्रिखूणा अने चउखूणा-विमानो साथे गणता (नव नव सयाओ) क०नव सो नव सो उपर (पन्नट्ठ) के०पासठ,(अट्ठसीया) क०अठ्यासी अने (दुसत्तरिया य) के० बहोंतेर छे अर्थात् सौधर्म अने ईशान देवलोकना साथे मळी वाटला विमान ९६५ त्रिखूणा विमान ९८८ अने चउखूण विमान ९७२ छे ॥ १५९ ॥

छच्च सया बाणउया, सत्तसया बारसुत्तरा हुंति ॥
छच्च सया छन्नउया, वट्टाइ सणकुमार माहिंदे ॥१६०॥

अर्थ—(सणकुमार माहिंदे) के० सनत्कुमार अने माहेंद्र ए बे देवलोकमां साथे गणता (छच्च सया बाणउया) के० छसो अने बाणु वाटला विमान, (सत्तसया बारसुत्तरा) के० सात सो बार त्रिखूणा विमान अने (छच्च सया छन्नउया) के० छसो छन्नु चउखूणा एम (वट्टाइ) के० वाटला विगेरनी संख्या (हुंति) के० होय छे. ॥ १६० ॥

चौवत्तरि चुलसीया, छमुत्तरया, दुवेदुवीसंयाओ ॥
कप्पंमि बंभलोए, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६१ ॥

अर्थ— (बंभलोए कप्पंमि) क० ब्रह्म देवलोकने विषे (वट्टा) के० वाटला विमान, (तंसा) क० त्रिखूणा विमान, (य) क० अने (चउरंसा) के० चारखूणा विमान ते (दुवेदुवीसयाओ) के० बसो बसो उपर (चोवत्तरी) के० चुमोतेर विमान, (चुल्सीया) क० चोराशी विमान, अने [छमुत्तरया] के० छोतेर विमान छे अर्थात् वाटला (२७४) त्रिखूण [२८४] अने चउखुणा [२७६] विमान छे ॥ १६१ ॥

तेणउय चेव सय, दो चेव सया सय च बाणउय ॥
कप्पमि लंतगमि, वट्टा तसा य चउरसा ॥ १६२ ॥

अर्थ—(लंतगमि कप्पमि) के० लांतक देवलोकने विषे [तेणउय चेव सय] क० एक सो त्राणु विमान [वट्टा] क० वाटला, (दो चेव सया) के० बसो विमान (तसा) के० त्रिखुणी, अने [सय च बाणउयं] क० एकसो बाणु विमान [चउरसा] के० चोखुणा अनुक्रमे जाणवा ॥ १६२ ॥

अट्ठावीस च सय, छत्तीससय सय च बत्तीस ॥
कप्पंमि महासुक्के, वट्टा तसा य चउरंसा ॥ १६३ ॥

अर्थ—(महासुक्के कप्पमि) के० शुक्र देवलोकने विषे (अट्ठावीस च सय) के० एकसो अट्ठावीश (वट्टा) के० वाटला

विमान, ( छत्तीस सय ) के० एक सो छत्रीश ( तसा ) के० त्रिखुणा विमान ( च ) के० अने ( सय च बत्तीस ) के० एक सो बत्रीस ( चउरसा ) के० चोखुणा विमान छे. ॥ १६३ ॥

अट्ठुत्तरसय सोडस-सय पुण अट्ठुत्तर सय पुण्ण ॥
कप्पंमि सहस्सारे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६४ ॥

अर्थ—( सहस्सारे कप्पंमि ) के० सहस्रार देवलोकने विषे ( अट्ठुत्तर सय ) के० एकसो आठ ( वट्टा ) के० वाटला विमान, ( सोडस सय ) के० एकसो सोल ( तसा ) के० त्रिखुणा विमान अने ( पुण ) के० वली ( अट्ठुत्तर सय पुण्ण ) के० बरोबर एकसो आठ विमान ( चउरंसा ) के० चोखुणा जाणवा. ॥ १६४ ॥

अडसीइ बाणउई, अट्ठासीइ य होइ बोधव्वा ॥
आणयपाणयकप्पे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६५ ॥

अर्थ—( आणयपाणयकप्पे ) के० आनत अने प्राणत देवलोकमा ( अडसीइ ) के० अठ्यासी ) वट्टा ) के० वाटला विमान, ( बाणउई ) के० बाणु ( तसा ) के० त्रिखुणा विमान, ( य ) के० अने ( अट्ठासीइ ) के० अठ्यासी ( चउरंसा ) के चोखुणा विमान ( होइ ) के० छे ते ( बोधव्वा ) के० जाणवा ॥ १६५ ॥

चउसट्ठी बावत्तरि, अडसट्ठी चेव होइ नायव्वा ॥
आरण अच्चुय कप्पे, वट्टा तसा य चउरंसा ॥ १६६ ॥

अर्थ—( आरण-अच्चुय कप्पे ) के० आरण अने अच्युत देवलोकमा ( चउसट्ठी ) के० चोसठ ( वट्टा ) के० वाटला विमान

( बावत्तरि ) के० बहोतर ( तसा ) के० त्रिखूणा विमान, य के० अने ( अडसट्ठी ) के० अडसठ ( चउरसा ) के० चो खूणा विमान (चेव) के० निश्चे (होइ) क० छे ते (नायव्वा) के०जाणवा ॥१६६॥

पणवीसा चत्ताला, छतीसा हेट्ठिमंमि गेविज्जे ॥
तेवीसा अट्ठविसा, चोवीसा चेव मज्झिमए ॥१६७॥

अर्थ—( हेट्ठिममि गेविज्जे ) के० नीचेना त्रण ग्रैवेयकमा ( पणवीसा ) के० पचीश वाटला विमान, ( चत्ताला ) के० चालीश त्रिखूणा विमान, अने ( छत्तीसा ) के० छत्रीश चोखूणा विमान छे तथा ( मज्झिमए ) के० मध्यना त्रण ग्रैवेयकमा (तेवीसा) के० त्रेवीश वाटला विमान, (अट्ठाविसा) के० अठयावीश त्रिखूणा विमान, अने ( चोवीसा ) के० चोवीश चो खुणा विमान ( चेव ) के० निश्च छे ॥ १६७ ॥

इक्कारस सोलस बार-सेव गेविज्जे उवरिमे हुंति ॥
एक वट्ट तसा, चउरो य अणुत्तरविमाणे ॥ १६८ ॥

अर्थ—( उवरिमे गेविज्जे ) के० उपरना त्रण ग्रैवेयके ( इक्कारस ) के० अगीयार वाटला विमान, ( सोलस ) के० सोल त्रिखूणा विमान अने ( बारसेव ) के० बार चोखुणा विमान ( हुंति ) के० छे तथा ( अणुत्तर विमाणे ) के० पांच अनुत्तर विमानने विषे ( एक वट्ट ) के० एक वाटलुं विमान ( य ) के० अने ( चउरो तसा ) के० चार त्रिखूणा विमान छे ॥ १६८ ॥

पणवीसा वासीया, छवीस चेव अट्ठसीया य ॥
छवीस चउराहिया, वट्टाईयाण सव्वग्ग ॥ १६९ ॥

अर्थ—( पणवीसा बासीया ) के० पचीस सो अने ब्यासी वाटला विमान, ( छविस अट्ठसीया य ) के० छवीश सो अने अठयाशी त्रिखूणा विमान, तथा (छवीस चउरहिया) के० छवीश सो अने चार अधिक चोखूणा विमान, ए उर्द्ध लोकमा ( वट्टाई याण ) के० वाटला विगेरे विमानोनी ( सव्वग ) के० सर्व एकठी सख्या कही ॥ १६९ ॥

हव दरेक देवलोके त्रणे जातिना विमानोनी सर्व संख्या कहे छे.

सत्त सय सत्तवीसा, चत्तारि सया य हुति चउणउया ॥
चत्तारिसय छासिया, सोहम्मे हुति वट्टाइ ॥ १७० ॥

अर्थ—( सोहम्मे ) के० सौधर्म देवलोक ( सत्त सय सत्तवीसा ) के० सात सो सत्तावीस विमान वाटला ( य ) के० अने ( चत्तारिसया चउणउया ) के० चार सो चोराणु विमान त्रिखूणावाला ( हुति ) के० होय छे. वली ( चत्तारि सय छासिया ) के० चार सो छयासी विमान चोखूणावाला एम ( वट्टाई ) के० वाटला विगेरे सर्व मलीने सत्तर सो सात विमान चार पंक्तिना ( हुति ) के० छे ॥ १७० ॥

इगतीस सय सहस्सा, अट्ठाणउई भवे सहस्सा य ॥
दोयसया तेणउया, सोहम्मे पुप्फकिन्नाण ॥ १७१ ॥

अर्थ—( इगतीस सय सहस्सा ) के० एकत्रीस लाख ( अट्ठाणउइ सहस्सा ) के० अठाणु हजार ( दोयसया ) के० बसो अने ( तेणउया ) के० त्राणु अधिक एटला ( सोहम्मे ) के० सौधर्म

देवलोकने विषे ( पुष्फकिन्नाण ) के० पुष्पावकीर्ण विमानो छे. ए सर्व मली बत्रीस लाख विमान सौधर्म देवलोकमां जाणवां ॥१७१॥

एमेवय ईसाणे, नवर वट्टाण होइ नाणत्तं ॥
दो सय अट्ठत्तीसा, सेसा जहचेव सोहम्मे ॥१७२॥

अर्थ—( ईसाणे ) के० ईशान देवलोकने विषे ( एमेवय ) के० एज प्रमाणे एटले सौधर्म देवलोकनी पेठे जाणवुं, परंतु (नवर) के० एटलु विशेष छे के—( वट्टाण ) के० वाटला विमाननी ( दो सय अट्ठत्तीसा ) के० बेसो आडत्रीश ( नाणत्त होइ ) के० ए जुदा प्रकारनी संख्या छे. ( सेसा ) के० बाकीना विमानोनी संख्या ( जहचेव सोहम्मे ) के० जेम सौधर्म देवलोकमां कही छे तेम जाणवी ॥ १७२ ॥

सत्तरसमया सत्त–त्तरा य सोहम्मि आवलिविमाणा ॥
बारस अट्ठारहिया, ईसाणे आवलि विमाणा ॥१७३॥

अर्थ—( सोहम्मि ) के० सौधर्म देवलोकने विषे चार दिशाना सर्व मलीने ( सत्तरसमया सत्तत्तरा य ) के० सत्तर सो अने सात ( आवलि विमाणा ) के० पंक्तिमां रहेला विमानो छे अने ( ईसाणे ) के० ईशान देवलोकने विषे चारे दिशाना चार पंक्तिना मलीने ( बारस अट्ठारहिया ) के० बार सो अने अढार अधिक ( आवलि विमाणा ) के० पंक्तिमां रहेला विमानो छे । १७३ ॥

सत्तावीस लक्खा, अट्ठाणउइ भवे सहस्सा य ॥
सत्तसया बासीया, ईसाणे पुप्फकिन्नाण ॥ १७४ ॥

अर्थ—( सत्तावीस लक्खा ) के० सत्यावीश लाख, ( अट्ठाणउइ सहस्सा य ) के० अठाणु हजार अने उपर ( सत्तसया गासीया ) के० सातसो ने व्याशी एटला ( पुप्फकिन्नाण ) के० पुष्पावकीर्ण विमानो (ईसाणे) के० ईशान देवलोक छे. ॥ १७४ ॥

पचसया बारीसा, तिन्नेव सया उ हुंति छप्पन्ना ॥
तिन्नि सया अडयाला, सणकुमारस्स वट्टाई ॥ १७५ ॥

अर्थ—( पचसया बारीसा ) के० पांच सो बावीश वाटला विमान, ( तिन्नेव सया छप्पन्ना ) के० त्रण सो छप्पन्न त्रिखूणा विमान, अने ( तिन्निसया अडयाला ) के० त्रण सो अडतालीश चोखूणा विमान, ए ( सणकुमारस्स ) के० सनत्कुमार देवलोकना (वट्टाई) के० वाटला विगेरे विमानो (हुंति) के० होय छे ॥ १७५ ॥

सत्तरिसयमणूण, तिन्नेव सया हवंति छप्पन्ना ॥
तिन्नि सया अडयाला, वट्टाइ महिंद सग्गस्स ॥ १७६ ॥

अर्थ—( सत्तरिसयमणूण ) के० पुरपुरा एक सो सीत्तेर वाटला विमान, ( तिन्नेव सया छप्पन्ना ) के० त्रण सो छप्पन त्रिखूणा विमान, ( तिन्नि सया अडयाला ) के० त्रण सो अडतालीस चोखूणा विमान ए प्रमाणे ( महिंदसग्गस्स ) के० माहेंद्र देवलोकना ( वट्टाइ ) के० वाटला विगेरे विमानो ( हवंति ) के० होय छे ॥ १७६ ॥

बारसया छवीसा, कप्पम्मि सणकुमार आवलिया ॥
अट्ठसया चोवत्तर, विमाण माहिंद आवलिआ ॥ १७७ ॥

( रिसचरि सहस्सा ) के० एक योजनना साठीया त्रीस भाग उपर थाय ॥ १८२ ॥

सत्तगुणे छलक्खा, इगसट्ठि सहस्स छसय छासीया ॥
चउपन्नकला तह नव,गुणमि अडलक्ख सड्ढाओ॥१८३॥

अर्थ—( सत्तगुणे ) क० अतर प्रमाणने सात गणु करता ( छलक्खा ) क० छे लाख, ( इगसट्ठि सहस्स ) के० एकसठ हजार अने ( छसय छासीया ) क० छ सो ने छयासी योजन तथा ( चउपन्नकला ) के० एक योजनना साठीया चोपन भाग थाय ( तह ) के० तेमज ( नव गुणमि ) क० अतर प्रमाणने नव गणु करीये त्यारे ( अडलक्ख सड्ढाओ ) के० साडा आठ लाख, तथा-॥ १८३ ॥

सत्तसया चत्ताला, अट्ठारस कला य इय कमा चउरो ॥
चडा चवला जयणा, वेगा य तहा गई चउरो ॥१८४॥

अर्थ—( सत्तसया चत्ताला ) के० सातसा चालीश योजन अने ( अट्ठारस कला य ) के० एक योजनना साठीया अढार भाग ( इय ) के० ए प्रमाणे ( कमा ) क० चालवानी गतिनो क्रम ( चउरो ) क० चार प्रकारनो छे कारण के-( चडा चवला जयणा ) के० चडा चवला यतना ( तहाय ) के० अने तेमज ( वेगा ) के० वेगा ए नामनी ( गई चउरो ) के० चार गति छे ए चारे गति एक एकथी वधारे उतावली छे ॥ १८४ ॥

इत्थ य गइ चउत्थि, जयणयरि नाम केइ मन्नंति ॥
एहि कमेहि मिमाहि,गइहि चउरो सुरा कमसो ॥१८५॥

अर्थ—( इत्थ य ) के० अहिं ( केइ ) के० कोइक आचार्य ( चउत्थि गइ ) के० चोथी जे गतिने ( जयणयरि नाम ) के० यवनातरा ए नामथी ( मन्नंति ) के० माने छे ( एहिं कमेहिं ) के० ए पूर्वोक्त क्रमेकरीने (चउरो सुरा) के० चार देवता (इमाहिं) गईहिं ) के० ए चंडादिक चार गतिये करीने ( कमसो ) के० अनुक्रमे विमानोने मापे, ते एवी रीते के-॥ १८० ॥

विक्खंभ आयाम, परिहि अभ्भिंतर च बाहिरियं ॥
जुगवं मिणंति छम्मास, जाव न लहंति ते पारं ॥१८६॥

अर्थ—कोइ एक देवता त्रणगुणी चंडा गतिये करी विमानना ( विक्खंभ ) के० पहोळपणने माप बीजो देवता पांच गुणी चपला गतिये करी विमानना ( आयाम ) के० लांबपणाने माप त्रीजो देवता सातगुणी यवनागतिये करी विमाननी ( अभ्भिंतर परिहिं ) के० मांहली परिधिने मापे अने चोथो देवता नवगुणी ( वेगागतिये ) करीने विमाननी ( बाहिरियं ) के० बहारनी परिधिने माप एम ए चारे देवताओ ( जाव ) के० यावत् ( छमास ) के० छमासमुधी ( जुगवं ) के० एकी साथे ( मिणंति ) के० विमानने मापे, तो पण ( ते ) के० ते देवता कटलाक विमानाना ( पारं ) के० पारने ( न लहंति ) के० न पामे ॥ १८६ ॥

जोयणलक्खपमाण, निमेममित्तेण जाई जो देवो ॥
छम्मासेण य गमण, एव रज्ज जिणा विति ॥१८७॥

अर्थ—( जो देवो ) क० जे कोइ देवता ( निमेसमित्तेण ) के० एक निमेष मात्र करीने ( जोयण लक्खपमाण ) के० एक लाख योजन प्रमाण ( जाइ ) के० चाले तो ( छम्मासेण य गमण ) के० छमास सुधी चालता जे प्रमाण थाय ( एव ) क० ए प्रमाणने ( रज्ज ) क० एक राज प्रमाण कहवाय, एम ( जिणा विंति ) के० जिनेश्वरो कहे छे ॥ १८७ ॥

पावंति विमाणाणं, केसिंपि हु अहव तिगुणियाईए ॥
कम चउगे पत्तेयं, चडाइ गईउ जोइज्जा ॥ १८८ ॥
तिगुणेण कप्प चउगे,पंचगुणेण तु अट्ठसु मुणिज्जा ॥
गेविज्जे सत्तगुणेण, नवगुणेणुत्तरचउक्के ॥ १८९ ॥

अर्थ—( अहव ) क० अथवा ( केसिंपि विमाणाणं ) क० केटलाक विमानाना ( तिगुणियाईए ) के० त्रिगुणादिक गतिवडे पारने ( पावंति ) क० पामे छे ते एवी रीते क ( कम चउगे ) के० त्रिगुणादि चार क्रमने विषे (पत्तेय) क० प्रत्येक प्रत्ये (चडाइ गइउ) के० (चडादिक गति जोइज्जा) क० जोडवी ते एवा रीते क-कोइ देवता (कप्पचउगे) के० पहेला चार देवलोकमा (तिगुणेण) के० त्रिगुणी एवी चण्ड चवला यवना अने वेगवती गतिवडे विमाननी पहोलाइ लबाइ अभ्यतरपरिधि अने बाह्य परिधिने मापे तो पार पामे बाकीना ( अट्ठसु ) के० उपरना आठ देवलोकने विषे ( पंचगुणेण ) के० पांचगुणा चडादिक गति वडे विमानोनी पहोलाइ विगेरेने मापे ता पार पामे एम ( मुणिज्जा ) के० जाणवु ( गेविज्ज ) क० नव ग्रैवेयकने विषे सात गुणी चडादिक चार गति वडे विमाननी पहोलाइ विगेरने माप अने ( अणुत्तरचउक्के ) के० सर्वार्थ सिद्ध विमान विना बाकीना चार विमा-

ननी पहोळाइ विगेरने ( नवगुणेण ) के० नवगुणी चडान्ति गतिथी मापे तो पार पामे ॥ १८८ ॥ १८९ ॥

पणयालीस लक्खा, सीमंतय माणुस उडु सिव च ॥
अपइट्ठाणो सव्वट्ठ, जंबुद्दीवो इमं लक्खं ॥ १९० ॥

अर्थ—( सीमंतय ) के० सीमंत नामनो नरकावास, माणुस के० मनुष्यक्षेत्र, उडु के० उडु नामनु विमान, च के० अने सिव के० सिद्धशिला ए चार पदार्थो प्रत्येक (पणयालीस लक्खा) के० पीस्तालीश लाख योजनना प्रमाणवाला छे, तथा (अपइट्ठाणो) के० सातमा नरकनो अपइट्ठाण नरकावास, ( सव्वट्ठ ) के० सर्वार्थ सिद्ध विमान अने ( जंबुद्दीवो ) के० जंबुद्वीप ( इमं ) के० ए त्रण पदार्थो प्रत्येक ( लक्खं ) के० एक लाख योजनना छे ॥ १९० ॥

अह भागा सग पुढविसु, रज्जु इक्किक्क तहय सोहम्मे ॥
माहिंद लंत सहसार–अच्चुय गेविज्ज लोगंते ॥१९१॥

अर्थ—मेरुना मध्य भागे रहेला रुचक प्रदेशथकी ( अह ) के० नीचे ( पुढविसु ) के० पृथ्वीने विषे [ भागा सग ] के० सात भाग करीये तो [ रज्जु इक्किक्क ] के० एक एक भागनो एक एक राज प्रमाण थाय छे [ तहय ] के० तेमज ( सोहम्मे ) के० सौधर्म देवलोक, ( माहिंद ) के० ( माहेन्द्र देवलोक, ( लंत ) के० लांतक देवलोक, ( सहसार ) के० सहस्रार देवलोक, ( अच्चुय ) के० अच्युत देवलोक, ( गेविज्ज ) के० नव ग्रैवेयक अने ( लोगंते ) के० लोकान्तने विषे एम अनुक्रमे सात राजलोक जाणवा. नीचेना अने उपरना मळी चौद राजलोक थाय ॥ १९१ ॥

वइसाहठाणठियपय–कडिठियकरजुग नरागिई लोगो ॥
उप्पत्तिनासधुवगुण–धम्माइच्छदव्वपडिपुण्णो ॥१९२॥

अर्थ–(जइमाहडाणठियपय)क० जे पग पहोला करीने उभेला, [कडित्थरज्जुग] क० कड उपर हाथ मूकेला एवा (नरागिई) क० पुरुषनी आकृति समान (लोगो) क० चउद राजलोक छे ते (उप्पत्तिनासधुवगुण) क० उत्पत्ति नाश अने ध्रुव ए गुणोथी तथा [धम्माच्छिइज्ज] क० धर्मास्तिकायादि छ द्रव्योथी (पडिपुण्णो) क० भरपूर भरेलो छे. ॥ १९२ ॥

केणवि न कओ न धओ, णाहारोणहठिओ सयंसिद्धो ॥
अहमुहमहमल्लगठिओ लहुमल्लगसंपुडसरिसो ॥१९३॥

अर्थ—वली (केणवि न कओ) क० कोइथी नहिं करायेलो, न (धओ) क० कोइथी नहिं धारण करायेलो, (अणाहारो) के० आधार विनानो, (णहठिओ क० आकाशमा रहेलो, (सयसिद्धो) क० पोतानी मेलेज सिद्ध अने (अहमुहमल्लगठिओ) के० नीचा मुखवाला मोटा सराव सरखी आकृतिवालो तथा उपर (लहुमल्लगसंपुडसरिसो) के० नाना सराव संपुट सरखो चौदराज लोक छे ॥ १९३ ॥

पयतलि सग मज्झेगो, पण कुप्परि सिरतलेगरज्जु पिहु॥
सो चउदसरज्जुच्चो, माघवइतलाओ जा सिद्धि ॥१९४॥

अर्थ—(पयतलि) के० लोकना पगतलियानी नीचे अर्थात् सातमी नरक नीचे (सग) क० सात राज प्रमाण पहोलो (मज्झेगो) के० मध्य भागे एक राज पहोलो, (कुप्परि) के० कोणीना भागने विषे [पण] क० पांच राज प्रमाण पहोलो, अने (सिरतलेगरज्जु) के० मस्तकने विषे एकराज (पिहु) क० पहोलो, (सो) क० ते राजलोक (चउदस रज्जुच्चो) क० चउद राजलोक उंचो

छे. अने ते उचाइ ( मायञ्झल्माओ ) क० सातमी नरक पृथ्वीना तळियाथी ( जा सिद्धि ) क० सिद्धशीला सुधी जाणवी ॥१९४॥

मगवण्ण रेह तिरियं, उड्ढं पुण पच रज्जु चउअसे ॥
इगरज्जु वित्थरायय, चउदसरज्जुच तमनाडी ॥१९५॥

अर्थ—( मगवण्ण रेह ) क० सत्तावन रेखा ( तिरिय ) क० तिर्छी एटले आडी लखवी ( पुण ) के० अने ( पच ) क० पाच रेखा ( उड्ढं ) के० उभी लखवी, तथा ( रज्जु ) के० एक राजना ( चउअसे ) क० पा पा भागना चार विभाग एटले खाडवा करवा, चउदराजनी ( तम नाडी ) के० त्रसनाडी एटले मध्यनाडी ( इगरज्जु वित्थरायय ) के० एकराज लांबी पहोळी छे अने ( चउदस रज्जुच्च ) क० चउदराज प्रमाण उची छे ॥

तात्पर्य ए छे के–सत्तावन रेखा तिर्छी करवी अने पाच रेखा उभी करवी, एटले सत्तावन रेखाना चउदराजना छप्पन खाडवा थाय, अने पाच रेखानी एक राज पहोळी त्रसनाडी छे तेना पा पा भाग करता चार खाडवा थाय, तेमज उचाइमां पण एक राजना चार खाडवाना प्रमाणे चउदराजना छप्पन्न खाडवा थाय. १९५

हवे चउद राजलोकना खाडवा करवानी इच्छाथी प्रथम ऊर्ध्व लोकना सात राजना खाडवा कहे छे

उड्ढे तिरिय चउरो, दुसु छ दुसु अट्ठ दस य इक्केके ॥
बारस दोसु सोलस, दोसु वीसा य चउसु पुणो ॥१९६॥

अर्थ—( उड्ढे ) के० उपरना तीर्छा लोकने विषे बे पडिमा ( तिरिय ) क० तीर्छा चउरो के० चार खाडवा छे. तेनी उपर

( दुसु ) क० बे पक्तिमा ( न्ड ) के० छ खांडवा छे, तेनी उपर ( दुसु ) के० बे पक्ति माहली ( इक्कि ) के० एक पक्तिमा [अट्ठ] के० आठ खाडवा छे अने त्रीजामा ( दस य ) के० दश खाडवा छे तेना उपरनी ( दोसु ) के० बे पक्तिमा ( बारस ) के० बार बार खाडवा छे, तेनी उपर ( दोसु ) क० व पक्तिमा ( सोलस ) के० शोल शोल खाडवा छे, ( पुणो ) के० वली तेनी उपर (चउसु) के०चार पक्तमा ( वीसा य ) के० वीश वीश खाडवा छे,

तेनी समजुती आ प्रमाणे छे के—नाल्हीं सत्तावन रेखा माहली ओगणत्रीशमी रेखाथी उपरना सात राजलोक शरु थाय छे, अने चउदराज लोकमा पा पा राजनो एक एक खाडवो करलो होवाथी एक राजना चार खांडवा थाय छे, एम चउदे राज लोकना उपरा उपरी छप्पन्न खाडवा थाय छे, तेमा ओगणत्रीशमी रेखानी उपर बे पक्तिने विषे त्रसनाडीमाज चार चार खाडवा छे पण बाहर एके खाडवो नथी ते उपर बे पक्तिने विषे छ छ खाडवा छे तेमा चार चार त्रस नाडीमा छे अने एक एक खाडवो त्रसनाडीनी ब-हार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर एक पक्तिने विषे आठ खाडवा छे, तेमा चार खाडवा त्रसनाडीमा छे अने बबे खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर एक पक्तिने विषे दश खाडवा छे, तेमा चार खाडवा त्रसनाडीमा अने त्रण त्रण खाडवा त्रसनाडीथी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी उपर बे पक्तिने विषे बार बार खाडवा छे, तेमा चार खाडवा त्रसनाडीमा अने चार चार खाडवा त्रस-नाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पक्तिने विषे शोल शोल खाडवा छे, तेमा चार चार त्रसनाडीमा अने छ छ खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर चार पक्तिने विषे वीश वीस खाडवा छे, तेमा चार चार त्रसनाडीमा अने आठ

आठ खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. ॥ १९६ ॥

पुणरवि दोसु सोलस,बारस दोसु य तिसु दस निसुद्ध ॥
छ दुसु दुसु चउ खड्डय,सव्वे चउरुत्तरा तिसया ॥१९७॥

अर्थ—( पुणरवि ) के० वली पण उपरनी ( दोसु ) के० बे पक्तिने विषे ( सोलस ) के०शोल खाडवा छे, तेनी उपरनी (दोसु) के० बे पक्तिने विषे ( बारस ) के० बार खाडवा छे ( य ) के० अने तेनी उपर ( तिसु ) के० त्रण पक्तिने विषे ( दस ) के० दश खाडवा छे, अने तेनी उपर ( तिसु ) के० त्रण पक्तिने विषे [अट्ठ] के० आठ खाडवा छे तेनी उपर ( दुसु ) के० बे पक्तिने विषे (छ) के० छ खाडवा छे अने तेनी उपर ( दुसु ) के० बे पक्तिने विषे ( चउ ) के० चार खाडवा छे, ( सव्व ) के० सर्व मली ( चउरुत्तरा तिसया ) के० त्रण सो चार (खड्डया) के० खाडवा थाय छे,

तेनी समजुती ए छे के—पूर्वेनी गाथामा वीश खाडवानी चार पक्ति कही गया छे तेनी उपर बे पक्तिने विषे शोल शोल खाडवा छे, तेमा चार चार खाडवा त्रसनाडीमा अने छ छ खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे तेनी उपर बे पक्तिने विषे बार बार खाडवा छे, तेमा चार चार खाडवा त्रसनाडीमा अने चार चार खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर त्रण पक्तिने विषे दश दश खाडवा छे तेमा चार चार खाडवा त्रसनाडीमा छे, अने त्रण त्रण खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर त्रण पक्तिने विषे आठ आठ खाडवा छे, तेमा चार खाडवा त्रसनाडीमा छे, अने बे बे खाडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पक्तिने विषे छ छ खाडवा छे, तेमा चार चार खाडवा त्रसनाडीमा छे अने

क एक खाडवो त्रसनाडीना बहार बन्ने बाजुए छे, तेनो उपर पक्तिने विष चार चार खाडवा छे ते चारे त्रसनाडीमाज छे, एम र्व लोकने विषे सात राज प्रमाणमा सर्व मळीने त्रण सो चार ाडवा थाय छे ॥ १९७ ॥

हवे नीचेना सात राजलोकना खाडवा कहे छे

उवरीव लोगमज्झा, चउद्दाणे सत्तपुढविसु चउ दस ॥
सोल वीसा चउवीस, छवीसा तहय अडवीसा ॥१९८॥

अर्थ—( उवरिव ) क० उपरना सात राजनी पेठे ( सत्तपुढविसु ) क० नीचेना साते नरक पृथ्वीने विष ( लोगमज्झा ) के० त्रसनाडीमा एक राजलोकना ( चउद्दाणे ) क० चार चार खाडवा छे रत्नप्रभादि साते नरकरूप सात राजलोकमा अनुक्रमे ( चउ ) के० चार चार, ( दस ) क० दश दश, ( सोल ) क० शोल शोल, ( वीसा ) क० वीस वीस, ( चउवीस ) क० चोवीश चोवीश, ( छवीसा ) के० छवीश छवीश, ( तहय ) के० तेमज (अडवीसा) के० अठावीस अठावीश खाडवा छे

समजूती एम छे के—अधो लोकनी सात पृथ्वी सात राजप्रमाण उची छे एटले एक एक पृथ्वी एक एक राज प्रमाण उची छे अने तेमा पा पा राज प्रमाणनी चार चार पक्ति छे तथा साते पृथ्वीमा मध्यनाडी एक राज प्रमाण पहोली छे रत्नप्रभा पृथ्वी एक राज प्रमाण पहोली होवाथी तेमा फक्त मध्य नाडीनी चार लाइनमा पा पा राजना चार चार जे खाडवा छे तेनी बहार एक पण खाडवो नथी तेनी नीचे बीजी शर्करा प्रभा अढीराज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चार पक्तिने विषे दश दश खाडवा छे, तेमां चारा चार खाडवा त्रसनाडीमा छे, अने त्रण त्रण खाडवा त्रसना-

डीनी वहार बन्ने बाजुए छे, तेनी नीचे त्रीजी वालुका प्रभा चार राज पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे सोल सोल खाडवा छे, तेमां चार चार खाडवा त्रस नाडीमां छे, अने छ छ खाडवा त्रस नाडीनी वहार बन्ने बाजुए छे तेनी नीचे चोथी पंकप्रभा पांच राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे वीश वीश खाडवा छे, तेमां चारचार खाडवा त्रसनाडीमां छे अने आठ आठ खाडवा त्रसनाडीनी वहार बन्ने बाजुए छे तेनी नीचे पांचमी धूमप्रभा छ राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे चोवीश चोवीश खाडवा छे, तेमां चार चार खाडवा त्रसनाडीमां छे अने दश दश खाडवा त्रस नाडीनी वहार बन्ने बाजुए छे. तेनी नीचे छट्ठी तमप्रभा सात राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे छवीश छवीश खाडवा छे, तेमां चार चार खाडवा त्रसनाडीमां छे, अने अगीयार अगीयार खाडवा त्रसनाडीनी वहार बन्ने बाजुए छे तेनी नीचे सातमी तमस्तमप्रभा सात राजप्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे अट्ठावीश अट्ठावीश खाडवा छे, तेमां चार चार खाडवा त्रसनाडीमां छे, अने बार बार खाडवा त्रसनाडीनी वहार बन्ने बाजुए छे, ॥ १०८ ॥

अह पणसय वारुत्तर, खडय सोलहिय अट्ठसय मज्झे ॥
धम्माइ लोगमज्झं, जोयण असखकोडीहि ॥ ११९ ॥

अर्थ—( अह ) के० हवे ( पणसय वारुत्तर ) क० पांच सो अने बार नीचेनी सात पृथ्वीरूप सातराजना ( खडय ) क० खाडवा थया तथा उपरनां सातराजना त्रण सो अने चार खाडवा पहेला कह्या छे ते सव्व के० सर्वे मली ( सोलहिय अट्ठसय )

क० आठ मां अने गोल जाय ( यम्माइ ) त० रत्नप्रभा पृथ्वीमां ( लोगमज्झ ) त० चौद राजलोकनो मध्य भाग ( ओगाए असख कोटीहिं ) त० असख्याता क्रोडी योजन नीचे छे

भावार्थ ए छे के—रत्नप्रभा नामनी पहेली पृथ्वीने विषे चौद राज लोकनो मध्यभाग छे, पण ते कइ ठकाणे छे ? ते कहे छे. त्यार समभूतलथकी नीचे असख्याता क्रोडी योजन जाय त्यां चउद राजलोकनो मध्यभाग छे एटले त्यांथी लोक सात राज उचो अने सात राज नीचो छे

उक्त च भगवती प्रयाद्दशशतकचतुर्थोदेशके ॥ प्रश्न ॥ कह ण भते लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्त ॥ हे भगवन ! लोकनो मध्यभाग क्यां छे ? उत्तर —गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवासतरस्स असंख्जतिभाग ओगाहित्ता, एत्थ ण लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ भावार्थ ए छे के-हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशीहजार योजननो छे तेनी नीचे वीश हजार योजननो घनोदधिनो पींड छे तेनी नीचे असख्याता योजननो घनवाननो पींड छे तेनी नीचे असख्याता योजननो तनवातनो पींड छे ए सर्व अवगाहीने नीचे जइये त्यां असख्याता योजननो आकाश प्रदेश छे पण ते आकाश प्रदेश घनवात तथा तनवातना पींडथकी असख्यात गुणो छ. ते आकाश प्रदेशनो असख्यातमो भाग अवगाहीने नीचे जइये त्यां चउद राजलोकनो मध्यभाग छे तेनी नीचे सात राज प्रमाण अधोलोक छ अने उपर सात राजप्रमाण उर्द्धलोक छे

प्रश्न ॥ कह ण भते अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? हे भगवन् ! अधोलोकना सात राजनो मध्यभाग क्यां छे उत्तर ॥ गोयमा ! चउत्थीए पक्कप्पभाए पुढवीए उवासतरस्स साइरेग अद्ध ओगाहित्ता एत्थ ण अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ भावार्थ

ए छे के—हे गौतम ! चोथी पंकप्रभा पृथ्वीनो पींड एक
वीश हजार योजननो छे, तेनी नीचे वीश हजार योजननो घनो
दधि पींड छे, तेनी नीचे असंख्याता योजननो घनवात पींड छे,
तेनी नीचे असंख्याता योजननो तनवात पींड छे ए सर्व अवगा-
हीने नीचे जइये त्या असंख्याता योजन प्रमाण आकाश प्रदेश छे.
एटले आकाश प्रदेश घनवात तनवातथकी असंख्यात गुणा छे ते
आकाश प्रदेशनो अर्द्धथी झाझेरो भाग अवगाहीने नीचे जइये त्या
नीचेना सात राजलोकनो मध्य भाग छे एटले ते स्थानथी नीचे
अने उंचे साडा त्रण साडा त्रण राजलोक अधोलोकना छे ॥ तथा
चोक्तं पंचमांगे ॥ प्रश्न कह णं भंते उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥
हे भगवन् ! उर्द्धलोक सात राज प्रमाण छे तेनो मध्यभाग क्यां
छे ? ॥ उत्तर गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार माहिंदाण कप्पाणं बंभ
लोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडे एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे प
ण्णत्ते ॥ भावार्थ ए छे के—रुचक प्रदेशनी उपर नव सो योजनमां
ज्योतीषचक्र छे, ते ज्योतीषचक्रने उल्लंघन करी उपरनो भाग उर्द्ध
लोक कहेवाय छे, ते उपर लोकांतिक सुधी सात राज काइक उणा
छे, अने आंगणत्रीशमी रेखा उपर सात राज पुरा छे ते उपरना
सात राजनो मध्यभाग ते चार देवलोकने उलंघी पांचमा ब्रह्मलो-
कना रिष्टनामा त्रीजा प्रतरनी पासे लोकांतिक देवताना विमान छे,
तेनी पासे उर्द्धलोकनो मध्यभाग छे त्यांथी साडा त्रण राज नीचे
तथा साडा त्रण राज उपर उर्द्धलोक छे ए प्रमाणे सर्व लोकना
मध्यभाग तथा अधोलोक अने उर्द्धलोकना मध्य भाग क्या ॥१९९॥

सगरज्जु जोयणमया, अट्ठारस सगरज्जुमाणाइ ॥
अहतिरियउड्ढलोया, निरयनरसुराइ भाविला ॥२००॥

अर्थ—( अहतिरियउड्ढलोया ) के० नीचेना सात राजलोक, मध्यनो तिर्यग्लोक अने उपरना सात राजलोक ए त्रणे लोक अनुक्रमे ( सगरज्जु ) के० सात राज प्रमाण (जोयण सया अट्ठार) क० अढारसो योजन, अने ( ऊणसगरज्जूमाणाइ ) क० कांइक ओछा सातराज प्रमाणवाला छे एटले नीचेनो अधोलोक सातराज प्रमाणथी कांइक झाझेरो ऊचो छे मध्यलोक अढार सो योजननो ऊचो छे, अने उपरनो लोक सात राज प्रमाणथी कांइक ओछो एटले असंख्याता योजन ओछो ऊचो छे. वली ते त्रण लोक ( निरयनरसुराइ भरिया ) क० नारकी मनुष्य अने देवता विगेरथी भरेला छे ॥ २०० ॥

इक्किक्करज्जु इक्किक–निरय सग पुढवी असुर पढमे ॥
तह वंतर तदुवरि नर–तिरियाइय जोइसा गयणे ॥२०१॥

अर्थ—( इक्किक्करज्जु ) क० एक एक राजप्रमाण ( इक्किक-निरय ) क० एक एक नरक पृथ्वी छे, तेवी ( सग पुढवी ) के० सात नरक पृथ्वीना सात राजलोक छे तेमा ( असुर ) क० असुर कुमारादिक भुवनपति देवो (पढमे) के०पहेली रत्नप्रभा नरकपृथ्वीने विषे रहेछे,एटले पहेली रत्नप्रभा नरक पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशी हजार योजननो छे, तेमांथी एक हजार योजन नीचेना मूकी देवा अने एक हजार योजन उपरना मूकी देवा बाकीना एक लाख अठोतेर हजार योजनमा भुवनपति देवो रहे छे तह क० तथा वंतर क० व्यंतर देवो तेना उपर रहे छे एटले रत्नप्रभा पृथ्वीना जे उपरना एक हजार योजन मूक्या छे तेमाथी एक सो योजन उपर मूकी देवा अने एक सो योजन नीचे मूकी देवा, बाकीना वच्चेना आठ सो योजनमा व्यंतर देवो रहे छे अने ( तदुवरि ) के० ते

रत्नप्रभाना उपरना भागने विषे ( नरतिरियाइय ) के० मनुष्य तिर्यंच विगेरे रहे छे. तथा तेनी उपरना ( गयणे ) के० आकाशमां ( जोइसा ) के० ज्योतसी देवता रहे छे ॥ २०१ ॥

हवे उपरना सात राजलोकना अट्ठावीस खांडवानो विभाग कहे छे अने जेटला खांडवे जेटला देवलोक थाय छे ते कहे छे.

छसु खंडगेसु य दुगं,चउसु दुगं छसु य कप्प चत्तारि ॥
चउसु चउ सेसेसु य,गिविज्जणुत्तर य सिद्धं ते॥२०२॥

अर्थ—ओगणत्रीशमी रेखा उपरना ( छसु खंडगेसु ) के० छ खांडवाने विषे ( दुग ) के० सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोक छे, तेना उपरना ( चउसु ) के० चार खांडवाने विषे ( दुग ) के० सनत्कुमार अने माहेंद्र ए बे देवलोक छे तेना उपरना ( छसु ) के० छ खाडवाने विषे ( कप्पचत्तारि ) के० ब्रह्म लांतक शुक्र अने सहस्रार ए चार देवलोक छे, तेना उपर ( चउसु ) के० चार खाडवाने विषे ( चउ ) के० आनत प्राणत आरण अने अच्युत ए चार देवलोक छे ए वीश खाडवा थया. अने पांच राजप्रमाण उर्द्ध-लोक थयो. तेना उपर ( सेसेसु ) के० बाकीना आठ खाडवा रह्या छे तेमा नीचेना चार खांडवाने विषे ( गिविज्ज ) के० नव ग्रैवेयक छे अने उपरना चार खाडवाने विषे ( अणुत्तर ) के० पांच अनुत्तर छे अने तेना ( अंते ) के० उपर एटले चौद राजना उपर ( सिद्ध ) के० सिद्ध भगवंत सहित सिद्धशिला छे. अहिं सूचिरज्जु प्रतररज्जु अने घनरज्जु ए त्रण राज छे. तेनी संख्या ग्रंथांतरथी अथवा लोकनालथी जाणवी ॥ २०२ ॥

हवे लोकांतिक देवता कया देवलोक अने कया विमाने रहे छे ? ते अहिं प्रसंगथी कहे छे के—आ जंबुद्वीपथी तीर्च्छा अस-

ख्याता द्वीप समुद्र जइये त्यारे अरुणवर नामनो द्वीप आवे छे, ते द्वीपनी वेदिकाना छेडाथी अरुणवर नामना समुद्रमां आगल बता-लीश हजार योजन जइये त्यां पाणीना उपरना तलीयाथी उंचो अप्कायमय महाअंधकाररूप तमस्काय नीकल्यो छे, ते अगीयार सो योजन सुधी भींत सरखो थइने पछी तीर्च्छो विस्तार पामतो पामतो सौधर्म ईशान सनत्कुमार अने माहेंद्र ए चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्म देवलोकना अरिष्ट नामना त्रीजे प्रतरे जई रह्यो. ए तमस्काय नीचे भींतने आकारे, शरावलाना तलीयाने आकारे अने उपर कुकडाना पांजराना आकारे एवु एनु संस्थान छे ते धुरथी संख्याता योजन उंचो छे अने नीचेना विस्तारे संख्याता यो-जन छे, त्यांथी आगलना विस्तारे असंख्याता योजन प्रमाण छे अहिंथी ए तमस्काय असंख्यातमे द्वीप समुद्रे उठयो छे माटे ए तमस्कायनो परिधि असंख्याता योजन प्रमाण जाणवो

ए तमस्कायना महत्वपणाने माटे पूर्वना गीतार्थ पुरुषोए एम कह्यु छे के-कोई महर्द्धिक देवता त्रण चपटी वगाडीये तेटला वख-तमा एकवीश वार जंबुद्वीपने प्रदक्षिणा करी आवे तेज देवता छ-महिने तमस्कायना योजन विस्तारने उल्लंघे, परंतु उपर असंख्याता योजनना विस्तारवालो तमस्कायनी जगति उल्लंघे नहीं ॥२०२॥

पंचमकप्पे रिट्ठंमि, पत्थडे अट्ठ कण्हराइओ ॥
सम चउरंसक्खाडय,ट्ठिइओ दो दो दिसि चउक्के ॥२०३॥

अर्थ—( पंचमकप्प ) क० पांचमा देवलोकने विषे ( रिट्ठंमि पत्थडे ) के० त्रीजा रिष्ट नामना प्रतरने विषे ( अट्ठकण्हराइओ ) क० आठ कृष्णराजीओ छे ते कृष्णराजी ( समचउरसक्खाड-यट्ठिइओ ) क० समचतुरस्र नाटकनी रंगभूमि सरखी छे, तथा

( दिसि चउक्के ) के० चार दिशामा ( दो दो ) के० ब बे कृष्ण-राजी छे ॥ २०३ ॥

ए कृष्णराजीनी समजुती एम छे के—पांचमा देवलोकना त्रीजा अरिष्ट नामना प्रतरने विषे अरिष्ट विमाननी चारे दिशाये सचित्त अचित्त पृथ्वीमय बे बे कृष्णराजी छे. तेमा उत्तर दिशानी बे कृष्ण-राजी पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे, अने दक्षिण दिशानी बे कृष्ण राजी पण पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे त्या वली कृष्णराजीमांहे पहेली पूर्व दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते दक्षिण दिशानी बाहे-रनी कृष्णराजीने फरसे छे, तेमज बीजी दक्षिण दिशानी अभ्यं-तर कृष्णराजी ते पश्चिम दिशानी बाहरनी कृष्णराजी ने फरसे छे, तथा त्रीजी पश्चिम दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते उत्तर दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे, अने चोथी उत्तर दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते पूर्व दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे. ए प्रमाणे चारे दिशानी सर्व मली आठ कृष्णराजी छे तेज अर्थने कहनारी नीचेनी गाथा छे

पुव्वावर उत्तर दा-हिणा हि मज्झलियाहि पुवाओ ॥
दाहिणउत्तर पुव्वा, वराओ वहि कण्हराईओ ॥२०४॥

अर्थ—( दाहिणउत्तरपुव्वावराओ ) के० दक्षिण उत्तर पूर्व अने पश्चिम दिशा तरफनी ( वहिकण्हराईओ ) के० बाहरनी कृष्ण-राजीओ ( पुवाओ ) के० पूर्वथी ( पुव्वावरउत्तरदाहिणाहि ) के० पूर्व पश्चिम उत्तर अने दक्षिण दिशा तरफनी ( मज्झलियाहि ) के० अंदरनी कृष्णराजीओनी साथे जोडायली छे ॥ २०४ ॥

पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा ॥
अब्भितर चउरंसा, सव्वावि य कण्हराईओ ॥ २०५ ॥

अर्थ—( पुव्वावरा ) के० पूर्व अने पश्चिम दिशानी ( छळसा ) के० बाहेरनी ने कृष्णराजी ( छलंसा ) के० छ खूणावाली छे ( पुण ) के० वली ( दाहिणुत्तरा ) क०' दक्षिण अने उत्तर दिशानी बाहेरनी वे कृष्णराजी ( तंसा ) के० त्रण खूणावाली छे तथा ( अभिंतर ) क० अन्दरनी ( सव्वावि य कण्हराईओ ) क० चारे कृष्णराजीओ चउरसा क० चार खूणावाली छे ॥ २०५ ॥

आयामपरिक्खेहिं, ताण असखखजोयण सहस्सा ॥
सखेज्जमहस्सा पुण, विक्खमे कण्हराईण ॥ २०६ ॥

अर्थ—ताण कण्हराईण ) के० ते आठे कृष्णराजी ( आयामपरिक्खेहिं ) के० लंबाई अने परिधिये करीने ( असखखजोयणसहस्सा ) के० असख्याता हजारो योजन छे ( पुण ) क० वली ( विक्खमे ) के० जाडाइए करीने (सखेज्ज महस्सा) क० सख्याता हजारो योजन छे. ॥ २०६ ॥

ईसाणदिसाईसु, एयाण अतरेसु अट्ठसुवि ॥
अट्ठविमाणाइ तहा, तम्मज्झे इक्गविमाण ॥ २०७ ॥

अर्थ—( ईसाणदिसाईसु ) के० ईशानादिक दिशाने विषे ( एयाणं ) क० ए कृष्णराजीना ( अतरेसु अट्ठसुवि ) के० आठ आतराने विषे ( अट्ठविमाणाइ ) क० आठ विमान तथा ते विमानना अधिपति देवो तथा तेमनो परिवार छे ( तहा ) क० तथा ( तम्मज्झे ) क० ते विमानोना मध्यभागने विषे ( इक्गविमाणं ) के० ऐक विमान छे ॥ २०७ ॥

ते विमानोना नाम कहे छे

**अच्चि तहच्चिमाली, वइरोयण पभंकर य चंदाम ॥**
**सूराभं सुकाभ, सुपइट्ठाभं च रिट्ठाभ ॥ २०८ ॥**

अर्थ—ईशान खुणामा ( अच्चि ) के० अर्चि नामनु विमान छे, ( तह ) के० तथा पूर्व दिशामा ( अच्चिमाली ) के० अर्चिमाली नामनु विमान छे, अग्नि खुणामा ( वइरोयण ) के० वैरोचन नामनु विमान छे, दक्षिण दिशामां ( पभंकर ) के० प्रभंकर नामनु विमान छे,(य) के० अने नैऋत्य खुणाने विषे (चंदाभ) के० चंद्राभ नामनु विमान छे, पश्चिम दिशाने विषे ( सूराभ ) के० सूर्याभ नामनु विमान छे, वायव्य खुणाने विषे ( सुकाभ ) के० शुक्राभ नामनु विमान छे, उत्तर दिशाने विषे ( सुपइट्ठाभ ) के० सुप्रतिष्ठाभ नामनु विमान छे, ( च ) के० अने मध्यभागने विषे ( रिट्ठाभं ) के० रिष्टाभ नामनु विमान छे ॥ २०८ ॥

हवे ते विमानोमां वसनारा अधिष्ठायक देवोनां पूर्व कहेला अनुक्रम प्रमाणे नाम कहे छे

**सारस्सय माइच्चा, वन्ही वरुणा य गद्दतोया य ॥**
**तुसिया अव्वाबाहा, अग्गि तह चेव रिट्ठा य ॥२०९॥**

अर्थ—अर्चि विमानमा ( सारस्सय ) के० सारस्वत देवता वसे छे, अर्चिमालि विमानमा ( आइच्चा ) के० आदित्य देवता वसे छे, वैरोचन विमानमा ( वन्ही ) के० वन्हि देवता वसे छे, प्रभंकर विमानमा ( वरुणा य ) के० वरुण देवता वसे छे चंद्राभ विमानमां ( गद्द तोया य ) के० गर्दतोय देवता वसे छे, सूर्याभ विमानमां ( तुसिया ) के० तुषित नामना देवता वसे छे, शुक्राभ विमानमां ( अव्वाबाहा ) के० अव्याबाध देवता वसे छे, सुप्रतिष्ठाभ

विमानमा ( अगि ) क० अग्निदेवता वसे छे, [ तह चेव ] के० तेमज रिष्टाभ विमानमा (रिट्ठा य) के०रिष्टाभ देवता वसे छे ॥२०९॥

हवे ते देवताओनो अनुक्रमे परिवार कहे छे

पढमजुअलमि सत्तओ–सयाणि बीयमि चउदह सहस्सा ॥
तइए सत्त सहस्सा, नव चेव सयाणि सेसेसु ॥२१०॥

अर्थ—( पढमजुअलमि क० पहला युगल ते सारस्वत तथा आदित्य देवताने ( सत्तओ सयाणि ) के० सात सो सात सो देवतानो परिवार छे, अने ( बीयमि ) के० बीजा युगल ते वन्हि तथा वरुण देवताने ( चउदह सहस्सा ) क० चउद चउद हजार देवतानो परिवार छे तेमज ( तइए ) के० त्रीजा युगल ते गर्दतोय तथा तुषित देवताने ( सत्तसहस्सा ) के० सात सात हजार देवतानो परिवार छे, अने ( सेससु ) के० बाकीना देवतानो (नव सयाणि) क० नव सो नव सो देवतानो परिवार ( चेव ) क० निश्चे होय छे, ॥ २१० ॥ ए देवतानु बीजु भवनद्वार संपूर्ण थयु

हवे त्रीजु देवताना शरीरनी अवगाहनानु द्वार कहे छे

भवणवणजोइसोहम्मीसाणे सत्त हत्थ तणुमाण ॥
दुदुदु चउक्क गेविज्जणुत्तरे हाणि इक्किक ॥ २११ ॥

अर्थ—( भवणवणजोइसोहम्मीसाणे के० भवनपति, व्यंतर, ज्योतषी तथा सौधर्म अने ईशान देवलोक त्या सुधीना देवताओनु ( सत्त हत्थ तणुमाण ) क० शरीर प्रमाण सात हाथनु उत्कृष्टथी जाणवु, त्यार पछी ( दु ) क० त्रीजो अने चोथो देवलोक, ( दु )

के० पांचमा अने छट्ठो देवलोक ( दु ) के० सातमो अने आठमो देवलोक, ( चउक ) क० नवमो, दशमो अगीयारमो बारमो देवलोक, तथा ( गेविज्ज ) के० नव ग्रैवेयक अने ( अणुत्तरे ) के० पाच अनुत्तर ए छ ठेकाणे अनुक्रमे [ हाणि इक्किक ] के० एक एक हाथनी हानी करवी. एटले त्रीजा चोथा देवलोके छ हाथनु, पांचमा छठ्ठे देवलोक पाच हाथनु, सातमा आठमा देवलोके चार हाथनुं, नवमा दशमा अगीयारमा बारमा देवलोके त्रण हाथनु नव ग्रैवेयके बे हाथनु अने पाच अनुत्तर विमाने एक हाथनु शरीर जाणवुं. ॥ २११ ॥

हवे विशेषे सागरोपमना आयुष्यनी वृद्धिये करी सनत्कुमारादिकने विषे शरीरनु मान कहे छे.

कप्प दुग दु दु दु चउगे, नवगे पणगे य जिट्ठठिइ अयरा॥
दो सत्त चउद ठारस, बावीसिगतीसतित्तीसा ॥२१२॥
विवरे ताणिक्कुणे, इक्कारसगा उ पाडिए सेसा ॥
हत्थिक्कारस भागा, अयरे अयरे समहियंमि ॥ २१३ ॥
चय पुव्वसरीराओ, कमेण ईगुत्तराइ वुड्ढीए ॥
एवं ठिइ विसेसा, सणकुमाराइ तणुमाण ॥ २१४ ॥

अर्थ—( कप्पदुग ) के० पहला अने बीजा देवलोकमा, (दु) क० त्रीजा अने चोथा देवलोकमा ( दु ) के० पाचमा अने छट्ठा देवलोकमां ( दु ) क० सातमा अने आठमा देवलोकमां, (चउगे) के० नवमा दशमा अगीयारमा अने बारमा देवलोकमा, ( नवगे ) के० नव ग्रैवेयकमा ( य ) के० अने ( पणगे ) के० पाच अनुत्तर

विमानमां, ( जिट्ठठिइ ) क० उत्कृष्ट स्थिति आ प्रमाणे—पहेला बे देवलोके, ( दो अयरा ) क० बे सागरोपमनी, बीजा बे देव लोके ( सत्त ) कं० सात सागरोपमनी, त्रीजा बे देवलोके ( चउद ) कं० चउद सागरोपमनी, चोथा बे देवलोके ( अट्ठारस ) कं० अढार सागरोपमनी, नवमाथी बारमा सुधीना चार देवलोके ( बावीस ) कं० बावीस सागरोपमनी, नव ग्रैवेयक ( इगतीस ) कं० एकत्रीश सागरोपमनी, अने पांच अनुत्तर विमानने विषे ( तित्तीसा ) क० तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे ॥ २१२ ॥ [ विवरे ] कं० अधिक स्थितिमांहेथी ओछी स्थिति काढी नाखीये पछी बाकी रहे तेमांथी ( ताणिक्कूणे ) क० एकेक ओछो करीये, वली ( इक्कारसगा उ पाडिए ) कं० एक हाथना पाडेला अगीयारीया भागने स्थानके जे ( सेसा ) कं० बाकी रहेला ( हत्थिक्कारसभागा ) कं० एक हाथना अगीयारीया भाग तेने देवताना आयुष्यमां ( अयरे अयरं समहियम्मि ) कं० एक एक सागरोपम अधिक थयु थकु ॥ २१३ ॥ ( चय पुव्वसरीराओ ) क० पूर्व पूर्वना शरीरमांथी एक एक भाग ओछो करवो अने ( कमेण ) क० अनुक्रमे करीने ( इगुत्तराइ वुढीए ) क० एक एक सागरोपम आयुष्य स्थितिमा वधारवो ( एव ठिइ विसेसा ) क० एरीते आयुष्यनी स्थितिना विशेषपणाथ एटले सागरोपमनी वृद्धिये करी ( सणकुमाराइ तणुमाणं ) कं० सनत्कुमारादिक देवलोकना देवतानु शरीरप्रमाण थाय ॥ २१४ ॥

समजूती एम छे के-पूर्वाचार्योए देवताना शरीरनुं प्रमाण तेमना सागरोपमना आयुष्य प्रमाण उपरथी ओछु अधिकु कह्युं छे जोके ईशान तथा माहेंद्र देवलोके जे कांइ अधिक आयुष्य कह्यु छे ते अहिं न गणवु सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवतानु देहमान

सात हाथनुं कधु छे इवे सनत्कुमार देवलोकना देवतानु देहमान कहे छे त्या, विवरे एटले विश्लेष करवो अर्थात् अधिक आयुष्य स्थितिमांथी ओछी स्थिति काढी नाखवी बाकी जे रहे तेमाथी एक ओछो करवो पछी एक हाथना अगीयार भाग करवा तेमांथी विश्लेषकरी एक ओछो करता जे आक आवे ते प्रमाणे हाथना शेष वधेला भाग घटाडवा अने एक एक सागरोपमनु आयुष्य वधारवु एम करता सनत्कुमारादिक देवतानु शरीर प्रमाण थाय छे

अहिं एज वातने दृष्टांत सहित समजावे छे के-जेम सौधर्म तथा ईशान देवलोके उत्कृष्टि स्थिति बे सागरोपमनी छे अने सनत्कुमार तथा माहेंद्रे सात सागरोपमनी स्थिति छे, हवे सात सागरोपममां थी बे सागरोपम काढी नाखवा, कमके बे सागरोपमवाला आयुष्यवाला देवताना शरीरनु प्रमाण सात हाथ कधु छे, ते बे सागरोपम काढता बाकी पाच सागरोपम रहे तेमाथी एक ओछो करीये त्यारे चार रहे हवे सौधर्म तथा ईसान देवलोकना देवतानु सात हाथनु शरीर प्रमाण छे. ते माहेथी ब पुरा राखीये अने सातमा हाथना अगीयार भाग करवा, तेमाथी चार भाग काढी लेवा बाकी सात भाग रहे ते पडता मूकवा एटले सनत्कुमार तथा महेंद्र देवलोकना त्रण सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानु शरीर प्रमाण छहाथ अने एक हाथना अगीयार भाग करीये तेना चार भाग उपर एटलु शरीर प्रमाण जाणवु. एम एक एक सागरोपम वधारतां अने एक एक भाग घटाडता जवु, तथी चार सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानु शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारया त्रण भागनु पाचसागरोपमना आयुष्यवाला देवतानु शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारीया बे भा-

गनुं, ■ सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानु शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारीया एक भागनु, तथा सात सागरोपमना आयुष्य-वाला देवतानुं शरीर प्रमाण बराबर छ हाथनु जाणवु

वली बीजु दृष्टांत कही समजावे छे के-जेम ब्रह्म तथा लातक देवलोके चउद सागरोपमनी उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति छे, तेमाथी सनत्कुमार तथा महेंद्र देवलोकना सात सागरोपमना सात आंक काढी नाखवा बाकी सात रहे तेमाथी एक ओछो करवो, बाकी छ रहे. पछी एक हाथना अगीयारीया भाग माहला पाच पडता मूकी बाकी छ भाग रहे ते अने पाच हाथ एटलु आठ सागरो-पम आयुष्यवाला देवतानु शरीर प्रमाण जाणवु, एरीते एक एक सागरोपमनु आयुष्य वधता एक एक अगीयारीओ भाग शरीर ना प्रमाणमाथी घटाडवो, ए सर्व यत्र उपरथी जाणी लेवु, ॥ एज वात नीचेनी गाथाथी कहे छे—



## कोष्टक नं १

## उर्ध्व देवलोके आयुष्यने अनुसारे देह प्रमाणनुं कोष्टक.

| सागरोपमे | हाथ | हाथना अगीआरीआ भाग | सागरोपमे | हाथ | हाथना अगीआरीआ भाग |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | [illegible] | — ० | १८ | ४ | — ० |
| २ | ७ | — ० | १९ | ३ | — ३ |
| ३ | ६ | — ४ | २० | ३ | — २ |
| ४ | ६ | — ३ | २१ | ३ | — १ |
| ५ | ६ | — २ | २२ | ३ | — ० |
| ६ | ६ | — १ | २३ | २ | — ८ |
| ७ | ६ | — ० | २४ | २ | — ७ |
| ८ | ५ | — ६ | २५ | २ | — ६ |
| ९ | ५ | — ५ | २६ | २ | — ५ |
| १० | ५ | — ४ | २७ | २ | — ४ |
| ११ | ५ | — ३ | २८ | २ | — ३ |
| १२ | ५ | — २ | २९ | २ | — २ |
| १३ | ५ | — १ | ३० | २ | — १ |
| १४ | ५ | — ० | ३१ | २ | — ० |
| १५ | ४ | — ३ | ३२ | १ | — १ |
| १६ | ४ | — २ | ३३ | १ | — ० |
| १७ | ४ | — १ | | | |

हत्थस्मिगारमंसा, अहिगयर समाइगेगत्त्यहीणा ॥
त्तोतीयरदेहपमाण, कम्म क्खिकरेण पुञ्वंगे ॥२१५॥

अर्थ—( हत्थस्सिगारमसा ) के० एक हाथना अगीयार भाग करवा ( अहिगयरसमा ) के० सागरोपमनु आयुष्य वधारीये अने ( इगेगत्त्यहीणा [illegible] शरीर प्रमाणमाथी एक एक भाग ओछो करीये. एम ( [illegible] ) के० बीजा त्रीजा देवलोकना

देवताना शरीरनु प्रमाण ( कम ) क० अनुक्रमे करीने ( मिखकरेण पुव्वग ) क० पूर्वना भागमाथी ओछु करवाथी थाय छे ॥ २१० ॥

## कोष्टक नं २

## उर्ध्व देवलोकमां दरेक प्रतरे आयुष्यनुं कोष्टक

सौधर्म इशाने

| प्रतरे | सागरोपम | | तेरीया भाग |
|---|---|---|---|
| १ | ० | — | २ |
| २ | ० | — | ४ |
| ३ | ० | — | ६ |
| ४ | ० | — | ८ |
| ५ | ० | — | १० |
| ६ | ० | — | १२ |
| ७ | १ | — | १ |
| ८ | १ | — | ३ |
| ९ | १ | — | ५ |
| १० | १ | — | ७ |
| ११ | १ | — | ८ |
| १२ | १ | — | ११ |
| १३ | २ | | |

सनत्० माहेन्द्रे

| प्रतरे | सागरोपम, | | तेरीया भाग. |
|---|---|---|---|
| १ | २ | — | ५ |
| २ | २ | — | १० |
| ३ | | — | ३ |
| ४ | ३ | — | ८ |
| ५ | ४ | — | १ |
| ६ | ४ | — | ६ |
| ॥ | ४ | — | ११ |
| ८ | ५ | — | |
| ९ | ५ | — | ९ |
| १० | | — | २ |
| ११ | ६ | — | ७ |
| १२ | ७ | — | |

ब्रह्म देवलोके

| प्रतरे | सागरो०-छठीया भाग | | |
|---|---|---|---|
| १ | ७ | — | ३ |
| २ | ८ | — | ० |
| ३ | ८ | — | ३ |
| ४ | ८ | — | ० |
| ५ | ९ | — | ३ |
| ६ | १० | | |

लान के

| | साग० पाचीया भाग | | |
|---|---|---|---|
| १ | १ | — | ४ |
| २ | ११ | — | |
| ३ | | — | २ |
| ४ | १३ | — | १ |
| ५ | १ | | |

शुक्र देवलोक.

| प्रतर | साग० चारया भाग | | |
|---|---|---|---|
| १ | १४ | — | ० |
| | १५ | — | २ |
| ३ | १६ | — | १ |
| ४ | १७ | — | ० |

सहस्रारे.

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | १७ | — | १ |
| २ | १७ | — | २ |
| ३ | १७ | — | ३ |
| | १८ | — | ० |

आनत प्राणते.

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | १८ | — | २ |
| २ | १८ | — | ० |
| ३ | १८ | — | २ |
| ४ | २० | — | ० |

आरण अच्युते

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | २० | — | २ |
| २ | २१ | — | ० |
| ३ | २१ | — | २ |
| | २२ | — | ० |

## कोष्टक नं ३

नव ग्रैवेयक

| प्रतरे | सागरोपम |
| --- | --- |
| १ | २ |
| २ | [illegible]४ |
| ३ | [illegible]५ |
| ४ | २६ |
| ५ | [illegible] |
| ६ | [illegible] |
| ७ | [illegible] |
| ८ | ३[illegible] |
| ९ | ३१ |

पाच अनुत्तरे

| | |
| --- | --- |
| १ | ३३ |
| २ | ३३ |
| ३ | ३[illegible] |
| ४ | ३३ |
| ५ | [illegible]३ |

भवधारणिज्ज एमा, उत्तरवेउव्वि जोयणा लक्ख
गेविज्जणुत्तरेसु, उत्तर वेउव्विया नत्थि ॥ २१६ ॥

अर्थ—( एमा ) क० ए पूर्व कहेलु शरीरनु प्रमाण ते ( भव-
धारणिज्ज ) के० भव धारणीय शरीर सबधी जाणवु ( दे-
जीव त्या सुधी जे शरीर धारण करे ते भवधारणीय शरीर कहे-
छे ) वली ( उत्तरवेउव्वि ) क० देवता उत्तर वैक्रिय शरीर धरे
( जोयणा लक्ख ) क० एक लाख योजननु करे परतु ( गेवि-

णुत्तरेसु ) क० नव ग्रैवेयक तथा पाच अनुत्तर निवासी देवोने ( उत्तरवेउव्विया नत्थि ) के० उत्तर वैक्रिय शरीर नथी, परन्तु भवधारणीय शरीर छे ते देवताओने उत्तरवैक्रिय शरीर धारण-करवानी शक्ति छे, परन्तु ते शरीर करवानु काइ काम पडतु नथी, तेथी ते उत्तर वैक्रिय शरीर करता नथी ॥ २१६ ॥

हवे भवधारणीय तथा उत्तर वैक्रिय शरीरनी जघन्य अवगाहना कहे छे,

साहाविय वेउव्विय, तणू जहन्ना कमेण पारंभे ॥
अगुल असखभागो, अंगुलसखिज्जभागो य ॥२१७॥

अर्थ—( साहाविय ) के० स्वाभाविक ते भवधारणीय अने ( वेउव्विय ) के० वैक्रिय ए बन्ने ( तणू ) के० शरीर ( जहन्ना ) के० जघन्यथी ( कमेण ) क० अनुक्रमे ( पारंभे ) क० आरभनी वखते ( अगुल असखभागो ) के० अगुलना असख्यातमा भाग ( य ) के० अने ( अगुलसखिज्जभागो ) के० अगुलना सख्यातमा भागे एटले भवधारणीय शरीर अगुलना असख्यातमा भाग तथा वैक्रिय शरीर अगुलना सख्यातमे भागे होय छे ॥ २१७ ॥ ए देवताने विषे अवगाहना सबधी त्रीजु द्वार सपूर्ण थयु ॥

हवे देवताने उपपातविरहकालनु तथा चवन विरहकालनु ए बे द्वार साथे कहे छे

सामन्नेण चउविह, सुरेसु बारस मुहुत्त उक्कोसा ॥
उववायविरहकालो, अह भवणाईसु पत्तेय ॥ २१८ ॥

अर्थ—( सामन्नेण ) क० सामान्यथी ( चउविह सुरेसु ) क० चार निकायना देवताने विषे ( उववायविरहकालो ) क० उपज

वानो विरहकाल ( उक्कोसा ) क० उत्कृष्टथी ( बारस मुहुत्त ) क० बार मुहूर्त्तनो जाणवो. त्यार पछी अवश्य उपजे पचसग्रह ग्रन्थमा कह्यु छे के-गर्भज तिर्यंच मनुष्य देवता अने नारकी ए चारेने उत्कृष्टथी उपपात विरहकाल बार मुहूर्त्तनो, समूर्च्छिम मनुष्यने चोवीश मुहूर्त्तनो अने विकलेंद्रिय तथा संमूर्छिम जीवोने अंतर मुहूर्त्तना होय छे ( अह ) क० हवे भवणाईसु के० भवनपति विगेरे चार निकायने विर ( पत्तेय ) क० प्रत्येकनु विरहकालनु प्रमाण कह छे ॥ २१८ ॥

भवण वण जोइ सोहम्मी–साणेसु मुहुत्त चउवीसं ॥
तो नव दिण वीस मुहू,बारस दिण दस मुहुत्ता य ॥११९॥
बावीस सड्ढ दियहा,पणयाल असीइ दिण सय तत्तो ॥
सखिज्जा दुसुमासा,दुसु वासा तिसु तिगेसु कमा ॥२२०॥
वासाण सयसहस्सा,लक्ख तह चउसु विजयमाईसु ॥
पलिया असखभागो सव्वट्ठे सखभागो य ॥ २२१ ॥

अर्थ—( भवण वण जोइ सोहम्मीसाणेसु ) के० भुवनपति, व्यतर, ज्योतषी, सौधर्म अने ईशानवासी देवताने प्रत्येक ( मुहुत्त चउवीस ) क० चोवीस मुहूर्त्तनो उत्कृष्टथी उपजवानो विरहकाल छे ( ) के० त्यार पछी त्रीजो देवता उपजे सनत्कुमार देवलोके ( नव दिण वीस मुहू ) क० नव दिवस अने वीश मुहूर्त्त, माहेंद्र देवलोके ( बारस दिण दस मुहुत्ताय ) क० बार दिवस अने दश मुहूर्त्त. ॥ २१० ॥ ब्रह्म देवलोक [ बावीस सड्ढदियहा ] के० साडा बावीस दिवस. लतक देवलोक ( पणयाल ) क० पिस्तालीश दिवस. शुक्र देवलोक ( असीइ ) क० एशी दिवस, सहस्रार देवलोक

( सय ) के० सो दिवस, ( तत्तो ) के० त्यार पछी ( दुसु ) क० आनत अने प्राणत ए बे देवलोक प्रत्येके ( सखिज्जमासा ) क० संख्याता मास, ( दुसु ) के० आरण अने अच्युत ए बे देवलोके ( वासा ) के० संख्यातावर्ष, इत नव ग्रैवेयकना ( तिसु तिगेसु ) के० त्रण त्रिकने विषे ( कमा ) के० अनुक्रमे करीने उपजवानो विरहकाल कहे छे ॥ २२० ॥ पहेला त्रीके ( वासाणसया ) के० संख्यातावर्ष शत, बीजा त्रीके ( सहस्सा ) के० संख्याता हजार वर्ष, अने त्रीजा त्रीके ( लक्ख ) क० संख्याता लाख वर्ष उपजवानो विरहकाल जाणवो. ( तह ) क० तेमज (चउसु विजयमाईसु के० पहेला चार विजय ते विजय विजयंत जयंत अने अपराजित ए चार विमानने विषे ( पलिया असंख भागो ) क० अद्धा पल्योपमनो असंख्यातमो भाग, अने ( सव्वट्ठे ) क० सर्वार्थ सिद्धने विषे ( सखभागो य ) के० अद्धा पल्योपमनो संख्यातमो भाग उपपात विरहकाल होय छे ॥ २२१ ॥

हवे देवताओनो जघन्य विरहकाल अने पछी चवन विरहकाल संक्षेपथी कहे छे.

सव्वेसिंपि जहन्नो, समओ एमेव चवणविरहोऽवि ॥
इग दु ति संखमसंखा,इग समए हुंति य चवंति॥२२२॥

अर्थ—( सव्वेसिंपि ) के० भुवनपतिथी आरंभी सर्वार्थ सिद्ध सुधीना सर्व स्थानके ( जहन्नो ) क० जघन्यथी ( समओ ) के० एक समय उपजवानो विरहकाल होय. ( एमेव ) के० ए उपपात विरहनी पेठे ( चवणविरहोऽवि ) के० चवनविरह पण उत्कृष्ट तथा जघन्यथी जाणवो (इग) के० एक, (दु) क० बे, (ति) के० त्रण एम यावत् (संख) के० संख्याता अने (असंख)के० असंख्याता देवता

( इग समए ) क० एक समयने विषे ( हुंति ) के० उपजे छे, (य) क० अने ( चवंति ) के० चवे छे. तात्पर्य ए के के-भुवनपतिथी आरंभीने सहस्रार देवलोक सुधी जघन्यथी एक समयमां जो उपजे तो एक बे अथवा त्रण उपजे तथा चवे अने उत्कृष्टथी संख्याता अथवा असंख्याता उपजे तथा चवे कारण के-सहस्रार देवलोक सुधी तो तिर्यंच पण जाय छे माटे असंख्याता उपजे अने चवे ए आठमा सहस्रार देवलोकथी उपरना देवना एक समये संख्याता उपजे अने संख्याता चवे कारण के-त्यां मनुष्यज जाय छे, अने त्यांथी चवलो देवता पण मनुष्यज थाय छे. माटे मनुष्य संख्याताज छे, तेथी आनतादि देवता संख्याता उपजे अने संख्याता चवे ॥२२॥ ए उपपात तथा चवन संख्या द्वार कह्युं ॥

हवे देवगतिमां कइ कइ गतिना जीवो आवे छे ? ते आगति द्वार कहे छे

## नर पंचिंदिय तिरिया, णुप्पत्ती सुरभवे पजत्ताण ॥ अज्झवसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्म तु ॥२३॥

अर्थ—( पजत्ताण ) क० पर्याप्ता एवा ( नर ) के० मनुष्य तथा पर्याप्ता ( पंचिंदियतिरियाण ) क० पंचेंद्रिय तिर्यंच ए बे गतिना जीव ( सुरभवे ) क० देवगतिमांहे ( उप्पत्ती ) क० उपजे छे तेमां पण विशेष कारण कहे छे के-कोइ जीव भुवनपति, कोइ व्यंतर, कोइ ज्योतिषी, कोइ वैमानिक थाय, तेमां पण कोइ ऋद्धिवंत, कोइ महर्द्धिक, कोइ अल्प ऋद्धिवंत, कोइ बहु आयुष्य-वालो, कोइ थोडा आयुष्यवालो इत्यादिक विशेषपणानुं कारण पोताना ( अज्झवसायविसेसा ) क० अध्यवसायना विशेषपणाये करीने ( तेसिं ) क० ते देवतानी ( गइतारतम्म ) क० गतिनुं

भिन्नभिन्नपणु छे अध्यवसाय ए मननो व्यापार छे, ते व्यापार तोव्र, तीव्रतर तीव्रतम एम जूदो जूदा होवाथी जूदी जूदी देवगति पामे छे ॥ २२३ ॥

हवे कयाकया जीवो देवगति पामे ते कहे छे

## नरतिरि असखजीवी सव्वे नियमेण जंति देवेसु ॥
## नियआउय समहीणा–उएसु ईसाण अंतेसु ॥२२४॥

अर्थ—( असखजीवी ) के० असख्याता आयुष्यवाला (नर तिरि ) क० युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच ( सव्वे ) के० ते सर्व ( नियमेण ) के० निश्चेथी ( देवेसु जंति ) के० देवतामा जाय छे ते ( नियआउय ) क० पोताना युगलिक भवमा जेटलुं आयुष्य होय तेना ( सम ) के० तुल्य आयुष्ये अथवा ( हीणाउएसु ) क० ओछा आयुष्ये ( ईसाणअंतेसु ) के० एटला आयुष्यवाला ईशान देवलोकसुधीना देवतामा उपजे, पण अधिक आयुष्ये नहीं. कारण के–युगलीया मनुष्यने उत्कृष्ट आयुष्य त्रण पल्योपमनु होयछे अने ते आयुष्य ईशानदेव लोक सुधी होय छे माटे ॥ २२४ ॥

अहिं विशेष समजवानु ए छे के–पल्योपमने असख्यातमे भागे असख्याना आयुष्यवाला युगलिया, पचिंद्रिय तिर्यंच, पक्षी, छप्पन्न अतर द्वीपवाला तिर्यंच, मनुष्य युगलिया ए सर्व मरीने भुवनपति तथा व्यतरने विषे उपजे, पण ज्योतसी प्रमुखने विषे उप[illegible] नहीं कारण के–ज्योतषीमाहे पल्योपमनो आठमो भाग आ[illegible] छे माटे, अने बीजा युगलिया यथायोग्यपणे पोत पोताना आ[illegible] मागे अथवा आछे आयुष्ये ईशान देवलोकसुधी उपजे, तेथे[illegible] देवलोकमा उपजवानो नियम छे ॥

जति समुच्छिमतिरिया, भवणवणेसु न जोइमाईसु ॥
ज तेसिं उववाओ, पलियामखमआऊसु ॥ २२५ ॥

अर्थ—( समुच्छिमतिरिया ) क० समूर्च्छिमतिर्यंच मरीने ( भवणवणेसु ) क० भवनपतिने विषे तथा व्यंतरने विषे ( जति ) क० जाय छे, पण ( जोइमाईसु ) के० ज्योतषी विगेरेमां ( न ) के० न जाय ( ज ) क० कारणके ( तेसिं ) के० ते समूर्च्छिमतिर्यंच उत्कृष्टथी ( पलियासखमआऊसु ) क० पल्योपमना असंख्यातमा भागना आयुष्यवाळा देवनामांज ( उववाओ ) के० उपजे छे, पण तेथी वधारे आयुष्यवाळामां उपजे नहीं ॥ २२५ ॥

हवे अध्यवसाय विशेषे गतिनुं तरतमपणुं कहे छे

बालतवे पडिबद्धा, उक्कडरोसा तवेण गारविया ॥
वेरेण य पडिबद्धा, मरिउं असुरेसु जायंति ॥२२६॥

अर्थ—(बालतवे) क०अज्ञानतपने विषे (पडिबद्धा) क० आसक्त थयेला, (उक्कडरोसा) के० उत्कृष्ट रोष करनारा, (तवेण गारविया) के० तपथी अहंकार करनारा, (य) क० अने (वेरेण पडिबद्धा) के० वैरथी प्रतिबंध करनारा एवा जीवो (मरिउं) क० मृत्यु पामीने (असुरेसु जायंति) के० असुरकुमारमां उपजे छे ॥ २२६ ॥

रज्जुग्गह वीसभक्खण,जलजलणपवेस तण्हछुहदुहओ॥
गिरिसिरपडणाउ मुया, सुहभावा हुंति वंतरिया ॥२२७॥

अर्थ—( रज्जुग्गह ) क० गळे दोरडानो फांसो खाई मरनारा, ( वीसभक्खण ) क० विष खाई मरनारा, (जलजलणपवेस) के० पाणि अथवा अग्निमां प्रवेशकरी मरनारा, ( तण्हछुहदुहओ )

के० तरस अथवा भूखना दुःखथी मरनारा, अने ( गिरिसिरपड-णाउ मुया ) क० पर्वतना शिखरउपरथी पडीने मरनारा जीवो ( सुहभावा ) के० जो शूलपाणीनी पेठे शुभ भावथी मरतो ( वतरिया हुति ) के० व्यतर देवता थाय छे ॥ २२७ ॥

## तावस जा जोइसिया, चरगपरिवाय बंभलोगो जा ॥
## जा सहस्सारो पचिंदि–तिरिय जा अच्चुओसड्ढा ॥२२८

अर्थ—( तावस ) के० कन्दमूलनु भक्षण करनारा वनवासी तपस्वीओ मरीने ( जा जोइसिया ) के० भुवनपतिथी आरंभी ज्योतषी देवना सुधी जाय तथा ( चरगपरिवाय ) के० चार पाच भेगा थई भिक्षा मागे ते चरक अने कपिलमति परिव्राजक त्रि-दडिया ते मरीने ( बंभलोगो जा ) के० भुवनपतिथी आरंभी उत्कृष्टा ब्रह्मदेव लोक सुधी जाय. तथा ( पचिंदितिरिय ) के० गर्भज पर्याप्ता पचेंद्रिय तिर्यंच ते हाथी बलद विगेरे जीवो कवल सरलनी पेठे सम्यक्त्व देशविरति सहित मरीने उत्कृष्टथी ( जा सहसारो ) के० सहस्रार देवलोक सुधी जाय अने ( सड्ढा ) के० श्रावक मनुष्य मरीने उत्कृष्टथी ( जा अच्चुओ ) क० बारमा अच्युत देवलोक सुधी जाय ॥ २२८ ॥

## जइलिंग मिच्छदिट्ठी, गेविज्जा जाव जंति उक्कोसं ॥
## पयमवि असद्दहतो, सुतत्थ मिच्छदिट्ठीओ ॥ २२९ ॥

अर्थ—( जइलिंग मिच्छदिट्ठी ) क० साधुना वपने धारण करनारो मिथ्यादृष्टि जीव क्रियाना बलेकरी अंगारमर्दकाचार्यनी पेठे ( उक्कोस ) के० उत्कृष्टथी ( गेविज्जा जाव जंति ) के० नवग्रैवेयक सुधी उत्पन्न थाय वली ते मिथ्यादृष्टि कोने कहेवाय

तो क जे ( सुत्त्थ ) क० सूत्र तथा अर्थना ( पयमवि ) क० एक पदने पण ( असद्दहंतो ) क० सद्दहे नहीं तो ते ( मिच्छदिट्ठीओ ) क० मिथ्या दृष्टि जाणवो ॥ २२९ ॥ अहिं सूत्रनु लक्षण कहे छे

सुत्त गणहररइय, तहेव पत्तेयबुद्धरइय च ॥
सुयकेवलिणा रइय, अभिन्नदसपुव्विणा रइय ॥२३०॥

अर्थ—( गणहररइय ) क० सौधर्म स्वामी प्रमुख गणधरना रचेला आचारांगादिक, ( तहेव ) क० तेमज ( पत्तेयबुद्धरइय ) क० नेमिराजा विगेरे प्रत्येक बुद्धना रचेला नेमिप्रव्रज्यादिक, वली ( सुयकेवलिणारइय ) क० चउद पूर्वधर श्रुतकेवली शय्यंभवसूरि प्रमुखना रचेला दश वैकालिकादिक, अने ( अभिन्नदसपुव्विणा रइय ) क० संपूर्ण दश पूर्वधरना रचेला ग्रंथ ते सर्व ( सुत्त ) क० सूत्र कहेवाय ॥ २३० ॥

अत्थ भासइ अरिहा, सुत्त गुत्थंति गणहरा निउणा ॥
सासणस्स हियट्ठाए, तओ सुत्त पवत्तइ ॥ २३१ ॥

अर्थ—( अरिहा ) क० अरिहंत प्रभु ( अत्थ ) क० अर्थने कहे ते उपरथी ( निउणा ) क० चतुर एवा ( गणहरा ) क० गणधरो ( सुत्त ) क० सूत्रने ( गुत्थंति ) क० गुंथे छे ( तओ ) क० त्यार पछी ( सासणस्स हियट्ठाए ) क० शासन हितार्थ ( सुत्त पवत्तइ ) क० सूत्र प्रवर्त्ते ॥ २३१ ॥

पयमक्खरपि एग, जो नवि रोएइ सुत्तनिद्दिट्ठं ॥
सेसं रोयइ अ तहु, मिच्छादिट्ठी मुणेयव्वो ॥२३२॥

अर्थ—जो क० जेने ( सुत्तनिद्दिट्ठ ) क० सूत्रमां कहेल

( पयमक्खरपि एग ) के० एक पद अथवा एक अक्षर ( नरोएइ ) क० न रुचे ( अ ) क० अने ( सेस ) के० ते शिवायनु बीजु ( रहु रोयइ ) के० घहु रुचे ते ( मिच्छाद्दिट्ठि ) क० मिथ्या दृष्टि जीव ( मुणेयव्वो ) के० जाणवो ॥ २३२ ॥

छउमत्थसजयाण, उववाओ उक्कोस सवट्ठे ॥
तेसि सड्ढाणपि य, जहन्नओ होइ सोहम्मे ॥ २३३ ॥

अर्थ—( छउमत्थसंजयाण ) क० छद्मस्थसाधुओनु (उववाओ) क० उपजवुं ( उक्कोस ) के० उत्कृष्टी ( सवट्ठ ) के० सवार्थ सिद्ध विमान सुधी होय छे अने ( तेसिं ) के० ते साधुओनुं तथा ( सड्ढाणपिय ) क० श्रावकनुं ( जहन्नओ ) के० जघन्यथी ( सोहम्मे ) क० सौधर्म देवलोकने विषे उपजवु ( होइ ) के० होय छे ॥ २३३ ॥

लतमि चउदपुविस्स, तावसाईण अतरेसु तहा ॥
एसो उववायविहि,नियकिरियठियाण सव्वोवि ॥२३४॥

अर्थ—( चउदपुविस्स ) के० चउद पूर्वधर साधुनु ( लतमि ) के० लांतक देवलोक सुधी उपजवु होय ( तहा ) के० तेमज (ता वसाईण ) के० तापस सन्यासी प्रमुखनिकनु जघन्यथी ( वतरेसु ) के० व्यतर देवलोकने विषे उपजवु होय. ( एसो ) के० आ पूर्व कहलो ( सवोवि ) के० सर्व पण ( उववायविहि ) के० उपजवानो विधि ते ( नियकिरियठियाण ) के० पोतपोतानी क्रियाने विषे सावधान रहल्यानो जाणवो अने प्रज्ञापना सूत्रमा तो तापसने जघ- न्यथी भवनपतिमा उपजवु कह्यु छे ॥ २३४ ॥

अणुव्वय महव्वएहि य, बालतवाकामनिज्जराए य ॥
देवाउय निबधइ, सम्मदिट्ठी य जो जीवो ॥ २३५ ॥

अर्थ—( अणुव्रय महव्वएहि य ) के० अणुव्रत अथवा महाव्रतने पालनारो, ( बालतवाकामनिज्जराए य ) के० बालतप तथा अकाम निर्जरानो करनार, एवो ( जो ) के० जे ( सम्मदीठी य ) जीवो के० सम्यग् दृष्टि जीव छे ते देवाउय निबधइ ) के० देवतानु आयुष्य बांधे छे ॥ २३६ ॥ उक्तम् ॥

नाणस्स केवलाण, धम्मायरियस्स सव्वसाहूणं ॥
माई अवण्णवाई, किब्बिसियभावण कुणइ ॥ २३६ ॥

अर्थ—( नाणस्स ) क० ज्ञानना, (केवलीण) क० केवलीना, ( धम्मायरियस्स ) क० धर्माचार्यना अने ( सव्वसाहूण ) के० सर्व साधुना (अवण्णवाई) अवर्णवादने बोलनारो अने (माई) क० कपट करनारो जीव ( किब्बिसियभावण ) के० किल्बीशिक एटले पापी भावनाने ( कुणइ ) क० करे छे, एटले किल्बिषिक देवपणे उत्पन्न थाय छे ॥ २३६ ॥

कोऊय भूइकम्मे, पसिणापसिणे निमित्तमाजीवे ॥
इढ्ढिरससायगरुओ, अभिओग भावण कुणई ॥२३७॥

अर्थ—( कोउयभूइकम्मे ) के० कौतुक अथवा स्नानादिक भूतिकर्म करनार, ( पसिणापसिणे ) के० प्रश्नथी निमित्त कहेनार अथवा प्रश्न विना निमित्त कहेनार, ( निमित्तमाजीवे ) के० निमित्तियाना कर्मथी आजीविका करनार, तेमज ( इढ्ढिरससायगरुओ ) क० ऋद्धिगारव रसगारव अने शातागारव करनारो जीव ( अभिओग भावण ) क० अभियोगिक भावनाने ( कुणई ) के० करे छे एटले सेवक देवपणे उत्पन्न थाय छे ॥ २३७ ॥

हवे अभियोगिक भावनानु स्वरूप कहे छे

दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य होइ नायव्वो ॥
दव्वंमि होइ जोगा, विज्जा मंतो य भावंमि ॥ २३८ ॥

अर्थ—[ अभिओगो ] क० अभियोग (दुविहो) के० बे प्रकारनो छे ( खलु ) के० निश्चे, ते ( दव्वे भावे ) के० द्रव्य अभियोग अने भाव अभियोग ( नायव्वो ) क० जाणवा योग्य [ होइ ] क० होय छे. तेमा ( दव्वंमि ) के० द्रव्य अभियोगने विषे ( जोगा होइ ) के० मनादि निमित्त जोग होय छे ( य ) क० अने (भावंमि) के० भाव अभियोगने विषे ( विज्जा मंता ) के० आगमादि विद्या अने मंत्रो होय छे. ॥ २३८ ॥

हवे संघयणना विशेषपणाथी देवतानी गति विशेष होय छे, माटे संघयणनु स्वरूप कहे छे.

वज्जरिसहनारायं, पढम बीयं च रिसहनारायं ॥
नारायमद्धनारायं–कीलिआ तहय छेवट्ठं ॥ २३९ ॥
एए छ संघयणा, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्जं ॥
उभओ मक्कडबंधो, नाराओ होइ विन्नेओ ॥ २४० ॥

अर्थ—जे शरीरना हाडकानो अति मजबुत बंध ते संघयण कहेवाय तेना छ भेद छे, ( पढम ) के० पहेलो ( वज्जरिसहनारायं ) के० वज्रऋषभ नाराच १, ( बीयं ) के० बीजो ( रिसहनारायं ) के० ऋषभ नाराच २, त्रीजो ( नाराय ) के० नाराच ३, चोथो ( अद्धनाराय ) के० अर्द्ध नाराच ४, पाचमो ( कीलिया ) के० कीलिका ५, ( तहय ) के० तेमज छट्ठा ( छेवट्ठं ) के० सेवार्त ॥ ६ ॥ २३९ ॥ ( एए ) के० ए पूर्व कहेला ( छ संघयणा ) के०

छ संघयण जाणवा. तेमा ( रिसहो ) के० ऋषभ ते ( पट्टो ) के० पाटो जाणवो. ( य ) के० अने ( कीलिया ) के० खीलो ते (वज्ज) के० वज्र कहेवाय तथा ( उभओ मक्कडबंधो ) के० बन्ने बाजुए मर्कटबंध एटले हाडकाना मर्कटाकारे बंध ( नाराओ ) के० ते नाराच ( विन्नेओ ) के० जाणवा योग्य ( होइ ) के० होय छे ॥ २४० ॥

कीलिका रहित ते बीजो ऋषभनाराच, फक्त मर्कटबंध ते त्रीजो नाराच, एक बाजुए मर्कटबंध अने एक बाजुए कीलिका ते अर्द्ध नाराच जेमां हाडकाना संधि एकली खीली सरखा ते कीलिका, अने जेमां हाडकाना छेडा परस्पर फक्त अडेला पण खीली विगेरे बंधन होय ते सेवार्त अथवा छेवट्ठ संघयण जैन शास्त्रमां कह्युं छे.

हवे कया जीवोने केटला संघयण होय ? ते कहे छे.

## छ गब्भ तिरि नराणं, समुच्छिमपणिंदि विगल छेवट्ठं ॥ सुरनेरइया एगि-दिया य सव्वे असंघयणा ॥ २४१ ॥

अर्थ—( गब्भतिरि नराण ) के० गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्यने ( छ ) के० छ संघयण होय. वली ( समुच्छिमपणिंदि ) के० समूर्छिम पंचेंद्रि तिर्यंच, तथा समूर्छिम मनुष्य अने (विगल)के० बे इंद्रिय तेइंद्रिय तथा चउरिंद्रियरूप विकलेंद्रियने एक (छेवट्ठ) के० सेवार्त एटले छेवट्ठ संघयण होय वली (सुर)के० देवता, (नेरइया) के० नारकी अने ( सव्वे एगिंदिया ) के० सर्वे एकेंद्रिय जीवो ( असंघयणा ) के० संघयण रहित होय छे, कारण हाडकानी रचना ते संघयण कहेवाय ते देवता नारकी तथा एकेंद्रियमां नथी,

तो पण देवनामा ऋस्थिरूप सघयण विना जे शक्ति छे तेने पण उपचारथी संघयण कहेवाय. कारण देवतामां चक्रधरथी पण अधिक शक्ति होय छे, तेथी देवतामां वज्रऋषभनाराच संघयण होय छे तेमज अल्पशक्ति एकेंद्रियमा पण होय छे, तेथी एकेंद्रियने छेवर्दुं संघयण कहेवाय परंतु मूल भागे तो देवनामा सघयण नथी ॥ २४१ ॥

हवे संघयणथकी गति कहे छे

छेवट्ठेण उ गम्मइ, चउरो जा कप्प कीलियाइसु ॥
चउसु दुदुकप्प वुड्ढी, पढमेणं जाव सिद्धीवि ॥ २४२ ॥

अर्थ—( छेवट्ठेण ) के० छेवट्ठे सघयणे करी अध्यवसायना विशेषपणाथकी जीव ( चउरो जाकप्प ) के० भुवनपति व्यतर ज्योतिषी अने वैमानिकना चोथा देवलोक सुधी ( उ गम्मइ ) के०जाय छे. त्यार पछी ( कीलियाइसु चउसु ) के० किलिकादिक चार सघयणने पाछलथी गणता चारे संघयणे करी (दुदुकप्पवुड्ढी) के० बे बे देवलोकनी चडती चडती उपजे ते आ प्रमाणे–कीलिका संघयणवालो जीव पाचमा तथा छठ्ठा देवलोक सुधी जाय, अर्द्धनाराच संघयणवालो शुक्र अने सहस्रार देवलोक जाय नाराच संघयणवालो जीव आनत अने प्राणत देवलोक सुधी जाय. ऋषभनाराच संघयणवालो जीव आरण अने अच्युत देवलोक सुधी जाय, अने ( पढमेण ) के० वज्रऋषभनाराच सघयणवालो जीव (जावसिद्धीवि)के० भुवनपतिथी आरम्भी मोक्ष सुधी जाय॥२४२॥

हवे शरीरनी आकृतिने संस्थान कहेवाय छे ते संस्थान छ प्रकारना छे. तेना नाम तथा लक्षण कहे छे

समचउरस नग्गोह, साई वामण य खुज्ज हुंडे य ॥
जीवाण छ सठाणा, सव्वत्थ सुलक्खण पढम ॥२४३॥
नाहीए उवरि बीय, तइयमहो पिट्ठि उयर उरवज्ज ॥
सिरगीव पाणि पाए, सुलक्खण त चउत्थ तु ॥२४४॥
विवरीयं पचमग सव्वत्थ अलक्खणं भवे छट्ठं ॥
गब्भयनरतिरिय छहा,सुरा समा हुडया सेसा ॥२४५॥

अर्थ—१ ( समचउरस ) के० समचतुरस्र, २ ( नग्गोह ) क० न्यग्रोधपरिमण्डल, ३ ( साइ ) के० सादि, ४ ( वामण ) क० वामन ५ ( खुज्ज ) क० कुब्ज, ६ ( हुडे य ) के० हुडक ए ( जीवाण ) क० जीवोना ( छ सठाणा ) क० छ सस्थान जाणवा तेमा ( सव्वत्थ ) के० ए छ सस्थानमा ( सुलक्खण पढम ) क० सारा लक्षणवाळु पहेलु सस्थान जाणवु, पद्मासने वेसवाथी चारे बाजुए सरखी आकृतिवाळु होय ते पहेलु समचतुरस्र संस्थान कहेवाय ॥ २४३ ॥

जे वडवृक्षनी पेठे ( नाहीए उवरि ) क० नाभिनी उपर सारा लक्षणवाळु अने नीचे हीन होय ते ( बीय ) क० बीजु न्यग्रोधपरिमंडल सस्थान कहेवाय (तइय) के० त्रीजु सादि संस्थान ते (अहो) के० नाभिनी नीचे सारा लक्षणवाळु अने नाभिनी उपर हीन लक्षणवाळु जाणवु ( पिट्ठि ) के० पृष्ठ, ( उयर ) के० उदर अने ( उरवज्ज ) के० छाति तेने वर्जीने बाकीना ( सिर ) के० मस्तक, [ गीव ] के० कठ ( पाणि ) के० हाथ अने ( पाए ) के० पग एटला ( सुलक्खण ) के० सारालक्षणवाळा होय ( त ) के० ते ( चउत्थ ) क० चोथु वामन सस्थान जाणवु ॥ २४४ ॥

( विवरीय ) क० चोथा; सस्थान थकी विपरीत लक्षणवाल्डु एटले पृष्ठ उदर हृदय ए सारा लक्षणवाला अने मस्तक कंठ हाथ पग लक्षण हीन होय ते ( पचमग ) क० पाचमु कुब्ज सस्थान जाणवु अने सवत्थ क० सर्व प्रकार ( अलक्खण ) के० लक्षण रहित होय ते ( छट्ठ भर ) कं० छट्ठुं हुंडक सस्थान जाणवु ( गब्भयनरतिरिय ) के० गर्भज मनुष्य अने गर्भज तिर्यंच ( छहा ) क० छ मस्थानवाला होय छे ( सुरा समा ) के० देवता समचतुरस्र सस्थानवाला होय छे, अने ( सेसा ) के० बाकीना जीवों ( हुंडया ) क० हुंडक सस्थानवाला होय छे ॥ २४५ ॥

हव देवता चवीने कइ गतिमा उपजे ? ते आगति कहे छे

जति सुरा सखाउय, गब्भय पज्जत्त मणुयतिरिएसु ॥
पज्जत्तेसु य बायर, भूदगपत्तेयगवणेसु ॥ २४६ ॥

अर्थ—सामान्यथी चार निकायना ( सुरा ) के० देवता चवीने युगलिया मनुष्य विना ( सखाउय ) के० सख्याता आयुष्यवाला ( गब्भय ) के० गर्भज अने ( पज्जत्त ) के० पर्याप्ता एवा ( मणुयतिरिएसु ) के० मनुष्य अने तिर्यचने विषे तथा (पज्जत्तेसु) के० पर्याप्ता ( बायर ) क० बादर एवा ( भूदगपत्तेयगवणेसु ) के० पृथ्वीकाय अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकायमा ( जति ) क० जाय छे अर्थात् ए पाच गतिमा उपजे. बीजी एक गतिमा उपजे नहीं. ॥ २४६ ॥

तत्थवि सणंकुमार–प्पभिइ एगिदिएसु नो जंति ॥
आणयपमुहा चविउ, मणुएसु चेव गच्छंति ॥२४७॥

मनत्कुमारथी आरभी सहस्रार देवलोक सुधीना देवता चवीने ( एगिं न्दियसु ) के० एकेन्द्रियने विषे (नो जति) के० उपजे नही तथी आणयपमुहा ) के० आनत देवलोकथी आरभी पांच अनुत्तर विमान सुधीना देवता ( चविउ ) क० चवीने ( मणुएसु ) क० सख्याता आयु वाला पर्याप्ता मनुष्यमाहे ( नेत ) क० निश्चे [गच्छन्ति] के० जाय छे ॥ २४७ ॥

हवे जे देवताने जेवी रीते देवागना साथे सभोग छे अने जे देवताने सर्वथा सभोग नथी ते कहे छे

दो कप्प कायसेवी दो दो दो फरिसरूवसद्देहिं ॥
चउरो मणेणुवरिमा, अप्पवियारा अणतसुहा ॥२४८॥

अर्थ—( दोकप्प कायसेवी ) के० भुवनपति व्यतर ज्योतपी तथा सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोक सुधीना देवता अति उत्कृष्ट कामेच्छाथी मनुष्यनी पठे विषय सुख भोगवे ते उपरना ( दो ) के० सनत्कुमार तथा माहेंद्र देवलोकना देवता देवागनाना (फरिस) क० स्तन भुज लिगेर अगस्पर्शथी भोगसुख पामे छे ते उपरना [दो] क० ब्रह्म अने लातक देवलोकना देवता देवागनाना (रूव) क० रूप देखीने विषय सुख पामे छे ते उपरना ( दो ) क० शुक्र अने सहस्रार देवलोकना देवता देवागनाना ( सद्देहिं ) क० गीतहास्य विलासादिना शब्द सांभळवाथी सभोग सुखनी तृप्ति पामे छे ते उपरना ( चउरो ) के० आनतादि चार देवलोकना देवताओ (मणेण) के० मनमा देवागनानु स्मरण करवाथी तृप्ति पामे छे तेथी ( उवरिमा ) के० उपरना एटले नव ग्रैवेयक तथा पाच अनुत्तरना देवताओ तो (अप्पवियारा) क० अल्पविकारीपणाने लीधे विषय सुखथी रहित होवाथी ( अणतसुहा ) के० अनत सुखवाला छे ॥ २४८ ॥

वळी कहे छे—

जं च कामसुह लोए, जं च दिव्व महासुहं ॥
वीयरायसुहस्सेय–णंतभागंपि नग्घइ ॥ २४९ ॥

अर्थ—( लोए ) के० लोकमां ( जं कामसुह ) के० जे काम सुख छे (च) के० अने (जं) के०जे (दिव्व महासुह) के० देव संबंधी महासुख छे ते सुख ( वीयरायसुहस्सय ) के० वीतराग एटले राग-द्वेष रहित एवा प्रभुना सुखना ( णंतभागंपि ) के० अनंता भागने पण ( नग्घइ ) के० पामता नथी अर्थात् प्रभुने जे सुख छे तेना अनंतमा भागनु सुख देवताने पण नथी ॥ २४९ ॥

हवे देवीओनी उत्पत्तिनु स्थान कहे छे

उववाओ देवीणं, कप्पदुग जा परो सहस्सारो ॥
गमणागमण नत्थी, अच्चुअपरओ सुराणंपि ॥ २५० ॥

अर्थ—( देवीण ) के० देवीओनु ( उववाओ ) के० उपजवु ते ( कप्पदुग जा ) के० भुवनपतिथी आरभी ईशान देवलोक सुधी छे तेथी उपरना देवलोकमा देवीओनु उपजवुं नथी परन्तु देवताना उपभोग माटे सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी अपरिगृहिता देवीओ उपरना देवलोकमा जाय ते ( परो सहस्सारो ) के० उपरना सहस्रार देवलोक सुधी जाय. त्यांथी उपरना देवलोकमा ( गमणागमण नत्थी ) के० देवीओनु जवु आववु नथी अने ( अच्चुअपरओ सुराणंपि ) के० अच्युत देवलोकथी उपर तो देवताओनु पण जवु आववु नथी. तेमज नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमानवासी देवताओने नीचे आववानु प्रयोजन नथी तीर्थंकरना कल्याणिक अवसर पण पोताना स्थानके रह्या छता नमस्कारादिक करे छे

ज्यापि कोइ संदेह थाय तो मन वर्गणाथी प्रश्न करे केवली केवल-
ज्ञानथी जाणी तेनो उत्तर आपे-तेने ते देवता अवधिज्ञानथी जाणे
परन्तु अहिं आवे नही ॥ २५० ॥

हवे किल्बिषिया देवोना स्थानक कहे छे

तिपलिय तिसार तेरस,सारा कप्पदुग तइय लंत अहो॥
किब्बिसि न हुंति उवरिं,अच्चुअ परओऽभिओगाई॥२५१।

अर्थ—देवताओमा पण अशुभ कर्मना उदयथी चंडाल सरखा
किल्बिषिया देवता थाय छे. ते ( कप्पदुग ) के० पहेला बे देवलो-
कना तलीये ( तिपलिय ) के० त्रण पल्योपमना आयुष्यवाला वसे
छे तेमज ( तइय ) के० त्रीजा सनत्कुमारना तलिये [तिसार] के०
त्रण सागरोपमना आयुष्ये वसे छे. वली ( तेरस सारा ) क० तेर
सागरोपमना आयुष्यवाला ( लंत अहो ) के० लांतक देवलोकनी
नीचे वसे छे. ( उवरिं ) के० लांतक देवलोकथी उपरना देवलोकमा
( किब्बिसि ) के० किल्बिषिया देवता ( न हुंति ) क० नथी
वली ( अच्चुअपरओ ) के० बारमा अच्युत देवलोकथी उपरना
देवलोकमा ( अभिओगाइ ) के० अभियोगिक तथा सामानिकादि
देवो नथी कारण ग्रैवेयक तथा अनुत्तरमा वसनारा सर्वे देवो स्व-
यंश्र इन्द्र सरखा छे ॥ २५१ ॥

हवे सौधर्म तथा इशान देवलोकमा अपरिग्रहिता देवीओना
विमाननी संख्या, तथा देवीओनु आयुष्य, अने कया विमान वासी
देवताओने कइ देवीओ भोग योग्य छे ? ते कहे छे

अपरिग्गहदेवीण, विमाण लक्खा छ हुंति सोहम्मे ॥
पलियाई समयाहिय,ठिइ जासिं जाव दसपलिया ॥२५२॥

ताओ सणकुमारा–नेव वढ्ढति पलियदसगेहि ॥
जा बभ सुक्क आणय, आरण देवाण पन्नासा ॥२५३॥
ईसाणे चउ लक्खा, साहिय पलियाइ समय अहिअ ठिइ ॥
जा पनर पलिय जामि, ताओ माहिंद देवाण॥२५४॥
एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसगवुड्ढीए ॥
लंतसहसारपाणय, अच्चुअ देवाण पणपन्ना ॥२५५॥

अर्थ—( सोहम्मे ) के० सौधर्म देवलोकने विषे [ अपरिग्गह देवीण ] के० अपरिग्रहिता देवीओना ( विमाण ) के० विमान ते (छ लक्खा) के० छ लाख ( हुंति ) के० छे तेमा जे देवीओनुं एक पल्योपमनुं पूर्ण आयुष्य छे ते देवीओ सौधर्म देवलोकवासी देवताने भोग योग्य जाणवी अने ( जासि ) के० जे देवी ओनु (ठिइ) के० आयुष्य (पलियाई समयाहिय) के० एक पल्यो-पमथी आरभी समय समय अधिक वधता (जाव दसपलिया) के० दश पल्योपमनुं आयुष्य होय ॥ २५२ ॥ ( ताओ ) के० ते देवीओ ( सणकुमारा ) के० सनत्कुमार देवताने भोग योग्य जाणवी, पण उपरना देवताने (न) के० भोग योग्य नथी (एवं) के० वली एज प्रमाणे ( पलियदसगेहिं ) के० दश पल्योपमथी पर एक समय ( वढ्ढंति ) के० वधारता ( जा ) के० जेटलामा वीशपल्योपमनु आयुष्य पूर्ण थाय तेटला आयुष्यवाली देवीओ ( बभ ) के० ब्रह्म-देव लोकना देवताने भोग योग्य जाणवी त्यार पछी समय समय वधारता त्रीशपल्योपम थाय तेटला आयुष्यवाली देवीओ ( शुक्र ) के०शुक्र देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी त्यार पछी समय समय वधारता ज्यांसुधीमा चालीश पल्योपम थाय तेटला आयुष्य

वाली देवीओ (आणय) के० आनत देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी त्यार पछी समय समय वधारता जेटलामा ( पन्नासा ) के० पचास पल्योपम थाय तटला आयुष्यवाली देवीओ ( आरण देवाण ) क० आरण देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी ॥ २५३ ॥ ( ईसाणे ) क० ईशान देवलोकमा अपरिग्रहिता देवीओना ( चउ लरका ) क० चार लाख विमान छे. तेमा ( साहिय पल्याइ ) क० जे देवीओनु साधिक एक पल्योपमनु आयुष्य छे ते ईशान देवलोकना देवतानेज भोग योग्य जाणवी. त्यार पछी (समय अहिय ) क० समय समय अधिक वधारतां ( जासि ) क०जे देवीओनु ( जा पनर पल्ल ठिइ ) क० ज्या सुधी पनर पल्योपमनी आयुष्य स्थिति थाय, ( ताओ ) क० तेटला आयुष्यवाली देवीओ ( माहिंद देवाणं ) क० माहेंद्र देवलोकना देवताओने भोग योग्य जाणवी ॥ २५४ ॥ ( एएण कमेण ) क० ए अनुक्रमे करीने ( समयाहियपल्लियम्मणुजोए ) क० एक एक समयथी आरंभीने दश दश पल्योपमनी वृद्धि ( भ ) क० होय जेथी पचीस पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ ( लंत ) क० लातक देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी पात्रीश पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ ( सहस्सार ) क० सहस्रार देवलोकना देवताओने भोग योग्य जाणवी पीस्तालीश पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ ( पाणय ) के० प्राणत देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी. अने ( पणपन्ना ) क० पचावन पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ ( अच्चुअदेवाण ) के० अच्युत देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी ॥ २५५ ॥

हा स लेश्यानु स्वरूप तथा देवताने केटली लेश्या होय ते कहछ

पथाओ परिभट्ठा, छ प्पुरिसा अडविमज्झयारमि ॥
जम्बूतरुस्स हिट्ठा, परोप्परं ते विचितंति ॥ २५६ ॥

अर्थ—( पंथाओ ) के० मार्गथी ( परिभट्ठा ) के० भूला पडेला ( छ प्पुरिसा ) के० छ पुरुषो ( अडविमज्झयारमि ) के० अरण्यना मध्ये ( जम्बूतरुस्स हिट्ठा ) के० जांबुवृक्षनी नीचे उभा रह्या अने ( ते ) के० ते पुरुषो ( परोप्पर ) के० परस्पर ( विचिंतंति ) के० विचार करवा लाग्या ॥ २५६ ॥

निम्मूलखंधसालो–गुच्छेपक्केपडियसडियाइ ॥
जह एएमि भावा, तह लेसाओ नायव्वा ॥ २५७ ॥

अर्थ—तेमा एक पुरुष जांबुना फळनी इच्छाथी जांबुना वृक्षने ( निम्मूल ) के० मूळमाथी उखाडी नाखवानो विचार करवा लाग्यो, बीजा पुरुष ( खंध ) के० थडने तोडी पाडवानी इच्छा करवा लाग्यो, त्रीजो पुरुष ( साल्ने ) के० नानी डाळीने छेदी नाखवानी इच्छा करवा लाग्यो, चोथो पुरुष ( गुच्छे ) के० काचा पाका फळ लागला गुच्छाने छेदवानो विचार करवा लाग्यो, पाचमो पुरुष वृक्ष उपर लागेला ( पक्के ) के० पाका फळोनेज तोडवानी इच्छा करवा लाग्यो, अने छट्ठो पुरुष तो ( पडिय सडियाइ ) के० नीचे खरी पडेला फळोने लेवानी इच्छा करवा लाग्यो ( जह ) के० जेवी रीते ( एएसिं ) के० ए छ पुरुषना (भावा) के० स्वाय भावो कह्या ( तह ) के० तेवा (लेसाओ) के० छ लेश्याना भावो ( नायव्वा ) के० जाणवा ॥ २५७ ॥

णिद्धजिमुतवण्णाभा, गवरयरोद्द ममप्पभा ॥
खजण वण्ण सकामा,लेसाओ कण्ह वण्णओ ॥२५८॥

अर्थ—( णिद्धजिमुतवण्णाभा ) क० स्निग्ध मेघसमान वर्णवाली, ( गवलरीटुसमप्पभा ) क० भेसना शींग अथवा अरिष्टरत्नना समान कांतिवाली, ( खंजण णण सकासा ) क० गाडाना पडानी मसना वर्ण सरखी ( कण्हवण्णओ ) क० कृष्णवर्णनी पहेली ( लेसाओ ) क० कृष्ण लेश्या जाणवी ॥ २५८ ॥

पल्लवासोयसकासा, चासपिच्छसमप्पभा ॥
वेरुलीयरयणाभा, वण्णाओ, नीललेसाओ ॥ २५९ ॥

अर्थ—( पल्लवासोयसकासा ) क० अशोक वृक्षना पल्लव समान कांतिवाली, ( चासपिच्छसमप्पभा ) क० चास पक्षीना पीछना समान वर्णवाली, अने ( वेरुलीयरयणाभा ) के० वडुर्यरत्नना समान कांतिवाली वर्णथी नीललेसाओ क० बीजी नील लेश्या जाणवी ॥ २५९ ॥

अलसीकुसुमाइवण्णाभा,जारिसीकोइलतलपीच्छच्छदा ॥
पारावयगीवसमा, वण्णाओ काउलेसाओ ॥ २६० ॥

अर्थ—( अलसीकुसुमाइ वण्णाभा ) क० अलसी पुष्प विगरना सरखी कांतिवाली, ( जारिसीकोइलतुलपीच्छच्छदा ) क० जरसी अथवा कोयलना पीछना समान वर्णवाली वली ( पारावयगीवसमा ) क० पारेवाना कंठ समान कांतिवाली वण्णाओ क० वर्णथी ( काउलेसाओ ) क० त्रीजी कापोत लेश्या जाणवी ॥२६०॥

तेउलेसा भवे वण्णा, हिंगुलरागसन्निभा ॥
तरुणाइच्चसमाकंती, दीवसमा होइ सुअतुडा ॥ २६१ ॥

अर्थ—(हिंगुलरागसन्निभा) क० हिंगलाना रंग सरखी, (तरुणाइच्च समाकंति ) के० उगता सूर्यना सरखी कांतिवाली, ( दीव-

समा ) के० टीवा सरखी, ( सुअतुडा ) के० पोपटनी चाच समान ( वण्णा ) क० वर्णथी ( तेउलेसा ) के० चोथी तेजो लेश्या (भवे) के० श्रेष्ठ ( होइ ) के० होय छे ॥ २६१ ॥

हरियालभेअसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा ॥
सणासण कुसुम समा, वण्णाओ पम्हलेसाओ ॥२६२॥

अर्थ—(हरियाल भेअसंकासा) के० हरतालना भेदरंग समान, ( हलिद्दाय समप्पभा ) क० हलदरनां रंग समान कांतिवाली, (स णासण कुसुम समा ) के० सणवाना फुल समान ( वण्णाओ ) क० वर्णथी पांचमी ( पम्हलेसाओ ) क० पद्मलेश्या जाणवी ॥ २६२ ॥

सुक्लेसा भवे वण्णा, संखकुंदसमप्पभा ॥
खीरधारदुधधवला, मुत्ताहलहाररययसमा ॥ २६३ ॥

अर्थ—( संखकुन्दसमप्पभा ) क० शंख अथवा मोगराना पुष्प समान उज्ज्वल, ( खीरधारदुधधवला ) के० क्षीर समुद्रना दुध स मान उज्ज्वल, तथा ( मुत्ताहलहाररययसमा ) क० मुक्ताफलना हार अथवा रुप्य समान ( वण्णा ) क० वर्णथी ( सुक्लेसा ) के० छठी शुक्लेश्या ( भवे ) के० होय छे ॥ २६३ ॥

जह कडुओ तुंबरसो, निंबरसो कडुयरोहिणीयरसो ॥
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो उ कण्हाए नायव्वो ॥२६४॥

अर्थ—( जह ) क० जेवो ( कडुओतुंबरसो ) के० कडवी तु- वीनो रस होय ( निंबरसो ) क० लींबडानो रस होय, ( कडुय- रोहिणी यरसो ) क० कडवी गलेनो रस होय, ( एत्तोवि ) क० एनाथी पण ( अणंतगुणो ) क० अनंतगुणो ( रसो ) क० कडवो

रस (कण्हाए) क० कृष्ण लेश्यानो (नायव्वो) क० जाणवो ॥२६४॥

जह तियगडुस्स य रसो,तिक्खो जह हत्थिपीप्पलीए य ॥
एत्तोवि य णंतगुणो, रसो उ नीलल्लेस्साए ॥ २६५ ॥

अर्थ—( जह ) क० जेवो ( तियगडुस्स ) रसो क० सुंठ पींपर अने मरीरूप त्रिकटुनो ( तिक्खो ) क० तीखो रस होय, ( जह ) क० जेवो ( हत्थिपीप्पलीए ) के० गजपीपरनो तीखो रस होय एत्तोवि ) के० एथी पण ( अणतगुणो ) क० अनतगुणो ( रसो ) के० तीखो ( नील्लेस्साए ) के० नील्लेश्यानो जाणवो ॥ २६५ ॥

जह तरुणचूयरसो, कविट्ठ कव्वस्स वावि जाव रसो ॥
एत्तोवि अणतगुणो,रसो य काओय लेसाओ ॥२६६॥

अर्थ—( जह ) के० ( तरुणचूयरसो ) के० काचा आ-थाना फल्नो रस होय, ( वावि ) क० अथवा पण (कविट्ठ कव्वस्स) क० काचा कोठ फल्नो ( जाव रसो ) के० जेवो रस होय, (ए-त्तोवि) क० एनाथी पण ( अणतगुणो ) क० अनतगुणो ) क०अन तगुणो ( रसो ) के० कषायलो रस ( काओय ) लेसाओ ) क० कापोतलेश्यानो जाणवो ॥ २६६ ॥

जह परिणयअवरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ॥
एत्तोवि अणतगुणो, रसोय तेऊए नायव्वो ॥ २६७ ॥

अर्थ—( जह ) के० जेवो ( परिणय अवरसो ) क० पाकेला आंबाना फल्नो रस होय, ( वावि ) के० अथवा ( पक्ककविट्ठस्स ) क० पाकेला क फल्नो ( जारिसओ ) के० जेवो रस होय

( एत्तोवि ) के० एनाथी पण ( अणतगुणो ) क०अनंतगुणो (रसो) के० मीठरस ( तेऊए ) के० तेजो लेश्यानो ( नायव्वो ) क० जाणवो ॥ २६७ ॥

पम्हाए एरिसरसो, वरवारुणि आसवाण जारिसओ ॥
महुमेरगस्सव रसो, तत्तोविय होइ णतगुणो ॥२६८ ॥

अर्थ—( पम्हाए ) क० पद्मलेश्यानो ( एरिसरसो ) के०एवो रस छे. केवो ? ते कहे छे ( वरवारुणि ) क० श्रेष्ठ मदिरानो तथा ( आसवाण ) क० विविध आसवानो ( जारिसओ ) के० जेवो रस होय छे वली ( महुमेरगस्सव रसो ) के० मद्य तथा मेर यमदिरानो जेवो रस छे, ( तत्तोविय ) तेनाथी पण ( णंत-गुणो) के० अनंतगुणो ( पद्मलेश्यानो रस होइ) के०होयछे ॥२६८॥

खज्जूर मुद्दीयरसो, खीररसो खंडसकररसो वा ॥
एत्तोवि अणतगुणो, रसो सुक्काओ नायव्वो ॥ २६९ ॥

अर्थ—जेवो [ खज्जूरमुद्दीयरसो ] के० खजूर अने द्राखनो रस होय, तेमज जेवो ( खीररसो के० दुधनो रस होय, वा के० अथवा जेवो ( खंडसक्कररसो ) के० खांड अने साकरनो रस होय, ( एत्तोवि ) के० एनाथी पण (अणतगुणो) के० अनंतगुणो (रसो) के० मीठो रस ( सुक्काओ ) के० शुक्ललेश्यानो ( नायव्वो ) के० जाणवो ॥ २६९ ॥

हव लेश्यानो स्पर्श केवो होय ? ते कहे छे

किण्हा नीला काऊ,तिन्निवि फासो य अप्पसत्थाओ ॥
गोजि[illegible]ो,णतगुणो होइ फासो य ॥२७

अर्थ— किण्हा नीला काउ ) के० कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या, ( तिन्निवि फासोय ) के० ए त्रणे ले पानो पण स्पर्श [ अप्पसत्थाओ ]के०माठो जाणवो जेवो( गोजिब्भ क-कय ) के० गायनी जिभ अने करवत, ( तओ ) के० तेथी ( अणतगुणा ) के० अनंतगुणो ( फासो ) के० ए त्रणे लेश्यानो स्पर्श [ होइ ] के० होय छे ॥ २७० ॥

तेऊ पम्हा सुक्का पसत्थलेसाओ एरिसो फासो ॥
चुरनवणीयसिरीसो, णंतगुणो होइ तत्तोवि ॥ २७१ ॥

अर्थ—( तेउ पम्हा सुक्का ) के० तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्लेश्या, ए त्रण सारी लेश्या छे. तेनो ( एरिसो फासो ) के० एवो स्पर्श होय छे जेवो होय छे ? ते के० ( बुरनवणीयसो ) के० बूरनामनी वनस्पति तथा माखण अने शिरीषना फुल सरखा जे स्पर्श छे ( तत्तोवि ) के० तेनाथी पण ए त्रण लेश्याना ( अणतगुणो ) के० अनंतगुणो श्रेष्ठ स्पर्श ( होइ )के० छे ॥२७१॥

हवे देवताने कइ कइ लेश्या होय ? ते त्रण गाथाथी कहे छे

किण्णा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्कलेसाओ ॥
भवणवण पढमचउलेस, जोइसकप्पदुगे तेऊ ॥२७२ ॥
कप्पतिय पम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा ॥

अर्थ—( किण्हा ) के० कृष्णलेश्या, ( नीला ) के० नीललेश्या, ( काउ ) के० कापोतलेश्या, ( तेउ ) के० तेजोलेश्या, ( पम्हा ) के० पद्मलेश्या, य के० अने ( सुक्क ) के० शुक्लेश्या ए छ ( लेस्साओ ) के० लेश्या जाणवी जीव तथा कर्मनो जेणे करी संबंध थाय ते लेश्या कहेवाय छे तेना द्रव्यलेश्या अने भाव

लेश्या एरा चे भेद छे. आत्माने कृष्ण पीत विगेरे द्रव्यपुद्गल सयोग ते द्रव्यलेश्या, तथा शुभाशुभ परिणाम ते भावलेश्या ए अधिकार आगल नारकीना अधिकारमां कहेशे. ( भवणवण ) क० भवनपति तथा व्यतर देवताने ( पढम चउलेस ) क० पहेली चार एटले कृष्ण नील कापोत अने तेजो ए चार लेश्या होय छे त्या परमाधामीने एक कृष्णलेश्या होय छे, अने ( जोइसकप्पदुगे ) क० ज्योतिषी तथा पहेला बे देवलोकने विषे ( तेऊ ) क० तेजोलेश्या होय छे ॥ २७२ ॥ ते उपरना ( कप्पतिय ) के० सनत्कुमार माहेन्द्र अने ब्रह्म ए त्रण देवलोकने विषे ( पम्ह लेसा ) क० एक पद्मलेश्या होय छे तथा ( लतास्सु ) के० लातक देवलोकथी आरभी उपरना सर्व लोकने विषे ( सुरा ) के० देवना ( सुक्लेस ) के० शुक्लेश्यावाला ( हुति ) के० होय छे

भवनपति व्यतर अने ज्योतिषी देवोना शरीरनो वर्ण प्रथम देवोना अधिकारमां कह्यो छे अहिं वैमानिक देवोना शरीरनो वर्ण अर्द्धी गाथाथी कहे छे

कणगाभ पउमकेसर वन्ना दुसुतिसु उवरि धवला ॥२७३॥

अर्थ—सौधर्म अने ईशान ए ( दुसु ) के० देवलोकमां देवताना शरीर ( कणगाभ ) क० तप्ता सुवर्ण समान कांतिवाला जाणवा. तथा सनत्कुमार माहेन्द्र अने ब्रह्म ए ( तिसु ) क० त्रण देवलोकना देवताना शरीर ( पउमकेसर वन्ना ) के० कमलना केसरा जेवा वर्णवाला जाणवा अने ( उवरि ) के० ते उपरना सर्व देवलोकना देवताना शरीर ( धवला ) के० उज्वल वर्णवाला जाणवा ॥ २७३ ॥

हवे देवताना [illegible] तथा श्वासोश्वासनु स्वरूप कहे छे.

दसवाससहस्साइ जहन्नमाउ धरंति जे देवा ॥
तेसिं चउत्थाहारो, सत्तहिं थोवेहिं ऊसासो ॥ २७४ ॥

अर्थ—भवनपति तथा व्यंतर देवोमां ( जे देवा ) के० जे देवता ( दसवाससहस्साइ ) के० दश हजार वर्षनुं ( जहन्नमाउ ) क० जघन्य आयुष्य ( धरंति ) के० धारण करे छे ( तेसिं ) क० ते देवताने ( चउत्थाहारो ) क० चोथ पछी एटले एक अहोरात्रीने आंतरे आहारनी इच्छा होय अने ते इच्छा मनोहर पुद्गलोथी पूर्ण करे तथा तेमने ( सत्तहिं ) थोवेहिं ) क० सात स्तोक फरीने (ऊसासो ) के० एक श्वासोश्वास होय. ॥ २७४ ॥

हवे पूर्वे कहेला स्तोकनुं प्रमाण कहे छे

आहिवाहिविमुक्कस्स, नीसासूस्सास एगगो ॥
पाणु सत्त इमो थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥२७५॥

अर्थ—( आहि ) क० आधि ते मननी पीडा अने ( वाहि ) के० व्याधि ते शरीरनी पीडा ते बन्ने पीडाथी ( विमुक्कस्स ) क० मुक्त थयेला एवा पुरुषनो ( एगगो ) के० एक एवो ( नीसासूस्सास ) क० श्वासोश्वास ते ( पाणु ) के० एक प्राण कहीये अने ( सत्त इमो ) के० एवा सात प्राणे ( थोवो ) के० एक स्तोक कहीये ( सोवि सत्तगुणो ) क० तेवा सात स्तोक ( लवो ) क० एक लव थाय ॥ २७० ॥

हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवक्किट्ठस्स जंतुणो ॥
एग उसासनिस्सासे, एसो पाणुत्ति वुच्चइ ॥ २७६ ॥

अर्थ—( हट्ठस्स ) क० हर्षवंत, [ अणवगल्लस्स ] क० उद्वेग

रहित अने ( निरवकठ्ठस्स ) के० राग रहित एवा (जंतुणो) क० प्राणीनो ( एग उसासनिसासे ) के० एक श्वासोश्वास ( एसो ) के० ए ( पाणुत्ति वुचइ ) कहवाय छे. ॥ २७६ ॥

एगा कोडि सतसट्ठी, लक्खा सतहत्तरी सहस्सा य ॥
दोय मया मोलहिया, आवलिया इगमुहुत्तेण ॥२७७॥

अर्थ—( एग्र कोडी ) के० एक क्रोड, ( सतसट्ठी लक्खा ) के० सडसठ लाख ( सतहत्तरी सहस्साय ) के० सत्योतेर हजार, ( दोय सया ) के० अने ( सोलहिया ) के० शोल अधिक एटली ( आवलिया ) क० आवलिका ( इगमुहुत्तेण ) के० एक- मुहूर्तमा थाय छे ॥ २७७ ॥

लवमत्तहत्तरीए, होइ मुहुत्तो इमंमि ऊमामा ॥
सगतीसमयतिहुत्तर, तीसगुणा ते अहोरत्ते ॥ २७८ ॥

अर्थ—रसो पचोतेरमी गाथामा ओगणपचास श्वासोश्वासे एक लव कह्यो छे तेवा ( लवसत्तहत्तरीए ) के० सत्योतेर लवे ( मुहुत्तो होइ ) के० एक मुहूर्त थाय छे अने ( इमंमि ) के० एक मुहूर्तमा [ सगतीससय तिहुत्तर ] क० साडत्रीस सो अने तहोतेर ( ऊसासा ) के० श्वासोश्वास थाय. हवे त्रीस मुहूर्ते अहोरात्री थाय छे माटे साडत्रीस सो अने तहोतेरने ( तीसगुणा ) के० त्रीश- गुणा करीये त्यारे ( अहोरत्ते ) क० एक अहोरात्रमा ( ते ) क० ते श्वासोश्वास केटला थाय ! तो क- ॥ २७८ ॥

एग च सयमहस्स, ऊमासाण तेर सहस्सा य ॥
नउयमएण अहिया,दिवसनिसि हुति विन्नेया ॥२७९॥

अर्थ—( एगं सयसहस्स ) के० एक लाख (तेरसहस्सा) के० तेर हजार ( य ) के० अने ( नउयसएण अहिया ) के० एक सो नेवु अधिक एटला ( उसासाण ) के० श्वासोश्वासनी संख्या ( दिवसनिसि ) के० रात्रि अने दिवस मलीने ( हुंति ) के० थाय छे, एम ( विन्नेया ) के० जाणवुं ॥ २७९ ॥

मासेवि य ऊसासा, लक्खा तितीस सहस पणनउई ॥
सत्तसयाइ जाणह, कहियाइ पुव्वसूरीहिं ॥ २८० ॥

अर्थ—( य ) के० वली ( मासेवि ) के० एक मासने विषे ( उसासा ) के० ते श्वासोश्वास (लक्खातित्तीस) के० तेत्रीश लाख ( सहस्सपणनउइ ) के० पचाणु हजार, अने ( सत्त सयाइं ) के० सात सो थाय एम ( पुव्वसूरिहिं ) के० पूर्वना आचार्योए ( कहियाइं ) के० कहुं छे ते ( जाणह ) के० जाणवुं ॥ २८० ॥

चत्तारी य कोडिओ, लक्खा सत्तेव हुंति नायव्वा ॥
अडयालीस सहस्सा, चारसिया एग वरिसेण ॥२८१॥

अर्थ—( य के० वली ( चत्तारी कोडिओ ) के० चार क्रोड ( लक्खा सत्तेव ) के० सात लाख ( अडयालीस सहस्सा ) के० अडतालीस हजार अने ( चारसिया ) के० चार सो उपर एटला श्वासोश्वास ( एग वरिसेण ) के० एक वर्ष ( हुंति ) के० थाय छे एम ( नायव्वा ) के० जाणवुं ॥ २८१ ॥

चत्तारी कोडिसया कोडीओ सत्त लक्ख अडयाला ॥
चत्तालीस सहस्सा, सासमए हुंति नायव्वा ॥ २८२ ॥

अर्थ—( चत्तारी कोडि सया ) के० चार सो क्रोड, (क्रो

टीओ सत्त ) के० सात क्रोड, ( लक्ख अडयाला ) के० अड तालीस लाख, ( चवालीस सहस्सा ) के० चालीस हजार एटला श्वासोश्वास ( वाससए ) के० सो वर्षे हुति के० थाय छे ते ( नायवा ) के० जाणवा ॥ २८२ ॥

लक्ख तेर महस्सा, नउयमयं अयरमखयादेवे ॥
पक्खेहि ऊमासो, वाममहस्सेहिं आहारो ॥ २८३ ॥

अर्थ—मनुष्यने एक अहोरात्रिमा ( लक्ख ) के० एक लाख ( तेर सहस्सा ) के० तेर हजार अने ( नउयमय ) के० एक सो नेवु, एटला श्वासोश्वास होय, परंतु ( देवे ) के० देवताने विषे ( अयरसखया के० सागरोपमनी संख्याये करीने एटले जे देवताने जेटला सागरोपमनु आयुष्य होय ते देवताने तेटला ( पक्खेहिं )के० पखवडे करीने ( ऊसासो ) के० श्वासोश्वास होय छे अने (वाससहस्सेहिं ) के० तेटला हजार वर्षे ( आहारो ) के० आहार होय छे. दृष्टांत जेम सर्वार्थसिद्धिना देवताने तेत्रीस सागरोपमनु आयुष्य छे तो तेमने तेत्रीश पखवाडीये एक श्वासोश्वास थाय अने तेत्रीश हजार वर्षे आहारनी इच्छा थाय छे ॥ २८३ ॥

- जे देवतानु दश हजार वर्षथी उपर अने एक सागरोपमथी न्यून ओछु आयुष्य होय ते देवताना आहार अने श्वासोश्वासनु मान कहे छे

दसवास सहस्सुवरि, समयाई जावसागर ऊण ॥
दिवस मुहुत्तपहुत्ता, आहारूसास सेमाण ॥ २८४ ॥

अर्थ—जे देवतानु ( दसवास सहस्सुवरिं ) के० दश हजार वर्ष उपरांत ( समयाई ) के० एक समयथी वधारता ( जावसागर

ज्ञ ) के० यावत् एक सागरोपमना काल ओछु आयुष्य होय ते देवताने ( दिवस मुहूत्तपहुत्ता ) के० दिवस पृथक्त्वे अने मुहूर्त्तपृथक्त्व ( आहारूसास ) के० आहार अने श्वासोश्वास होय छे भावार्थ ए छे के-दश हजार वर्षथी उपरांत एक समयादिकनी वृद्धिये अनुक्रमे दिवस पृथक्त्वे आहार अने मुहूर्त्त पृथक्त्वे उश्वास वधारना जवु ते ज्यांसुधी एकावन्नु के-ज्यासुधी पूर्ण सागरोपमायु मलये पक्षथी उश्वास अने एक हजार वर्षथी आहार थाय. (सेसाण) के० बीजा देवतानु पण एज प्रमाणे जाणवु ॥ १८४ ॥

हवे आहारना त्रण भेद कहे छे

## सरिरेणोयाहारो, तयाय फासेण लोमआहारो ॥
## पक्खेवाहारो पुण, कावलिओ होइ नायव्वो ॥१८५॥

अर्थ—( सरिरेण ) के० एक शरीरथी जे आहार थाय ते ओयाहारो क० ओजाहार कहवाय जोके शरीर तो पांच जातना छे तोपण जीव तेजस अने कार्मण शरीरे करी उत्पत्ति प्रदेशे आवीने पूर्वना शरीरने त्यजी दे. विग्रह अथवा अविग्रह गतिवालो जीव प्रथम समय औदारिक शरीर योग्य पुद्गलाहार करे अने बीजा समयथी आरंभी कार्मण साथे ज्यासुधी पूर्ण नीपजे त्यां औदारिक मिश्र आहार करे ते सव ओजस् तेना तेजस शरीर तेणे करी आहार करे ते प्रथम ओजाहार कहेवाय ( तयायफासेण ) के० त्वचा एटले चामडी द्वारा स्पर्शेंद्रिये करीने करातो आहार जेमके शरीरे तेल चोपडवाय चोखाश थाय, शरीरे पाणी छांटवाथी तृषा शांति थाय ते ( लोय आहारो )के० लोमाहार कहवाय (पुण)के० वली ( पक्खेवाहारो ) के० प्रक्षेपाहार ते (कावलिओ होइ)के०कोलीया मुखमां नाखवा रूप कवलाहार (नायव्वो)के०जाणवो ॥१८५॥

तेज वात आ नीचेनी गाथाथी कहे छे

**जोएणकम्मएणं, आहारेई अणंतरं जीवो ॥**
**तेण पर मीसेण, जाव सरीरस्स निप्पत्ति ॥ २८६ ॥**

अर्थ जीव ( कम्मएण जोएण ) के० कार्मण काययोग वड ( अणतर ) के० प्रथम समये औदारिक शरीर योग्य पुद्गलने ( आहारेई ) के० आहरे ( अणतर ) क० त्यार पछी बीजे समये ( तेण पर मीसेण ) क० औदारिकनी साथे मिश्र एटले औदारिक मिश्रनो आहार करे, ते (जावसरीरस्स निप्पत्ति) के० ज्या सुधीमा शरीरनी पूर्ण प्राप्ती थाय त्या सुधी औदारिकमिश्र आहार करे ॥ २८६ ॥

हवे ते प्रणे आहार कइ कइ अवस्थामां होय ते कहे छे

**ओयाहारा सव्वे, अपजत्त पजत्त लोमआहारो ॥**
**सुरनिरय इगिदि विणा, सेस भवत्था मपक्खेवा ॥२८७॥**

अर्थ-( सव्व अपजत्त ) के० सर्वे एकेंद्रियथी आरभी पचेंद्रिय सुधीना अपर्याप्ता जीवो ( ओयाहारा ) के० ओजाहारी जाणवा अने ( पजत्त ) क० पर्याप्ता जीवोने ( लोमआहारो ) के० लोम आहार होय छे वली ( सुरनिरयइगिंदि विणा ) के० देवता नारकी अने एकेंद्रि ए त्रण विना (सेस) क० बाकीना ( भवत्था ) के० बेइंद्रि तेंइद्रि चउरेंद्रि पचेंद्रि तिर्यच अने मनुष्य ए सर्व जीवो ( सपक्खेवा ) के० कवलाहारी पण जाणवा ॥ २८७ ॥

**सचित्ताचित्तोभय-रूवो आहार सव्वतिरियाण ॥**
**सव्वनराण च तहा सुरनेरइयाण अचित्तो ॥ २८८ ॥**

अर्थ-( सव्वतिरियाण ) के० सर्वे तिर्यचने ( सचित्ताचित्तो-

मयरूवो ) क० सचित्त अचित्त अने सचित्ताचित्त एटले मिश्र एम त्रण प्रकारनो ( आहार ) के० आहार होय छे. ( तहा ) के० तेमज ( सव्वनराण ) क० सर्व मनुष्योने पण त्रण प्रकारनो आहार होय छे ( च ) के० अने ( सुरनेरइयाण ) के० देवता तथा नारकीने ( अचित्तो ) के० अचित्त आहार होय छे. ॥ २८८ ॥

आभोगाणाभोगा, सव्वेसिं होइ लोमआहारो ॥
निरयाण अमणुन्नो, परिणमइ सुराण समणुन्नो ॥२८९॥

अर्थ–जेम वर्षाकालमा शीतल पुद्गलनो स्पर्श थवाथी बहु मूत्र प्रसरे. तेम सर्व जीवोने अपर्याप्तावस्थामा तो अजाणपणे आहार परिणमे, परंतु पर्याप्तावस्थाये ( सव्वेसिं ) क० सर्व जीवोने कोइ वखते ( लोमआहारो ) के० लोमाहार ( आभोग ) के० जाणता अने कोइ वखते ( अणाभोग ) क० अजाणता ( होइ ) के० होय छे तेमां एकेंद्रियने तथा समूर्छिम मनुष्यने मनरहितपणाने लीधे सर्वथा अजाणताज आहार परिणमे छे वली (निरयाण) के० नारकीने अशुभकर्मना उदयथी ( अमणुन्नो ) क० अमनोज्ञ एटले मनने सारो न लागे तेवो आहार ( परिणमइ ) क० परिणमे छे अने (सुराण) के० देवताओने शुभकर्मोदयथी ( समणुन्नो ) क० मनोज्ञ एटले मनने सारो लागे तेवो आहार परिणमे छे ॥ २८९ ॥

हवे नारकी तिर्यंच तथा मनुष्यने आहारनु काल मान एटले अंतर कहे छे

तह विगलनारयाणं, अनमुहुत्तो स होइ उक्कोसो ॥
पंचिंदितिरिनराणं, साहाविय छठ्ठ अठ्ठमओ ॥ २९० ॥

अर्थ–(तह) के० तेमज ( विगल ) क० बेइंद्रि तेइंद्रि अने चउ-

रद्रि तथा ( नारयाण ) क० नारकी एनु अतर जीवोने एक वार आहार लीधा पछी ( उक्रोसो ( के० उत्कृष्टथी ( अनमुहुत्तो ) के० एक अनमुहूर्त्त गया पछी (स) के० आहारनी इच्छा (हाइ ) क० थाय छे पृथ्वीकायादि एकेंद्रिय जीवोने तो आहारनी इच्छा निरतर सन्ना रह छे. वली ( पचिदितिरि ) के० पचेंद्रिय तिर्यंचने ( माहारिओ ) के० स्वाभाविक एटले रोगादिकना कारण विना उत्कृष्टथी ( छट्ट ) के० बे अहोरात्रिने अतर आहारनी इच्छा थाय अने ( नराण ) क० मनुष्यने उत्कृष्टथी ( अट्ठमओ ) के० त्रण अहोरात्रिने आतरे आहारनी इच्छा थाय आ आहारनु अतर देवकुरु उत्तरकुरु भरत अने एरवतमा सुषम सुषमाकाले त्रण पल्योपमना आयुष्यवाला तिर्यंच अने मनुष्य आश्री जाणवु. ॥ २९० ॥

हवे आहारक तथा अनाहारक जीवो कया ? ते कह छे

## विग्गहगइमावन्ना, केवलिणो समुहया अजोगी य॥ सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥२९१॥

अर्थ—जे जीवो समश्रेणीमूकीने विश्रेणिये उत्पन्न थाय ते ( विग्गहगइमावन्ना ) के० विग्रहगतिने पामेला जीवो चार समय सुधी, अनाहारी होय आठ समय प्रमाण केवली समुद्घात छे तेमा त्रीजे चोथे अने पाचमे समय केवल कार्मण काययोगी होय तेवा ( केवलिणो समुहया ) के० केवल समुद्घात करता केवली भगवतो त्रण समय सुधी, तेमज ( अजोगी य ) क० शैलेशी करण करता अयोगी नामना चौदमे गुण ठाणे रहेला जीवो अतर मुहूर्त्त सुधी, ( य ) के० अने ( सिद्धा ) के० आठ कर्मनो क्षय करी सिद्ध थयेला जीवो अनत काल सुधी ( अणाहारा ) के० अनाहारक जाणवा अने ( सेसा ) के० ते विना बीजा ( जीवा )

क० जीवो ( आहारगा ) के० आहारक जाणवा ॥ २९१ ॥

हवे देवताना स्वरूपनु वर्णन करे छे

केसट्ठि मंस नह रोम-रुहिर वस चम्म मुत्त पुरिसेहिं ॥
रहिया निम्मलदेहा, सुगंधनिस्सास गयलेवा ॥२९२॥

अर्थ-सव देवता पूर्व भवमा करेला शुभकर्मना उदयथी ( केस ) क० केश, ( अट्ठि ) क० हाडका, ( मंस ) क० मांस, ( नह ) क० नख, ( रोम ) क० रुवाडा, ( रुहिर ) के० रुधिर, ( वस ) क० चरबी, ( चम्म ) के० चामडी, ( मुत्त ) के० मूत्र अने ( पुरिसेहिं ) क० विष्टा एटली वस्तुये करीने ( रहिया ) क० रहित तथा ( निम्मलदेहा ) क० निर्मल शरीरवाला, ( सुगंध निस्सास ) के० कपूर तथा कस्तुरीना समान श्वासवाला अने ( गयलेवा ) के० रज परसेवादिकना लेपरहित होय छे ॥ २९२ ॥

अंत मुहुत्तेण चिय, पज्जत्ता तरुणपुरिससकासा ॥
सव्वंगभूसण धरा, अजरा निरुया समा देवा ॥२९३॥

अर्थ-वली उत्पन्न थया पछी ( अंतमुहुत्तेण ) के० एक अंतर मुहूर्तमा ( चिय ) के० निश्चे ( पज्जत्ता ) क० पूर्ण पर्याप्ति वाला थइने ( तरुणपुरिससकासा ) क० युवान पुरुष सरखा, ( सव्वंग भूसणधरा ) क० सर्वांगे आभूषणने धारण करनारा, ( अजरा ) के० नित्य युवावस्थावाला, ( निरुया ) क० रोगरहित, अने ( समा ) के० समचतुरस्र संस्थान वाला ( देवा ) के० देवता छे, श्रीजीवाभिगमसूत्रना अभिप्रायथी कोइक एम कहे छे के-देवता आभरण तथा वस्त्र रहित छे, परतु ते उत्पत्ति समयेज जाणवा कारण उत्पत्ति समये उत्पन्न थया पछी अभिषेक सभाये स्नान

करे, अलंकार सभाये अलंकार पहेर, व्यवसाय सभाये पुस्तक वांची धार्मिक उपगरण ल्हे, पछी सुधर्मा सभाये सिद्धायतनने विषे जिनप्रतिमाने पूजे छे, माटे देवता उत्पत्तिसमए वस्त्राभूषण रहित होय छे ॥ २९३ ॥

अणिमिसनयणा मण–कज्ज साहणा पुप्फदाम अमिलाणा ॥
चउरगुलेण भूमि,न छिवंति सुरा जिणा विंति ॥२९४॥

अर्थ–( अणिमिसनयणा ) के० देवशक्तिना कारणे अनिमेष नेत्रवाला, ( मणकज्जसाहणा ) के० मनथी सर्व कार्यने करनारा ( पुप्फदामअमिलाणा के० कठमा प्रफुल्लित पुष्पमाला जेमनी करमाय नहि एवा देवता कोइ कारणे मनुष्य लोकमा आव्या छता ( चउरगुलेण ) के० चार अगुलवडे ( भूमि ) के० पृथ्वीने ( न छिवंति ) के० स्पर्श करता नथी, अर्थात् पृथ्वीथी चार आगुल उचा उभा रहे छे एम ( जिणा विंति ) के० जिनेश्वर कहे छे ॥ २९४ ॥

हवे देवता मनुष्यलोकमा क्या कारणे आवे ते कहे छे

पंचसु जिणकल्लाणेसु, चेव महरिसितवाणुभावाओ ॥
जम्मतरनेहेण य, आगच्छंति सुरा इहय ॥ २९५ ॥

अर्थ–––(पचसु जिणकल्लाणेसु) के० तीर्थंकरना जन्मादिक पाच कल्याणकने विषे, तथा ( महरीसितवाणुभावाओ ) के० महोटा ऋषिओना तपना प्रभावथी, ( य ) के० वली ( जम्मतर नेहण ) के० जन्मातरना स्नेह करीने, ( जेम स्नेहथी शालिभद्रना

पिता अथवा रीपथी सगम देवता आव्यो हतो तेम ) एवा कारणथी ( सुरा ) के० देवता ( इहय ) के० अहिया ( आगच्छति ) क० आवे छे. ॥ २९५ ॥

देवता कारण विना मनुष्यलोकमा केम न आव ? ते कह छे

संकतदिव्वपेमो, विसयपसत्ता समत्तकत्तव्वा ॥
अणहीणमणुयकज्जा,नरभवमसुह न इंति सुरा ॥२९६॥

अर्थ—उत्पन्न थया पछी तुरत देवागनानो जेमना हृदयमा ( सकत दिव्व पमा ) क० दिव्यमम मसरी रहल्ले छे एवा, तथा ( विसयपसत्ता ) क० देवागनानी साथे स्पर्श गीतादिक विषयमा आसक्त थयला, वली ( समत्तकत्तव्वा ) के० जेमना स्नान वनविहार नाटक विलोकन विगेर दवकार्य पूरा थया नथी एवा, अने ( अणहीणमणुयकज्जा ) क० देवताने मनुष्याधिन काइ कार्य नथी एवा कारणने लीधे ( सुरा ) के० देवता ( असुह ) के० दुर्गंधमय एवा ( नरभव ) क० मनुष्यलोकने विषे ( न इंति ) के० आवता नथी ॥ २९६ ॥

चत्तारि पंच जोयण, सयाइ गंधो य मणुयलोगस्स ॥
उड्ढ वच्चइ जेण, न हु देवा तेण आवंति ॥ २९७ ॥

अर्थ—जेण क० जेकारणमाटे मणुयलोगस्स क० मनुष्यलोक सबंधी मृतकशरीर तथा मूत्र पुरिस विगेरेनो ( गंधो य ) क० दुर्गंध ( चत्तारि पंच जोयण सयाइ ) के० चारसो पाचसो योजन ( उड्ढ वच्चइ ) क० उंच जाय छे ( तेण ) के० तेकारणमाटे ( देवा ) के० देवता ( हु ) के० निश्चे आ मनुष्य लोकमा ( न आवंति ) के० आवता नथी. २९७

क० सातमी नरकपृथ्वी सुधी देखे ( उ ) क० वली ( अणुत्तर सुरा ) क० पांच अनुत्तर निवासी देवताओ ( भिन्नलोगनालिं ) क० काईक ऊणी पचास्तिकायरूप चउदराजप्रमाण लोकनालने देखे अने ऊंचे पोताना विमाननी ध्वजा सुधी देखे ( तु ) के० वली ( तिरियं ) के० तिर्छु ( असखद्दीवुदहि ) के० असख्याता द्वीप समुद्र सुधी देखे ॥ २०० ॥

## बहुयथर उवरिमगा, उड्ढ स विमाण चूलियधयाइ ॥ ऊणद्धसागरे सख-जोयणा तप्परमसखा ॥ ३०० ॥

अर्थ—( उवरिमगा ) के० उपर उपरना देवलोकना देवता तिर्छु ( बहुयथर ) के० असख्याता असख्याता भेदेकरी अधिक अधिक देखे. अने ( उड्ढ ) के० ऊंचु ( सविमाण चूलियधयाइ ) के० पोताना विमाननी चूलिकानी ध्वजा सुधी देखे अथवा ( ऊणद्धसागरे ) के० अर्द्धसागरोपमथी ओछा उत्कृष्टा आयुष्य-वाला देवता ( सख जोयणा ) क० तिर्छु सख्याता योजन सुधी देखे अने ( तप्पर ) के० अर्द्धा सागरोपमथी अधिक आयुष्यवाला देवता तिर्छु (असखा)के० असख्याता योजन सुधी देखे.॥३००॥

## पणवीस जोयण लहु,नारय भवण वण जोइ कप्पाण ॥ गेविज्जणुत्तराण य, जहसख ओहि आगारा ॥३०१॥

अर्थ—दशहजार वर्षना आयुष्यवाला भुवनपति अने व्यतर देवता ( लहु ) के० जघन्यथी ( पणवीस जोयण ) के० पचीस योजन सुधी देखे अहिं तात्पर्य ए छे के-दशे भुवनपति जघन्यथी तो पचीस योजन देखे अने उत्कृष्टथी असुर कुमार निकायना देवता असख्याता द्वीपसमुद्र देखे तथा नव निकायना देवता सख्याता

योजनना अवधि क्षेत्रवाला होवाथी सख्याता द्वीपसमुद्र सुधी देखे ज्योतषी देवता जघन्य अने उत्कृष्ट सख्याता योजनना अवधिक्षेत्र वाला होवाथी सख्याता द्वीपसमुद्र देखे, व्यतरदेवता जघ यथी पचीस योजन देखे अने उत्कृष्टथी सख्याता योजनना अवधिक्षेत्र वाला होवाथी सख्याता द्वीपसमुद्र देखे

हवे गाथाना पाछला त्रण पदोथी नारकी देवता तिर्यच अने मनुष्यना अवधिज्ञाननु सस्थान कहे छे

१ ( नारय ) के० नारकी, २ ( भवण ) क० भवनपति, ३ ( वण ) के० व्यतर, ४ ( जोइ ) के० ज्योतषी, ५ ( कप्पाण ) के० बार देवलोक, ६ (गेविज्ज) क० नवग्रैवेयक, ७ (अणुत्तराणय) क० पाच अनुत्तर ए सातना ( जहसख ) क० यथासख्याये करीने ( ओहि आगारा ) के० अवधिज्ञानना आकार एटले सस्थान कह छे ॥ ३०१ ॥

तप्पागारे पल्लग, पडहग झल्लरि मुइग पुप्फ जवे ॥
तिरियमणुएसु ओहीं,नाणाविह सठ्ठिओ भणिओ ॥३०२॥

अर्थ—नारकीनु अवधिज्ञान ( तप्पागार ) क० पाणी उपर तरवाना त्रापाने आकारे, भुवनपतिनु अवधिज्ञान (पल्लग) क० पालाने आकार, व्यतरनु अवधिज्ञान ( पडहग ) क० ढोलने आकार, ज्योतषीनु अवधिज्ञान ( झल्लरि ) क० झल्लरीने आकार, बार देवलोकना देवतानु अवधिज्ञान ( मुइग ) क० मृदगने आकार, नवग्रैवेयकना देवतानु अवधिज्ञान (पुप्फ) क० पुष्पथी भरेली चगेरीना आकार, अने पाच अनुत्तर विमानवासी देवोनु अवधिज्ञान ( जवे ) क० कुमारीकन्याना गलकचुआने आकार होय छ, वली

( तिरियमणुएसु ) क० तिर्यंच अने मनुष्यने विषे (ओही) के० अवधिज्ञान ( नाणाविह संठिओ ) क० नानाप्रकारना संस्थानवालु ( भणिओ ) क० कह्यु छे. ॥ ३०२ ॥

हवे उपर कहेला संस्थानोनु स्वरूप कहे छे

तप्पेण समागारो, तप्पागारो, स चाइयतमसो ॥
उद्धाययओ पल्लो, उवरि रुंदोहसखित्तो ॥ ३०३ ॥

अर्थ—( तप्पण समागारो ) क० वहाणने आकार जे अवधिज्ञान ते ( तप्पागारो ) क० तापाकार अवधिज्ञान कहवाय ( स ) क० ते अवधिज्ञान (चाइयतमसो) क० नारकीनु छे० (उद्धाययओ) क० उंचे लंबाइवालो ( उवरि रुंदो ) के० उपर विस्तार वालो अने अहसंखित्तो क० नीचे सांकडो एवो ( पल्लो ) के० पल्य होय छे. ॥ ३०३ ॥

सव्वायओ समोविय, पडहो हिट्ठोवरि पइ्वासो ॥
चम्मावणद्ध विच्छिन्न, वलयरूवा उ झल्लरिया ॥३०४॥

अर्थ—(सव्वायओ समोविय ) क० सर्व बाजुएथी सरखो उंचो पण ( हिट्ठोवरि पइ्वासो ) के० नीचे अने उपर थालीने आकारे पाथरो, वली ( चम्मावणद्ध ) क० चामडाथी ढांकेलो एवो (पडहो) क० पडह होय छे (उ) के० वली ( वलयरूवा ) क० गोल वलयने आकारे ( झल्लरिया ) के० झालर होय छे ॥ ३०४ ॥

उद्धायओ मुयगो, हिट्ठो रुद्दो तहोवरि तणुओ ॥
पुप्फमिहानली रहिया, चगेरी पुप्फचगेरी ॥ ३०५ ॥

अर्थ—(उद्धायओ ) के० उंची आकृतिवालो, ( हिट्ठोरुद्दो )

के० नीचे विस्तारवालो, (नहोवरि तणुओ) के० तेमज उपर साकडो एवो (मुयगो) के० मृदंग होय छे. (पुप्फसिहावली रइया) के० पुष्प समूहथी रचेली (चगेरी) के० एटले नीचेनी पडगी सहित छावडी ते (पुप्फचगेरी) के० पुप्पचगेरी कहेवाय छे ॥३०८॥

जवनालउत्ति भन्नइ, उप्भोसए कंचुओ कुमारीए ॥
एए अवद्धाकारा, देवा जाणति जिणवुत्ता ॥ ३०६ ॥

अर्थ—(कुमारीए) के० कुमारिकाना (उप्भोसए) के० उंची करेली बे बाहुवाला (कंचुओ) के० कंचुवाने (जवनालउत्ति भन्नइ) के० जवनाल एम कहेवाय छे (एए अवद्धाकारा) के० ए अवधिज्ञानना आकारने (देवा) के० देवता (जाणति) के० जाणे छे अने ए अवधिज्ञानना आकारो (जिणवुत्ता) के० जिनेश्वर कह्या छे ॥ ३०६ ॥

हवे नारकी देवना मनुष्य अने तिर्यंच ए चारमा कोने कइ दिशाए अवधिज्ञान वधारे होय ? ते कहे छे

उड्ढ भवणवणाण, बहुगो वेमाणियाण हो ओही ॥
नारय जोइस तिरियं, नरतिरियाणं अणेगविहो ॥३०७॥

अर्थ—(भवणवणाण) के० भुवनपति तथा व्यंतर देवताओने अवधिज्ञान (उं) के० उंचु (बहुगो) के० घणु होय छे. तिर्छु तथा नीचु थोडु होय छे तेमज (वेमाणियाण) के० वैमानिक देवताने (ओही) के० अवधिज्ञान (अहो) के० नीचु घणु होय छे उंचु तथा तिर्छु थोडु होय छे वली (नारय जोइस) के० नारकी अने ज्योतषीने अवधिज्ञान (तिरियं) के० तिर्छु घणु होय छे उंचुं नीचु थोडुं होय छे तथा (नरतिरियाण) के० मनुष्य अने तिर्यंचने

( अणेगविहो ) क० अनेक प्रकारनु एटले कोइने उंचु नगार कोइने नीचु नगार अने कोइने तिछुं नगार एम विचित्र प्रकारे होयछे॥३०७॥

हव देवतानु द्वार पूर्ण करी नारकीनु द्वार कर छे.

इय देवाणं भणियं, ठिइपमुह नारयाण वुच्छामि ॥
इग तिन्नि सत्तदस सतर,अयर बावीस तित्तीसा ॥३०८॥
सत्तय पुढवीसु ठिई, जिठ्ठोवरिमाइ हिठ्ठपुढवीए ॥
होइ कमेण कणिठ्ठा, दस वास सहस्स पढमाए ॥३०९॥

अर्थ—(इय) क० ए प्रकारे ( देवाण ) क० देवताना ( ठिइपमुह ) के० स्थितिप्रमुख एटले स्थिति, भुवन, शरीरप्रमाणरूप अवगाहना, उपपात विरहकाल, च्यवनविरहकाल, एक समय उपपात करया, एक समय च्यवनकरया, गति अने आगतिरूप नव द्वार ( भणिय ) क० कह्या. हव ( नारयाण ) क० नारकीना एज नव द्वार ए पूर्वोक्त अनुक्रमे ( वुच्छामि ) क० कहीश पहली रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे उत्कृष्टि स्थिति ( इग ) के० एक सागरोपमनी, बीजी शर्कराप्रभाने विषे ( तिन्नि ) के० त्रण सागरोपमनी, त्रीजी वालुकाप्रभाने विषे (सत्त) क० सात सागरोपमनी, चोथी पंकप्रभाने विषे ( दस ) क० दश सागरोपमनी, पांचमी धूमप्रभाने विषे ( सत्तर ) के० सत्तर सागरोपमनी, छठ्ठी तमप्रभाने विषे (बावीस) क० बावीश सागरोपमनी, अने सातमी तमतमप्रभाने विषे (तित्तीसा) क० तेत्रीश सागरोपमनी,ए सर्व (अयर) क० सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति जाणवी. ॥३०८॥ ए पूर्वे कहली ( सत्तय पुढवीसु ) के० साते नरक पृथ्वीने विषे (ठिइ) क० स्थिति कही तेमा ( उवरिमाइ ) क० उपरथी आरभी जे (जिठ्ठा) क० उत्कृष्ट स्थिति होय अर्थात् उपरनी नारकीनी जे उत्कृष्ट स्थिति होय ते ( हिठ्ठ पुढवीए ) क० नीचेनी ( पृथ्वीनी कणिठ्ठा ) क० जघन्य स्थिति ( कमेण ) क० अनुक्रमे

स्मीने ( होइ ) के० होय छे. जेम रत्नप्रभानी उत्कृष्टी एक सागरो-पमनी स्थिति ते शर्कराप्रभाए कनिष्ट एटले जघन्य स्थिति जाणवी अने ( पढमाए ) के० पहेली रत्नप्रभाने विषे (दस नोस महस्स ) के० दश हजार वर्षनी जघन्य स्थिति जाणवी ॥३०९॥

नवइ सम महस्स लक्खा,पुवाण कोडि अयर दस भागा ॥
इक्किकभागवुड्ढी, जा अयर तेरसे पयरे ॥ ३१० ॥
इय जिट्ठ जहण्णा पुण,दस वास सहस्स लक्ख पयरदुगे ॥
सेसेसु उवरि जिट्ठा, अहो कणिट्ठाओ पइ पुढवी ॥३११॥

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीना पहेला प्रतरने विषे उत्कृष्टी स्थिति ( नवइ सम सहस्स ) के० नेवु हजार वर्षनी, बीजा प्रतरने विषे ( लक्खा ) के० नेवुं लाख वर्षनी, त्रीजा प्रतरने विषे ( पुव्वाण काडी ) के० एक पूर्व कोडीनी, चोथा प्रतरने विषे ( अयर दस भागा ) के० एक सागरोपमना दशमा भागनी, त्यार पछी उपर प्रतर ( इक्किकभागवुड्ढी ) के० एक एक भागनी वृद्धी करवी के ( जा ) के० ज्यां सुधीमा ( तेरसे पयरे ) के० तेरमा प्रतर (अयर) के० एक सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति थाय ॥ ३१० ॥ (इय जिट्ठ) के० ए उत्कृष्टी स्थिति कही, ( पुण ) के० वली ( जहण्णा ) के० जघन्य स्थिति ते ( पयरदुग ) के० पहेला बे प्रतरने विषे अनुक्रमे ( दस वास सहस्स ) के० पहेला प्रतरे दश हजार वर्षनी अने बीजा प्रतर ( लक्ख ) के० दश लाख वर्षनी जाणवी ( सेसेसु ) के० त्रीजाथी आरभीने बाकीना प्रतरोने विषे ( उवरि जिट्ठा ) के० उपरना प्रतरोने विषे जे उत्कृष्टी स्थिति होय ते (अहो कणिट्ठाओ) के० नीचेना प्रतरोने विषे जघन्य स्थिति जाणवी एम (पइ पुढवी) के० दरेक पृथ्वीने विषे समजवु ॥ ३११ ॥

# रत्न प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य

| प्रतरे | जघन्य | उत्कृष्ट |
|---|---|---|
| १ ले | १०००० वर्ष | ९०००० वर्ष |
| २ जे | १० लाख वर्ष | ९० लाख वर्ष |
| ३ जे | ९० लाख वर्ष | पूर्वक्रोड वर्ष |
| ४ थे | पूर्वक्रोड व | १/१० सागरोपम |
| ५ मे | १/१० सागरो० | २/१० सागरो० |
| ६ ठे | २/१० | ३/१० |
| ७ मे | ३/१० | ४/१० |
| ८ मे | ४/१० | ५/१० |
| ९ मे | ५/१० ,, | ६/१० |
| १० मे | ६/१० | ७/१० |
| ११ मे | ७/१० , | ८/१० |
| १२ मे | ८/१० | ९/१० , |
| १३ मे | ९/१० , | १ सागरो० |

हवे बीजी नरकपृथ्वी आदिकमा उत्कृष्टी स्थिति कहेवाने अर्थ करण कहे छे.

**उवरि खिइ ठिइ विसेसो, सगपयर विहत्त इच्छ सगुणिओ ॥**
**उवरिमखिइ ठिइ सहिओ, इच्छियपयरंमि उक्कोसा ॥२१२॥**

अर्थ—(उवरि खिइ) के० उपरनी पृथ्वीनी (ठिइ) के० उत्कृष्टी स्थितिने (इच्छ) के० वांछित नरकपृथ्वीनी उत्कृष्टी स्थिति मांथे (विसेसो) क० विश्लेष करवो एटलेअधिक स्थितिमांथी ओछीस्थिति काढी नाखवी पछी ते विश्लेष एटलेबाकी आवने ( सगपयर ) के०वांछित पृथ्वीना प्रतरे (विहत्त) क०बहेंचीए. ते वहेंचता जे आंक आवे तेने (इच्छ) के० ईच्छप्रतरनी संख्याये (सगुणिओ) के० गुणीये. ते गुणता जे आंक आवे ते (उवरिमखिइ) के० उपरनी पृथ्वीनी , (ठिइसहिओ) के० उत्कृष्टी स्थितिए सहित करीए त्यारे (इच्छिय पयरम्मि) उक्कोसा के० वांछित प्रतरे उत्कृष्टी स्थिति थाय ॥२१२॥

तेज वात उदाहरण सहित समजावे छे के-बीजी शर्करा प्रभाने विषे उत्कृष्टी स्थिति त्रण सागरोपमनी छे अने पहली रत्नप्रभानी उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते त्रण सागरोपममांथी काढी नाखीये त्यार बाकी बे रहे ते बे सागरोपमने शर्कराप्रभाना अगीयार प्रतरे भाग आपीये त्यार एक एक प्रतरे एक एक सागरोपमना अगीयारीया बब्बे भाग आवे प्रथम प्रतर फक्त बेज भाग बने तेने उपरनी रत्नप्रभानी एक सागरोपमनी स्थिति साथे जोडीये त्यार शर्कराप्रभाना प्रथम प्रतर एक सागरोपम अने एक सागरोपमना अगीयारीया बे भाग उपर आवे, एटली शर्कराप्रभाना प्रथम प्रतरे उत्कृष्टी स्थिति जाणवी एरीते दरेक प्रतरे बे बे भाग वधारता अगीयारमे प्रतर त्रण सागरोपम पूर्णायु थाय. अने पहला प्रतरनी उत्कृष्टी स्थिति ते बीजे प्रतर जघन्य स्थिति जाणवी एज प्रमाणे त्रीजी चोथी पांचमी अने छठ्ठी नरक पृथ्वीनु करण करवुं ए सर्व नरक पृथ्वीनु आयुष्य प्रमाण यन्त्रमा छे त्यांथी जाणीलेवु

२

# शर्करा प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य

| प्रतरे | जघन्य | उत्कृष्ट |
|---|---|---|
| १ ले | १ सागर | १ २/११ सागर |
| २ जे | १ २/११ " | १ ४/११ " |
| ३ जे | १ ४/११ " | १ ६/११ " |
| ४ थे | १ ६/११ " | १ ८/११ " |
| ५ मे | १ ८/११ " | १ १०/११ " |
| ६ ठे | १ १०/११ " | २ १/११ |
| ७ मे | २ १/११ " | २ ३/११ |
| ८ मे | २ ३/११ " | २ ५/११ |
| ९ मे | २ ५/११ " | २ ७/११ " |
| १० मे | २ ७/११ " | २ ९/११ " |
| ११ मे | २ ९/११ " | ३ |

## ૩

## वालुका प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य

| प्रतरे | जघन्य | उत्कृष्ट |
|---|---|---|
| ૧ લે | ૩ સાગ૦ | ૩ ૪/૯ સાગ૦ |
| ૨ જે | ૩ ૪/૯ ,, | ૩ ૮/૯ ,, |
| ૩ જે | ૩ ૮/૯ ,, | ૪ ૩/૯ ,, |
| ૪ થે | ૪ ૩/૯ ,, | ૪ ૭/૯ ,, |
| ૫ મે | ૪ ૭/૯ ,, | ૫ ૨/૯ ,, |
| ૬ ઠે | ૫ ૨/૯ ,, | ૫ ૬/૯ ,, |
| ૭ મે | ૫ ૬/૯ ,, | ૬ ૧/૯ ,, |
| ૮ મે | ૬ ૧/૯ ,, | ૬ ૫/૯ ,, |
| ૯ મે | ૬ ૫/૯ ,, | [illegible] ,, |

## ૪

## पंक प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य

| प्रतरे | जघन्य | उत्कृष्ट |
|---|---|---|
| ૧ લે | ૭ | ૭ ૩/૭ |
| ૨ જે | ૭ ૩/૭ | ૭ ૬/૭ |
| ૩ જે | ૭ ૬/૭ | ૮ ૨/૭ |
| ૪ થે | ૮ ૨/૭ | ૮ ૫/૭ |
| ૫ મે | ૮ ૫/૭ | ૯ ૧/૭ |
| ૬ ઠે | ૮ ૧/૭ | ૯ ૪/૭ |
| ૭ મે | ૮ ૪/૭ | ૧૦ |



५

| धुम प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य | | | तम प्रभामां | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ ले | १० | ११ २/५ | १ ले | १७ | १८ २/३ |
| २ जे | ११ २/५ | १२ ४/५ | २ जे | १८ २/३ | २० १/३ |
| ३ जे | १२ ४/५ | १४ १/५ | ३ जे | २० १/३ | २२ |
| ४ थे | १४ १/५ | १५ ३/५ | | | |
| ५ मे | १५ ३/५ | १७ | | | |
| | | | | तमस्तमप्रभामां | |
| | | | १ ले | २२ | ३३ |

हवे नारकीनी वेदनानुं स्वरूप कहे छे

सत्तसु खित्तजवेयणा,अन्नुन्नकयावि पहरणेहि विणा॥
पहरणकयावि पंचसु,तिसु परमाहम्मियकयावि ॥२१३॥

अर्थ—(सत्तसु) क० साते नरक पृथ्वीने विषे (खित्तजवेयणा) क० क्षेत्र वेदना छे, तथा (पहरणेहि विणा) के० शस्त्र विना (अन्नुन्नकयावि) क० परस्पर माहोमाहे करली वेदना पण होय. अने (पंचसु) क० पहेली पांच नरक पृथ्वीने विषे (पहरणकयावि) क० परस्पर शस्त्रथी करली वेदना होय. वली (तिसु) क० पहेली त्रण नरक पृथ्वीने विषे (परमाहम्मियकयावि) क० परमाधामिनी करली वेदना होय छे॥ २१३ ॥

नरकने विषे क्षेत्रस्वभावथीज दश प्रकारनो पुद्गलपरिणाम दुःख आपनारो छे, ते कहे छे

बंधण गइ सठाणा, भेया वण्णा य गध रस फासा ॥
अगुरुलहु सद्द दसहा,असुहा निय पुग्गला निरए॥३१४॥

अर्थ—१ (बंधण) क० क्षणे क्षणे आहारादिक नाना प्रकारना पुद्गलनु बंधन प्रदिप्त अग्निथकी पण अत्यन्त दारुण होय. २ (गइ) क० गति ते उंट सरखी होय ३ (सठाण) के० अत्यन्त तीव्र हुडक सस्थान होय. ४ (भेया) के० भेदन थवु ते जाणवु ५ (वण्णा) के० नरकावासानो वर्ण सर्वत्र अंधकारमय तथा अपवित्र वस्तुओथी भरेलो होय, ६ (गंध) के० श्वानादिकना मृत कलेवरोथी अत्यन्त दुर्गंध होय ७ (रस) के० रस ते कडवी तुंबडी करतां पण अत्यन्त कडवो स्वाद होय, ८ (फासा) के० स्पर्श ते वींछीना आंकडा सरखो अथवा कौंचना रोम करता पण खराब स्पर्श होय ९ (अगुरुलहु) के० अगुरुलघु परिणाम अत्यन्त दुःख आपनारो होय १० (सद्द) के० शब्द ते विलापादिक अत्यन्त भयकारी होय एम (निरए) के० नारकीने विषे (दसहा) क० दश प्रकारना (असुहा पुग्गला) के०अशुभ पुद्गलो (निय) क० निश्चे होय छे ॥ ३१४ ॥

निरया दसविह वेयणा,सी उसिण खुह पिवास कंडुहि॥
परवस्स जर दाह, भय सोगं चेव वेयंति ॥ ३१५ ॥

अर्थ—(निरया) के० नारकीना जीवोने (दसविह वेयणा) के० दस प्रकारनी वेदना छे तेमा १ (सी) क० शीतवेदना ते पोष अथवा माघमहिने हिमाचलमा वस्त्ररहित माणसने जेवी शीत लागे तेथी अनंतगुणी शीत न॰ [illegible] जीवोने होय २ (उसिण) के०

उष्णवेदना ते ग्रीष्मऋतुमां मध्याह्न वखते मेघ रहित आकाश छतां अति पित्तप्रकोपथी व्याकुल थयेला छत्ररहित पुरुषने जेवी उष्ण वेदना होय तेथी अनंत गुणी वेदना नारकीना जीवोने होय ३ (खुह) के० क्षुधा वेदना ते अढी द्वीपना सर्व अन्न घृतादि पदार्थो नारकीना जीवोने खावा आपीये तोपण तेमनी क्षुधा शांत थाय नहीं ४ (पिवास) के० तृषावेदना ते नारकीना जीवोने सर्व समुद्रना अने नदीओना पाणी पाइये तोपण तेमनी तृषा शांत थाय नहीं ५ (कडुंहि) के० नारकीना जीवोने करवत अथवा छरीवती खणता पण तेमनी खसनी खरज मटे नहीं ६ (परवस) के० नारकी जीव निरंतर परवश होय ७ (जर) के० नारकीना जीवने अहिंना रहनारा पुरुषो करता अनंत गुणो ज्वर एटले ताव होय ८ (दाह) के० नारकीना जीवोने दाघज्वर होय, (९) भय के० नारकीना जीवोने भय अने १० (सोग) के० शोक मनुष्यो करता अनंतगुणो होय नारकीना जीवोने विभंग ज्ञानपण अति दुःख आपनारु छे परमाधामी देवोपण तरवार विगेरे शस्त्रो देखाडी महा दुःख आपे छे. तेथी नारकीजीवो सर्वदा शोक करता रहे छे ए (वेयंति) के० नारकीनी क्षेत्रवेदना (वेव) के० निश्चे कही ॥३१५॥

नेरइयाणुप्पाओ, उक्कोस पंचजोयणसयाइं ॥
दुक्खेण भिन्नयाणं, वेयणसयपच्चमाणाणं ॥ ३१६ ॥

अर्थ—( दुक्खेण भिन्नयाणं ) के० दुःखथी भेदाता अने ( वेयणसयपच्चमाणाणं ) के० शेंकडो वेदनाथी पचाता एवा ( नेरइयाणं ) के० नारकी जीवोनु ( उक्कोस ) के० उत्कृष्टथी ( पंचजोयणसयाइं ) के० पांच सो योजन उंचाइथी ( उप्पाओ ) के० पडवु थाय छे ॥ ३१६ ॥ ए नारकीनु स्थितिद्वार कयु

हवे नारकीनु भवनद्वार कहे छे. तेमा प्रथम साते नरक पृथ्वीना गोत्र तथा नाम कहे छे,

रयणप्पह सक्करपह, वालुयपह पंकपह य धूमपहा ॥
तमपहा तमतमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं ॥३१७॥

अर्थ—पहेलो ( रयणप्पह ) के० घणा रत्नो होवाथी रत्नप्रभा, बीजी ( सक्करपह ) क० घणा काकरा होवाथी शर्कराप्रभा, त्रीजी ( वालुयपह ) के० घणी रेती होवाथी वालुकाप्रभा, चोथी ( पंकपहय ) क० घणो कादव होवाथी पंकप्रभा, पांचमी ( धूमपहा ) के० घणो धूमाडो होवाथी धूमप्रभा, छठ्ठी ( तमपहा ) के० अंधकार होवाथी तमप्रभा, सातमी ( तमतमपहा ) के० घणा गाढ अंधकार होवाथी तम तमप्रभा ए कमेण क० अनुक्रमे ( पुढवीण ) के० साते नरक पृथ्वीना ( गोत्ताइं ) के० गोत्र एटले अर्थ सहित नाम कह्या ॥ ३१७ ॥

हवे साते नरक पृथ्वीना नाम तथा संस्थान कहे छे.

घम्मा वंसा सेला, अंजण रिट्ठा मघा य माघवई ॥
नामेहि पुढवीओ, छत्ताईच्छत्तसंठाणा ॥ ३१८ ॥

अर्थ—१ ( घम्मा ) के० घम्मा, २ ( वंसा ) के० वंशा, ३ ( सेला ) के०शेला ४ (अंजण) के०अंजणा, ५ (रिट्ठा) के०रिष्टा, छठ्ठी ( मघा ) के० मघा, ( य ) के० अने, ७ ( माघवई ) के० माघवती ए उपर कहेला ( नामेहिं ) के० नामवाली ( पुढवीओ ) के० साते नरक पृथ्वी जाणवी. ते पृथ्वीओ (छत्ताईच्छत्तसंठाणा ) के० छत्रातिछत्र संस्थाना एटले उपरा उपरी छत्रने आकारे छे.

अर्थात् सौथी उपर नानु, तेनी नीचे मोटु, वली तेनी नीचे मोटु एवी आकृतिये छे ॥ ३१८ ॥

तत्थ सहस्सा सोलस, खरकंड पङ्कबहुलकंड तु ॥
चुलसीइ सहस्साइं, असीइ जलबहुलकंड तु ॥ ३१९॥

अर्थ—पहेली रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशी हजार योजननो जाडपणे छे ( तत्थ ) क० तेमा पहेलो ( खरकंड ) के० खरकाड ( सहस्सा सोलस ) क० सोलहजार योजननो छे, ( तु ) क० अने बीजो ( पङ्कबहुलकंड ) के० पंकबहुलकाड ( चुल्सीइ सहस्साइं ) क० चोराशी हजार योजननो छे ( तु ) के० वली त्रीजो ( जलबहुलकंड ) के० जलबहुलकाड ( असीइ ) क० एंशी हजार योजननो छे ॥ ३१९ ॥

एव असी उ लक्खा, खरकंडाइ हि घम्मपुढवीए ॥
सेसा पुढवी सस्त्रा, पुढविओ हुंति बाहुल्ले ॥३२०॥

अर्थ—(एव) के० ए प्रमाणे (खरकंडाइ) के० खरकाड विगेरे ( घम्मपुत्वीए ) के० धर्मा पृथ्वीमा अनुक्रमे त्रणे पृथ्वीकाड एकठा करता (असीउलक्खा) क० एक लाख एंशी हजार पृथ्वीपींड थाय (सेसा पुढवी सस्त्रा) के० बाकी शर्करा प्रभाथी आरभीने पृथ्वीना स्वरूपो (बाहुल्ले) क० घणुस्थीने (पुढविओ) के० गोत्र प्रमाणेज हुंति के० होय छे ॥ ३२० ॥

हवे पृथ्वीनो पींड तथा पृथ्वीनो आश्रय कहे छे

असीइ बत्तिस अडविस,वीसा अट्ठार सोल अडसहसा ॥
लक्खुवरि पुढविपिंडो,घणुदहि घणवाय तणुवाया॥३२१॥

गयणं च पइट्ठाण, वीस सहस्साइ घणुदहीपिंडो ॥
घणतणुवायागासा, असखजोयण जुया पिंडो ॥३२२॥

अर्थ—प्रमाणांगुले करी (लक्खुवरि) के० एक लाख योजन उपर (असीइ) क० एसी, (बत्तिस) के० बत्रीस, (अठ्ठविस) के० अठ्ठावीस (वीसा) के० वीस (अठ्ठार) के० अढार, (सोल) के० सोल, अने (अट्ट) क० आठ, ए सर्व योजनना (सहसा) के० सहस्र एटले हजार जोडवा एटले रत्नप्रभानु एक लाख एंशी हजार योजननु, शर्कराप्रभानु एक लाख बत्रीस हजार योजननु, वालुका प्रभानु एक लाख अठ्ठावीश हजार योजननु, पंकप्रभानु एक लाख वीस हजार योजननु, धूमप्रभानु एक लाख अढार हजार योजननु, तमप्रभानु एक लाख सोल हजार योजननु, अने तमतमप्रभानु एक लाख आठ हजार योजननु पृथ्वी पींड जाणवु वली (घणुदहि घणवाय तणुवाया) के० घनोदधि घनवात तन वात—॥ ३२१ ॥ (गयण च) क० अने आकाश ए चार एक एक पृथ्वीना नीचे (पइट्ठाण) के० आश्रय एटले आधाररूप जाणवा एटले धर्म्मापृथ्वी घनोदधि उपर छे, घनोदधि घनवात उपर छे, घनवात तनुवात उपर छे अने तनुवात आकाश उपर प्रतिष्ठित छे, एम सर्व पृथ्वीना तलने विषे जाणवु परंतु एटलु विशेष जे के—सातमी नरक पृथ्वीना तले घनोदधि घनवात तनुवात अने तेनी नीचे अलोकाकाश रहेल छे ॥ ॥ हवे घनोदधि विगेरे चारनु मध्यभागे पींड स्थूलपणु कहे छे ॥ (घणुदहीपिंडो) के० घनोदधिनो पिंड मध्यभागे (वीस सहस्साइ) के० वीस हजार योजन जाडपणे छे अने (घणतणुवायागासा) क० घनवात तनुवात अने आकाश (असंख्य जोयणजुया पिंडो) के० ए त्रणेनो पिंड अस ख्याता योजननो छे तेमां घनवातथी असंख्याता योजन तनवात.

अने तनुवातथी असंख्याता योजन आकाश जाणवुं ॥ ३२२ ॥

न फुसंति अलोग चउ–दिसंपि पुढवी य वलयसंगहिया ॥

अर्थ—( वलयसंगहिया ) के० घनोदधि घनवात अने तनुवात सम्बन्धी वलयवडे विंटलायेली ( पुढवी ) क० रत्नप्रभादिक पृथ्वी ( चउदिसंपि ) क० चारे दिशाये पण ( अलोग ) क० अलोकने (न फुसंति) क० फरस करती नथी सातें नरक पृथ्वीना तले मध्य भागमा घनोदधि वीशहजार योजन छे अने घनवातादिक असंख्याता योजन छे त्यार पछी प्रदेशे घटता घटता आप आपणी पृथ्वीने छेडे थोडा थया थका वलयाकार पृथ्वीने वींटी रह्या छे

रयणाए वलयाणं, छद्ध पंचम जोयण सद्धं ॥ ३२३ ॥

अर्थ—( रयणाए ) क० रत्नप्रभा पृथ्वीना ( वलयाणं ) के० त्रणे वलयनो विष्कंभ एटले छेडे जाडपणुं अनुक्रमे कहे छे तेमा घनोदधि (छ) क० छ योजन जाडो, घनवात ( अद्धपंचम ) के० साडा चार योजन जाडो, अने तनुवात (जोयणसद्धं) क० दोढ योजन जाडो छे ॥ ३२३ ॥

विक्खंभो घणउदही, घणतणुवायाण होइ जहसंखं ॥

सतिभाग गाऊय,गाऊय च तह गाऊय तिभागो ॥३२४॥

पढममहीवलयेसु, खिविज्ज एयकमेण बीयाए ॥

दुतिचउपचछगुणं, तइयाइसु तंपि खिव कमसो ॥३२५॥

अर्थ—( विक्खंभो ) के० ए त्रणेने साथे जोडता पहेली नरक पृथ्वीनी चार दिशाए बार योजन दूर अलोक छे ( पढममहीवलयेसु ) के० पहेली नरक पृथ्वीना त्रण वलयमा एटले ( घण-

उदही) के० घनोदधि, (घण) के० घनवात अने (तणुवायाण) के० तनुवात ए त्रण वलयनी मध्ये (अहमस्स) के० यथा सम्यीये करीने (सतिभाग गाऊय) के० घनोदधिमा एक गाउ अने एक गाउनो त्रीजो भागघनवात वलयमा (गाउय) के० एक गाउ, (च) के० अने (तह) क० तेमज तनुवातमा (गाउय तिभागो) के० एक भागनो त्रीजो भाग (खिविज्ज) के० नाखीये त्यार त्रीजी शर्कराप्रभानो वलयविष्कम (होइ) के० होय छे, (एय कमेण) के० ए अनुक्रमे (त्रीयाए) क० त्रीजी नरक पृथ्वीमा संबन्धी बार योजन, बे गाउ, अने एक गाउना भाग करीये तेवा बे भाग एटलो थीजी नरक पृथ्वीथी चार दिशाये अलोक छे. हूण (तईया इसु) के० वालुकाप्रभादि पाचे नरक पृथ्वीना वलयमा (तंपि) क० जे शर्कराप्रभावलयमा नाखेलुं तेने पण कमसो क० अनुक्रमे करीने (दुतिचउपंचछगुण) के० बे गुणु, त्रण गुणु, चार गुणु, पाच गुणु अने छ गुणु करीने (लिव) क० मेलवबु एटले वालुकादिकना वलयनो विष्कम होय, ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥

छसतिभागा पउणाय पंच वलयाण जोयणपमाण ॥
एग बारसभागा, सत्त कमा तीय पुढवीए ॥ ३२६ ॥

अर्थ—त्राजी शर्कराप्रभाना (वलयाण) क० वलयोनु (जोय-णपमाण) के० योजनप्रमाण ते घनोदधिवलय (छ सति [illegible] के० छ योजन अने एक योजनना त्रण भाग करीये [illegible] एटलु जाणवुं, अने घनवातवलय (पउणा पच) के० [illegible] योजननु जाणवु तथा तनुवातना वलयनु प्रमाण [illegible] योजन अने (बारस भागा सत्त) के० एक [illegible] करीये तेवा सात भाग (कमा) क० अनुक्रमे [illegible],

एकठा करता चार योजन ने गाउ अने एक योजनना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग. एटलो बीजो नरकथ्वीथी चार दिशाये अलोक छे ॥ ३२६ ॥

जोयण सत्ततिभागुण, पच एव च वलयपरिमाणं ॥
बारस भागा अट्ठओ, तइयाए जहक्कम नेयं ॥३२७॥

अर्थ—(एव) के० एवीरीते (तइयाए) के० त्रीजी वालुका प्रभाना (वलयपरिमाण) क० वलयनु परिमाण ते (जहक्कम) के० अनुक्रमे करीने (नेय) क० जाणवु तेमा घनोदधिवलयनु परिमाण जोयण (सत्तनिभागुण) क० छ योजन बे गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग अधिक एटलु जाणवु घनवातनु वलय (पच) के० पाच योजननु जाणवु. अने तनुवातनु वलय एक योजन अने (बारस भागा अट्ठओ) के० एक योजनना बार भाग करीये तेना आठ भागनु जाणवु ए सर्व मलीने तेर योजन एक गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग उपर एटलो वालुकाप्रभाथकी चारे दिशाये अलोक छे. ॥ ३२७ ॥

सत्त सवाया पचओ, पउणादो जोयणा चउत्थीए ॥
घणउदहिमाइयाण, वलयाण माणमेय तु ॥ ३२८ ॥

अर्थ—(चउत्थीए) के० चोथी पंकप्रभाना (घणउदहिमाइयाण) क० घनोदधि विगेरेना (वलयाण) क० वलयोनु (माण) क० प्रमाण (एय) क० आ आगल कह छे ते प्रमाणे जाणवु घनोदधिनु प्रमाण (सत्त) के० सात योजनु घनवातनु प्रमाण (सवाया पचओ) क० सवापाच योजननु, अने तनुवातनु प्रमाण (पउणा दो जोयणा) के० पोणा बे योजननु. सर्वमली पंकप्रभाथकी चउद योजन चारे दिशाये अलोक छे ॥ ३२८ ॥

सतिभागसत्त तह अद्ध, छट्ठ वलयाणमाणमेय तु ॥
जोयणमेग बारस, भागा दस पचमीई तहा ॥ ३२९ ॥

अर्थ-( तहा ) के० तेमज ( पचमीई ) के० पाचमी धूमप्रभा पृथ्वीना ( वलयाणमाण ) क० वलयोनु प्रमाण ( एय ) के० आ प्रमाणे जाणवु घनोदधिनु प्रमाण ( सतिभागसत्त ) के० त्रीजा भागे सहित सात योजननु, ( तह ) के० तथा घनवातनु प्रमाण ( अद्ध छट्ठ ) क० साडा पाच योजननु, अने तनुवातनु प्रमाण ( जोयणमेग ) क० एक योजन अने एक योजनना ( बारस भागा दस ) क० एक योजनना बार भाग करीये तेवा दश भागनु, सर्व मली चौद योजन बे गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग एटलो धूमप्रभाथी चारे दिशाये अलोक छे. ॥ ३२९ ॥

अट्ठतिभागूणाइ, पउणाइं छच वलयपरिमाण ॥
छट्ठीए जोयण तहा, बारस भागा य इक्कारा ॥ ३३० ॥

अर्थ—( तहा ) क० तेमज ( छट्ठी ) के० छट्ठी तमप्रभा नरक पृथ्वीना ( वलयपरिमाण ) के० वलयोनु प्रमाण आ प्रमाणे-- ( अट्ठतिभागूणाइ जोयण ) के० त्रीजे भागे आछा आठ योजन एटले सात योजन बे गाउ तथा एक गाउना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग एटलु घनोदधिनु वलय प्रमाण जाणवु, तथा ( पउणाइ छच ) के० पोणा छ योजननु घनवातनु प्रमाण जाणवु अने ( बारस भागाय इक्कारा ) के० एक योजनना बार भाग करीये तेवा अगीयार भाग एटलुं तनुवातनु प्रमाण जाणवु. सर्व मली पदर योजन एक गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग, एटलु तमप्रभाथकी चारे दिशाए अन्तर छे ॥ ३३० ॥

अट्ठ य छच्चिय दोन्नि य, घणोदहिमाइयाण माणं तु ॥
सत्तममहिए नेय, जहसखेण च तिण्हंपि ॥ ३३१ ॥

अर्थ—( सत्तममहिए ) के० सातमी तमतमप्रभा पृथ्वीना ( घणोदहिमाइयाणमाण ) के० घनोदधिविगेरे वलयोनु प्रमाण आ प्रमाणे-घनोदधिवलयनु प्रमाण ( अट्ठय ) के० आठ योजननु, घनवातनु प्रमाण ( छच्चिय के० छ योजननु, अने तनुवातनु प्रमाण ( दोन्निय ) के० बे योजननु एम ( तिण्हंपि ) के० त्रण वलयनु प्रमाण ( जहसख ) के० यथा सख्याये करीने जाणवुं ए सर्व मली सोल योजननो तमतमप्रभाथी चारे दिशाये अलोक छे ॥ ३३१ ॥

अहिं कोइने शका थाय के-प्रथम तो " वीस सहस्साई घणुदहिपिंडो " एटले घनोदधिनो पींड वीस हजार योजननो छे एम कयु छे अने हवणा "(छ अद्धपचम जोयण सड्ढ)" एटले घनोदधिनु वलय छ योजन, घनवातनु साडा चार योजन अने तनुवातनु दोढ योजन एम कहो छो ? तो तेनु ग्रथकार समाधान करे छे ॥

मज्झेच्चिय पुढविअहे, घणुदहिपमुहाण पिंडपरिमाणं ॥
भणियं तओ कमेण, हायइ जा वलय परिमाणं ॥३३२॥

अर्थ—जे " वीस सहस्साइं घणुदहि पिंडो " ए पाठ कह्यो छे तेना ( पुढविअहे ) के० नरक पृथ्वीनी नीचे ( मज्झेच्चिय ) के० निश्चे मध्यभागे ( घणुदहिपमुहाण ) के० घनोदधि विगेरेनु ( पिंडपरिमाण ) के० पिंड परिमाण ( भणिय ) के० कह्यु छे ( तओ ) के० त्यारपछी ( कमेण ) के० अनुक्रमे ( हायइ ) के० घटतुं जाय ते ( जावलयपरिमाणं ) के० जेटलु वलयनु परिमाण छ योजन

इत्यादिक कह्यु छे. तेटलु जाणवु एमा विरोध नथी ॥ ३३२ ॥

हवे प्रत्येक नरकपृथ्वीमा नरकावासानी संख्या कहे छे

तीस पणवीस पनरस, दस तिन्नि पणूण एगलक्खाइं ॥
पंच य नरया कमसो, चुलसी लक्खाइं सत्तसुवि ॥३३३॥

अर्थ—जे नारकी जीवोने उपजवाना स्थानको ते नरकावासा कहेवाय छे. ते पहेली नरकपृथ्वीमा (तीस) के० त्रीश लाख, बीजीमां (पणवीस) के० पचीश लाख, त्रीजीमा (पनरस) के० पन्दर लाख, चोथीमा (दस) क० दश लाख, पांचमीमा (तिन्नि) क० त्रण लाख, छठ्ठीमां (पणूण एग लक्खाइ) के० एक लाखमा पांच ओछा, अने सातमीमां (पंच य) के० फक्त पांच (नरया) के० नरकावासा (कमसो) के० अनुक्रमे जाणवा (सत्तसुवि) के० साते नरक पृथ्वीना एकठा करीये एटले (चुलसी लक्खाइ) क० चोराशी लाख नरकावासा थाय छे ॥ ३३३ ॥

सातमी नरक पृथ्वीमा पांच नरकावासा क्या छे? ते कहे छे.

पुव्वेण होइ कालो, अवरेण अपइट्ठ ओ महाकालो ॥
रुरु दाहिणपासे, उत्तरपासे महारुरु ॥ ३३४ ॥

अर्थ—(अपइट्ठिओ) के० मध्यमा रहेला अप्रतिष्ठान नामना नरकावासथी (पुव्वेण) के० सातमी पृथ्वीमा पूर्व दिशाने विषे (कालो) के० कालनामनो नरकावास (होइ) के० छे (अवरेण) के० पश्चिम दिशामां (महकालो) के० महाकाल नरकावास छे (दाहिणपासे) क० दक्षिण दिशामा (रुरो) के० रुरु नामनो नरकावास छे, अने (उत्तरपासे) के० उत्तर दिशामा (महारुरु) के० महारुरु नामनो नरकावास छे ॥ ३३४ ॥

हवे साते नरकना प्रतरोनी जुदी जुदी संख्या कहे छे

तेरिकारस नव सग, पण तिन्निग पयर सव्वि गुणवन्ना ॥
सीमंताई अपइ-ट्ठाणता इंदया मज्झे ॥ ३३५ ॥

अर्थ—पहेली नरक पृथ्वीमां ( तेर ) क० तेर प्रतर, बीजीमां ( इक्कारस ) के० अगीयार, त्रीजीमां ( नव ) क० नव, चोथीमां ( सग ) क० सात, पांचमीमां (पण) क० पांच, छट्ठीमां ( तिन्नि ) क० त्रण,अने सातमीमां (इग) क० एक ए (सव्वि) क० सर्वमळी ( गुणवन्ना ) क० ओगण पचास ( पयर ) क० प्रतर जाणवां ए सर्व प्रतरना ( मज्झे ) क० मध्ये ( सीमंताई ) क० सीमंतथी आरभी ( अप्पइट्ठाणंता ) के० अप्रतिष्ठान सुधी एटले पहेला प्रतरना मध्यमां सीमंत नामनो अने ओगणपचासमा प्रतरमां अप्रतिष्ठान नामनो ( इंदया ) क० इन्द्रक एटले मुख्य नरकावास छे ॥ ३३५ ॥

हवे साते नरकपृथ्वीना मळी ओगणपचास प्रतरना मध्यभागना इंद्रक नरकावासना नाम कहे छे

सीमन्तओ त्थ पढमो, बीओ पुण रोरूयत्ति नायव्वो ॥
रंभो तत्थय तइओ, चउत्थो पुण होइ उब्भंतो ॥३३६॥
संभंतमसंभंतो, विब्भंतो चेव सत्तमो नेओ ॥
अट्ठमओ भत्तो पुण, नवमो सीउत्ति नायव्वो ॥३३७॥
वक्कंतमवक्कंतो, विक्कंतो तह चेव रोरुओ निरओ ॥
पढमाए पुढवीए, तेरस नीरींदया एए ॥ ३३८ ॥

अर्थ—( अत्थ ) के० हवे ( पढमो ) के० पहेलो (सीमतओ के० सीमन्त, ( पुण ) के० वली ( बीओ ) के० बीजो (रोरुयत्ति) के० रोरुओ ( नायव्वो ) के० जाणवो० ( तत्थय ) के० ते पहेली नरकमां ( तइओ ) के० त्रीजो ( रभो ) के० रभ, ( पुण ) के० वली ( चउत्थो ) के० चोथो ( उज्झतो ) के० उज्जतनामनो ( होइ ) के० होय छे—॥ ३३६ ॥ ( सभतमसभतो ) के० पाचमो सभ्रात अने छट्ठो असभ्रात, वली ( सत्तमो ) के० सातमो (विप्भतो) के० विभ्रात ( चेव ) के० निश्चे (नेओ) के० जाणवो० ( पुण ) के० वली ( अट्ठमओ ) के० आठमो ( भत्तो ) के० भक्त अने ( नवमो ) के० नवमो ( सीउत्ति ) के० शीतनामनो ( नायव्वो ) के० जाणवो—॥ ३३७ ॥ (वक्त अवक्तो) के० दशमो वक्रात अने अगीयारमो अवक्रात, बारमो ( विक्लो ) के० विक्ल, (तह) के० तथा तेरमो ( रोरुओ निरओ ) के० रोरुक नामनो नरकावास ( चेव ) के० निश्चे जाणवो ( पढमाए पुढवीए ) के० पहेली नरकपृथ्वीना (एए) के० ए पूर्वे कहेला (तेरस) के० ( तेर नीरीदया ) के० मध्यना इद्रक नरकावास कह्या—॥ ३३८ ॥

थणीए थणकेय तहा, मणए चणके य दोइ नायव्वे ॥
घट्टे तह सघट्टे, जिप्भे अवजिप्भीए चेव ॥ ३३९ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घणलोलुए य बोधव्वे ॥
बीयाए पुढवीए, इकारस इदया एए ॥ ३४० ॥

अर्थ—पहलो ( थणीए ) के० स्तनिक, ( तहा ) के० तथा बीजो ( थणकेय ) के० स्तनकेल, त्रीजो ( मणए ) के० मणक, ( य ) के० अने चोथो ( चणक ) के० चणक, ए ( दोइ ) के० ते (नायव्वे) के० जाणवा पाचमो (घट्टे) के० घट्ट, अने ( तह ) के० तथा छट्ठो

(सत्तट्ठे) के० सत्तट्ठ, सातमो (जिम्भे) के० जिम्भ अने आठमो (अवजिम्भीए) के० अवजिम्भ (चेव) के० निश्चे होय-॥ ३३९ ॥ नवमो (लोले) के० लोल, दशमो (लोलावत्ते) के० लोलावर्त, (मद्देर) के० तेमज अगीयारमो (घणलोलु एय) के० घणलोलुए (गोअव्वे) के० जाणवो (गीयाए पुढवीए) के० बीजी नरकपृथ्वीना (एए) के० ए पूर्व कहेला (इक्कारस) के० अगीयार (इंदया) के० इंद्र नरकावास छे० ॥ ३४० ॥

तत्तो तविओ तवणो, तावणो पचमो निदिट्ठोय ॥
छट्ठो पुण पज्जलिओ, उज्जलिओ सत्तमो नीरओ ॥ ३४१ ॥
सजलिओ अट्ठमओ,संपज्जलिओ य नवमओ भणिओ॥
तइयाए पुढवीए, एए नव होंति नीरइदा ॥ ३४२ ॥

अर्थ—पहलो (तत्तो) के० तप्त, बीजो (तविओ) के० तपित, त्रीजो (तवणो) के० तपन, चोथो (तावणो) के० तापन, (य) के० अने (पचमो) के० पांचमो (निदिट्ठो) के० निदाघ, (पुण) के० वली (छट्ठो) के० छट्ठो (पज्जलिओ) के० प्रज्वलित, अने (सत्तमो) के० सातमो (उज्जलिओ नीरओ) के० उज्ज्वलित नरकावास. ॥ ३४१ ॥ (अट्ठमओ) के० आठमो (सजलिओ) के० सज्वलित, (य) के० अने (नवमओ) के० नवमो (संपज्जलिओ) के० संप्रज्वलित (भणिओ) के० कह्यो छे (तइयाए पुढवीए) के० त्रीजी नरक पृथ्वीना (एए) के० ए पूर्वे कहेला (नव) के० नव (नीरइदा) के० मोटा इंद्रक नरकावास (होंति) के० छे ॥ ३४२ ॥

आरे सारे मारे, वच्चे तमए य होइ नायव्वे ॥
खाडखडे खंडखडे, इंदयनिरया चउत्थीए ॥ ३४३ ॥

अर्थ—पहेलो (आरे) के० आर, बीजो (सारे) के० सार, त्रीजो (मारे) के० मार, चोथो (वच्चे) के० वर्च, पांचमो (तमएय) के० तम, (होइ) के० छे छट्ठो (खाडखडे) के० खाडखड अने सातमो (खडखडे) के० (खण्डखड) ए सात इंदयनिरया) के० इन्द्रक नरकावास (चउत्थीए) के० चोथी नरकपृथ्वीने विषे जाणवा ॥ ३४३ ॥

खाए तमए य तहा, ऊसे अंवे य तहय तिमिसे य ॥
एए पंचमपुढवी, पंचयनीरइंदया हुंति ॥ ३४४ ॥

अर्थ—पहलो (खाए) के० खात, बीजो (तमएय) के० तमक, (तहा) के० तेमज त्रीजो (ऊसे) के० ऊस, चोथो (अंवेय) के० अन्ध, (तहय) के० तेमज पांचमो (तिमिसेय) के० तिमिस (एए) के० ए नामना (पंचयनीरइंदया) के० पांच इन्द्रक नरकावास (पंचमपुढवी) के० पांचमी नरकपृथ्वीने विषे (हुंति) के० छे ॥ ३४४ ॥

हिम वद्दल ललक्खे, तिन्निउ नीरइंदया उ छट्ठीए ॥
एको य सत्तमाए, अपइट्ठाणो य बोधव्वो ॥ ३४५ ॥

अर्थ—पहेलो (हिम) के० हिम, बीजो (वद्दल) के० वद्दल, त्रीजो (ललक्खे) के० ललख, (तिन्निउ) के० ए त्रण (नीरइंदया) के० इन्द्रक नरकावास (छट्ठीए) के० छट्ठी नरकपृथ्वीने विषे छे (य) के० अने (सत्तमाए) के० सातमी नरकपृथ्वीने विषे

(एक्को) के० एक (अपइट्ठाणो) के० अप्रतिष्ठान नामनो नरकावास (बोधव्वो) के० जाणवो ॥ ३४५ ॥

हवे दरेकप्रतरे ए मध्यना इंद्रक नरकावासाथी केटली श्रेणिओ निकले छे ? तथा ते दरेक श्रेणिमां केटला नरकावासा छे ? ते कहे छे

तेहिंतो दिसि विदिसि,विणिग्गया अट्ठ निरयआवलीया॥
पढमपयरे दिसि गुण–चन्न विदिसासु अडयाला ॥३४६॥

अर्थ—प्रत्येक प्रतरे ( तेहिंतो ) के० ते मध्यना इंद्रक नरकावासाथी ( दिसि ) के० चारे दिशामा अने ( विदिसि ) क० विदिशामा ( अट्ठ निरयआवलीया ) क० आठ नरक पंक्तिओ ( विणिग्गया ) के० निकलेली छे तेमां ( पढमपयरे ) क० पहेला प्रतरने विषे ( दिसि ) के० चार दिशामा चारे पंक्तिने विषे (गुणवन्न) क० ओगणपचास अने ( विदिसासु ) क० विदिशामा (अडयाला) क० अडतालीस नरकावासा होय छे. ॥ ३४६ ॥

बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणा उ हुंति पंतीओ ॥
जा सत्तमीयपयरे, दिसि इक्किको विदिसि नत्थि॥३४७॥

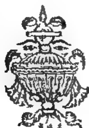
अर्थ—( बीयाइसु पयरेसु ) के० बीजाथी आरंभीने जे प्रतरो छे तेमा ( इग इग हीणाउ पंतीओ ) क० दरेक प्रतरे एक एक नरकावासे ओछी पंक्तिओ ( हुंति ) के० होय छे जेथी ( जासत्तमीयपयरे ) के० सातमी नरक पृथ्वीना छेल्ला ओगणपचासमा प्रतरने विषे ( दिसि ) क० चार दिशामा ( इक्किको ) क० एक एक, अने ( विदिसि ) के० विदिशामा (नत्थि) के० एक पण नथी ॥३४७॥

हो दरेक प्रतर दिशा तथा विदिशानी आवलीना नरकावासानी संख्या जाणवा माटे करण कहे छे

इट्ठपयरेगदिसि सखा,अडगुणा चउविणा सइगसंखा ॥
जह सीमंतयपयरे,एगुणनउया सया तिन्नि ॥ २२८ ॥
अपइट्ठाणे पंच उ, पढमो मुहमंतिमो हवइ भूमि ॥
मुहभूमिसमासद्धं, पयरगुणं होइ सव्वधणं ॥ २२९ ॥

अर्थ—( इट्ठपयर ) के० वाछितप्रतरनी (एक) दिशाने विषे ( सखा ) के० जे नरकावासानी संख्या... लीनी अपक्षाये छे आवली आठ छे माटे ते संख्याने... के० आठगुणी करीये, पण विदिशामां एक ... होवाथी ( चउविणा ) के० चार ओछा करीये ... एक इंद्रक नरकावास सहित करीये पछी ( ... प्रतरे नरका वासानी संख्या थाय. ( जह ) के० ... ( सीमंतयपयर ) के० सीमंत नामना पहेला ... नरकावासानी संख्या ओगणपचास छे. ... त्यारे त्रणसो बाणु थाय तेमांथी चार ... ठयाशी रहे तेमां एक इंद्रक मेळवीयें ... के० त्रण सो ने नेव्याशी थाय ... गणता त्रण सो एकयाशी आवलिका ... एवीज रीते छेल्ला ओगणपचासमा ( ... ) ... प्रतर एक दिशाये एक नरकावासो ... थाय तेमांथी विदिशाना चार ... साथे एक ... सातमा ... ( पंच ) के

हव एक एक पृथ्वीने विष आवलिकागत नरकावासा जाणवामाटे पाछली गाथाना पाछला त्रण पदेकरी करणातर कहे छे, (पढमो) क० पहेला सीमतक प्रतरना त्रणसो नेव्यासो आवलिकागत नरकावासाने (मुह) के० मुख कहीये अने (अंतिमो) के० छेल्ला ओगणपचासमा अपइठाण प्रतरना पांच नरकावासा ते (भूमि हवइ) के भूमी कहेवाय पछी (मुहभूमि) के० मुखना त्रण सो अने नेव्यासी तथा भूमिना पाच तेने (समास) के० एकठाकरीये त्यारे त्रण सो अने चोराणुं थाय तेनु (अद्ध) के० अर्द्ध करता एक सो अने सत्ताणु थाय तेने (पयरगुण) के० ओगणपचास प्रतरे गुणता (सव्वधण होइ) के० सर्व ओगणपचासे प्रतरना आवलिकामा रहला नरकावासानी सख्या नव हजार छ सो अने त्रेपन थाय, एटला साते पृथ्वीना आवलिकागत नरकावासा जाणवा बाकी ब्यासी लाख नेवु हजार त्रण सो नेसडतालीश पुष्पावकीर्ण जाणवा. ॥ ३४९ ॥



## न २
## नरकावासनुं कोष्टक

| | कई नरके ? | मुख | भूमि | समासं | समासनुं अर्ध | प्रतर | पंक्तिबंध | पुष्पावकीर्णक | सर्व संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | साते नरकनु | ३८९ | ५ | ३९४ | १९७ | ४९ | ९६५३ | ८३९०३४७ | ८४०००००० |
| १ | रत्नप्रभाया | ३८९ | २८३ | ६८२ | ३४१ | १३ | ४४३३ | २९९५५६७ | ३०००००० |
| २ | शर्करा प्रभाया | २८५ | २०५ | ४९० | २४५ | ११ | २६९५ | २४९७३०५ | २५००००० |
| ३ | वालुका प्रभाया | १९७ | १३३ | ३३० | १६५ | ९ | १४८५ | १४९८५१५ | १५००००० |
| ४ | पंक प्रभाया | १२५ | ७७ | २०२ | १०१ | ७ | ७०७ | ९९९२९३ | १०००००० |
| ५ | धूम प्रभाया | ६९ | ३७ | १०६ | ५३ | ५ | २६५ | २९९७३५ | ३००००० |
| ६ | तम प्रभाया | २९ | १३ | ४२ | २१ | ३ | ६३ | ९९९३२ | ९९९९५ |
| ७ | तमस्तम प्रभाया | ० | ० | ० | ० | १ | १ | ० | ५ |

अहिं एजवात ग्रंथकार कहे छे—

छण्णवइसय तिवण्णा, सत्तसु पुढवीसु आवलीनिरया ॥
सेस तियासी लक्खा,तिसय सियाला नवइ सहस्सा॥३५०॥

अर्थ—(सत्तसु पुढवीसु) के० साते नरक पृथ्वीमां (आवली निरया) के० आवलिकामां रहला नरकावासा (छण्णवइसय) क० छन्नु सो अने (तिवण्णा) क० त्रेपन छे अने (शेष) के० बाकी (तियासी लक्खा) के० त्र्यासी लाख, (नवइ सहस्सा) के० नेवु हजार, (तिसय) क० त्रण सो अने (सियाला) के० सडतालीश एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा जाणवा सव मलीने चोरासी लाख नरकावासा छे ॥ ३५० ॥

तिण्णि सया अउणनउया,दोतिणउया य हुंति पुढवीए ॥
दोसय पचासीया, पंचुत्तर दोत्ति बीयाए ॥ ३५१ ॥

अर्थ—(पुढवीए) क० पहेली नरकपृथ्वीने विषे (तिण्णि सया) के० त्रण सो अने (अउणनउया) के० नेव्यासी नरकावासानु मुख तथा (दोतिणउयाय) के० बसो अने त्राणु नरकावासानी भूमि (हुंति) के० छे (बीयाए) के० बीजी नरक पृथ्वीने विषे (दोसय पचासीया) के० बसोने पचासी नरकावासानु मुख अने (पंचुत्तर दोत्ति) के० बसोने पाच नरकावासानी भूमि छे ॥ ३५१ ॥

सत्ताणुय सय च, तित्तीस सयं सय च पणवीस ॥
सत्तुत्तरिं अउणत्तरी, सत्तत्तिमा य गुणतीसा ॥ तेरस
मुह भूमिओ ॥ ३५२ ॥

अर्थ—त्रीजी नरकपृथ्वीने विषे ( सत्ताणुय सय च ) के० एक सो सत्ताणु नरकावासानु मुख अने ( तित्तीससय ) के० एक सो तेत्रीश नरकावासानी भूमि छे. चोथी नरकपृथ्वीने विषे ( सय च पणवीस ) के० एक सो पचीस नरकावासानु मुख अने ( सत्तुत्तरि ) के० सित्योतेर नरकावासानी भूमि छे पाचमी नरकपृथ्वीने विषे ( अडणत्तरी ) के० ओगणोतर नरकावासानु मुख अने ( सत्तावीसा ) के० सत्तावीस नरकावासानी भूमि छे छठ्ठी नरकपृथ्वीने विषे (गुणतीसा) के० ओगणत्रीस नरकावासानु मुख अने (तेरस) के० तेर नरकावासानी भूमि छे ए ( मुहभूमिओ ) के० मुख अने भूमि कह्या परंतु सातमी नरकने विषे मतरो नथी माटे मुख अने भूमि नथी ॥ ३५२ ॥

सत्तट्ठि पणसय पण—नवइ सहस्स लक्ख गुणतीस ॥
रयणाए सेढिगया, चउयाल सया य तित्तीसा ॥३५३॥

अर्थ—( रयणाए ) के० रत्नप्रभा पृथ्वीमा ( लक्ख गुणतीस ) के० ओगणत्रीस लाख, ( पण नवइ सहस्स ) के० पचाणु हजार, ( पणसय ) के० पाच सो अने ( सत्तट्ठि ) के० सडसठ एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे तथा ( सेढिगया ) के० श्रेणिमा रहेला ( चउयालसया य तित्तीसा ) के० चुमालीस सो अने तेत्रीस नरकावासा छे सर्व मळी त्रीस लाख नरकावासा रत्नप्रभा पृथ्वीमा जाणवा ॥ ३५३ ॥

सत्ताणवइ सहस्सा, चउवीस लक्ख तिसय पचहिया ॥
बीयाए सेढिगया, [illegible] सया य पणनउया ॥३५४॥

अर्थ—( [illegible] बीजी नरकपृथ्वीमा ( चउवीस

लक्ख ) क० चोवीसलाख, ( सत्ताणवइ सहस्सा ) क० सत्ताणु हजार ( तिसय ) क० त्रण सो अने ( पचहिया ) क० पाच अधिक एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे तथा ( सेढिगया ) के० श्रेणिमा रहेला ( छव्वीस सया ) क० छवीस सो ( य ) के० अने ( पणनउया ) क० पचाणु नरकावासा छे. सर्व मळी पचीस लाख नरकावासा बीजी शर्कराप्रभा नरकपृथ्वीमा जाणवा ॥ ३५४ ॥

पंचसया पन्नरसा, अडनउय सहस्स लक्ख चउदस य॥
तइयाए सेढीगया, पणसीयाओ चउदसया ॥ ३५५॥

अर्थ—(तइयाए) क० त्रीजी नरकपृथ्वीमा (चउदस लक्ख) क० चउद लाख, ( अडनउय सहस्स ) क० अठाणु हजार, ( पचसया ) क० पाच सो अने ( पन्नरसा ) के० पनर एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे अने ( सढीगया ) के० श्रेणिमां रहेला ( चउदसया ) के० चउद सो अने ( पणसीयाओ ) के० पचाशी नरकावासा छे सर्व मळी पनर लाख नरकावासा त्रीजी वालुका प्रभा नरकपृथ्वीमा जाणवा ॥ ३०० ॥

तेणउया दोन्निसया, नवनवई सहस्स नव य लक्खा य॥
पंकाए सेढीगया, सत्तसया हुंति सत्तहिया ॥ ३५६॥

अर्थ—( पंकाए ) क० चोथी पंकप्रभा नरकपृथ्वीमा ( नव य लक्खा ) क० नव लाख, ( नवनवइ सहस्स ) के० नवाणु हजार, ( दोन्निसया ) क० बसो अने ( तेणउया ) के० त्राणु, एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे, अने (सेढीगया) क० श्रेणिमा रहेला ( सत्तसया ) क० सात सो अने ( सत्तहिया ) के० सात अधिक एटला नरकावासा ( हुंति ) क० छे सर्व मळी दश लाख नरकावासा चोथी पंकप्रभा नरकपृथ्वीमा जाणवा. ॥ ३५६ ॥

सत्तमया पणतीसा, नवनवई सहस्स दोन्नी लक्खा य ॥
धूमाए सेढिगया, पणसट्ठी दोमया हुंति ॥ ३५७ ॥

अर्थ—( धूमाए ) के० पांचमी धूमप्रभा नरकपृथ्वीमां ( दोन्नी लक्खाय ) के बे लाख ( नव नवई सहस्स ) के० नवाणु हजार, ( सत्तसया ) के० सात सो अने ( पणतीसा ) के पांत्रीस एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे तथा ( सेढिगया ) के० श्रेणिमां रहेला ( दो सया ) के० बसो अने ( पणसट्ठी ) के० पांसठ एटला नरकावासा छे सर्व मली त्रण लाख नरकावासा पांचमी धूमप्रभा नरकपृथ्वीमां छे. ॥ ३५७ ॥

नवनवइओ सहस्सा, नव चेव सया हवंति बत्तीसा ॥
पुढवीए छट्ठीए, सेढीगया हुंति तेसट्ठा ॥ ३५८ ॥

अर्थ—( पुढवीए छट्ठीए ) के० छठ्ठी तमप्रभा नरकपृथ्वीमां ( नवनवइओ सहस्सा ) के० नवाणु हजार, ( नव सया ) के० नव सो अने ( बत्तीसा ) के बत्रीस एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा ( चेव ) के० निश्चे ( हवंति ) के० छे. तथा [ सेढीगया ] के० श्रेणिमां रहेला [ तेसट्ठा ] के० त्रेसठ नरकावासा ( हुंति ) के छे सर्व मली नवाणु हजार नव सो पचाणु नरकावासा छट्ठी तमप्रभा नरकपृथ्वीमां छे सातमी नरकपृथ्वीमां पांचज नरकावासा छे. पुष्पावकीर्ण नथी ॥ ३५८ ॥

ते ण नरगावासा, अंतो वट्टा बहिं च चउरंसा ॥
हिट्ठा खुरप्पसंठाण–संठीया पर मदुग्गंधा ॥ ३५९ ॥

अर्थ—[ तेण नरगावासा ] के० ते पूर्वे वर्णवेला सर्व नरका

गासों [अने वट्टा] के० माहला भागमा गोलाकार, (वहिं चउरसा) क० बहार चोरस अने (हिट्ठा) के० नीचे (खुरप्पसंठाणा) के० खुरपना ए ते नाम कापवाना एक जातना हथीयार सरखा आकारवाळा अने [परमदुग्गंधा] क० अत्यंत दुर्गंधमय [भणीया] के० कहला छे ते नरकावासमा देवलोकना आवलिकागत विमाननी पेठे वृत्त त्रिखूणा अने चोखूणा अनुक्रमे जाणवा. अने पुष्पावकीर्णे नरकावासा अनेकप्रकारना संस्थानवाळा जाणवा ॥ ३०९ ॥

हव नरकावासानु ऊंचपणु पहोळपणु अने उंडपणु कहे छे

तिसहस्सुच्चा सव्वे, संखमसंखिज्ज वित्थडायामा ॥
पणयाललक्ख सीम-न्तओ य लक्खं अपइठाणो ॥३६०॥

अर्थ—साते नरकपृथ्वीमा जेटला नरकावासा छे ते (सव्वे) क० सर्व नरकावासा [तिसहस्सुच्चा] के० त्रण हजार योजन उंचा छे तथा (वित्थडायामा) के० पहोळाइपणे अने लम्बाइपणे [संखमसंखिज्ज] के कोइक संख्याता योजन अने कोइक असंख्याता योजन छे, पण तेमा [सीमन्तओ] के० प्रथम सीमन्त नामनो इन्द्रक नरकावासो [पणयाललक्ख] के० पीस्तालीश लाख योजन लांबो अने पहोळो छे [य] के० अने [अपइट्ठाणो] के० छठ्ठो अप्रतिष्ठान इन्द्रक नरकावास [लक्खं] के० एक लाख योजन लांबो अने पहोळो छे ए अपइठाणाने फरता काल विगेरे चार नरकावासा छे ते लंबाइमे पहोळपणे अने फरता परीधिमे असंख्याता कोडाकोडी योजन जाणवा. ॥ २६० ॥

हिट्ठो घणो सहस्सं, उप्पिंसे कुट्ठओ सहस्सं तु ॥
मज्झे सहस्स सुसिरा, तिन्नि सहस्सुच्चया निरया॥३६१॥

अर्थ—सर्वे नरकावासा ( हिट्ठो ) के० नीचे (घणो सहस्स) क० एक हजार योजननो याढ उंचो पीठिकावाळा, ( तु ) के० वळी ( उर्प्पीसे ) के० उपरना भागमां ( कुट्टओ सहस्स ) के० एक हजार योजनना शिखराकारे गोमटवाळा अने (मज्झे) के० मध्य-भागने विषे ( सहस्स सुसिरा ) के० एक हजार योजननी पोला-णवाळा छे, एम सर्व मळीने ( तिन्नि सहस्स ) के० त्रण हजार योजन ( उच्चया ) क० ऊंचा ( निरया ) के० नरका वासा छे ॥ ३६१ ॥

छसु हिट्ठुवरि जोयण, सहस्स बावन्नसड्ढ चरिमाए ॥
पुढवीनिरयरहियं, निरया सेसंमि सव्वासु ॥ ३६२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभादि साते नरकपृथ्वीना जे एक लाख एंशी हजार योजन विगेरे पृथ्वीपिंड कह्या छे तेमां ( छसु ) के० पहेली रत्नप्रभादिक छ पृथ्वीमां ( हिट्ठुवरि ) क० नीचे अने उपर ( जोयण सहस्स ) के० एक एक हजार योजन क्षेत्र नरकावासाथी रहित जाणवुं, अने ( चरिमाण ) के० सातमी नरकपृथ्वीने विषे नीचे अने उपर ( बावन्न सड्ढ ) क० साडीबावन हजार साडिबा वन हजार योजन ( पुढवीनिरयरहित ) क० क्षेत्र नरकावासाथी रहित जाणवुं. ( सेसंमि सव्वासु ) के० बीजो समस्त पृथ्वीने विषे ( निरया ) के० नरकावासा जाणवा ॥ ३६२ ॥

हवे दरेक नरक पृथ्वीमां प्रतरे प्रतरे केटलुं अंतर छे ? ते कहे छे.

तिसहस्सुणा पुढवी तिसहस्स गुणिएहि नियपयरेहिं॥
ऊणा तिरूवूणियपयर, भाईया पत्थडंतरयं ॥ ३६३ ॥

अर्थ—( पुढवी ) क० पहेली नरक पृथ्वीना पिंडमांथी (दुगस-हस्सुणा) के० एक हजार उपरथी अने एक हजार नीचेथी एम वे हजार योजन ओछा करीये पछी दरेक प्रतर त्रण त्रण हजार योजन उचा छे माटे ( तिसहस्स गुणिएहिं ) क० त्रण हजारवडे गुणेला ( नियपयरेहिं ) क० पोतपोताना प्रतरोनी जे संख्या थाय ते ( ऊणा ) के० ओछी करवी पछी ( रूवूण ) के० एक रूप करीने ( नियपयरभाइया ) क० पोत पोताना प्रतरना जेटला आंतरा होय तेथी भागाकार करवा एटले (पत्थडंतरय) क० प्रतर प्रतरनुं अंतर प्रमाण थाय छे ॥ २६३ ॥

हवे ते उदाहरणथी स्पष्ट समजाय छे के–रत्नप्रभा पृथ्वीनो पिंड एक लाख एशी हजार योजननो छे, तेमाथी वे हजार योजन काढीये एटले बाकी एक लाख अठ्ठोतेर हजार रहे हवे ए पृथ्वीना तेर प्रतर छे ते दरेक त्रण त्रण हजार योजन उचा छे माटे तेरने त्रण हजार गुणीये त्यारे ओगणचालीस हजार थाय एटला एक लाख अठ्ठोतेर हजारमांथी काढीये बाकी एक लाख ओगणचालीश हजार रहे, तेने तेर प्रतरनी वचमां बार आंतरा छे, माटे बार भाग आपीये एटले एक एक आंतर अगीयार हजार पांचसो अने त्राशी योजन, अने ते उपर एक योजनना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग एटलु रत्नप्रभाना प्रतर प्रतर वच्चे अन्तर जाणवु एवीज रीते बीजी नरक पृथ्वीओने विषे पण पोतपोताना प्रतरे भाग लेवाथी जे आंक आवे ते प्रत्येक अन्तर जाणवु एज आगला गाथाथी कहे छे

तेसीया पचसया, इक्कारस चेव जोयणसहस्सा ॥
रयणाए पत्थडंतर–मेगो चिय जोयणतिभागो ॥२६४॥

अर्थ—( रयणाए ) के० पहेली रत्नप्रभा पृथ्वीमां ( इक्कारस

जायणसहस्सा ) के० अगीयार हजार, ( पचसया ) के० पाचसो अने ( तेसीया ) के० त्यासी एटला योजन, तथा ( एगो जोयण-तिभागो ) के० एक योजनना त्रण भाग करीये तेमे एक भाग एटलु ( पत्थडतर ) के० मतरे मतरे अतर ( चिय ) के० निश्चे जाणवु. ॥ ३६४ ॥

सत्ताणवई सयाइ, बीयाए पत्थडतरं होइ ॥

पणहत्तरि तिण्णि सया, बारस सहस्स तइयाए॥३६५॥

अर्थ—( बीयाए ) के० बीजी नरकपृथ्वीने विषे अगीयार मतरना दश आतरामा ( सत्ताणवई सयाइ ) के० नव हजार अने सात सो योजनतु ( पत्थडंतर होइ ) के० मतर मतर आतरु होय ( तइयाए ) के० त्रीजी नरकपृथ्वीने विषे नव मतरना आठ आत-रामा ( बारस सहस्स ) के० बार हजार, ( तिण्णिसया ) के० त्रण सो अने ( पणहत्तरि ) के० पचोतेर योजनतु मतरे मतर अतर होय ॥ ३६५ ॥

छासट्ठिसय सोलस, सहस्स एगो य दो विभागाइ ॥

अट्ठाइज्ज सयाई, पणवीस सहस्स धूमाए ॥ ३६६ ॥

अर्थ—चोथी नरकपृथ्वीना सात मतरना छ आतरामा ( सोलस सहस्स ) के० सोल हजार ( छासट्ठिसय ) के० एक सो ने छासठ योजन ( य ) के० अने ( एगो दो विभागाइ ) के० एक योजनना त्रण भाग करीये तेमा बे भाग एटलु मतर मतर अतर होय पाचमी ( धूमाए ) के० धूमप्रभा नरकपृथ्वीने विषे पाच मतरना चार आतरामा (पणवीस सहस्स) के० पच्चीस हजार अने ( अड्डाइज सयाइ ) के० अढीसो अर्थात् बसो पचास योजनतु मतरे मतरे अतर छे ॥ ३६६ ॥

बावन्न सहस्साइ, पंचेव हवंति जोयणसयाइं ॥
पत्थडअंतरमेयं, छट्ठीपुढवीए नेयव्वं ॥ ३६७ ॥

अर्थ—( छट्ठीपुढवीए ) क० छट्ठी तमप्रभा नरकपृथ्वीने विषे त्रण प्रतरना बे आंतरामां ( बावन सहस्साइ ) क० बावन हजार अने ( पंचेव जोयणसयाइ ) क० पांचसो योजन. ( एयं ) क० एटलुं ( पत्थडअंतर ) क० प्रतर प्रतर अंतर ( नेयव्वं ) क० जाणवुं ॥ ३६७ ॥ ( सप्तम्यां त्वेक एव प्रतर इति तदन्तरं न संभवति ॥ उक्तं नारकाणां प्रतरगताद्यन्तरद्वारम् ॥ अर्थ–वली सातमी तमस्तमःप्रभा नरकपृथ्वीमां एकज प्रतर होवाथी त्यां आंतरा संभव नथी एम ए प्रसंगने अनुसरी नारकी जीवोनुं अंतरद्वार कह्युं

---

## अथ नारकाणां अवगाहनाद्वारमारभ्यते ॥

हवे ते नारकी जीवोनुं अवगाहना द्वार एटले शरीरप्रमाण-द्वार कहे छे

पउणट्ठधणु छ अंगुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं ॥
सेसासु दुगुणदुगुणं, पणधणुसय जाव चरिमाए॥३६८॥

अर्थ—( रयणाए ) क० पहेली रत्नप्रभा नरकपृथ्वीमां नारकीओनुं ( उक्कोसं ) क० उत्कृष्टुं ( देहमाण ) क० शरीर प्रमाण ( पउणट्ठधणु ) क० पोणा आठ धनुष्य अने ( छ अंगुल ) क० छ अंगुलनुं होय छे. अने ( सेसासु ) क० बाकीनी छ पृथ्वीमां ( दुगुणदुगुण ) क० प्रथमनी नरक करतां बमणुं बमणुं अनुक्रमे करवुं ते ( जाव चरिमाए ) क० जेल्लामां छेल्ली नरकपृथ्वीने विषे

(पण धणुसय) क० पांच सो मनुष्यनु उत्कृष्ट शरीर प्रमाण होय ॥ जेमकेरत्नप्रभामा सात मनुष्य त्रणहाथ छ आगुल, शर्कराप्रभामा पन्नर मनुष्य बे हाथ बार अगुल, वालुका प्रभामा एकत्रीश मनुष्य एक हाथ. पङ्कप्रभामा बासठ मनुष्य ब हाथ, धूमप्रभामा एक सो पच्चीश मनुष्य, तमप्रभामां अढी सो मनुष्य, अने तमतमप्रभामा पाच सो मनुष्यनु उत्कृष्ट शरीर प्रमाण होय ॥ ३६८ ॥

हवे रत्नप्रभाना प्रतर प्रतरे जूदु जूदु देहमान कहे छे

रयणाएपढमपयरे हत्थतिय देहमाणमणुपयर ॥
छप्पणगुलसड्ढा, वुड्ढी जा तेरसे पयरे ॥ ३६९ ॥

अर्थ—( रयणाएपढमपयर ) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना पहला प्रतर ( हत्थतिय देहमाण ) के० त्रण हाथनु उत्कृष्ट शरीर प्रमाण छे. त्यार पछी ( अणुपयर ) के० प्रतर प्रतर ( छप्पणगुलसड्ढा ) के० साडा छप्पन आगुलनी ( वुड्ढी ) क० वृद्धि करवी के-जेथी ( जा तेरसे पयर ) क० तेरमा प्रतरे पोणा आठ मनुष्य अने छ अंगुलनु प्रमाण पूर्ण थाय ॥ ३६९ ॥

हवे शर्कराद्धिकना प्रतरे प्रतरे उत्कृष्ट देहमान कहे छे

ज देहपमाण उवरि-माए पुढवीए अतिमे पयरे ॥
त चिय हिट्ठिमपुढवी-पढमपयरमि बोधव्व ॥ ३७० ॥

अर्थ—( उवरिमाए पुढवीए ) के० उपर उपरनी पृथ्वीना ( अतिमे पयरे ) क० छेल्ला प्रतरने विषे उत्कृष्ट ( ज देहपमाण ) के० जे शरीर प्रमाण होय ( ते ) के० ते प्रमाण ( चिय ) क० निश्चे ( हिट्ठिमपुढवीपढमपयरमि ) के० नीचेनी पृथ्वीना पहला प्रतर ( बोधव्व ) क० जाणव ॥ ३७० ॥

त चेग गगमगपयर, भइय नीयाइ पयर वुड्डिभवे ॥
निऊर तिअंगुल करसत्त,अंगुला सढ्ढि गुणवीसा॥३७१॥
पण धणु अंगुलवीस,पनरसधणु दुन्नि हत्थ सढ्ढा य ॥
वासट्ठि धणुहसढ्ढा,पण पुढवी पयर वुड्डि इमा ॥३७२॥

अर्थ—(त च) क० त्रण हाथ ने त्रण अंगुल प्रथ्वीना पहेले मतरे जे देहमान आव्युं तेने (पगपयर) क० एक एक (सगपयर) के० पांच गाताने प्रतरे (भइय) क० भाग आपवा तेम करता जे आठ भाग ते शर्कराम्रि पृथ्वीना (नीयाइ पयर) क० बीजा प्रतरादिकने विषे (वुड्डिभवे) क० वृद्धि थाय, पण ते वृद्धि बीजी नरकपृथ्वीथी आरंभी छट्ठी पृथ्वी सुधी एटले पांच पृथ्वीना बीजा प्रतरे अनुक्रमे जाणवी हवे नर्केरावमाना प्रथम प्रतरे सात धनुष्य त्रण हाथ अने छ अंगुल देहमान छे, तेमा (निऊर तिअंगुल) क० त्रण हाथ अने त्रण अंगुलनी वृद्धि करीये, तथा त्रीजा नरके प्रथम प्रतरे पन्नर धनुष्य बे हाथ अने बार अंगुलनु देहमान छे तेमा (करसत्त अंगुला सढ्ढि गुणवीस) क० सात हाथ ने साडी ओगणीश अंगुलनी वृद्धि करीये—॥ ३७१ ॥ चोथा नरकना पहेले प्रतरे एकत्रीश धनुष्य अने एक हाथनु शरीर प्रमाण छे तेमा (पण धणु अंगुलवीस) के० पांच धनुष्य ने वीस अंगुलनी वृद्धि करीये पांचमा नरकना पहेले प्रतरे साडीबासठ धनुष्यनु देहमान छे, तमा (पनरस धणु दुन्नि हत्थ सढ्ढाय) क० पन्नर धनुष्य ने अढीहाथनी वृद्धि करीये छठा नरकना पहेले प्रतरे एक सो पचीस धनुष्यनु देहमान छे, तेमा (वासट्ठि धणुहसढ्ढा) क० बासठ धनुष्य अनेबेहाथनी वृद्धि करीये. एम (पण पुढवी पयर वुड्डि इमा) क० पांच नरक पृथ्वीना प्रतरोने विषे ए प्रमाणे वृद्धि करवी ॥ ३७२ ॥

एज वात विस्तार सहित समजावे छे के—शर्कराप्रभाना पहेला प्रतरे सात धनुष्य त्रण हाथ अने छ अंगुल देहमान छे ते सात धनुष्यना अठ्ठावीश हाथ थाय तेनी साथे उपरना त्रण हाथ मेळवतां एकत्रीश हाथ थाय तेना अंगुल करवामाटे चोवीसे गुणीये तो सात सो चुमालीश अंगुल थाय, तेमां उपरना छ अंगुल मेळववा सर्व मळी सात सो पचास अंगुल थाय तेने शर्करा प्रभाना अगीयार प्रतरने एक उणा करी दशे भाग आपीये तो एक एक भागे पंचोतेर अंगुल आवे. तेना त्रण हाथ अने त्रण अंगुल थाय एटली शर्कराप्रभा पृथ्वीना पहेला प्रतरने विषे देहमाननी वृद्धि थाय एम बीजा प्रतरथी आरंभी दरेक प्रतरे एवीज रीते वृद्धि करवी ए प्रमाणे त्रीजीथी छठ्ठी सुधी प्रत्येक नरक पृथ्वीने विषे जाणवु समजणमाटे यंत्र स्थापना जोवी सातमी नरक एकज प्रतर छे माटे त्यां उत्कृष्ट पांचसो धनुष्यनुज देहमान छे.

हवे नारकीनु उत्कृष्ट तथा जघन्य उत्तरवैक्रिय शरीरप्रमाण कहे छे

इय साहावियदेहो, उत्तरवेउव्विओ य तद्दुगुणो ॥
दुविहोवि जहन्नकमा, अंगुल असंख संखंसो ॥३७३॥

अर्थ—( इय ) क० ए पूर्वे साते नरकना नारकीओनु (साहावियदेहो) के० स्वाभाविक एटले भवधारणीय शरीर प्रमाण कह्यु (तद्दुगुणो) के० तेनाथी बमणु (उत्तरवेउव्विओय) क० उत्तर वैक्रिय शरीर जाणवु जेमके रत्नप्रभाने विषे पतर धनुष्य बे हाथ अने बार अंगुल उत्तर वैक्रिय शरीर होय अने सातमीनरके एक हजार धनुष्य उत्तर वैक्रिय शरीर होय. ए भवधारणीय अने उत्तर वैक्रिय शरीरनु प्रमाण कह्यु हवे ( दुविहोवि जहन्न कमा ) के० अनुक्रमे बे प्रकार जघन्य शरीर प्रमाण कहे छे. एक भवधारणीय बीजु

उत्तरवैक्रिय ए बन्ने शरीर जघन्यथी साते नरकमा अनुक्रमे ( अ-गुल असख्य सखेसो ) के० अगुलनो असख्यातमो भाग तथा स-ख्यातमा भाग होय अहिं भवधारणीय शरीर उत्पत्ति वेलाये अगु-लने असख्यातम भाग अने उत्तरवैक्रिय शरीर आरभनी वखते अगु लना सख्यातमे भागे होय एम जाणवु नारकीनु अवगाहना द्वार पूर्ण थयु ॥

हवे नारकीना जीवोनु उत्पत्तिविरह तथा च्यवनविरहनु द्वार आढ गाथाथी कहे छे

मत्तसु चउवीस मुहु,सग पनर दिणेग दु चउ छमासा॥
उववाय चवणविरहो, ओहे वारस मुहुत्त गुरू॥२७४॥
लहुओ दुहावि समओ,मखा पुण सुरसमा मुणेयव्वा॥

अर्थ—( सत्तसु ) के० साते नरकमा अनुक्रमे एटले पहलीए ( चउवीस मुहु ) के० चोवीश मुहूर्त, बीजीए ( सग ) के० सात दिवस, त्रीजीए ( पनर दिण ) के० पन्नर दिवस, चोथीए ( एग ) के० एक मास, पाचमीए ( दु ) के० बे मास, छट्ठीए ( चउ ) के० चार मास, अने सातमीए ( छ मासा ) के० छमास सुधी ( उववायचवणविरहो ) के० उत्पात तथा च्यवननो विरहकाल जाणवो जो के साते नरकमा नारकी जीवो घणु करीने निरतर उपजे छे अने चवे छे, परतु ( ओहे ) के० सामान्यपणे सातेमा न उपजे अने न चवे तो ( लहुओ ) के० जघन्यथी साते नरक ( दुहाविसमओ ) के० साये पण एक समय अने चवे पण एक समय विरह पडे अने ( गुरू ) के० उत्कृष्टथी ( वारस मुहुत्त ) के० बार मुहूर्तनो विरह-काल जाणवो ( पुण ) के० वली नारकीना जीवोनी उपजवान तथा चववानी ( सखा ) के० सख्या तो ( सुरसमा ) के०

देवताना मरणी एटले एक समयथी एक बे त्रण उत्कृष्ट संख्याता अने असंख्याता मुनीनी मुणेयव्वा के० जाणवो. ए नारकीनु उपपातविरहद्वार तथा च्यवनविरहद्वार कह्यु

हवे कयो जीव नरके जाय ते गतिद्वार कहे छे

मखाउ पजत्त पणिंदि–तिरिनरा जंति निरएसु ॥३७५॥

अर्थ—(सखाउ) के० संख्याता आयुष्यवाला (पजत्त) के० पर्याप्ता (पणिंदि तिरिनरा) के० पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य नरकायु बांधे तो (जंति निरएसु) के० नरकमां जाय छे ॥३७५॥

हवे कया जीवो नरकायु बांधे ? ते कहे छे

मिच्छदिट्ठि महारंभ,परिग्गहो तिव्वकोह निस्सीलो ॥
नरयाउय निबंधइ, पावमई रुद्दपरिणामो ॥ ३७६ ॥

अर्थ—(मिच्छदिट्ठि) के० मिथ्यात्वी, (महारंभ) के० महोटा आरंभ करनारो, (परिग्गहो) के० बहुपरिग्रह धारी, (तिव्वकोह) के० आकरा क्रोधवालो, (निस्सीलो) के० शील रहित, (य) के० वली (पावमई) के० पापबुद्धिवालो अने (रुद्दपरिणामो) के० रौद्रपरिणामि एवो जीव (नरयाउ) के० नरकनु आयुष्य (निबंधइ) के० बांधे छे. ॥ ३७६ ॥

हवे विशेषपणाथी जुदी जुदी नरकगतिए जनारा जीवो कहे छे

असन्नि सरिसिव पक्खी,सीह उरगि त्थि जंति जाछट्ठि ॥
कमसो उक्कोसेण, सत्तम पुढवी मणुयमच्छा ॥३७७॥

अर्थ—(असन्नि) के० असंज्ञी सम्मूर्च्छिम पंचेंद्रिय पर्याप्ता तिर्यंच जो नरकायु बांधे तो पहली नरके जाय, त्यां ते जघन्यथी

दश हजार वर्ष अने उत्कृष्टथी पल्योपमना असंख्यातमा भागना आयुष्ये उत्पन्न थाय तथा (सरिसिव) क० भुजपरिसर्प ते नोलीया प्रमुख जीवो बीजी नरक सुधी जाय, ( पक्खी ) क० गीध सीचाणादिक मांसाहारी पक्षीओ रौद्र अध्यवसायने लीधे त्रीजी नरक-सुधी जाय, ( सीह ) क० सिंह चित्रा दीपडा विगेर हिंसकजीवो चोथी नरकसुधी जाय, ( उरगि ) क० उरपरिसर्प ते सर्प जातिना सर्पो पांचमी नरकसुधी जाय, ( त्थि ) क० स्त्री वेदे नरकायुबांधनारा स्त्रीरत्न प्रमुख ते ( जाइंति ) क० छठ्ठी नरकसुधी जंति क० जाय छे वली गर्भजपर्याप्ता ( मणुयमच्छा ) के० मनुष्य अने मच्छ ते ( उक्कोसेण ) क० उत्कृष्टथी ( सत्तमपुढवी ) के० सातमी नरक सुधी जाय ए ( कमसो ) क० अनुक्रम उत्कृष्टगति कही, अने जघन्यथी रत्नप्रभाना पहेला प्रतरसुधी जाय बाकीनी सर्व मध्यम गति जाणवी ॥ ३७७ ॥

हवे कटलाक अतिक्रूर निर्धर्मनी प्राये करीने गति कहे छे.

## वाला दाढी पक्खी, जलयर नरगागया उ अइकूरा ॥
## जंति पुणो नरएसु, बाहुल्लेण न उण नियमो ॥३७८॥

अर्थ—( वाला ) क० व्याल एटले सर्प विगेर, ( दाढी ) क० दाढवाला ते सिंह विगेरे, ( पक्खी ) के० पक्षी ते गीध विगेर अने ( जलयर ) क० जलचर ते मत्स्य विगेर. एटला जातना जीवो ( नरगागया ) क० नरकथी आव्या होय तो पण (अइकूरा) के० अति क्रूरपणाने लीधे ( बाहुल्लेण ) के० घणुकरीने ( पुणो ) के० पण ( [illegible] नरकने विषे ( जंति ) क० जाय छे परन्तु ( [illegible] ) निश्चय नथी कारण कोई जीव नरकथी [illegible] सम्यपणने लीधे मोक्ष-

हवे नारकीने संघयण अने लेश्या कहे छे

दो पढमपुढविगमणं, छेवट्ठे कीलियाइ संघयणे ॥
इक्किकपुढविवुड्ढी, आइतिलेस्सा उ नरएसु ॥ ३७९ ॥

अर्थ—(छेवट्ठे) के० छेवट्ठा संघयणवालो जीव (दो पढमपु ढविगमण) के० पहेली बे नरकपृथ्वी सुधी जाय, अने (कीलिया संघयणे) के० कीलिकादिक संघयणवालाजीवोनी (इक्किकपुढ विवुड्ढी) के० एक एक नरकपृथ्वीनी वृद्धि करवी जेम कीलिक संघयणवाला त्रीजी नरकपृथ्वी सुधी जाय अर्द्धनाराचवाला चोथी सुधी, नाराचवाला पांचमी सुधी, ऋषभनाराचवाला छट्ठी सुधी अने वज्रऋषभनाराचवाला सातमी नरकपृथ्वी सुधी जाय । उत्कृष्टी गति जाणवी जघन्यथी तो सर्व संघयणवाला जीवो रत्न प्रभाना पहेला प्रतर सुधी जाय. ॥ हवे नारकीने लेश्या कहे छे (उ) के० वली (नरएसु) के० नारकीने विषे (आइतिलेस्सा) के० कृष्ण नील अने कापोत ए प्रथमनी त्रण लेश्या होय ॥ ३७९ ॥

हवे ए लेश्याओने विशेष विवरीने कहे छे

दुसु काऊ तइयाए काऊ, नीला य नील पंकाए ॥
धूमाए नीलकिण्हा, दुसु किण्हा हुंति लेसाओ॥३८०

अर्थ—(दुसु) के० पहेली बे नरकमां (काऊ) के० क कापोतलेश्या होय परन्तु पहेली करतां बीजीमां अतिमलीन ले होय (तइयाए) के० त्रीजी नरकमां (काऊनीला य) के० कापो अने नील लेश्या होय तेमां पल्योपमना असंख्यातमा भागे अधि एवा त्रण पल्योपमना आयुष्यवालाने कापोत अने तेथी अधि

न ल) के० नील लेश्या एकज होय छे (धूमाए) के० धूमप्रभामां (नीलकिण्हा) के० नील अने कृष्ण लेश्या होय छे तेमा जे जीवोनु पल्योपमना असंख्यातमा भागे अधिक दश पल्योपमनु उत्कृष्ट आयुष्य होय तेमने नील लेश्या अने एथी वधारे आयुष्यवाळाने कृष्ण लेश्या होय छे अने (दुसु) के० छठ्ठी अने सातमी नरकने विषे (किण्हा) के० कृष्णलेश्या छे तेमा एटलो विशेष के छे-प्रथमनी कृष्णलेश्या करता छेल्ली बे नारकीनी कृष्ण लेश्या विशेषे कृष्ण लेश्य होय छे. (लेसाओ हुंति) के० सात नरकमा लेश्याओ होय छे ते कही ॥ ३८० ॥

हा उपर कहली नारकीनी लेश्या [illegible]रूप छे ? अथवा भाव रुप छे ? ते सूत्रकार कहे छे

सुरनारयाण ताओ, दवलेस्सा अवट्ठिया भणिया ॥
भावपरावत्तीए, पुण एसिं हुंति छल्लेस्सा ॥ ३८१ ॥

अर्थ—(सुरनारयाण) के० देवता तथा नारकीने (ताओ) के० ते कहली (दवलेस्सा) के० द्रव्यलेश्या (अवट्ठिया) के० क्षेत्र सबंधी (भणिया) के० कही छे काइ वर्णान्तर न जाणवी (पुण) के० वली द्रव्यक्षेत्रकालादिथी तेवी तेवी सामग्री पामीने (भावप रावत्तीए) के० परिणामना विपर्यास एटले फेरफार करीने (एसिं) के० ए देवता तथा नारकीने (छल्लेस्सा) के० छलेश्या (हुंति) के० होय छे ॥ ३८१ ॥

हवे नरकथकी निकलेला जीवो कइ गतिमा जाय ? ते कहे छे

निरउवट्टा गब्भय, पजत्तसखाउ लद्धि एएसिं ॥
चक्कि हरिजुअल अरिहा, जिण जइ दिसि सम्म पुहविकमा ॥ ३८२ ॥

अर्थ—( निरउवट्टा ) के० नरकथकी निकलेला जीवो ( गब्भय ) के० गर्भज ( पजत्त ) क० पर्याप्ता तथा ( संखाउ ) के० संख्याता आयुष्यवाला थाय ( इने ( एएसिं ) क० ए सातें नरकथी निकलेला जीवोने ( लद्धि ) के० कयी कयी लब्धी एटले पद्वी प्राप्त थाय ? ते कहे छे. पहेली नरकपृथ्वीथी निकलेलो जीव ( चक्कि ) क० चक्रवर्ति थाय, बीजी पृथ्वी भुमीनो निकलेला जीव ( हरिजुअल ) के० वासुदेव तथा बलदेव थाय. त्रीजी नरक पृथ्वीभुमीनो निकलेलो जीव (अरिहा) क० अरिहंत थाय, चोथी नरक पृथ्वी भुमीनो निकलेला जीव ( जिण ) के० सामान्य केवली थाय. पाचमी नरक पृथ्वी भुमीनो निकलेलो जीव ( जइ ) क० सर्व विरति साधु होय, छट्ठी नरक पृथ्वी भुमीनो निकलेलो जीव ( विर्इ ) के० देशविरति श्रावक होय अने सातमी नरक पृथ्वीथी निकलेलो जीव ( सम्म ) के० सम्यक्त्वधारी होय ए ( पुढविकमा ) के० नरक पृथ्वीनो अनुक्रमे लब्धी कही. ॥२८२॥

हव नारकी जीवो अवधिज्ञानथी केटलुं क्षेत्र जोइशके ? ते कहे छे

**रयणाए ओहि गाउ अ, चत्तारि अद्धुट्ट गुरु लहु कमेण ॥**
**पइपुढवि गाउयद्ध, हायइ जा सत्तमि इगद्ध ॥ २८३ ॥**

अर्थ—( रयणाए ) के० रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे नारकी जीवोने ( ओहि ) क० अवधिज्ञान ( गाउअ चत्तारि ) क० चार गाउनु होय छे ते गुरु के० उत्कृष्ट जाणवु अने ( अद्धुट्ट ) के० साडात्रण गाउनु अवधिज्ञान ( लघु ) क० जघन्यथी होय छे ए ( कमेण ) क० अनुक्रमे जाणवु त्यार पछी (पइपुढवि) के० दरेक पृथ्वीए ( गाउयद्ध हायइ ) क० उत्कृष्टमाथी अने जघन्यमाथी

अर्द्धो अर्द्धो गाउ ओछु करवु, जेथी (जासत्तमि) के० यावत् सातमी नरकने विषे (इगद्ध) क० उत्कृष्टथी एक गाउ अने जघन्यथी अर्द्धो गाउ अवधिज्ञान होय छे ॥ ३८३ ॥ ए नरकद्वार पूर्ण थयु ॥

हवे मनुष्यद्वार कहे छे। अहिं मनुष्यना भवन विना आठ द्वार कहे छे, तेमा स्थितिद्वार अने अवगाहना द्वार प्रथम कहे छे

गब्भनर तिपलियाऊ, तिगाउ उक्कोस ते जहन्नेणं ॥
मुच्छिम दुहावि अंतमुहु,अंगुल असंखभाग तणू॥३८४॥

अर्थ—(गब्भनर) के० गर्भज मनुष्य उत्कृष्टथी (तिपलियाऊ) के० त्रण पल्योपमना आयुष्यवाला जाणवा अने (ते) क० ते गर्भज मनुष्य (उक्कोस) क० उत्कृष्टथी (तिगाउ) क० त्रण गाउना देहमानवाला जाणवा तथा (जहन्नेण) क० जघन्यथी गर्भज मनुष्यनु अने (मुच्छिम) क० समूर्छीम मनुष्यनु (दुहावि) के० जघन्य अने उत्कृष्टथी (अंतमुहु) के० अंतर्मुहूर्तनु आयुष्य होय छे, तथा गर्भज मनुष्यनु जघन्यथी (अंगुल असंखभाग तणू) क० अंगुलना असंख्यातमा भागनु शरीर होय छे ३८४ ॥

हवे उपपात उद्वर्तना विरहकाल कहे छे

बारस मुहुत्त गब्भे, इयरे चउवीस विरह उक्कोसो ॥
जम्ममरणेसु समओ,जहण्ण संखा सुरसमाणा ॥३८५॥

अर्थ—(गब्भे) क० गर्भज मनुष्यने जन्म आश्री तथा मरण आश्री विरहकाल उत्कृष्टथी (बारस मुहुत्त) क० बार मुहूर्तनो होय छे एटले एक गर्भज मनुष्य उपन्या पछी बीजो उत्कृष्टथी बार मुहूर्तने आंतरे उपजे मरण पण एज प्रमाणे जाणवु

अने ( इयरे ) के० समूर्छिम मनुष्यने ( उक्कोसो ) क० उत्कृष्टथी जन्ममरणनो विरह ) के० विरहकाल ( चउवीस ) क० चोवीस मुहूर्त्तनो जाणवो. वली गर्भज तथा समूर्छिम मनुष्यने ( जम्मम रणेसु ) के० जन्ममरणने विषे विरहकाल ( समओ ) के० एक समयनो जाणवो तथा गर्भज अने समूर्च्छिम मनुष्यनी उपजवानी ( जहण्णसंखा ) क० जघ संख्या ( सुरसदाणा ) क० देवताना मरवी जाणवी पहले एक समये एक वे त्रणथी आरंभी संख्याता असंख्याता उपजे तथा मरण पामे एम जाणवु. ॥ ३८५ ॥

हवे कयो जीव मरी मनुष्यगतिमां आवे ? ते गतिद्वार कहे छे

सत्तममहिनेरईए, तेऊ वाऊ असंख नरतिरिए ॥
मुत्तूण सेसजीवा, उप्पज्जति नरभवमि ॥ ३८६ ॥

अर्थ—(सत्तममहिनेरईए) क० सातमी नरकपृथ्वीना नारकी, ( तेउ ) के० तेउकायना जीवो, ( वाउ ) क० वायुना जीवो तेमज ( असंख नरतिरिए ) क० असंख्याता आयुष्यवाला युगलीया मनुष्य अने तिर्यंच ए पाच जातीना जीवोने ( मत्तूण ) के० मूकीने ( सेस जीवा ) के० बाकीना सर्वे जीवो ( नरभवंमि ) के० मनुष्य भवने विषे ( उप्पज्जति ) के० उपजे छे ॥ ३८६ ॥

सुरनेरइएहिं चिय, हवंति हरि अरिह चक्कि बलदेवा ॥
चउविहसुर चक्किबला,वेमाणि हुंति हरि अरिहा ॥३८७॥

अर्थ—( हरि ) के० वासुदेव, (अरिह) के० अरिहंत, ( चक्कि ) के० चक्रवर्त्ती अने ( बलदेवा ) के० बलदेव ए चार (सुरनेरइएहिं) के० देवना अने नारकीनी गतिथी आवेला ( चिय ) के० निश्चे ( हवंति ) के० होय छे वली ( चक्किबला ) क० चक्रवर्ती तथा

नरदेव ( चउविहसुर ) के० चार निकायना देवतानी गतिथी आ-
वेला होय छे तेमज ( हरि अरिहा ) क० वासुदेव अने अरिहंत
( वेमाणिय ) क० वैमानिक देवगतिना आवेला ( हुति ) के०
होय छे ॥ ३८७ ॥

## हरिणो मणुस्स रयणाइ, हुति नाणुत्तरेहि देवेहि ॥
## जहसंभवमुववाओ, हयगयएगिंदिरयणाणं ॥ ३८८ ॥

अर्थ—वली ( हरिणो ) क० वासुदेव अने चक्रवर्तीना
( मणुस्स रयणाइ ) क० मनुष्यरूप पाच रत्न ते ( अणुत्तरेहिं
देवेहिं ) क० पाच अनुत्तरना चवेला देवो ( न हुंत ) के० न
होय तात्पर्य ए छे के-वासुदेव वैमानिक देवताथी तथा नरकथी
आवेला होय छे तेमा जो वैमानिकथी आव्या होय तो पाच
अनुत्तर विना बीजा स्थानथी आवेला होय छे वली चक्रवर्तीना
चौद रत्न छे, तेमा चक्रादि सात एकेंद्रिय छे अने पुरोहितादि
सात पचेंद्रिय छे. तेमा पण हस्ती अने अश्व ए वे तिर्यंच छे वा-
कीना पाच मनुष्य छे ते पाच रत्न सातमी नरक, तेउकाय, वाउ
काय, तिर्यंच अने मनुष्यगतिथी आवेला न होय, परन्तु जो देवग
तिमाथी आवेला होय तो पाच अनुत्तर विना बीजा देव स्थान
कथी आवेला जाणवा तथा (हयगयएगिंदिरयणाण) के० हस्ती,
अश्व अने एकेंद्रिय सात रत्न ए सर्वनो ( जहसंभवमुववाओ ) के०
यथा संभवे उत्पत्ति जाणवी एटले जे स्थानकथी आवेला तिर्यंच
थता होय ते स्थानकथी आवेला अहिं रत्न पण होय वली नारका
सख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच तथा मनुष्य अने सहस्रात देवलोक
सुधीना देवता एटला स्थानकथी आवेला जीवो हस्ती तथा अश्व
रत्न होय. तेमज सख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच अने मनुष्य तथा

ईशान देवलोक सुधीना देवता एकेंद्रि रत्नो होय ॥ ३८८ ॥

ए उपरना तात्पर्य अर्थवाली प्रण गाथा कहे छे

मडलिय मणुअरयण, अह सत्तम तेउवाउवज्जेहि ॥
वासुदेव मणुअरयणा, अणुत्तरविमाणवज्जेहि ॥३८९॥

अर्थ—( अह सत्तम तेउवाउवज्जेहिं ) के० नीचेनी सातमी नरकपृथ्वी तथा तेउकाय अने वाउकायना जीवाने वर्जी बाकीना जीवो (मडलियमणुअरयण) के० मंडलिक राजा तथा पाच मनुष्य-रत्नपणे उत्पन्न थाय छे वली ( अणुत्तरविमाणवज्जेहिं ) के० पाच अनुत्तर विमानना जीवो वर्जीने बीजा जीवो वासुदेव ( मणुअ रयणा ) के० वासुदेव अने पाच मनुष्यरत्नपणे उत्पन्न थाय छे ॥ ३८९ ॥

तिरित्थि मणु असखाउ–एहि कप्पाओ जासहस्सारा ॥
हयगयरयणुववाओ, नेरइएहि च सव्वेसि ॥ ३९० ॥

अर्थ—( तिरि ) क० हस्ती अने अश्वरूप तिर्यंचरत्न, तथा ( त्थि ) क० स्त्रीरत्न ते ( मणुअसखाउएहिं ) के० सख्याता आयुष्यवाला मनुष्य अने ( कप्पाओ जासहस्सारो ) के० सहस्रार देवलोक सुधीना देवताओ थाय छे ( च ) के० वली ( नेरइएहिं सव्वेसिं ) के० साते नारकीना जीवो ( हयगयरयणुववाओ ) क० अश्व अने हस्ती रत्नपणे उत्पन्न थाय छे ॥ ३९० ॥

एगिदिय रयणाइ, असुरकुमारेहि जावईसाणे ॥
उववज्जति य ˜ ˷ सेसट्ठाणेसु पडिसेहो ॥३९१॥

अर्थ—( य ) के० वळी ( एगिंदियरयणाइ ) के० सात एकेंद्रिय रत्नो ते ( असुरकुमारेहिं जावईसाणे ) के० असुरकुमारथी आरभी ईशान देवलोकना देवता सुधीना जीवो ( नियमा ) के० निश्चेथी ( उववज्जति ) के० उपजे छे ( सेसट्ठाणेसु पडिसेहो ) के० बाकीना जीवो न उपजे. ॥ ३९१ ॥

हव चौद रत्नोना नाम तथा प्रमाण बे गाथाथी कहे छे

वामपमाण चक्क, छत्त दड दुहत्थय चम्मं ॥
बत्तीसगुलखग्गो,सुवण्णकागिणि चउरंगुलिया ॥३९२॥
चउरंगुला दुअंगुल–पिहुलो अ मणिपुरोहियगयतुरया ॥
सेणावइ गाहावइ, वड्ढी त्थी चक्किरयणाइ ॥ ३९३ ॥

अर्थ—( चक्क ) के० चक्ररत्न ( छत्त ) के० छत्ररत्न तथा ( दड ) के० दंडरत्न ए त्रण ( वामपमाण ) के० एक वाम एटले बहाये लांबा करवाथी जे प्रमाण थाय तेवडा होय छे ( चम्म ) के० चर्मरत्न ( दुहत्थय ) के० बे हाथप्रमाण होय छे ( बत्तीसगुल खग्गो ) के० खड्गरत्न बत्रीश अंगुल प्रमाण लांबु होय छे ( सुवण्णकागिणि चउरंगुलिया ) के० सुवर्णमय कागिणिरत्न चार अंगुल प्रमाण लांबु होय छे. ॥ ३९२ ॥ ( चउरंगुला ) के० चार अंगुल लांबु अने ( दुअंगुलपिहुलो ) के० बे अंगुल पहोळु (मणि) के० मणिरत्न होय छे ए मान एकेंद्रिरत्नो चक्रवर्तीना अंगुलथी जाणवा. अने ( पुरोहिय गय तुरया ) के० पुरोहित, हस्ती अश्व, तथा ( सेणावइ गाहावइ वड्ढी त्थी ) के० सेनापति, गाथापति, वार्द्धकी अने स्त्री ए सात पंचेंद्रिरत्न सर्व मळी ( चक्किरयणाइ ) के० चक्रवर्तीना चौद रत्न होय छे ॥ ३९३ ॥

चक्कासिछत्तदंडा आयुधसालाइ हुति चत्तारि ॥
कागिणिचम्ममणिओ, सिरिगेहे चक्किणो हुति ॥३९४॥

अर्थ—( चक्किणो ) के० चक्रवर्तीनी ( आयुधसालाइ ) के० आयुधशालाने विषे ( चक्कासिछत्तदंडा ) के० चक्र खड्ग छत्र अने दंड ए ( चत्तारि ) के० चार रत्नो ( हुंति ) के० उत्पन्न थयेला होय छे तथा ( कागिणि चम्ममणिओ ) के० कागिणि चर्म अने मणि ए त्रण रत्नो ( सिरिगेह हुंति ) के० लक्ष्मीना घरने विषे अर्थात् भंडारने विषे उत्पन्न थयेला होय छे ॥ ३९४ ॥

सेणावइ गाहावइ, पुरोहिअ वड्डइ य नियनयरे ॥
त्थीरयण रायकुले, वियड्ढतल्ले उ करितुरया ॥ ३९५ ॥

अर्थ—( सेणावइ ) के० सेनापति, ( गाहावइ ) के० गाथापति, ( पुरोहिअ ) के० पुरोहित अने ( वड्डइ ) के० वार्द्धकि ए चार रत्नो ( नियनयर ) के० पोताना नगरने विषे उत्पन्न थयेला होय छे ( त्थीरयणं ) के० स्त्रीरत्न ( रायकुले ) के० राजकुलमां उत्पन्न थयेलुं होय छे अने ( करितुरया ) के० हस्ती अने अश्व ए बे रत्न ( वियड्ढतल्ले ) के० वैताढ्य पर्वतने विषे उत्पन्न थयेला होय छे. ॥ ३९५ ॥

चक्किदुग हरिपणग, पणग चक्की य केसवो चक्की ॥
केसव चक्की केसव, दुचक्की केसव चक्की य ॥३९६ ॥

अर्थ—पहेला (चक्किदुग) के० बे चक्रवर्ती, त्यार पछी (हरिपणगं) के० पांच वासुदेव, त्यार पछी ( पणग चक्की ) के० पांच चक्रवर्ती, त्यार पछी (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार पछी (चक्की) के० एक चक्रवर्ती, त्यार पछी ( केसव ) के० एक वासुदेव, त्यार

पछी ( चक्की ) क० एक चक्रवर्ती, त्यार पछी ( केसव ) क० एक वासुदेव, त्यार पछी ( दुचक्की ) क० बे चक्रवर्ती, त्यार पछी, ( केसव ) क० एक वासुदेव, त्यार पछी ( चक्की ) क० एक चक्रवर्ती एम अनुक्रमे थया छे तेनी विशेष समजुती यन्त्रमा जोवी ॥३९६॥

उसहे भरहो अजीए, सगरो मघव सणकुमारो य ॥
धम्मस्स य सतिस्स य,जिणन्तरे चक्कवट्टीयुगं ॥३९७॥
सतिकुथु जिनवरो, अरिह ना चेव चक्कवट्टी य ॥
अरमल्लिअतरे पुण, होइ सुभुमो य कोरवो ॥३९८॥
मुणिसुव्वयंमिजिणे, हुंति दुवे पउमनाम हरिसेणा ॥
नमिनेमि य जयनामा, नेमिपामतरे बभो ॥३९९॥

अर्थ—( उसहे ) क० ऋषभदेवना वखते ( भरहो ) के० भरत चक्रवर्ती अने ( अजीए ) के० अजितनाथना वखते ( सगरा ) क० सगर चक्रवर्ती थयल छे ( य ) के० वली ( मघव ) क० मघवा तथा ( सणकुमारो ) क० सनत्कुमार ( चक्कवट्टीयुग ) के० ए बे चक्रवर्ती ( धम्मस्स य सतिस्स य जिणन्तर ) क० धर्मनाथ अने शातिनाथनी वचमा थया छे ॥ ३९७॥ वली ( सति ) क० शातिनाथ, ( कुथु ) क० कुथुनाथ तथा ( अरिह ) के० अरनाथ (ता) के० ते त्रणे ( जिनवरो ) के० जिनेश्वर तथा (चक्कवट्टी) के० चक्रवर्ती ( चेव )क० निश्चे थया छे. ( पुण ) क० वली अरमल्लि-अतरे क० अरनाथ तथा मल्लीनाथना वचमा ( सुभुमो कोरवो ) क० सुभुम चक्रवर्ती होइ के० थयो छे ॥ ३९८ ॥ तेमज ( मुणि-सुव्वयमिजिण ) क० मुनिसुव्रत प्रभु नमिनाथ एमना वखते ( पउ-मनाम हरिसेणो ) के० महापद्म अने हरिषेण ए (दुवे) के० बे चक्र

अनुक्रमे ( हुति ) के० थया छे तथा ( नमिनेमिय ) के० नमिनाथ अने नेमनाथना वचमा ( जयनामा ) क० जय नामनो चक्रवर्ती थयो छे अने ( नेमिपासनरे ) के० नेमनाथ तथा पार्श्वनाथना वचमा ( बंभो ) क० ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती थयो छे ॥ ३९९ ॥

हवे वासुदेवना सात रत्न कहे छे

चक्क धणुह खग्गो, मणी गया तहय होइ वणमाला ॥
संखो सत्त इमाइं, रयणाइ वासुदेवस्स ॥ ४०० ॥

अर्थ—( चक्क ) के० चक्र, ( धणुह ) के० धनुष्य, ( खग्गो ) के० खड्ग, ( मणी ) क० मणि, ( गया ) क० गदा, ( तहय ) के० तेमज ( वणमाला ) के० वनमाला अने ( संखो ) के० संख-( इमाइं ) के० ए ( सत्तरयणाइ ) के० सात रत्न ( वासुदेवस्स ) क० वासुदेवना ( होइ ) के० होय छे ॥ ४०० ॥

जंबुद्वीपमा उत्कृष्टथी अने जघन्यथी एक वखते केटला रत्न होय ते कहे छे

जंबूदीवे चउरो, सयाइ वीसुत्तराइं उक्कोसं ॥
रयणाइ जहन्न पुण, हुंति विदेहंमि छप्पन्ना ॥ ४०१ ॥

अर्थ—( जंबूदीवे ) के० जंबुद्वीपने विषे (उक्कोसं) क० उत्कृष्टथी ( चउरो सयाइ ) क० चार सो अने ( वीसुत्तराइ ) के० वीश अधिक एटले चारसो वीश ( रयणाइ ) के० रत्नो होय छे (पुण) क० वली ( जहन्न ) के० जघन्यथी ( विदेहंमि ) के० महाविदेह क्षेत्रमा ( छप्पन्ना ) के० छप्पनरत्न हुंति के० होय छे उत्कृष्टा त्रीश चक्रवर्ती होय त्यार चारसो वीश अने जघन्यथी चार होय त्यार छप्पन्न रत्न होय छे. ॥ ४०१ ॥ मनुष्यनु गतिद्वार पूर्ण थयु

हवे मनुष्य मरीने क्यां जाय ? ते आगति द्वार कहे छे.

मख नरा चउसु गईसु, जंति पंचसु वि पढमसंघयणे ॥
इगदुति जा अट्ठसयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ॥४०२॥

अर्थ—( सख ) के० संख्याता आयुष्यवाला ( नरा ) के० मनुष्य ते ( चउसु गईसु ) के० चारे गतिमां ( जंति ) के० जाय छे तेमां जे मनुष्य ( पढमसंघयणे ) के० पहेला संघयणवाला होय ते (पंचसुवि) के० मोक्ष सहित पांचे गतिने विषे पण जाय छे मोक्षमां केटला जाय ? ते कहे छे (ते) के० ते मनुष्य ( इगसमए ) के० एक समयमां जघन्यथी ( इगदुति ) के० एक बे त्रण अने उत्कृष्टथी (जाअट्ठसय) के० यावत् एक सो आठ सुधी ( सिद्धिं ) के० मोक्षमां ( जंति ) के०जाय छे ॥ ४०२ ॥

हवे त्रण वेदआश्री सिद्धिगति कहे छे

वीसित्थि दस नपुंसग, पुरिसट्ठसयं तु एगसमएणं ॥
सिज्झइ गिहिअन्न सलिंग,चउदस अट्ठाहियसयं च॥४०३॥

अर्थ—( इत्थि ) के० स्त्रीवेदे उत्कृष्टथी (वीस) के० वीस मोक्षे जाय. ( नपुंसग ) के० नपुंसकवेदे (दस) के० दश मोक्षे जाय. (तु) के० अने ( पुरिस ) के० पुरुषवेदे उत्कृष्टथी (एगसमएण) के० एक समये ( अट्ठसयं ) के० एकसो आठ ( सिज्झइ ) के० मोक्षे जाय वली ( गिहि ) के० गृहस्थलिंगे ( चउ ) के० चार, ( अन्न ) के० तापसादिकलिंगे ( दस ) के० दश, ( च ) के० अने ( सलिंग ) के० साधुलिंगे (अट्ठाहियसयं) के०एकसो आठ मोक्षे जाय छे ॥ ४०३॥

गुरुलहुमज्झिम दोचउ-अट्ठसयं उड्ढहो तिरियलोए ॥
चउबावीसट्ठसयं, दुसमुद्दे तिन्नि सेसजले ॥ ४०४ ॥

अर्थ—( गुरु ) के० उत्कृष्ट अवगाहनाथी एटले पांचसो धनुष प्रमाण शरीरवाला अने ( लहु ) के० जघन्य अवगाहनाथी एटले बे हाथ प्रमाण शरीरवाला, तथा ( मज्झिम ) के० मध्यम अवगाहनाथी एटले बे हाथथी उपर अने पांचसो धनुष्यथी ओछा शरीर प्रमाण वाला उत्कृष्टथी (दो चउ अट्ठसय) के० बे चार अने एक सो आठ मोक्षने विषे जाय. वली ( उड्ढो तिरीयलोए ) के० उर्द्धलोके अधोलोके अने तिर्च्छालोके ( चउ बावीसट्ठसय ) के० चार बावीस अने एक सो आठ अनुक्रमे उत्कृष्टथी मोक्षे जाय अहिं उर्द्धलोक मेरु चूलिका ते नन्दनवन जाणवु अधोलोक ते अधोग्राम विगेरे जाणवा अने तिर्च्छो लोक प्रसिद्ध छे वली ( समुद्दे ) के० समुद्रमा ( दु ) के० बे तथा ( सेसजले ) के० गंगादिक नदीना प्रमुख द्रहना जल विगेरेमा ( तिन्नि ) के० त्रण उत्कृष्टथी मोक्षे जाय छे ॥ ४०४ ॥

अधोग्राम क्यां छे ? ते कहे छे

जोयणसयदसगते, समधरणीए अहे अहोगामा ॥
बायालीससहस्सेहि, गतु मेरुस्स पच्छिमओ ॥४०५॥

अर्थ—( मेरुस्स पच्छिमओ ) के० मेरुपर्वतनी पश्चिम दिशा तरफ ( बायालीससहस्सेहिं गंतु ) के० बेतालीस हजार योजन जइये त्यार ( समधरणीए अह ) के० समभूतला पृथ्वीथी नीचे ( जोयणसयदसगते ) के० एक हजार योजनने आंतरे ते ( अहो गामा ) के० अधोग्राम छे ॥ ४०५ ॥

हवे चार गतिमांहथी आवेला केटला केटला जीवो मोक्षे जाय ते कहे छे

नरयतिरिया गया दस, नरदेव गईओ वीस अट्ठसय ॥
दस रयणा सकर वा–लुयाओ चउ पंक भूदगओ ॥४०६॥

अर्थ—( नरयतिरियागया ) क० नरक अने तिर्यंच गतिथी नीकलीने मनुष्यगति पामेला ( दस ) के० दस जीवो उत्कृष्टथी एक समये मोक्ष जाय, ( नरदेव ) के० मनुष्य मरीने फरी मनुष्य थयेला अथवा देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला जीवो ( वीस अट्ठसय ) क० वीस अने एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. अर्थात् मनुष्य मरीने मनुष्य थयेला वीस, अने देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय छे वली ( रयणा सक्कर-वालुयाओ ) क० रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा ए त्रण नरकथी नीकलीने मनुष्य थयेला जीवो उत्कृष्टथी एक समये (दस) के० दश मोक्षे जाय, तथा ( पंकभूदगओ ) के० पंकप्रभा पृथ्वी-काय अने अप्कायथी नीकलीने मनुष्य थयेला जीवो ( चउ ) क० चार मोक्ष जाय छे. ॥ ४०६ ॥

छच वणस्सइ दस तिरि,तिरित्थि दस मणुय वीस नारीओ॥
असुराइ वतरा दस, पण तद्देवी उ पत्तेय ॥ ४०७ ॥
जोइ दस देवि वीसं, विमाणियट्ठसय वीस देवीओ ॥

अर्थ—( वणस्सइ ) क० वनस्पतिकायथकी मनुष्य थयेला ( छच ) क० छ, ( तिरि ) के० पचेंद्रिय तिर्यंचथी मनुष्य थयेला ( दस ) के० दश, ( तिरित्थि ) के० तिर्यंचनी स्त्रीथी मनुष्य गति पामेला जीवो पण दश मोक्ष जाय ( मणुय दस ) के० मनुष्य-गतिथी फरी मनुष्य थयेला दस के० दश अने ( नारीओ ) के० मनुष्यनी स्त्रीथी फरी मनुष्य गति पामेला ( वीस ) के० वीश जीवो मोक्षे जाय छे. वली ( असुराइ ) के० असुरादि दशनिकायथी अने ( वतरा ) क० व्यंतरनी सर्व जातिथी मनुष्य थयेला जीवो ( दस ) के० दश मोक्षे जाय, तेमज ( तद्देवीउ ) के० असुरादिक

दश निकायनी अने व्यनरदेवोनी देवीओथी मनुष्य थयेला (पत्तेय) के० दरेक ( पण ) के० पांच पांच मोक्ष जाय ॥ ४०७ ॥ (जोइ) के० ज्योतपी देवोथी मनुष्य थयेला जीवो ( दस ) के० दश मोक्षे जाय, अने ( देवि ) के० ज्योतपिनी देवीओथी मनुष्य थयेला जीवो ( वीस ) के० वीश मोक्षे जाय. वली ( वेमाणियद्वसय ) के० वैमानिक देवथकी मनुष्य थयेला जीवो एकसो आठ तथा ( देवीओ ) के० वैमानिक देवीथी मनुष्य थयेला जीवो ( वीस ) के० वीश मोक्षे जाय ॥

हवे बडभाथी सिद्धि कहे छे, तथा सिद्धिगतिनो उपपात विरहकाल कहे छे

तह पुव्वेएहिंतो, पुरिसो होऊण अट्ठसयं ॥ ४०८ ॥
सेसट्ठभगएसु, दस दस सिज्झंति समएण ॥
विरहो छमास गुरुओ,लहु समओ चवणमिह नत्थि॥४०९॥

अर्थ—( तह ) के० तथा ( पुव्वेएहिंतो ) के० पुरुषथी फरी ( पुरिसो ) के० पुरुष ( होऊण ) के० थया होय तो एक समये उत्कृष्टथी ( अट्ठसय ) के० एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. तात्पर्य ए छे जे-पुरुषवेदवालो देव मनुष्य अथवा तिर्यंचथी नीकलेलो कोई जीव पुरुष थाय कोई स्त्री थाय अने कोइ नपुंसक पण थाय एवीज रीते स्त्री वेदवाली देवी विगेरेथी नीकलेलो कोइ जीव स्त्री थाय कोई पुरुष थाय अने कोइ नपुंसक पण थाय एमज नपुंसक वेदवाला नारकी विगेरेथी निकलेलो कोइ जीव नपुंसक थाय कोइ स्त्री थाय अने कोइ पुरुष पण थाय एम ए नव भागा माथी पहेला भागावाला एटले पुरुष वेदथी पुरुषवेदे थयेला मनुष्यो

अर्थ—( नरयतिरियागया ) के० नरक अने तिर्यंच गतिथी नीकळीने मनुष्यगति पामेला ( दस ) के० दस जीवो उत्कृष्टथी एक समये मोक्षे जाय, ( नरदेव ) के० मनुष्य मरीने फरी मनुष्य थयेला अथवा देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला जीवो ( वीस अट्ठसय ) के० वीस अने एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. अर्थात् मनुष्य मरीने मनुष्य थयेला वीस, अने देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय छे वळी ( रयणा सक्कर-वालुयाओ ) के० रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा ए त्रण नरकथी नीकळीने मनुष्य थयला जीवो उत्कृष्टथी एक समये (दस) के० दश मोक्षे जाय, तथा ( पंकभूदगओ ) के० पंकप्रभा पृथ्वी-काय अने अप्कायथी नीकळीने मनुष्य थयेला जीवो ( चउ ) के० चार मोक्षे जाय छे ॥ ४०६ ॥

छच्च वणस्सइ दस तिरि, तिरित्थि दस मणुय वीस नारीओ॥
असुराइ वंतरा दस, पण तद्देवी उ पत्तेय ॥ ४०७ ॥
जोइ दस देवि वीस, विमाणियट्ठसय वीस देवीओ ॥

अर्थ—( वणस्सइ ) के० वनस्पतिकायथकी मनुष्य थयेला ( छच्च ) के० छ, ( तिरि ) के० पचेंद्रिय तिर्यंचथी मनुष्य थयेला ( दस ) के० दश, ( तिरित्थि ) के० तिर्यंचनी स्त्रीथी मनुष्य गति पामेला जीवो पण दश मोक्ष जाय ( मणुय दस ) के० मनुष्य-गतिथी फरी मनुष्य थयेला दस के० दस अने ( नारीओ ) के० मनुष्यनी स्त्रीथी फरी मनुष्य गति पामेला ( वीस ) के० वीश जीवो मोक्षे जाय छे. वळी ( असुराइ ) के० असुरादि दशनिकायथी अने ( वंतरा ) के० व्यंतरनी सर्व जातिथी मनुष्य थयेला जीवा ( दस ) के० दश मोक्ष जाय, तेमज ( तद्देवीउ ) के० असुरादिक

नश निरायनी अने व्यनरदेवोनी देवीओथी मनुष्य थयेला (पत्तेय)
के० प्रत्येक ( पण ) के० पाच पाच मोक्षे जाय ॥ ४०७ ॥ (जोइ)
के० ज्योतषी देवोथी मनुष्य थयेला जीवो ( दस ) के० दश मोक्षे
जाय, अने ( देवि ) के० ज्योतषिनी देवीओथी मनुष्य थयेला
जीवो ( वीसं ) के० वीश मोक्षे जाय. वळी ( वेमाणियट्टसय ) के०
वैमानिक देवथकी मनुष्य थयेला जीवो एकसो आठ तथा ( देवी-
ओ ) के० वैमानिक देवीथी मनुष्य थयेला जीवो ( वीस ) के०
वीश मोक्षे जाय ॥

हवे वदभाश्री सिद्धि कहे छे, तथा सिद्धिगतिनो उपपात
विरहकाल कहे छे

तह पुव्वेएहितो, पुरिसो होऊण अट्ठसयं ॥ ४०८ ॥
सेसट्ठभगएसु, दस दस सिज्झंति समएणं ॥
विरहो छमास गुरुओ,लहु समओ चवणमिह नत्थि॥४०९॥

अर्थ—( तह ) के० तथा ( पुव्वेएहिंतो ) के० पुरुषथी फरी
( पुरिसो ) के० पुरुष ( होउण ) के० थया होय तो एक समये
उत्कृष्टथी ( अट्ठसय ) के० एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय.
तात्पर्य ए छे जे–पुरुषवेदवाळो देव मनुष्य अथवा तिर्यचथी नीक-
ळेलो कोई जीव पुरुष थाय कोई स्त्री थाय अने कोइ नपुंसक पण
थाय एवीज रीते स्त्री वेदवाळी देवी विगेरेथी नीकळेलो कोइ
जीव स्त्री थाय कोई पुरुष थाय अने कोइ नपुसक पण थाय एमज
नपुसक वेदवाळा नारकी विगेरेथी निकळेलो कोइ जीव नपुंसक
थाय कोइ स्त्री थाय अने कोइ पुरुष पण थाय एम ए नव भागा
माथी पहेला भागावाळा [illegible] वेदथी पुरुषवेदे थयेला मनुष्यो

अर्थ—( नरयतिरियागया ) क० नरक अने तिर्यंच गतिथी नीकळीने मनुष्यगति पामेला ( दस ) के० दस जीवो उत्कृष्टथी एक समये मोक्षे जाय, ( नरदेव ) क० मनुष्य मरीने फरी मनुष्य थयेला अथवा देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला जीवो ( वीस अट्ठसय ) के० वीस अने एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. अर्थात् मनुष्य मरीने मनुष्य थयेला वीस, अने देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय छे वली ( रयणा सक्करवालुयाओ ) क० रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा ए त्रण नरकथी नीकळीने मनुष्य थयेला जीवो उत्कृष्टथी एक समये (दस) के० दश मोक्षे जाय, तथा ( पकभूदगओ ) क० पङ्कप्रभा पृथ्वीकाय अने अप्कायथी नीकळीने मनुष्य थयेला जीवो ( चउ ) क० चार मोक्षे जाय छे. ॥ ४०६ ॥

छव्व वणस्सइ दस तिरि, तिरित्थि दस मणुय वीस नारीओ॥
असुराइ वतरा दस, पण तद्देवी उ पत्तेय ॥ ४०७ ॥
जोइ दस देवि वीस, विमाणियट्ठसय वीस देवीओ ॥

अर्थ—( वणस्सइ ) के० वनस्पतिकायथकी मनुष्य थयेला ( छव्व ) क० छ, ( तिरि ) क० पचेंद्रिय तिर्यंचथी मनुष्य थयेला ( दस ) के० दस, ( तिरित्थि ) के० तिर्यंचनी स्त्रीथी मनुष्य गति पामेला जीवो पण दश मोक्ष जाय ( मणुय दस ) के० मनुष्यगतिथी फरी मनुष्य थयेला दस क० दश अने ( नारीओ ) के० मनुष्यनी स्त्रीथी फरी मनुष्य गति पामेला ( वीस ) के० वीश जीवो मोक्षे जाय छे. वली ( असुराइ ) के० असुरादि दशनिकायथी अने ( वनरा ) के० व्यन्तरनी सर्व जातिथी मनुष्य थयेला जीवा ( दस ) के० दश मोक्षे जाय, तेमज ( तद्देवीउ ) के० असुरादिक

त्श निरायनी अने व्यनरदेवोनी देवीओथी मनुष्य थयेला (पत्तेय) के० दरेक ( पण ) के० पाच पाच मोक्ष जाय ॥ ४०७ ॥ (जोइ) क० ज्योतषी देवोथी मनुष्य थयेला जीवो ( दस ) के० दश मोक्षे जाय, अने ( देवि ) के० ज्योतिषिनी देवीओथी मनुष्य थयेला जीवो ( वीस ) के० वीश मोक्षे जाय. वली ( वेमाणियट्ठसय ) के० वैमानिक देवथकी मनुष्य थयेला जीवो एकसो आठ तथा ( देवीओ ) क० वैमानिक देवीथी मनुष्य थयेला जीवो ( वीस ) के० वीश मोक्षे जाय ॥

हवे वेदआश्री सिद्धि कहे छे, तथा सिद्धिगतिनो उपपात विरहकाल कहे छे

तह पुव्वेएहिंतो, पुरिसो होऊण अट्ठसयं ॥ ४०८ ॥
सेसट्ठभगएसु, दस दस सिज्झति समएण ॥
विरहो छमास गुरुओ,लहु समओ चवणमिह नत्थि॥४०९॥

अर्थ—( तह ) के० तथा ( पुव्वएहिंतो ) के० पुरुषथी फरी ( पुरिसो ) के० पुरुष ( होऊण ) के० थया होय तो एक समये उत्कृष्टथी ( अट्ठसय ) के० एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. तात्पर्य ए छे जे–पुरुषवेदवालो देव मनुष्य अथवा तिर्यंचथी नीकलेलो कोई जीव पुरुष थाय कोई स्त्री थाय अने कोइ नपुंसक पण थाय एवीज रीते स्त्री वेदवाली देवी विगेरेथी नीकलेलो कोइ जीव स्त्री थाय कोई पुरुष थाय अने कोइ नपुसक पण थाय एमज नपुसक वेदवाला नारकी विगेरेथी निकलेलो कोइ जीव नपुंसक थाय कोइ स्त्री थाय अने कोइ पुरुष पण थाय एम ए नव भागा मांथी पहेला भागावाला एटले पुरुष वेदथी पुरुषवेदे थयेला मनुष्यो

अर्थ—( नरयतिरियागया ) के० नरक अने तिर्यंच गतिथी नीकळीने मनुष्यगति पामेला ( दस ) के० दस जीवो उत्कृष्टथी एक समये मोक्षे जाय, ( नरदेव ) के० मनुष्य मरीने फरी मनुष्य थयेला अथवा देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला जीवो ( वीस अट्ठसय ) के० वीस अने एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. अर्थात् मनुष्य मरीने मनुष्य थयेला वीस, अने देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय छे वळी ( रयणा सक्करवालुयाओ ) के० रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा ए त्रण नरकथी नीकळीने मनुष्य थयेला जीवो उत्कृष्टथी एक समये (दस) के० दश मोक्षे जाय, तथा ( पंकभूदगओ ) के० पंकप्रभा पृथ्वीकाय अने अप्कायथी नीकळीने मनुष्य थयेला जीवो ( चउ ) के० चार मोक्षे जाय छे. ॥ ४०६ ॥

छच्च वणस्सइ दस तिरि, तिरित्थि दस मणुय वीस नारीओ॥
असुराइ वंतरा दस, पण तद्देवी उ पत्तेयं ॥ ४०७ ॥
जोइ दस देवि वीसं, विमाणियट्ठसय वीस देवीओ ॥

अर्थ—( वणस्सइ ) के० वनस्पतिकायथकी मनुष्य थयेला ( छच्च ) के० छ, ( तिरि ) के० पंचेंद्रिय तिर्यंचथी मनुष्य थयेला ( दस ) के० दश, ( तिरित्थि ) के० तिर्यंचनी स्त्रीथी मनुष्य गति पामेला जीवो पण दश मोक्ष जाय ( मणुय दस ) के० मनुष्यगतिथी फरी मनुष्य थयेला दस के० दश अने ( नारीओ ) के० मनुष्यनी स्त्रीथी फरी मनुष्य गति पामेला ( वीस ) के० वीश जीवो मोक्षे जाय छे. वळी ( असुराइ ) के० असुरादि दशनिकायथी अने ( वंतरा ) के० व्यंतरनी सर्व जातिथी मनुष्य थयेला जीवो ( दस ) के० दश मोक्षे जाय, तेमज ( तद्देवीउ ) के० असुरादिक

दश निकायनी अने व्यंतरदेवोनी देवीओथी मनुष्य थयेला (पत्तेय) के० दरेक ( पण ) के० पांच पांच मोक्ष जाय ॥ ४०७ ॥ (जोइ) के० ज्योतषी देवोथी मनुष्य थयेला जीवो ( दस ) के० दश मोक्षे जाय, अने ( देवि ) के० ज्योतषिनी देवीओथी मनुष्य थयेला जीवो ( वीसं ) के० वीश मोक्षे जाय. वली ( वेमाणियट्ठसय ) के० वैमानिक देवथकी मनुष्य थयेला जीवो एकसो आठ तथा ( देवीओ ) के० वैमानिक देवीथी मनुष्य थयेला जीवो ( वीस ) के० वीश मोक्षे जाय ॥

हवे पदआश्री सिद्धि कहे छे, तथा सिद्धिगतिनो उपपात विरहकाल कहे छे

तह पुव्वेएहिंतो, पुरिसो होऊण अट्ठसय ॥ ४०८ ॥
सेसट्ठभगएसु, दस दस सिज्झंति समएणं ॥
विरहो छमास गुरुओ,लहु समओ चवणमिह नत्थि॥४०९॥

अर्थ—( तह ) के० तथा ( पुव्वेएहिंतो ) के० पुरुषथी फरी ( पुरिसो ) के० पुरुष ( होऊण ) के० थया होय तो एक समये उत्कृष्टथी ( अट्ठसय ) के० एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. तात्पर्य ए छे जे-पुरुषवेदवालो देव मनुष्य अथवा तिर्यंचथी नीकलेलो कोई जीव पुरुष थाय कोई स्त्री थाय अने कोइ नपुंसक पण थाय एवीज रीते स्त्री वेदवाली देवी विगेरेथी नीकलेलो कोइ जीव स्त्री थाय कोई पुरुष थाय अने कोइ नपुंसक पण थाय एमज नपुंसक वेदवाला नारकी विगेरेथी निकलेलो कोइ जीव नपुंसक थाय कोइ स्त्री थाय अने कोइ पुरुष पण थाय एम ए नव भागा माथी पहेला भागावाला एटले पुरुष वेदथी पुरुषवेदे थयेला मनुष्यो

एक समये एक सो आठ मोक्षे जाय ॥ ४०८ ॥ अने ( सेसट्ठ-भागएसु ) क० बाकीना आठ भागामा तो ( समएण ) क० एक समयमा ( दस दस सिज्झनि ) के० दश दश जीवो मोक्ष पामे छे हवे पाछला बे पदे करीने सिद्ध गतिनो उपपात विरहकाल कहे छे मोक्ष जवानो ( गुरुओ ) क० उत्कृष्टो ( विरहो ) के० विरहकाल ( छमास ) के० छमहिनानो जाणवो अने ( लहु ) के० जघन्य विरहकाल ( समओ ) क० एक समयनो जाणवो, परन्तु ( इह ) क० ए मोक्षथकी ( चवण ) क० चववु ( नत्थि ) क० नथी थतु अर्थात् मोक्षे गयेलाने फरी ससारमा आववु नथी. ॥ ४०९ ॥

अड सग छ पच चउ, तिन्नि दुन्नि इक्कोय सिज्झमाणेसु ॥
बत्तीसाइसुसमया निरतर अतर उवरि ॥ ४१० ॥
बत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरी य बोधव्वा ॥
चुलसीई छन्नउइ, दुरहिय मट्ठुत्तरसय च ॥ ४११ ॥

अर्थ—( बत्तीसाइसु सिज्झमाणेसु )के० बत्रीसने आदि दइने मोक्षे जता जीवोने ( अड सग छ पच चउ तिन्नि दुन्नि इक्कोय ) के० अनुक्रमे आठ सात ■ पाच चार त्रण बे अने एक ( समया ) के० समय ( निरतर )क० आतरा विना मोक्षे जाय एथी (उवरि) के० उपर ( अंतर ) के० अतरपडे भावार्थ ए छे के-एक समये एक बेथी आरभी बत्रीस सुधी मोक्षे जाय तो आठ समय सुधी मोक्षे जाय, पछी अतर पडे ॥ ४१० ॥ ते बत्रीश विगेरेनी सख्या कहे छे ( बत्तीसा ) क० बत्रीश, ( अडयाला ) के० अडतालीश, ( सट्ठी ) के० साठ, ( बावत्तरी ) के० बहोतेर, ( चुलसीइ ] के० चोराशी, ( छन्नउइ ) के० छनु, ( दुरहिय ) क० एक सो बे अने

( अहुत्तरसय च ) के० एक सो आठ एम अनुक्रमे जाणवा भावार्थ ए छे के–एकथी आरभी बत्रीस जीवो सुधी समये समये मोक्षे जाय तो आठ समय सुधी जाय. पछी एकादि समयनु अतर पडे. तेत्रीशथी आरभी अडतालीस सुधी समये समये मोक्षे जाय तो सात समय सुधी जाय. पछी अतर पडे ओगणपचासथी आरभी साठ सुधी समये समये मोक्षे जाय तो छ समय सुधी जाय, पछी अतर पडे एकसठथी आरभी बहोतर सुधी समये समये मोक्षे जाय तो पाच समय सुधी जाय, पछी अतर पडे तहुंतेरथी आरभी चोरासी सुधी समये समये मोक्षे जाय तो चार समय सुधी पछी अतर पडे पचाशीथी आरभी छनु सुधी समये समये मोक्षे जाय तो त्रण समय सुधी, पछी अतर पडे सत्ताणुथी आरभी एक सो ने सुधी समये समये मोक्षे जाय तो बे समय सुधी, अने एक सो त्रणथी आरभी एक सो आठ सुधी मोक्षे जाय तो एकज समये मोक्षे जाय बीजे समये अतर पडे.॥४११॥

हव सिद्धक्षेत्रनु स्वरूप कहे छे

पणयाल लक्ख जोयण–विक्खभा सिद्धिसिल फलिहविमला ॥
तदुवरिगजोयणते, लोगतो तत्थ सिद्धठिई ॥ ४१२ ॥

अर्थ—सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन उपर ( पणयाललक्ख जोयणविक्खभा )के०पीस्तालीश लाख योजन विस्तारवाली अने (फलिहविमला) के० स्फटिकरत्न समान निर्मल (सिद्धि सिल) के० सिद्धशीला छे ( तदुवरिगजोयणते ) के०ते सिद्धशीलाना उपर एक योजनने अते ( लोगतो ) के० लोकात छे. ( तत्थ ) के० त्या ( सिद्धठिइ ) के० सिद्धनो निवास छे ॥ ४१२ ॥

**सण्हाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्करा य खरपुढवी ॥**
**इग वार चउद सोलस,ठ्ठारस बावीस सम सहस्सा॥४२०॥**

अर्थ—( सण्हाय ) के० मारवाड देशनी सुकुमाल माटीनी ( इग ) के० एक हजार वर्षनी, ( सुद्ध ) क० गोपीचन्दनादिक सुकुमाल माटीनी ( बार ) के० बार हजार वर्षनी, ( वालुय ) के० नदी प्रमुख वेलुनी (चउद) के० चउद हजार वर्षनी, (मणोसिला) के० मनसीलनी ( सोलस ) क० सोल हजार वर्षनी, ( सकराय ) के० शर्करा हरताल सुरमादिकनी ( अठ्ठारस ) के० अढार हजार वर्षनी, अने ( खरपुढवी ) क० शील्ला पाषाण तथा रत्न विगेरेनी ( बावीस सममहस्सा ) के० बावीश हजार वर्षनी उत्कृष्ट स्थिति जाणवी ॥ ४२० ॥

हवे पंचेंद्रितिर्यंचना जूदा जूदा भेदनी स्थिति कहे छे

**गब्भ भुय जलयरोभय,गब्भोरग पुव्वकोडि उक्कोसा ॥**
**गब्भचउप्पय पक्खिसु,तिपलिय पलिया असखसो॥४२१॥**

अर्थ—( गब्भ ) के० गर्भज एवा ( भुय ) के० भुजपरिसर्प नोलीया विगेरे तथा ( जलयरोभय ) क० गर्भज अने समूर्छिम एवा जल्चर, वली ( गब्भोरग ) के० गर्भज उरपरिसर्प ए सर्वेनी ( उक्कोसा ) क० उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति ( पुवकोडि ) क० एक पूर्व कोडी वर्षनी जाणवी तथा ( गब्भ चउप्पय ) क० गर्भजचतुष्पद ते गाय भेंस विगेरनी ( तिपल्यि ) के० त्रण पल्योपमनी, अने ( पक्खिसु ) के० मोर सारस विगेरे पक्षिनी ( पलिया असखसो ) क० पल्यो[illegible]ख्यातमा भागनी आयुष्य स्थिति जाणवी ॥ ४२१ ॥

हवे एक पूर्वनु प्रमाण कहे छे

पुव्वस्स उ परिमाण,सय्यरि खलु वास कोडिलक्खाओ॥
छप्पन्न च सहस्सा, बोधव्वा वासकोडीण ॥ ४२२ ॥

अर्थ—चोरासी लाख वर्षनु एक पूर्वांग थाय अने ते पूर्वांगने बीजा पूर्वांग साथे गुणाकार करीये त्यारे ( पुव्वस्स ) के० एक पूर्वनु (परिमाण) क०प्रमाण (बोधव्वा ) क० जाणवु ते एक पूर्वमा केटला वर्ष थाय ? तो कहे छे के-( सय्यरिवास कोडिलक्खाओ ) क० सीत्तेर लाख क्रोड वर्ष अने ( छप्पन्न सहस्सा वासकोडीण ) क० छप्पन्न हजार क्रोड वर्ष ( ७०५६०००००००००० ) एटली सख्याना वर्षे एक पूर्व प्रमाण थाय ॥ ४२२ ॥

हवे समूर्च्छिम पचेंद्रिय थलचर विगेरेनी उत्कृष्ट आयुस्थिति कहे छे

समुच्छिपर्णिदि थलखयर,उरगभुयगाण जिट्ठ ठिइ कममो॥
वास सहस्सा चुलसी,बिसत्तरि तिपण्ण बायाला ॥४२३॥

अर्थ—( समुच्छि ) क० समूर्च्छिम एवा ( पणिंदिथल खयरउरगभुयगाण ) के० पचेंद्रि थल्चर ते गाय भेंस, विगेरे, खेचर ते बगला चकला विगेरे, उरपरिसर्प ते अजगर विगेरे, अने भुजपरिसर्प ते नोलीया विगेरे. ते सर्व जीवोनी ( कमसो ) क० अनुक्रमे करीने ( जिट्ठ ठिइ ) क० उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति ( वाससहस्सा चुलसी ) क० चोराशी हजार वर्ष, ( बिसत्तरि ) क० बहोतेर हजार वर्ष, ( तिपण्ण ) के० त्रेपन हजार वर्ष अने ( बायाला ) के० बेतालीस हजार वर्षनी, एटले समूर्च्छिम पचेंद्रिय गाय विगेरेनी

चोराशी हजार वर्षनी, सम्मूर्च्छिम पक्षीनी बहोतेर हजार वर्षनी, सम्मूर्च्छिम सर्प विगेरेना त्रेपन हजार वर्षनी, अने सम्मूर्च्छिम नोलीया विगेरेनी बेताली हजार वर्षनी उत्कृष्टी आयु स्थिति होय छे. ॥ ४२३ ॥

हव ए जीवोनी कायस्थिति कहे छे

एमा पुढवाईण, भवट्ठिई सपयं तु कायठिई ॥
चउएगिंदिसु णेया, उसप्पिणीओ असंखिज्जा ॥४२४॥

अर्थ—( पुढवाईण ) के० पृथ्वीकायादिक जीवोनी (एसा) के० ए पूर्वे कहेली आयुष्यरूप ( भवट्ठिइ ) के० भवस्थिति कही ( तु ) के० वली एज जीवोनी ( सपय ) के० हवणा ( कायठिई ) के० फरी फरी मरण पामी तेजकायामां उपजे ते कायस्थिति कहे छे ( चउ एगिंदिसु ) के० वनस्पति विना बाकीना पृथ्वीकायादि चार एकेंद्रिजीवोनी उत्कृष्टी कायस्थिति (असंखिज्जा उसप्पिणीओ) के० असंख्याता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालनी ( णेया ) के० जाणवी. ॥ दश कोडा कोडी सागरोपम एक उत्सर्पिणी अने दश कोडा कोडी सागरोपमे एक अवसर्पिणी थाय छे ए कालमान भरत तथा एरवतनी अपेक्षाथी जाणवु ए काल प्रमाणथी काय स्थिति कही, क्षेत्रथी तो जेटला चउदराजना आकाश प्रदेश छे तेटली संख्याए असंख्याता लोक कल्पीने ते लोकना एक एक प्रदेशे समय समय काढता असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी थाय छे. ॥ ४२४ ॥

ता उ वणमि अणंता, संखिज्जा वाससहस्स विगलेसु ॥
पंचिदितिरिनरेसु, सत्तट्ठ भवा उ उक्कोसा ॥ ४२५ ॥

अर्थ—( वणवि ) के० वनस्पतिकायने विषे ( ताउ ) के० ते पूर्व कहेली उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी ( अणना ) क० अनंता कार्यस्थिति काले करी जाणवी अने क्षेत्रथकी अनंता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण असंख्याता पुद्गल परावर्त होय

आ कायस्थिति व्यवहारराशी जीवने समजे छे. कारण व्यवहारराशी जीव मरण पामी निगोदमा जाय तो अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल रही पछी व्यवहार राशीमा आवे छे माटे.

वली ( विगलेसु ) के० विकलेंद्रियने ( संखिज्जा वाससहस्स ) क० संख्याता वर्ष सहस्रनी कायस्थिति जाणवी तथा ( पंचिंदितिरिनरेसु ) क० पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यने विषे (उक्कोसा) क० उत्कृष्टथी ( सत्तट्ठभवा ) क० सात अथवा आठ भव सुधी होय छे एटले संख्याते आयुषे सात भव करे अने आठमे भवे युगलिक थाय तो आठ भवे त्रण पल्योपम तथा सात पूर्व कोटी उत्कृष्टी जाणवी ॥ ४२५ ॥

हवे अर्द्धगाथा वडे जघन्यथी भवस्थिति अने कायस्थिति कहेछे

सव्वेसिंपि जहन्ना, अंतमुहुत्त भवेय काएय ॥

अर्थ—( सव्वेसिं ) क० पूर्वे कहेला पृथ्वीकायादि सर्वे जीवोनी ( जहन्ना ) के० जघन्यथी ( भवय काएय ) के० भवस्थिति अने कायस्थिति ( अंतमुहुत्त ) क० एक अंतमुहूर्त प्रमाण होय. ॥

हवे तिर्यंचनु अवगाहना द्वार कहे छे

जोयणसहस्समहियं, एगिंदियदेहमुक्कोस ॥ ४२६ ॥
बितिचउरिंदिसरीरं, बारस जोयण तिकोस चउकोस ॥
जोयणसहस्स पणिंदिय,ओहे वुच्छं विसेस तु॥४२७॥

अर्थ—( एगिंन्दियदेह ) के० एकेंद्रिय जीवोनु शरीर ( उक्कोस ) के० उत्कृष्टथी ( जोयणसहस्समहिय ) के०एक हजार योजनथी अधिक होय छे ॥ ४२६ ॥ वलि ( बि ) क० बेंद्रीय शखादिक जीवोनु शरीर ( बारस जोयण ) के० बार योजननु, ( ति ) क० तेंद्री कीडी मकोडाआदिक जीवोनु शरीर ( तिकोस ) के० त्रण गाउनु, ( चउरिंदिसरीर ) के० चउरिंद्रिजीवोनु शरीर (चउकोस) क० चार गाउनु होय छे अने ( पणिंदिय ) के० पचेंद्रिय जीवोनु शरीर ( जोयणसहस्स ) क० एक हजार योजननु उत्कृष्टथी होय छे, ए ( ओहे वुत्त ) के० सामान्यथी शरीरप्रमाण कह्यु. ( विसेस तु ) के० विशेषथी शरीरप्रमाण आगलनी गाथाओथी कहेछे ॥४२७॥

अंगुलअसंखभागो, सुहमनिगोओ असंखगुण वाऊ ॥
तो अगणि तओ आऊ,तत्तो सुहमा भवे पुढवी ॥४२८॥
तो बायर वाउगणी, आऊ पुढवी निगोय अणुकमसो॥
पत्तेयवणसरीरं, अहियं जोयणसहस्सं तु ॥ ४२९ ॥

अर्थ—वनस्पतिकायना साधारण अने प्रत्येक एवा बे भेद छे तेमा साधारण शब्दथी निगोद अनतकाय कहेवाय छे ते ( सुहमनिगोओ ) के० सूक्ष्मनिगोदीयानु शरीर ( अंगुलअसंखभागो ) के० आगुलना असख्यातमा भागनु होय छे, तेथी ( असंखगुणवाऊ ) के० असख्यातगणु सूक्ष्म वायुकायनु जाणवु ( तो ) क० तेथी असख्यातगणु ( अगणि ) क० सूक्ष्म अग्निकायनु शरीर जाणवु. ( तओ ) के० तेथी असख्यातगणु ( आऊ ) के० सूक्ष्म अप्कायनु जाणवु अने ( तत्तो ) के० तेथी असख्यातगणु ( सुहमा पुढवी भवे ) क० सूक्ष्म पृथ्वीकायनु होय एम जाणवु ॥ ४२८ ॥

(तो) क० तेथी असंख्यातगणु (वायर वाउ) के० बादर वायुकायनु होय, तेथी असंख्यातगणु (अगणी) क० बादर अग्निकायनु शरीर जाणवु, तेथी असंख्यातगणु बादर (आउ) के० बादर अप्कायनु शरीर जाणवु, तेथी असंख्यातगणु (पुढवी) क० बादर पृथ्वीकायनु शरीर जाणवु, अने तेथी असंख्यातगणु (निगोय) के० बादर निगोदनु शरीर जाणवु एम ए दशे शरीर एक बीजाथी असंख्यगुणा छे तो पण ते दरेक शरीर आंगुलना असंख्यातमा भागनु जाणवु (तु) के० वली (पत्तेयवणसरीर) क० प्रत्येक वनस्पतिकायनु शरीर (अहिय जोयण सहस्स) क० एक हजार योजनथी अधिक होय छे ॥ ४२९ ॥

अहिं कोइने शंका थाय के–पूर्वे कहेला जीवोना शरीर उत्सेधांगुलप्रमाणथी कह्या छे अने समुद्र द्रह विगेरेनु प्रमाण प्रमाणांगुलथी छे तो एक हजार योजनना उंडा द्रहादिकमा पद्मनाल विगेरेनु शरीर केम घटे? त्या ग्रंथकार उत्तर कहे छे के–

उस्सेहंगुलजोयण–सहस्समाणे जलासए नेयं ॥
तं वल्लिपउमपमुहं, अओ परं पुढविरूवं तु ॥ ४३० ॥

अर्थ—(उस्सेहंगुल) क० उत्सेधांगुलेकरी (जोयणसहस्समाणे) क० एक हजार योजनना प्रमाणवाला (जलासए) के० जलाशय (नेयं) क० जाणवा (तं) के० ते (वल्लिपउमपमुहं) क० वल तथा कमल प्रमुख एक हजार योजनथी अधिक होय छे (अओ परं) के० एथी अधिक उंडा जलाशयोमा घणा मोटा कमलो विगेरे ते (पुढविरूवं) क० पृथ्वीकायरूप जाणवा ॥४३०॥

जोयणसहस्समहियं, वणस्सइदेहमाणमुद्दिट्ठं ॥
तं च किल समुद्दगयं, जलरुहनालं हवइ नन्नं ॥४३१॥

अर्थ—( जोयणसहस्समहियं ) के० एक हजार योजनथी अधिक ( वणस्सइदेहमाण ) के० प्रत्येक वनस्पतिकायनुं शरीरप्रमाण ( उद्दिट्ठ ) क० कह्युं छे ( त ) के० ते ( किल ) के० निश्चे (समुद्दगय ) के० समुद्रमां रहेला ( जलरुहनाल ) क० कमलनाल ( हवइ ) के० होय छे. ( नन्न ) क० ते विना बीजी वनस्पतिनुं शरीर तेवुं न होय. ॥ ४३१ ॥

हवे बेइंद्रियादिक जीवोना विशेष नामग्रहणपूर्वक उत्कृष्टथी शरीरप्रमाण कहे छे ॥

बारस जोयण संखो, तिकोस गुम्मी य जोयण भमरो ॥
मुच्छिम चउपय भुय उरग, गाऊ धणु जोयण पहुत्त ४३२॥

अर्थ—( संखो ) क० शंखविगेरे बेन्द्रीयजीवोनुं शरीर (बारस जोयण) के० बार योजननुं होय छे ( गुम्मीय ) के० कानखजुरादिक तेइन्द्रियजीवोनुं शरीर ( तिकोस ) के० त्रण गाउनुं जाणवुं ( भमरो ) के० भ्रमर विगेरे चउरिन्द्रियजीवोनुं शरीर ( जोयण ) के० एक योजननुं होय छे वली ( मुच्छिमचउप्पय ) के० समूर्छिम चार पगवाला गाय विगेरे जीवोनुं ( गाउपहुत्त ) के० बे गाउथी नव गाउसुधीनुं, ( भुय ) के० समूर्च्छिम नोलीयादि भूजपरिसर्पनुं ( धणुपहुत्त ) क० बे धनुष्यथी नवधनुष्य सुधीनुं, अने ( उरग ) के० उरपरिसर्पनुं ( जोयणपहुत्त ) के० बे योजनथी नवयोजन सुधीनुं उत्कृष्टथी शरीर जाणवुं ॥ ४३२ ॥

गब्भचउप्पय छगाउ—याइ भुयगा उ गाउयपुहुत्त ॥
जोयणसहस्सुरगा, मच्छा उभयावि य सहस्स ॥४३३॥
पक्खिदुग धणुपुहुत्त, सव्वाणंगुल असंखभागलहु ॥

अर्थ—( गब्भचउप्पय ) के० गर्भज चतुष्पद हाथी वगेरनु शरीर ( छगाउयाइ ) के० छगाउनु होय छे ( उ ) के० वली ( भुयगा ) के० गर्भज भुजपरिसर्पनु शरीर ( गाउयपहुत्तं ) के० वेगाउथी नव गाउ सुधीनु होय छे ( उरगा ) के० गर्भज उरपरिसर्पनु शरीर ( जोयणसहस्स ) के० एक हजार योजननु होय छे तथा ( उभयावि ) के० गर्भज अने समूर्च्छिम ( मच्छा ) के० मत्स्योनु शरीर ( सहस्स ) के० एक हजार योजननु होय छे ॥ ४३३ ॥ वली ( दुग ) के० गर्भज अने समूर्च्छिम एवा (पक्खि) के० पक्षीओनु शरीरप्रमाण ( धणुप्पहुत्त ) के० बे धनुष्यथी नव धनुष्य सुधीनु होय छे अने ( सव्वाण ) के० एकेंद्रियथी आरम्भी पचेंद्रितिर्यंच सुधीना सर्व जीवोनु ( लहु ) के० जघन्य शरीर ( अंगुलअसंखभाग ) के० अंगुलना असंख्यातमा भागनु होयछे ॥

हवे पेन्द्री विगेर जीवोनो उपपात चवन विरहकाल कहे छे

**विरहो विगलासन्नीण, जम्ममरणेसु अंतमूहु ॥४३४॥**
**गब्भे मुहुत्त बारस, गुरुओ लहु समय संख सुरतुल्ला ॥**

अर्थ—( विगल ) के० बेन्द्री तेंद्री अने चउरेंद्री तथा ( असन्नीण ) के० सम्मूर्छिम पचेंद्रितिर्यंच ए दरेक जीवोनो ( जम्म मरणेसु ) के० जन्ममरण आश्री विरहकाल ( अंतमूहु ) के० एक अन्तर्मुहूर्तनो ( गुरुओ ) के० उत्कृष्टथी जाणवो. ॥ ४३४ ॥ अने ( गब्भे ) के० गर्भज पचेंद्रितिर्यंचनो उपपात चवन विरहकाल ( गुरुओ ) के० उत्कृष्टथी (मुहुत्तबारस) के० बारमुहूर्तनो जाणवो, तथा सर्वनो ( लहु ) के० जघन्यथी विरहकाल ( समय ) के० एक समयनो जाणवो वली ए बेंद्री विगेर जीवोनी एक समये उपजवानी ( सुरतुल्ला ) के० देवतानी पेठे एक बे त्रणथी संख्याता असंख्याता सुधीनी जाणवी ॥

हवे एकेंद्रियने उपजवा तथा चववानी संख्या कहे छे.

अणुसमयमसंखिज्जा, एगिंदिय हुंति य चवंति ॥४३५॥
वणकाइओ अणंता, इक्किकाओवि ज निगोयाओ ॥
निच्चमसंखो भागो, अणंतजीवो चयइ एइ ॥ ४३६ ॥

अर्थ—( एगिंदिय ) के० एकेन्द्रिय जीवो ( अणुसमय ) के० समय समय प्रत्ये ( असंखिज्जा ) के० असंख्याता ( हुंति ) के० उपजे य क० अने ( चवंति ) के० चवे ॥ ४३५ ॥ वली ( वणकाइओ ) के० वनस्पतिकाय जीवो प्रतिसमये ( अणंता ) के० अनंता उपजे अने अनंता चवे भावार्थ ए छे के-वनस्पतिकायमांथी वनस्पतिकाय उपजे तो अनंता, अने बाकीना पृथ्व्यादि चार स्थावरमांथी वनस्पतिमां उपजे तो असंख्याता उपजे एम जाणवुं ( ज ) के० जे कारण माटे ( इक्किकाओवि निगोयाओ ) के० एक एक एवा निगोदमांथी ( निच्च ) के० निरन्तर ( असंखो भागो ) क० असंख्यातमो भाग जे ( अणंतजीवो ) क० अनंत जीवात्मक ते ( चयइ ) क० चवे छे अने ( एइ ) क० उपजे छे अहिं निगोद ते अनंता जीवोनुं एक साधारण औदारिक शरीर स्तिबुकाकार एटले पाणीना परपोटा सरखु ते निगोद जाणवुं ते निगोदीया अनंता जीवो साथे श्वासोश्वास लइ अथवा आहार करे छे तेवा असंख्याता निगोद समुदायने गोलो कहेवाय, तेवा गोला चउदराज लोकमां असंख्याता छे ॥ ४३६ ॥

गोला य असंखिज्जा, असंख निग्गोयओ हवइ गोलो ॥
इक्किक्कंमि निगोए, अणंतजीवा मुणेयव्वा ॥ ४३७ ॥

अर्थ—संसारमां ( असंखिज्जा गोला ) क० असंख्याता

गोला छे वली ( असंखनिगोयओ ) क० असंख्याता निगोद गोले ( हवइ ) क० एक गोले थाय छे तथा (इक्किकवि निगोए) क० एक एक निगोदने विषे ( अणतजीवा मुणेयव्वा ) क० अनंता जीवो जाणवा ॥ अहिं निगोदिया जीवोना बे भेद छे एक सव्यवहारिया बीजा असव्यवहारिया तेमा जे अनादि निगोदथी निकळी पृथ्वीकायादिकमां जाय ते सव्यवहारिया कहवाय. कदाचि ते जीव फरी पाछो निगोदमां जाय तो पण सव्यवहारीकज कहेवाय पण जे जीवो सूक्ष्म तथा बादर निगोदमाथी निकल्याज नथी ते असव्यवहारिया कहवाय छे ॥ ४३७॥

अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥
उप्पज्जंति चयति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव ॥ ४३८ ॥

अर्थ—( अणता जीवा अत्थि ) के० तेवा अनताजीवो छे के ( जेहिं ) के० जे जीवो ( तसाइपरिणामो ) क० त्रस विगेरेना परिणामने ( न पत्ता ) के० पाम्या नथी, ते जीवो ( पुणोवि ) क० फरीफरीने ( तत्थेव तत्थेव ) के० त्याने त्याज (उप्पज्जति चयति य ) के० उपजे छे अने चवे छे ॥ ४३८ ॥

सामग्गी अभावाओ ववहारगसिम्मि अपत्ताओ ॥
भव्वावि ते अणता, जे मुत्तिसुह न पावंति ॥ ४३९ ॥

अर्थ—( सामग्गी अभावाओ ) क० सकाम निर्जरा तथा अकामनिर्जरारूप सामग्रीना अभावथी ( ववहार रासिम्मि ) के० व्यवहारराशीमा ( अपत्ताओ ) क० न पामेला (भव्वावि ते अणता) क० तेवा भव्य जीवो पण अनता छे क ( जे ) के० जे जीवो (मुत्तिसुह न पावंति ) के० मुक्तिसुखने पामता नथी ॥ ४३९ ॥

मव्वोवि किसलओ खलु, उग्गममाणो अणंतओ भणिओ
सोचेव विवड्ढतो, होइ परित्तो अणंतो वा ॥ ४४० ॥

अर्थ—( सव्वोवि किसलओ ) के० सर्वे एवा पण किशल्य जे कुरला ( उग्गममाणो ) के० उदयपामतां ( अणंतओ भणिओ ) के० अनतकाय कह्या छे परतु ( सोचेव विवड्ढतो ) के० तेज किसलय वृद्धि पामता ( परित्तो ) के० प्रत्येक वनस्पतिकायना किशल्य प्रत्येक अने ( अणंतो ) के० साधारण वनस्पतिकायना किशल्य अनंत वनस्पतिकाय ( होइ ) के० होय छे. ॥ ४४० ॥

ज नरए नेरईया, दुक्ख पावंति गोयमा तिव्व ॥
तं पुण निगोयमज्झे, अणतगुण मुणेयव्व ॥ ४४१ ॥

अर्थ—श्रीवीर प्रभुए कह्यु छे के-( गोयमा ) के० हे गौतम ! ( नरए ) के० नरकने विषे ( नेरईया ) के० नारकी जीवो ( ज ) के० जेवा ( तिव्व ) के० आकरा ( दुक्ख ) के० दुःखने (पावंति) के० पामे छे ( त पुण ) के० तेथी पण ( अणतगुण ) के० अनंत गणु दुःख ( निगोयमज्झे ) के० निगोदनीमध्ये ( मुणेयव्व ) के० जाणवु ॥ ४४१ ॥

हवे जीवने क्या कर्मथी एकेंद्रियपणु प्राप्त थाय ते कहे छे

जया मोहोदओ तिव्वो, अन्नाणं खु महब्भयं
पेलव वेयणीयं तु, तया एगिंदियत्तणं ॥ ४४२ ॥

अर्थ—( जया ) के० ज्यारे ( तिव्वो ) के० आकरो एवो ( मोहोदओ ) के० विषयाभिलाषरूप मोहनो उदय होय, ( खु

के० निश्चे ( महब्भय ) क० महाभयकारी ( अन्नाण ) क० अज्ञान होय, ( तु ) क० वली ( पत्तेय ) क० असार एवु ( वेयणीय ) क० असाता वेदनीय कर्म उदय आव्यु होय, ( तया ) क० त्यारे जीवने ( एगिंदियत्तण ) क० एकेन्द्रियपणु प्राप्त थाय छे ॥४४२॥

हवे तिर्यंचनी गतिमा क्या जीवो आवीने आगतिद्वार कहेछे.

तिरिएसु जंति संखा–उतिरिनरा जाढुकप्पदेवाओ ॥
पज्जत्तसंख गब्भय, बायर भूदगपरित्तेसु ॥ ४४३ ॥
तो सहसारतसुरा, निरया पज्जत्त संख गब्भेसु ॥

अर्थ—एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री तथा ( संखाउतिरिनरा ) क० संख्याता आयुष्यवाला पचेंद्री तिर्यंच अने मनुष्य एटला जीवो मरण पामी ( तिरिएसु ) क० एकेन्द्री बेद्री तेंद्री चउरिंद्री अने पचेंद्री तिर्यचने विषे ( जंति ) क० जाय छे वली भुवनपति व्यंतर ज्योतषी अने ( जाढुकप्पदेवाओ ) क० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकना देवताओ मरण पामीने ( पज्जत्तसंखगब्भय ) क० पर्याप्ता संख्याता आयुष्यवाला गर्भज तिर्यंचमा तथा ( बायर भूदगपरित्तेसु ) क० पर्याप्ता बादर पृथ्वीकाय अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकायमा उपजे ॥ ४४३ ॥ वली ( तो सहसारंतसुरा ) के० सनत्कुमारथी आदीने सहस्रार देवलोक सुधीना देवता तथा (निरया) क० नारकी ए जीवो मृत्यु पामीने ( पज्जत्तसंखगब्भेसु ) के० पर्याप्ता संख्याता आयुष्यवाला गर्भज तिर्यंचमा जाय ॥ ए तिर्यंचनु आगतिद्वार कह्यु.

हवे तिर्यंचना भवथी मरण पामी क्या जाय ? ते गतिद्वार कहे छे

सखपणिंदिय तिरिया, मरिउ चउसुवि गईसु जंति ॥४४४॥
थावर विगला नियमा, सखाउयतिरिनरेसु गच्छति ॥
विगला लभिज्ज विरइ,सम्मपि न तेउवाउचुया ॥४४५॥

अर्थ—( सखपणिंदियातिरिया ) के० सख्याता आयुष्यवाला पचद्रिय तिर्यच जीवो ( मरिउ ) के० मरण पामीने ( चउसुवि गइसु ) के० चार गतिमा ( जति ) के० जाय छे ॥ ४४४ ॥ वली ( थावर ) के० एकेंद्री जीवो अने ( विगला ) के० विकलेंद्री जीवो ( नियमा ) के० निश्चयी ( सखाउयतिरिनरेसु ) के० सख्याता आयुष्यवाला तिर्यच अने मनुष्यने विषे ( गच्छति ) के० जाय छे ( विगला ) के० विकलेंद्री जीवो मरण पामी मनुष्य गतिने पामे तेम ( लभिज्ज विरइ ) के० सर्व सावद्यविरतिरूप चारित्र पामे, पण मोक्ष पामे नहीं. वली ( तेउवाउचुया ) के० तेउकाय अने वाउकायना जीवो मरण पामी मनुष्य तो न थाय, परतु तिर्यच भव पामे सो पण ( सम्मपि न ) के० समकीत पामे नहीं ॥ ४४५ ॥

हवे तिर्यचने तथा मनुष्यने लेश्या कहे छे

पुढवि दग परित्तवणा, बायरपज्जत्त हुति चउलेसा ॥
गब्भयतिरियनराण, छलेस्सा तिन्नि सेसाणं ॥४४६॥

अर्थ—( बायरपज्जत्त ) के० बादर अने पर्याप्ता एवा ( पुढविदगपरित्तवणा ) के० पृथ्वीकाय अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोने ( चउलेसा ) के० कृष्ण नील कापोत अने तेजो ए चार लेश्या ( हुति ) के० होय छे तथा ( गब्भयतिरियनराण ) के० गर्भज तिर्यच अने मनुष्यने (छलेसा) के० छलेश्या

होय छे तथा ( सेसाण ) के० बाकीना सर्वजीवोने ( तिन्नि )के० त्रण लेश्या होय छे ॥ ॥

अंतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव ॥
लेसाहि परिणयाहि, जीवा वच्चंति परलोय ॥४४७॥

अर्थ—( जीवा ) के० मनुष्य तथा तिर्यंच ( लेसाहि परिणयाहिं ) के० परभवनी लेश्या आव्या पछी ( अंतमुहुत्तंमि गए ) के० एक अंतर्मुहूर्त गये थके मरण पामे छे अने देवता तथा नारकी ( अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव ) के० एक अंतर्मुहूर्त पोतानी लेश्या बाकी रही होय त्यारेज ( परलोय वच्चंति ) के० मरण पामे छे ॥ ४४७ ॥

तेज वात आगली गाथाथी कहे छे—

तिरिनर आगामिभवे, लेस्साए अइगए सुरानिरया ॥
पुव्वभव लेस्ससेसे, अंतमुहुत्ते मरणमिंति ॥ ४४८ ॥

अर्थ—( तिरिनर ) के० तिर्यंच तथा मनुष्य ते ( आगामिभवे ) के० आवता भवनी ( लेस्साए अइगए ) के० लेश्या आव्याने अंतर्मुहूर्त गया पछी मरण पामे छे तथा ( सुरानिरया ) के० देवता अने नारकी ते ( पुव्वभव लेस्ससेसे अंतमुहुत्ते ) के० पोताना पूर्वना एटले चालता भवनी लेश्या एक अंतर्मुहूर्त बाकी होय त्यारेज ( मरणमिंति ) के० मरण पामे छे एटले तेजो लेश्यावाला देवता पृथ्वी अप अने प्रत्येकवनस्पतिकायमां आव्याने अंतर्मुहूर्त थाय त्यांसुधी तेमने तेजो लेश्या होय छे आ कारणथी पृथ्वी अप अने प्रत्येक वनस्पतिकायने चार लेश्या कहीछे ॥४४८॥

हवे मनुष्य तथा तिर्यंचने लेश्यानी स्थिति कहे छे.

**अंतमुहुत्तट्ठिइओ, तिरियनराणं हवंति लेस्साओ ॥**
**चरिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्वकोडीवि ॥४४९॥**

अर्थ—( तिरियनराण ) के० पूर्वोक्तादि तिर्यंच तथा मनुष्यने ( लेस्साओ ) के० पोतपोताने सभवती लेश्याओ (अंत मुहुत्तट्ठिओ ) के० एक अंतर्मुहूर्त्तनी स्थितिवाली ( हवंति ) के० होय छे ( पुण ) के० वली ( नराण ) के० मनुष्यने (चरिमा) के० छेल्ली शुक्ललेश्या ( नववासूणा पुव्वकोडीवि ) के० नव वर्ष उणी एक पूर्वकोडी वर्ष सुधी रह छे ते एवी रीत के–गर्भकालना नवमास रहित आठ वर्षमां चारित्र न होय, माटे कोइक जीव नवमे वर्षे चारित्र लइ केवलज्ञान पामे अने त्यार पछी नव वर्ष उणी एवी एक पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत जीवतो रह त्या सुधी केवलीने एक शुक्ल लेश्याज होय. अने बीजा मनुष्यने तो शुक्ल लेश्या अंतर्मुहूर्त्त सुधीज होय छे ॥ ४४९ ॥

**तिरियाणवि ठिइपमुहं, भणियमसेसंपि संपइ वुच्छं ॥**
**अभिहियदारब्भहियं, चउगइ जीवाण सामन्नं ॥४५०॥**

अर्थ—( तिरियाणवि ) के० एकेंद्रियथी आरंभी पचेंद्री सुधीना सर्व तिर्यंचनी ( ठिइपमुह ) के० स्थितिप्रमुख ( असेसपि ) के० सर्व आठे द्वार ( भणिय ) के० कह्या ( संपइ ) के० हवणा ( अभिहियदारब्भहिय ) के० जे द्वार पूर्वे कह्या नथी ते ( चउगइ जीवाण ) के० चारे गतिना जीवोना ( सामन्न ) के० सामान्यपणे द्वार ( वुच्छ ) के० कहीश ॥ ४५० ॥

**देवा असंखनरतिरि–इत्थीपुवेय गब्भनरतिरिया ॥**
**संखाउया तिवेया, नपुंसगा नारगाईया ॥ ४५१ ॥**

अर्थ—( देवा ) क० देवता तथा ( असंख नरतिरि ) क० असंख्याता आयुष्यवाला युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच ए जीवोमा इत्थी पुरुष ) क० स्त्रीवेद अने पुरुषवेद एवा वेद होय छे वली ( सखाउया ) क० संख्याता आयुष्यवाला ( गब्भनरतिरिया ) के० गर्भज मनुष्य अने गर्भज तिर्यंच ते जीवोमा (तिवेया) के० पुरुष स्त्री तथा नपुंसक एवा त्रण वेद होय छे अने ( नारगाईया ) क० नारकी आदि एटले नारकी, एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री चउरद्री, समुर्छिम मनुष्य तथा समुर्छिम तिर्यंच ए जीवो ( नपुसगा ) के० एक नपुंसक वेदवाला जाणवा ॥ ४५१ ॥

हवे पूर्वे कहेला विमानादिक जे अंगुलप्रमाणथी मपाय ते कहेछे.

आयगुलेण वत्थु, सरीर मुस्सेह अंगुलेण तहा ॥
नगपुढविविमाणाइ, मिणसु पमाणगुलेण तु ॥ ४५२ ॥

अर्थ—आंगुलना त्रण भेद छे, आत्मांगुल, उत्सेद्धांगुल अने प्रमाणांगुल तेमा ( आयगुलेण ) क० आत्मांगुले करी ( वत्थु ) क० वास्तु जे घर कूवा तलाव विगेरे मपाय ( तहा ) क० तथा उस्सेह अंगुलेग ) के० उत्सेद्धांगुले करीने ( सरीर ) के० देवता विगेरेनु शरीर मपाय ( तु ) क० वली ( पमाणगुलेण ) के० प्रमाणांगुले करीने ,( नगपुढविविमाणाइ ) के० पर्वत, नरकपृथ्वी, अने देवविमान विगेरे मिणसु ) क० मपाय छे ॥ ४५२ ॥ जे काले जे प्राणीओ पोताना हाथना आंगुलथी माप करे ते आत्मांगुल कहेवाय छे हवे उत्सेद्धांगुलनु स्वरूप कहे छे.

सत्थेण सुतिक्खेणवि, छित्तु भित्तु च ज किर न सका॥
त परमाणु सिद्धा, वयति आइ पमाणाण ॥ ४५३ ॥

अर्थ—( सुतिवखेणवि ) क० अत्यंत तीक्ष्ण एवा (सत्थेण) के० शस्त्रेकरीने ( ज  के० जे वस्तु ( किर ) के० निश्चे ( छित्तु भित्तु न सका ) के० छेदी भेदी न शकाय ( सिद्धा ) के० सिद्ध एटले केवलज्ञानी पुरुषो ( त ) क० ते वस्तुने ( परमा  वयंति ) के० परमाणु कहे छे अने ते परमाणु ( पमाणाण ) के० सर्व प्रमा णोनी म ध्ये ( आइं ) के० आदि प्रमाण छे. ॥ ४५३ ॥

परमाणू तसरेणू रहरेणू, वालअग्ग लिक्खा य ॥
जूय जव अट्ठगुणो, कमेण उस्सेह अंगुलयं ॥४५४॥
अंगुल छक्कं पाओ,सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो॥
चउहत्थ धणुदुसहस्स,कोसो ते जोयण चउरो ॥४५५॥

अर्थ—( परमाणू ) के० आठ व्यवहार परमाणुए (तसरेणू) के० एक तसरेणु थाय आठ तसरेणुए ( रहरेणु ) क० एक रथ रेणु थाय आठ रथरेणुए ( वालअग्ग ) क० एक वालाग्र थाय आठ वालाग्रे ( लिक्खाय ) क० एक लीख थाय आठ लीखे ( जूय ) के० एक  थाय आठ जूये (जव) के० एक जव थाय अने ( अट्ठगुणो ) के० जवने आठगुणो करीये त्यारे ( कमेण ) के० अनुक्रमे करीने (उस्सेह अंगुलय) के० एक उत्सेधांगुल थाय ॥ ४०४ ॥ ( अंगुलछक्क ) के० तेवा छ उत्सेधांगुले ( पाओ ) क० एक पग थाय. ( सो दुगुण ) के० पगने बमणो करीये त्यारे ( विहत्थि ) के० एक वेंत थाय, ( सा दुगुण )के० बे वेंते (हत्थो) के० एक हाथ ( चउहत्थे ) के० चार हाथे ( धणु ) के० एक धनुष्य थाय, ( दुसहस्स )  तेवा बे हजार धनुष्ये ( कोसो ) के० एक कोश थाय. ( ते चउरो ) क० ते चारकोशे ( जोयण ) के० एक योजन थाय छे ॥ ४५५ ॥

हव प्रमाणांगुलनुं स्वरूप कहे छे

चउसयगुण पमाणं-गुलमुस्सेहगुलाउ नायव्वं ॥
उस्सेहंगुल-दुगुणं, वीरस्सायंगुलं भणियं ॥ ३५६ ॥

अर्थ—( चउसयगुण ) क० चार सो गणुं (उस्सेहगुलाउ) क० उत्सेधांगुल करीय अर्थात् चारसो उत्सेधांगुले ( पमाणगुल ) के० एक प्रमाणांगुल ( नायव्व ) क० जाणवुं आ प्रमाणांगुले श्रीऋषभदेव भरतचक्रवर्त्तीनुं शरीर एकसो वीस अंगुल लांबुं जाणवुं, ते एकसो वीस अंगुलने चारसो गणुं करीये त्यारे अडतालीस हजार अंगुल थाय अहिं छन्नु अंगुले धनुष्य थाय छे माटे अडतालीस हजारने छन्नुए भागीए त्यारे पांचसो धनुष्यनुं देहमान थाय वली ( उस्सेहंगुलदुगुण ) क० उत्सेधांगुलने बमणा करीये त्यारे ( वीरस्स ) क० वीरप्रभुनुं ( आयंगुले ) क० एक आत्मांगुल (भणियं) क० कह्युं छे एवा चोराशी अंगुलप्रमाण श्रीमहावीर प्रभुनुं शरीर हतुं चोराशीने बमणा करीये त्यारे एक सो अडसठ थाय एक हाथना चोवीस अंगुल गणता एकसो अडसठने चोवीसे भागता श्रीमहावीर प्रभुनुं सात हाथ प्रमाण शरीर हतुं ए कारणे ते उत्सेधांगुले श्रीमहावीरनो एक आत्मांगुल कह्यो छे ॥ ३५६ ॥

हवे चोराशी लाख जीवायोनीना भेद कहे छे

पुढवाइसु पत्तेयं, सग वण पत्तेय णंत दस चउद ॥
विगले दुदु सुरनारय,तिरि चउचउ चउदस नरेसु॥३५७॥

अर्थ—( पुढवाइसु ) के० पृथिव्यादिकने विषे एटले पृथ्वी, अप, तेउ अने वायु ए चारने विषे ( पत्तेय ) क० दरेकने ( सग )

के० सात सात लाख योनि होय छे तथा ( वण पत्तेय ) के० प्रत्येक वनस्पतिकायने ( दश ) दशलाख योनि होय छे. अने (अणत) के० साधारण वनस्पतिकायने (चउद) के० चउद लाख योनि होय छे वली (विगले) के० बेंद्री तेंद्री अने चउरेंद्रीने दरेकने (दुदु) के० बे बे लाख योनि होय छे तथा ( सुरनारय तिरि ) क० देवता नारकी अने पचेंद्री तिर्यचने ( चउ चउ ) के० चार चार लाख योनि होय छे अने ( नरसु ) के० मनुष्यने विषे (चउदस ) के० चउद लाख योनि होय छे. ॥ ४५७ ॥ अहिं चाराशी लाख योनि सख्यानी गणती करता सामान्यपणे योनि जातिये करी एक जीव निकायमा जेनो वर्ण, गध रस अने स्पर्श सरखा होय ते एक जातियोनिमा ग्रहण कराय तेवा सर्व मली चोराशी लाख भेद थाय छे. ॥

हवे एक एक योनिमा कुल होय ते कहे छे.

एगिंदिएसु पचसु, बार सगति सत्त अट्ठवीसा य ॥
विगलेसु सत्त अड नव,जल खह चउपय उरगभुयगे॥४५८
अद्धतेरस बारस, दस दस नवग नरामरे निरए ॥
बारस छवीस पणवीस,हुनि कुलकोडि लक्खाइं ॥४५९॥
इगकोडि सत्त नवई, लक्खा सड्ढा कुलाण कोडीणं ॥

अर्थ—( पचसु एगिंदिएसु )के० पाच एकेंद्रिय एटले पृथ्वी अप तेउ वाउ अने वनस्पतिकायने विषे अनुक्रमे करीने ( बार ) क० बार लाख, ( सग ) के० सात लाख, ( ति )के० त्रण लाख, ( सत्त ) के० सात लाख अने ( अट्ठावीसा ) के० अट्ठावीश लाख कुलकोटी जाणवी ( विगलेसु ) के० विगलेंद्री एटले बेंद्री तेंद्री

अने चउरद्रीने विष अनुक्रमे (सत्त) के० सात लाख,) (अह) के० आठ लाख, अने ( नव )के० नव लाख कुल्कोडी जाणवी. वली ( जल ) क० जलचर, (खह) के० खेचर, (चउप्पय) के० चतुष्पद, ( उरग ) के० उरपरि सर्प अने ( भुयगे ) के० भुजपरिसर्प ए पाचेने अनुक्रमे ॥ ४५८ ॥ (अद्धतेरस ) के० साडाबार लाख, ( बारस क० बार लाख, ( दस ) के० दश लाख, ( दस ) के० दश लाख, अने ( नवग ) क० नव लाख कुल्कोडी जाणवी एमज ( नरामर निरये ) क० मनुष्य, देवता अने नारकीने विष अनुक्रमे ( बारस ) क० बार लाख, (छवीस) के० छवीस लाख अने ( पणवीस ) के० पचीस लाख ( हुति कुल्कोडि लक्खाइ ) के० कुलकोडी जाणवी ॥ ४५९ ॥ ए सर्वे सख्या एकठी करीए त्यारे ( इगकोडि ) के० एक क्रोड काडी, अने ( सगनवइ लक्खा सड्ढा ) क० साडीस ताणु लाख क्रोडी एटली ( कुल्गण कोडीण ) के० कुल्कोडी एटले एटली जीवोने उपजवानी योनिमाहे कुल्कोडी छे

हवे बीजे प्रकारे योनी कहे छे

संवुडजोणि सुरेगिंदि-नारया वियड विगल गब्भु-
भया ॥ ४६० ॥

अर्थ—( सुर ) के० चार प्रकारना देवता, ( एगिंदि ) के० एकेंद्री ते पृथ्वी आदि पाच स्थावर, अने ( नारया ) क० नारकी ए सर्वे ( सवुडजोणि ) के० ढाकली योनिवाला होय छे. त्या देवताना देवदुष्य ढाकला देवशयनीय होय, एकेंद्रिय जीवोनी योनि स्पष्ट जाणी शकाय नहीं, नारकीने ढाकला गोखने आकारे आला छे वली ( विगल ) के० विकलेंद्रीने तथा समूर्च्छिम तिर्यंच अने समूर्च्छिम मनुष्यने ( वियड ) के० प्रगट जलाशय सरोवर विगेर

देखाय छे. तथा ( गब्भुभया ) के० गर्भज पचेंद्रीतिर्यच अने गर्भज पचेंद्री मनुष्य ए बन्नेने सहृत अने विहृत एटले ढाकेली अने प्रगट एम प्रकार योनी होय छे ॥ ८६० ॥

वली पण योनीना भेद कहे छे

**अचित्तजोणि सुरनिरय, मीस गब्भे तिभेय सेसाण ॥**
**सी उसिण निरय सुरगब्भ,मीसत्ते उसीण सेस तिहा४६१॥**

अर्थ—( सुर ) के० देवना अने ( निरय ) के० नारकी तेमनी ( अचित्तजोणि ) के० अचित्तयोनी होय छे जोके सूक्ष्म जीव नो सर्वलोक व्यापी छे तो पण सूक्ष्म एकेंद्री जीवने प्रदेशे त क्षेत्र सवप नथी तथा ( गब्भे ) के० गर्भज तिर्यच अने गर्भज मनुष्यने ( मीस ) के० मीश्र एटले सचित अचित होय छे शुक्र ऋतु रुधिर सग्राह्य सचित्त अने बीजी अचित जाणवी ( सेसाण ) के० एकद्री, बेद्री, तेंद्री, चउरेंद्री,समूर्च्छिम पचेंद्री तिर्यचअने समूर्च्छिम पचेंद्री मनुष्य एटलानी ( तिभेय ) के० सचित अचित्त अने मिश्र योनी होय छे जीवती गाय विगेरेना शरीरे क्रमी उपजे ते सचित्त योनी जाणवी, सूका लाक्डामा घुण विगेर उपजे ते अचित्त योनी जाणवी, अर्द्ध सूका लाक्डा तथा गाय विगेरे शरीरना क्षताडिकमा घुण क्रमि विगेरे उपजे ते मिश्र योनी जाणवी ( निरय ) के० नारकीजीवोने केटलाकने ( सी ) के० शीतयोनी अने केटलाकने ( उसिण ) क० उष्ण योनी होय छे ( सुर ) क० देवनाने तथा ( गब्भ ) के० गर्भज तिर्यच अने गर्भज मनुष्यने ( मीस ) क० शीत अने उष्ण एम मिश्रयोनी होय छे ( ते ) के० तेउकाय जीवोने एक उष्ण योनी होय छे ( सेस ) के० बाकी रहेला जे पृथ्वी, अप, वाउ, वनस्पति, समूर्च्छिम तिर्यच अने समूर्च्छिम

मनुष्य ए उपने ( निश्चा ) क० शीत, उष्ण अने शीतोष्ण योनी होय छे ॥ ४६१ ॥

हवे एकला मनुष्यनी योनीना भेद कहे छे

हयगब्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइ जायंति ॥
अरिहहरि चक्किरामा, वंसीपत्ताइ सेस नरा ॥४६२॥

अर्थ—मनुष्यनी योनी त्रण प्रकारे छे एक शंखावर्त्ता, बीजी कुर्मोन्नता, त्रीजी वंसीपत्रा तेमा ( संखवत्ता ) के० शंखावर्त्ता ( जोणी ) के० योनी ( हयगब्भ ) क० हतगर्भा होय छे कारण एमां उपजेलो गर्भ अत्यंत अग्निताथी मरण पामे छे. तेवी योनी चक्रवर्त्तीनी स्त्रीने होय छे बीजी ( कुम्मुन्नयाइ ) के० कुर्मोन्नता ते काचवानी पीठ सरखी उची होय ते मांहे अरिहहरि चक्क-रामा के० अरिहंत, वासुदेव, चक्रवर्त्ती अने बलदेव ( जायंति ) क० उत्पन्न थाय छे त्रीजी ( वंसीपत्ताइ ) के० वंसीपत्रा ते वांसना पत्राकार योनी होय तेमां ( सेसनरा ) क० बाकीना सर्व मनुष्य नो जन्म थाय छे. ॥ ४६२ ॥

हवे आयुष्यबंध समयनी काइ विशेष कहे छे

आउस्स बंधकालो, अबाहकालो य अंतसमओ य ॥
अपवत्तण णपवत्तण, उवक्कम णुवक्कमा भणिया ॥ ४६३ ॥

अर्थ—चालता भवनु आयुष्य पूर्ण थताना पहेला परभवनु आयुष्य बांधे ते ( आउस्स ) क० आयुष्यनो ( बंधकालो ) के० बंधकाल कहेवाय १, आयुष्य बांध्या पछी जेटलो काल गये थके आयुष्य उदय आवे तेना वचमानो जे काल ते ( अबाहकालो ) क० अबाधाकाल कहेवाय २, भोगवातु आयुष्य जे समये पूर्ण थाय

ते ( अतसमओ य ) के० अतसमय कहीये ३, जणा काले वेग्वा योग्य आयुष्यने थोडा समयमा लावीये ते ( अपवत्तण ) के० अपवर्तन कहीये ४, जे आयुष्य जेटले काले वेग्वानु छे ते आयुष्य तेटलेज काले वेदाय ते ( णपवत्तण ) के० अनपवर्त्तन कहीये ५, जेणे करी आयुष्य ओछु करीये ते ( उवक्कम ) के० सोपक्रम कहीये ६, कारण मलया छता पण आयुष्य घटे नहीं ते ( णुवक्कमा ) के० अनुपक्रम कहीये ७, एवी रीते आयुष्यना सात भेद ( भणिया ) के० कह्या छे ॥ ४६३ ॥

हव ते साते प्रकारने अनुक्रमे विस्तारथी वखाणे छे.

चयति देव नारय, असख नरतिरि छमास सेसाऊ ॥
परभवियाऊ सेसा, निरुवक्कम तिभाग सेसाऊ ॥४६४॥
सोवक्कमाउया पुण, सेस तिभागे अहव नवम भागे ॥
सत्तावीसइमे वा, अतमुहुत्ततिमे वावि ॥ ४६५ ॥

अर्थ—( देव ) के० चार निकायना देवता, ( नारय ) के० नारकी तथा ( असख नरतिरि ) क० असख्याता आयुष्यवाला युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच ते सव ( छमास सेसाउ ) के० पोताना चालता भवनु आयुष्य छ मास बाकी होय त्यारे ( परभवियाउ ) के० पर भवनु आयुष्य ( चयति ) के० बाधे छे अने ( सेसा ) के० बीजा सख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच, मनुष्य, एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री अने पचेंद्री जीवो ( निरुवक्कमतिभागसेसाऊ ) क० निरुपक्रम एवा पोताना भोगवाता आयुष्यनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे परभवनु आयुष्य बाधे छे ॥ ४६४ ॥ ( पुण ) के० वळी ( सोवक्कमाउया ) के० सोपक्रम आयुष्यवाला मनुष्य, तिर्यंच,

एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री अने पचेंद्री जीवो ( सेसतिभागे ) के० पोताना भोगवाता आयुष्यनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे, ( अहव ) के० अथवा (नवमभागे)क० नवमो भाग बाकी होय त्यारे, अथवा ( सत्तावीसइमे वा ) के० सत्तावीसमो भाग बाकी होय त्यारे, अथवा ( अतमुहुत्तंतिमेवावि )क० छेल्ले अतर्मुहूर्त्त आयुष्य बाकी होय त्यारे परभवनु आयुष्य बांधे छे. ॥ ४६५ ॥ ए बंधकालनुं प्रथमद्वार कह्यु.

हवे अबाधाकालादिकना बीजा द्वारा कहे छे

जइमे भागे बंधो, आउस्स भवे अबाहकालोसो ॥
अंते उज्जुगइ इग-समय वक्क चउपंच समयंता ॥४६६॥

अर्थ—( जइमे भागे ) क० जे जीव पूर्वे कहेला जे भागे ( आउस्स बंधो ) क० परभवना आयुष्यनो बंध करे ( सो अबाहकालो ) के० ते अबाधाकाल एटले आयुष्यनो बंध कर्या पछी परभवना आयुष्यनी उदय पहेलानो अर्थात् वच्चेनो समय ते अबाधाकाल ( भवे ) क० होय छे वली ( अंते ) क० अतसमये जीवने परभवे जाता बे गति होय छे एक ऋजुगति, बीजी वक्रगति तेमा जे ( उज्जुगइ ) क० ऋजुगति छे ते ( इगसमय ) के० एक समय प्रमाण होय छे अने ( वक्क ) के० वक्रगति छे ते ( चउपच समयता ) के० चार पाच समयनी होय छे. ॥ ४६६ ॥

उज्जुगइ पढमसमए, परभवियं आउय तहाहारो ॥
वक्काइ बीयसमए, परभवियाउ उदयमेई ॥ ४६७ ॥

अर्थ—( उज्जुगइ ) के० ऋजुगतिये ( पढमसमए ) के० पहेला समयने विषे ( परभविय आउय ) क० परभवनु आयुष्य उदय

आवे, तहा के० तेमज ( ओहारो ) के० आहार पण पहेलेज समये उदय आव. ( वकाइ ) के० वक्रगतिये ( वीयसमए ) के० बीजा समय ( परभवियाउ ) के० परभवनु आयुष्य तथा आहार (उदय येई ) के० उदय आवे छे. ते एक समयनी वक्रगति जाणवी. बीजी वक्राए त्रण समय लागे त्रीजी वक्राए चार समय लागे अने चोथी वक्राए पांच समय लागे. अहिं प्रथम समये अने अंत समये जीवने आहारक जाणवो वचला एक बे त्रण समये अनाहारक होय छे ॥ ४६७ ॥ एज वात आगलनी गाथाथी कह छे

इगदुति चउ वकासु, दुगाइसमएसु परभवाहारो ॥
दुगवकाइसु समया, इगदोतिन्नि य अणाहारा ॥४६८॥

अर्थ—( इगदुतिचउवकासु ) के० एक बे त्रण अने चार समयनी वक्रगतिये जीव ( दुगाइ समएसु ) के० बे आदि समयने विषे ( परभवाहारो ) के० परभवना आहार करे छे एटले एक समयनी वक्रगतिये बीजे समये, बे समयनी वक्रगतिये त्रीजे समये, त्रण समयनी वक्रगतिये चोथे समये, अने चार समयनी वक्रगतिये पांचमें समये परभवनो आहार करे छे ( दुगवकाइसु ) के० बे समयादिक वक्रगतिमां ( इगदोतिन्निय ) के० एक, बे, त्रण त्रिगेर समय सुधी जीव ( अणाहारा ) के० अनाहारक होय ॥ ४६८ ॥

बहुकालवेयणिज्ज, कम्म अप्पेण जमिह कालेण ॥
वेइज्जइ जुगव चिय, उइन्न सव्वप्पएसग्ग ॥ ४६९ ॥
अपवत्तणिज्जमेय, आउ अहवा असेसकम्मपि ॥
बंधसमएवि बद्धं,सिढिल चिय त जहा जोगं ॥४७०॥

अर्थ—( इह ) के० अहिं ( बहुकालवेयणिज्ज ) के० बहु कालवेदवा योग्य ( जं कम्मं ) क० जे आयुष्य कर्म ( अप्पेण कालेण ) क० थोडा कालमां ( सव्वप्पएसग्गं ) के० आत्माना सर्व प्रदेशना अग्रभागे ( उइन्न ) के० उदय आवी ( चिय ) क० निश्चे ( जुगवं ) के० समकाले (वेइज्जइ) क० वेदे ॥४६९॥ (एय) के० ए ( आउ ) क० आयुष्य कर्म (अपवत्तणिज्ज) के० अपवर्त्तन करीये. ( अहवा ) के० अथवा आयुष्यनी पेठे ( असेसकम्मंपि ) के० बीजां सर्व कर्म पण बहुकाले वेदवा योग्य छतां थोडे काले वेदाय ते अपवर्त्तन कहीये अहिं कोइने शंका थाय के-जेवी रीते कर्म बांध्युं होय तेवी रीते न वेदाय तो पछी बांध्या न बांध्यामां विशेष शुं? त्यां उत्तर कहे छे के-( बंधसमएवि ) के० बंधना अवसरे पण ( तं ) क० ते कर्म (जहा जोगं) के० यथायोग्य मंदतानां कारणे करी (चिय) के० निश्चे ( सिढिलं बद्धं ) क० शिथिल एटले ढीलुं कर्म बांध्युं होय जेथी देशकालादिक कारण मळवाथी थोडा समये ते कर्म वेदाय ते सोपक्रम कहेवाय छे ॥ ४७० ॥

जं पुण गाढनिकायण–बंधेणं पुव्वमेव किल बद्धं ॥
तं होइ अणपवत्तण, जुग्गं कमं वेयणिज्जफलं ॥४७१॥

अर्थ—( पुण ) के० वळी ( जं ) क० जे कर्म ( गाढनिकायणबंधेणं ) क० गाढ निकाचित बंधेकरीने ( पुव्वमेव ) के० प्रथमथीज ( किल ) क० निश्चे ( बद्धं ) क० बांध्युं छे ( तं ) के० ते ( अणपवत्तण ) क० अनपवर्त्तन ( होइ ) के० होय ते ( जुग्गं ) क० योग्य रीतेज ( कमं ) क० अनुक्रमे करी ( वेयणिज्जफलं ) के० वेदवा योग्य फलवाळुं होय छे ॥ ४७१ ॥

हवे क्या जीवो सोपक्रमी अने क्या जीवो निरुपक्रमी ते कहे छे

उत्तम चरमसरीरा, सुरनेरइया असंखनरतिरिया॥
हुंति निरुवक्कमाओ, दुहावि सेसा मुणेयव्वा ॥ ४७२ ॥

अर्थ—चोवीस तीर्थंकर, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बलदेव एटला ( उत्तम ) के० उत्तम पुरुषो कहवाय तेओ, तथा ( चरम सरीरा ) के० तेज भवे मोक्षे जनारा चरम शरीरवाला, तथा ( सुर ) के० चार प्रकारना देवता, तथा ( नेरइया ) के० साते नरकना जीवो, तथा ( असंखनरतिरिया ) के० असंख्याता आयुष्यवाला युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच एटला जीवो ( निरुवक्कमाओ ) के० निरुपक्रम आयुष्यवाला ( हुंति ) के० होय छे. अने ( सेसा ) के० ते शिवायना बीजा जीवो ( दुहावि ) के० सोपक्रम आयुष्यवाला तथा निरुपक्रम आयुष्यवाला एम बे प्रकारना ( मुणेयव्वा ) के० जाणवा ॥ ४७२ ॥

जेणाउमुवक्कमिज्जइ, अप्पसमुत्थेण इयरगेणावि ॥
सो अज्झवसाणाई, उवक्कमोऽणुवक्कमो इयरो ॥ ४७३ ॥

अर्थ—( जेण ) के० जे ( अप्पसमुत्थेण ) के० आत्माथी उत्पन्न थयेला अध्यवसायादिके करीने अथवा ( इयरगेणावि ) के० बीजा शस्त्र निपातादिक करीने ( आउ उवक्कमिज्जइ ) के० पोतानुं आयुष्य ओछुं करीये ( सो अज्झवसाणाई ) के० ते अध्यवसाय विगेरे ( उवक्कम ) के० उपक्रम कहीये अने ( इयरो ) के० बीजो ( अणुवक्कमो ) के० अनुपक्रम कहीये ॥ ४७३ ॥

हवे उपक्रमना सात भेद कहे छे

अज्झवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ॥
फासे आणापाणू, सत्तविह झिज्झए आउं ॥ ४७४ ॥

अर्थ—( अज्झवसाण ) क० राग स्नेह भय विगेरे मननो विकल्प, ( निमित्ते ) के० शस्त्र विगेरे कारण, ( आहारे ) क० आहार, (वेयणा) क० शीघ्र विनाशी शूलादि वेदना, ( पराघाए ) क० खाडा कुवामा तथा वृक्ष विगेरेथी पडवु ( फासे ) के० सर्प अग्नि विष विगेरेनो स्पर्श, अने ( आणापाणू ) के० श्वासनु न्यूनाधिक चालवु ( सत्तविह ) के० ए सात प्रकारे आउ ) के० आयुष्य ( झिज्झए क० नाश पामे छे ॥ ४७४ ॥

ए सात प्रकारना बालमरण क्रोधादिक चार कषायना कारणथी थाय छे माटे क्रोधादिक चार कषायनु स्वरूप कहे छे

जलरेणुपुढविपव्वय–राई सरिसो चउव्विहो कोहो ॥
तिण सलया कट्ठट्ठिअ–सेलत्थभोवमो माणो ॥४७५॥

अर्थ—संजलननो, प्रत्याख्याननो अप्रत्याख्याननो, अने अनंतानुबंधीनो एम ( चउव्विहो कोहो ) के० चार प्रकारनो क्रोध ते अनुक्रमे ( जल ) के० पाणीमा करेली रेखा सरखो, ( रेणु ) के० रेतीमा करेली रेखा सरखो, ( पुढवि ) क० पृथ्वीमा पडेला रेखा सरखो, अने ( पव्वयराइ सरिसो ) क० पर्वतमा पडेली फाट सरखो जाणवो तथा संजलननो, प्रत्याख्याननो, अप्रत्याख्याननो, अने अनंतानुबंधीनो एम चार प्रकारनो ( माणो ) के० मान ते अनुक्रमे ( तिणसलया ) के० नेतरना थाभला सरखो, ( कट्ठ ) क० लाकडाना थाभला सरखो, ( अट्ठिअ ) क० हाडकाना थाभला सरखो, अने ( सेलत्थभोवमो ) क० पथ्थरना थाभला सरखो जाणवो. ॥ ४७५ ॥

मायावलेहिगोमुत्ती, मिंढसिंगघणवंसमूलसमा ॥
लोहोहलिद्दखंजण–कद्दमकिमिरागसारिच्छो ॥४७६॥

अर्थ—सजल्ननी, प्रत्याख्याननी, अप्रत्याख्याननी अने अनतानुबंधी एम चार प्रकारनी ( माया ) के० माया ते अनुक्रमे ( अवलेहि ) के० वासनी छाल सरखी, ( गोमुत्ती ) के० गोमुत्र-सरखी, ( मिढसिंग ) के० मेंढाना शिंगडा सरखी, अने ( घण वसमूलसमा ) के० कठीन वासना मूळ सरखी छे तेमज सजलन नो, प्रत्याख्याननो, अप्रत्याख्याननो अने अनतानुबंधीना (लोहो) के० लोभ ते ( हलिद्द ) के० हल्दरना रग सरखो, ( खजण ) के० सरावलाना मेल सरखो, ( कद्दम ) के० कादवना पास सरखो, अने ( किमिरागसारिच्छो ) के० करमजीना रग सरखो होय छे. ॥ ४७६ )

पक्ख चउमास सवच्छर-जावजीवाणु भवे कमसो ॥
देवनरतिरिय नारय-गइ साहणहेउआ भणीया ॥४७७॥

अर्थ—ते सजल्नादिक कषाय ( कमसो ) के० अनुक्रमे ( पक्ख ) के० पदर दिवस, ( चउमास ) के० चारमास, (सवच्छर) के० एक वर्ष अने ( जावजीवाणु ) के० यावत् जीवित सुधी ( भव ) के० होय, वळी ते सजलनादिक कषाय अनुक्रमे ( देव-नरतिरियनारयगइ ) के० देवना, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकीनी गतिना ( साहणहेउआ ) के० मेलववाना कारण ( भणिया ) के० कह्या छे ॥ ४७७ ॥

हवे सर्व जीवने पर्याप्ति कहे छे

आहारसरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भास मणे ॥
चउपचपचछप्पिय, इग विगलामन्निसन्नीण ॥ ४७८ ॥

अर्थ—पुद्गल परिणमन हेतु जे आत्मशक्तिविशेष ते पर्याप्ति कहेवाय पर्याप्ति छ प्रकारे छे. ( आहार ) के० आहारपर्याप्ति, ( सरीर ) के० शरीरपर्याप्ति, ( इन्दिय पज्जत्ती ) के० इन्द्रियपर्याप्ति,

(आणपाण) के० श्वासोश्वासपर्याप्ति, (भास) क० भाषापर्याप्ति, (मणे) क० मनपर्याप्ति तेमां (इग) के० एकेंद्रियजीवोने (चउ) के० चार, (विगल) क० विकलेंद्रियजीवोने (पच) के० पांच, (असन्नि) के० असन्नी पचेंद्रिने (पच) के० पांच, अने (सन्नीण) के० सन्नी पचंद्रियने (छप्पिय) क० छ पर्याप्ति होय छे ॥४७८॥

आहारसरीरिंदिअ, ऊसासवओ मणोभि निव्वत्ति ॥
होइजओ दलियाओ,करण पइ सा उ पज्जत्ती ॥४७९॥

अर्थ—(आहार) के० आहारपर्याप्ति, (सरीर) के० शरीरपर्याप्ति, (इंदिअ) क० इंद्रियपर्याप्ति, (पइ) क० अन्ये (ऊसास) के० श्वासोश्वासपर्याप्ति, (वओ) के० वचनपर्याप्ति, अने (मणो) क० मनपर्याप्ति, ए छ पर्याप्तिनी (अभिनिव्वत्ति) के० उत्पत्ति (जओ दलिआओ) क० जे पुद्गल स्वरूपकी आहारादिकनी उत्पत्तिमध्ये (करण) क० जीव सम्बन्धी शक्तिविशेष (होइ) के० थाय ते (पज्जत्ती) क० पर्याप्ति कहवाय छे ॥ ४७९ ॥

हव जीवने दश प्राण होय ते कहे छे

पण इंदिय तिवलूसा,साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ॥
इगदुतिचउरिंदीण, असन्निसन्नीण नव दस य ॥४८०॥

अर्थ—स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु अने श्रोत्र ए(पण इंदिय) क० पांच इंद्रिय, मनोवल वचनवल अने कायवलरूप (तिवल) के० त्रण वल, (ऊसास) के० श्वासोश्वास, अने (आऊ) क० आयुष्य ए (दस पाण) के० दश प्राण जाणवा तेमां (इग) के० एकेंद्रियने (चउ) क० चार, (दुतिचउरिंदिण) के० बेंद्री तेंद्री अने चउरिंद्रीने अनुक्रमे (छ सग अट्ठ) क० छ सात अने आठ प्राण होय छे (य) के० तथा (असन्निसन्नीण) के० असन्नी पचेंद्रीय

तथा सनीपचेंद्रीयने ( नव दस ) के० नव अने दश प्राण अनुक्रमे जाणवा ॥ ४८० ॥

एगिंदियस्सनि आहार–भयमेहुणपरिग्गहाइ सन्नाइ ॥
कोहे माणे माया–लोहे ओहे य लोगे य ॥ ४८१ ॥

अर्थ—( एगिन्दियस्सनि ) के० एकेंद्रीय जीवोने ( आहार ) के० आहार, ( भय ) के० भय, ( मेहुण ) के० मथुन, ( परिग्गह) के० परिग्रह, ( कोहे ) के० क्रोध, ( माणे ) के० मान, (माया) के० माया, (लोह) के० लोभ (ओहय) के० ओघ अने (लोगेय) के० लोक ए दश (सन्ना) के० सज्ञा होय छे ॥ ४८१ ॥

हव जीवोने समुद्घात कहे छे

वेयण कसाय मरणे, वेउव्वी तेय हार केवलिया ॥
सग पण चउ तिन्नि कमा, नर सुर नेरइयतिरियाण ॥४८२॥

अर्थ—(वेयण) के० वेदना, (कसाय) के० कषाय, (मरणे) के० मरण, (वेउव्वी) के० वैक्रिय, (तेय) के० तेजस, (आहार) के० आहारक अने (केवलिया) के० केवली, ए सात समुद्घात जाणवा– तेमा (नर) के० मनुष्यने (सग) के० सात, ( सुर ) के० देवताने (पण) के० पाच, (नेरइय) के० नारकीने (चउ) के० चार, अने (तिरियाण) के० तिर्यंचने ( तिन्नि ) के० त्रण समुद्घात (कमा) के० अनुक्रमे होय छे ॥ ४८२ ॥

हव सक्षेप सग्रहणीना चोवीस द्वार कहे छे

सखित्तयरी उ इमा सरीरमोगाहणा य सघयणा ॥
सन्ना सठाण कसाय,लेसिंदिय दु समुग्घाया ॥४८३॥
दिट्ठीदंसणनाणे, जोगुवओगोववायचवणठिइ ॥
पज्जत्ति किमाहारे, सन्नि गई आगई वेए ॥ ४८४॥

अर्थ—( इमा ) के० आ संग्रहणी ( संखित्तयरी ) के० अति संक्षेपमात्र चोवीसद्वारे करी कहे छे, १ ( सरीर ) के० शरीरद्वार, २ ( ओगाहणाय ) के० अवगाहना द्वार, ३ ( संघयणा ) के० संघयणद्वार, ४ ( सन्ना ) के० सज्ञाद्वार, ५ (संठाण) के० संस्थानद्वार, ६ ( कसाय ) के० कसायद्वार, ७ (लेस) के० लेश्याद्वार, ८ ( इंदिय ) के० इंद्रियद्वार, ९ ( दुसमुग्घाया ) के० द्विसमुद्घातद्वार, १० (दिठ्ठी) के० दृष्टिद्वार, ११ (दंसण) के० दर्शनद्वार, १२ (नाणे) के० ज्ञानद्वार अने १३ अज्ञानद्वार, १४ (जोग) के० जोगद्वार, १५ (उवओग) के० उपयोगद्वार, १६ ( उववाय ) के० उपपातद्वार, १७ (चवण) के० च्यवनद्वार, १८ (ठिइ) के० स्थितिद्वार, १९ ( पज्जत्ति ) के० पर्याप्तिद्वार, २० ( किमाहारे ) के० किमाहारद्वार २१ (सन्नि) के० सज्ञाद्वार, २२ (गई) के० गतिद्वार,२३(आगई) के० आगतिद्वार,२४(वेए) के० वेदद्वार॥४८४॥

मलहारहेमसुरीण, सीसलेसेण सूरिणा रइय ॥
संघयणिरयणमेय, नदउ जावीरजिणतित्थ ॥ ४८५ ॥

अर्थ—( मल्हार हेमसुरीण ) के० मल्धारी गच्छना हेमचन्द्रसूरिना ( सीसलसेण ) शिष्यलेश एवा ( सूरिणा ) के० चंद्रसूरिए ( रइय ) के० रचेलु ( संघयणिरयण ) के० आ संग्रहणीरत्न ( जावीरजिणतित्थ ) के० ज्यां सुधी वीरतीर्थंकरनुंतीर्थ छे त्यां सुधी (नन्दउ) के० वृद्धिपामो ॥ इति चन्द्रसूरिरचिता संग्रहणी समाप्ता ॥

